महाराणा कर्णसिंह,
षष्ठ प्रकरण – २६९ – ३१४.



महाराणा जगत्सिंह अव्वल,
सप्तम प्रकरण – ३१५ – ४००.

# महाराणा अमरसिंह अव्वल- पञ्चम प्रकरण.

इन महाराणाका राज्याभिषेक विक्रमी १६५३ माघ शुक्ल ११ [ हि० १००५ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १५९७ ता० २९ जेन्यूअरी ] को चावंडमें हुआ, जिस का वृत्तान्त इस तरह पर है-कि गद्दीपर बैठते ही इन्हें महाराणा प्रतापसिंहकी वह बात याद आई जो उन्होंने तानेके साथ मुसल्मानोंकी नौकरी करने व ख़िल्अ़त पहरनेके बारेमें कही थी.

गद्दी बैठनेके वक़्से ही महाराणा अमरसिंहने तलवारसे लड़ाईके सिवाय और दूसरे सब काम मुल्तवी रक्खे. पहिले इन्होंने कुछ बादशाही थाने उठाकर मेवाड़में अपना अमल जमाया, जिसका हाल बादशाहने भी सुना.

बादशाह अक्बर महाराणा प्रतापसिंहके देहान्तका हाल सुनकर बहुत फ़िक्र और हैरानीके साथ चुप होरहा. यह हाल देखकर सब दर्बारी लोगोंको बड़ा अचम्भा हुआ, कि महाराणा प्रतापसिंहके मरनेसे बादशाहको खुश होना चाहिये न कि उदास ! उस समय चारण दुरसा आढ़ाने एक छप्पय मारवाड़ी भाषामें कही, जिसका ज़िक्र सुनकर बादशाहने उसे रूबरू बुलाया और उस छप्पयको सुना, लोगोंने जाना कि बादशाह दुरसासे ज़रूर नाराज़ होगा, परन्तु अक्बरने इनआम देकर कहा कि इस चारणने प्रतापसिंहके मरने पर मेरे दिलगीर होनेके सबब को ज़ाहिर करदिया- वह छप्पय यह थी :-

छप्पय.

अश लेगो अण दाग, पाघ लेगो अण नामी।
गो आडा गवड़ाय, जिको बहतो धुर वामी॥
नव रोजै नह गयो, नगो आतशां नवल्ली।
न गो झरोखा हेठ, जेथ दुनियाण दहल्ली॥
गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रशणा डसी।
नीशास मूकभरिया नयण, तोम्रत शाह प्रतापसी॥१॥

अर्थ— अपने घोड़ोंको दाग़ (१) नहीं लगवाया, अपनी पाघ (सिर) को किसीके सामने नहीं झुकाया, आड़ा (२) गवाता हुआ चलागया, जो कि हिन्दुस्तानके भारकी गाड़ीको बांई तरफ़से खेंचनेवाला था (३) "नौ रोज़" के जल्सेमें कभी नहीं गया, नये आतश (बादशाही डेरों) में नहीं गया, और ऐसे झरोखेके नीचे नहीं आया जिसका रोब दुनयापर ग़ालिब था. इस तरहका गहलोत (राणाप्रतापसिंह) फ़त्हयाबीके साथ गया, जिससे बादशाहने ज़बानको दांतोंमें दबाया, और वह ठंडा श्वास लेकर आंखोंमें पानी भरलिया. ऐ प्रतापसिंह! तेरे मरनेसे ऐसा हुआ.

जब महाराणा अमरसिंहका ज़ोरशोर बादशाहने बहुत दिनोंतक सुना, तो विक्रमी १६५५ [हि० १००७ = ई० १५९८] में मेवाड़पर चढ़ाई की, और महाराणा भी साम्हना करनेकी तय्यारीमें मश्ग़ूल हुए. पहिले बादशाहने फ़ौज भेजी और फिर आप उदयपुरकी तरफ़ चला. महाराणाने बादशाही फ़ौजपर कई बार हम्ले किये और बहुतसे बादशाही परगने लूटकर पहाड़ोंमें चलेआये. इनका काम यही था कि धावा मारकर पहाड़ोंमें चले आवें.

---

(१) बादशाही दस्तूरसे उन घोड़ोंके पुट्ठेपर दाग़लगाया जाता था, जो बादशाही फ़ौजोंमें नौकरी देते थे.

(२) राजपूतानामें अबतक रिवाज है कि-ऐसी शाइरी कीजाती है-जिसमें उससे अदावत रखनेवाले पर ताना हो- इसतरहके सोरठे प्रतापसिंहके साम्हने ढोली गायाकरते थे, जैसा कि-

सोरठा.

अक्बर घोर अंधार, ऊंघाणा हीन्दू अवर॥
जागे जग दातार, पोहोरे राण प्रतापसी॥१॥
अइरे अकबरियाह, तेज तुहालो तुर्कड़ा॥
नय नय नीसरियाह, राण विना शहराजवी॥२॥

(३) बहादुर राजपूतोंको राजपूतानाके कवी यह उपमा देते हैं.

बादशाही फ़ौजके क़ाबूमें महाराणा नहीं आये, तब बादशाह तो दक्षिणकी तरफ़ ग़द्र सुनकर चलेगये और शाहज़ादे सलीमको राजा मानसिंह कछवाहे समेत अजमेरमें छोड़ा, परन्तु शाहज़ादा आगरे होताहुआ प्रयागको चलागया और यहां बादशाही फ़ौजके ऊंटाला, मोही, मदारिया कोशीथल, बागौर, मांडल, मांडलगढ़ और चित्तोड़, वग़ैरहमें थाने बैठगये.

विक्रमी १६५७ [ हि० १००९ = ई० १६०० ] में महाराणा अमरसिंहने मेवाड़के बादशाही थानोंपर हम्ला करनेकी तय्यारी करके पहिले ऊंटालेके थानेदार क़ायमखां मुग़लपर चढ़ाई की और ग्राम ऊंटालेको घेरलिया. शाही फ़ौजके बहादुरों ने भी लड़ाईके लिये महाराणाकी पेश्वाई की और खूब मुक़ाबला होकर सैकड़ों आदमी दोनों तरफ़के मारेगये; क़ायम ख़ान् मुग़लको ख़ुद महाराणाने मारा, बहुतसे आदमी शाही फ़ौजके भागकर बिखरगये और बहुतसोंने ऊंटालेकी गढ़ीका सहारा लिया. जब महाराणाने अपने बहादुर राजपूतोंको क़िलेपर हम्ला करनेका हुक्म दिया, तो शाही मुलाज़िमोंने भी क़िलेसे तीर बन्दूक़ चलाना शुरू किया, जिनसे मेवाड़की फ़ौजके सैकड़ों आदमी निशाना बनकर मारेगये ( १ ).

महाराणाकी फ़ौजमें क़ायदा था कि हरावलमें चूंडावत और चन्दावलमें ( याने फ़ौजके पीछे, ) शक्तिसिंहके बेटे पोते शक्तावत रहें. इस बातसे चूंडावत हरएक बात में शक्तावतोंको ताना दियाकरते थे. इसवक़ महाराणा अमरसिंहने हुक्म दिया कि पहिले ऊंटालेके क़िलेमें जो हमारी फ़तहका निशान क़ायम करेगा उन्हींके नामपर हरावल होगी. यह हुक्म सुनकर शक्तावत व चूंडावत दोनों गिरोहके सर्दार अपनी अपनी जमइयत सहित क़िलेकी तरफ़ चले. बल्लू शक्तावत तो दर्वाज़ेकी तरफ़ गया और रावत जैतसिंह कृष्णावत दीवारकी तरफ़. बल्लू शक्तावतने अपने हाथीके महावत से कहा कि हाथीको हूलकर दर्वाज़ेके किवाड़ तुड़वा. हाथीवानने कहा कि हाथी मुकना ( बिना दांतका ) है और किवाड़ोंमें भाले लगे हैं, इसलिये टक्कर नहीं मारता. रावत बल्लूने किवाड़के भालोंपर खड़े होकर हाथीवानको कहा कि मेरे बदनपर हाथीको हूलदे, नहीं तो तुझको मारडालूंगा; उसने वैसाही किया. जब कि बल्लूके बदनपर हाथी झुका तो उसी वक़ रावत जैतसिंह कृष्णावत सीढ़ी लगाकर दीवारपर चढ़ा, और क़िलेवालोंकी तरफ़से उसकी छातीमें गोली लगी; जब सीढ़ीसे गिरनेलगा तो अपने साथियोंसे कहा कि मेरा सिर काटकर क़िलेमें फेंकदो, जिसपर उसके राजपूतोंने वैसाही किया, और सीढ़ियोंसे चूंडावत क़िलेपर चढ़गये, शक्तावत भी किवाड़ तोड़कर

( १ ) अमर काव्यमें यह हम्ला संवत् १६६४ वि० के बाद लिखा है.

भीतर चलेआये, क़िला फ़त्ह हुआ, शाही मुलाज़िम अक्सर मारेगये और बहुतसे पकड़ लियेगये. शक्तावत और चूंडावतोंकी महाराणाने तारीफ़ करके इज़्ज़तें बढ़ाईं, और हरावल चूंडावतों की साबित् रही. इस लड़ाईमें रावत जैतसिंह, शक्तावत बल्लू, रावत तेजसिंह खँगारोतके सिवाय और भी बहुतसे बहादुर मारेगये.

इसके बाद महाराणा अमरसिंह यहांसे कूच करके मांडल और बागोर वग़ैरह के थाने उठातेहुए मालपुरे तक पहुंचे. बाज़े शाही थानेदार लड़े और बाज़े भागकर अजमेर चलेगये.

यह ख़बर बादशाह अक्बरने सुनकर मिर्ज़ा शाहरुख़को बड़ी फ़ौजके साथ मेवाड़की तरफ़ विदा किया. महाराणा मालपुरेसे पीछे लौटकर उदयपुर चलेआये. बादशाहको उग्रसेन रावल बांसवाड़े वालेपर ज़ियादा गुस्सा आया, क्योंकि पेश्तर डूंगरपुर और बांसवाड़े (बांसवाला) के दोनों रावल बादशाह अक्बरके नौकर होचुके थे; और मानसिंह, जो बांसवाड़ेका मालिक बनगया था उसको उठाकर महाराणा प्रतापसिंहने रावल उग्रसेनको गद्दीपर बिठाया था; इसलिये उग्रसेन महाराणाकी फ़ौजमें रहकर शाही मुलाज़िमोंपर हमेशा हम्ला करतारहा, और इस वक्त भी उसने सबसे बढ़कर बहादुरी दिखलाई, जिसपर बादशाहने शाहरुख़को हुक्म दिया कि उग्रसेनको बहुत बड़ी सज़ा देकर उसका मुल्क छीनलेना चाहिये. शाहरुख़ने राजा भारमल्लके बेटे राजा जगन्नाथ आंबेर वालेको बहुतसी फ़ौज देकर मांडलके थानेपर मुक़र्रर किया और आप चित्तौड़ होताहुआ बांसवाड़े पहुंचा. वहां रावल उग्रसेनने साम्हना किया जिसमें सैकड़ों राजपूत और मुसल्मान मारेगये. शाहरुख़ फ़त्ह पाकर बांसवाड़ेमें ठहरा और रावल उग्रसेनने वहांसे निकलकर शाही मुल्क मालवेको लूटना शुरू किया, बहुतसे शाही मुलाज़िमोंको मारा और रअय्यतसे दण्ड लिया. यह ख़बर सुनकर शाहरुख़ अपनी फ़ौज समेत मालवेकी तरफ़ चला, और रावल उग्रसेनने मालवेसे लौटकर अपने मुल्कपर क़ब्ज़ा करलिया; शाहरुख़ने फिर पहाड़ोंकी तरफ़ रुख़ न किया.

अब थोड़ासा हाल महाराज सगरका लिखाजाता है, जो महाराणा प्रतापसिंह के समयमें नाराज़ होकर दिल्ली चलेगये थे :-

महाराज जगमाल महाराणा उदयसिंहके बेटे, महाराणी भटियाणीके गर्भसे थे, जिनका जन्म विक्रमी १६११ प्रथम आषाढ़ कृष्ण ५ रविवार [हि० ९६१ ता० १९ जमादियुस्सानी = ई० १५५४ ता० २२ मई] को, और सगर उनके छोटे भाई का जन्म विक्रमी १६१३ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ९६३ ता० १७ रमज़ान = ई० १५५६ ता० २५ जुलाई] को हुआ था.

जब महाराज जगमाल, जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, सिरोहीमें राव सुल्तानसे लड़कर मारेगये, तो उनके छोटे भाई सगर महाराणाके ही पास रहे. महाराणा अमर सिंहने अपनी बाईका सम्बन्ध करनेके लिये सिरोहीके राव सुल्तानको कहलाया. यह बात सुनकर महाराज सगरने महाराणा प्रतापसिंहसे अर्ज़ की- कि हमने भी इसी घरमें जन्म लिया है. आप हमारे मालिक और हम आपके ताबेदार भाई हैं, मेरे बड़े भाई जगमाल, जिनको सिरोहीके राव सुल्तान व देवड़ा समरा, सूराने मारडाला, उनकी चिता हमारे कलेजेमें जलरही है और आप अपनी बाईका सम्बन्ध हमारे दुश्मन, सिरोहीके रावके साथ करते हैं, तो हमारा बैर लेनेवाला कौन है ! यह सुनकर महाराणा प्रतापसिंहने ( जगमालके गद्दी नशीन होनेकी बातको याद करके ) फ़र्माया कि कुल सीसोदिये हमारे भाई हैं. जिनमेंसे बहुतसे मारेजाते हैं, हम किस किसका बैर लेतेफिरें, सिवाय इसके हम राजाओंके सामने सब राजपूत बराबर हैं. सगरने उठकर सलाम किया कि हमको रुख़सत हो, महाराणाने फ़र्माया कि बेशक चलेजाओ, तुम्हारे जानेसे हमारा कुछ हर्ज नहीं. लेकिन् इस तर्ज़पर जाना जभी समझाजावे कि आप खुद अपने पराक्रमसे नामवरी हासिल करें, वर्ना ज़ाहिर है कि हमारे घरानेके नामसे दिल्ली जाकर मुसलमानोंकी नोकरी करके पेट भरोगे.

इस बातको सुनकर सगर चुपचाप अपने मकानपर चलेआये, किसीको कुछ भेद न दिया, आधी रातके वक्त अकेले एक तलवार हाथमें लेकर पैदल ही चलदिये, और आंबेरके कुंवर मानसिंहके सिपाहियोंमें जाकर नोकरी करली. बहुत अर्सा गुज़र जानेके बाद एक दिन सगर आंबेरके महलोंके नीचे रातके वक्त पहरा दे रहे थे, और राजा मानसिंह महाराणी भटियाणीके साथ महलमें सोते थे. यह भटियाणी रावल लूणकरण भाटी की उन दो बेटियोंमेंसे एक थी, जिनमेंसे बड़ी बहिनकी शादी महाराणा उदयसिंहके साथ हुई थी. और जिनके गर्भसे जगमाल, सगर वगैरह पांच बेटे पैदा हुए; और छोटीकी शादी मानसिंहके साथ की थी; सो वही भटियाणी सगरकी मौसी कुंवर मानसिंहके पास मौजूद थी. अंधेरी रातके समय मेह मूसलाधार बरसरहा था. महलकी छतके पर्नालेका पानी नीचे पत्थरोंपर गिरनेसे सख्त आवाज़ सुनकर सगरने दिलमें सोचा कि इस वक्त कुंवर और कुंवरानी दोनों खुशीमें हैं, इस पर्नालेके पानीकी आवाज़ उनको बे शक बुरी मालूम होती होगी; सगरने घोड़ोंके पायगाहसे घास लाकर उस पानीकी धारके नीचे डालदी, जिससे वह आवाज़ बन्द होगई. कुंवरने लौंडियोंसे पूछा कि क्या पानीका बरसना बन्द होगया? उन्होंने कहा कि नहीं हुआ, तब कुंवरने आप उठकर झरोखेसे निगाह डाली तो बिजलीकी रोशनीसे पर्नालेकी धारके नीचे घास पड़ी हुई दिखाई दी; उस सिपाहीकी इस कार्रवाईसे खुश हुए और सोचा कि यह आदमी ग़रीब सिपाही नहीं है,

किसी बड़े घरानेका बेटा या किसी अमीरका ख़ास मुसाहिब है, जो किसी आफ़तसे इस नौबतको पहुंचा है; एक लौंडीसे फ़र्माया कि नीचे जाकर इससे दर्याफ़्त कर कि तेरा नाम, ग्राम और ख़ान्दान क्या है? उसने दर्याफ़्त किया तो सगरा सीसोदिया मालूम हुआ; मानसिंहको शक हुआ कि महाराज सगर तो नहीं हैं; तब कुंवरानीने अपनी धायको भेजा, जो सगरको बचपनसे पहचानती थी, उसने भटियाणीके हुक्मसे उसको जाकर आवाज़ दी कि तुम्हारा नाम क्या है? सगरने जवाब दिया कि तुम को मेरे नामसे क्या काम है? अगर कोई काम हो तो कहो. उनकी आवाज़ पहचान-कर धाय नज़्दीक गई और रौशनीसे पूरा पहचानकर गले लिपटगई, और कहा कि ओ हो लालजी तुम्हारी यह क्या हालत है!

धायकी यह आवाज़ सुनकर कुंवर मानसिंह भी नीचे दौड़आये और सगरका हाथ पकड़कर महलमें लेगये जहां सब हाल दर्याफ़्त किया; सगरने जो गुज़रा था कह सुनाया और इसके बाद अपनी मौसीसे मिले. मानसिंहने पोशाक मंगाकर उनको पहनाई और ज़ाहिरा अपने पास रखनेलगे, कुछ अर्से बाद महाराज मानसिंह बादशाही ख़िद्मतमें दिल्ली जानेलगे, तब सगरसे कहा कि आप अगर अपने दिलकी मुराद पूरी करना चाहें तो बग़ैर बादशाही नौकरीके कुछ भी नहीं होसक्ता— यह समझाकर अपने साथ लेगये, और सगरने बादशाहके सामने भी अपनी सब सरगुज़श्त कह सुनाई, जिसपर बादशाहने फ़र्माया कि हम अपनी मिह्बानीसे तुम्हारी मुराद पूरी करेंगे.

देवड़ा बिजा भी महाराज सगरके पास हाज़िर होगया था; एक दिन बादशाह ने जोधपुरके महाराज उदयसिंहसे, जिनको मोटा राजा भी कहते थे, फ़र्माया कि हम जामबेगको तुम्हारे साथ फ़ौज देकर भेजते हैं और सगर भी तुम्हारे साथ जावेगा, तुम्हारे भतीजे रायसिंह चन्द्रसेणोत और सगरके भाई जगमालको सिरोहीके देवड़ों ने मारडाला था, सो तुम लोग भी शाही मदद लेकर उनको बर्बाद करो. जब महाराज उदयसिंह, सगर, जामबेग व देवड़ा बिजा फ़ौज लेकर सिरोही आये तो वहां राव सुल्तानने इनसे लड़ाई की, जिसमें देवड़ा समरा नरसिंहोत बड़ी बहादुरीसे लड़कर मारागया और देवड़ा पत्ता सावन्तसिंहोत, तोगा सूरावत और चीवा व जैता खि-मावत बहुतसे राजपूत राव सुल्तानके मातह्त मारेगये, उसवक्त राव सुल्तान निकलकर पहाड़ोंमें चलागया और देवड़ा बिजा मारागया; तब सगर अपने घायल राजपूतोंको उठाने और दुश्मनके ज़ख़्मियोंको मारने लगा. राव सुल्तानके नेगी चारण दुरसा आढ़ाको ज़ख़्मी पड़ाहुआ देखकर सगरने कहा कि यह कोई

देवड़ोंका बड़ा सर्दार है, इसको भी दूध पिलाना (१) चाहिये, तब दुरसाने कहा कि मैं चारण हूं, तुमको राजपूत होकर मेरा मारना उचित नहीं, सगरने कहा कि सम्धी थोड़े जीनेके वास्ते दूसरेकी औलाद बनना बहादुरोंका काम नहीं है! इसपर दुरसाने कहा कि सचमुच मैं चारण हूं. सगरने जवाब दिया कि तुम सच ही चारण हो तो यह समरा देवड़ा जो अभी अच्छी तरह बहादुरीसे मारागया है उसकी तारीफ़में कोई दोहा कहो, उसने उसी वक्त मारवाड़ी भाषामें यह दोहा कहा–

दोहा.

धर रावां जश डूंगरां, बृद पोतां सत्र हाण॥
समरे मरण सुधारियो, चहुं थोकों चहुँवाण॥ १ ॥

अर्थ–समराने चारों तरहसे अपना मरण सुधारा, सिरोहीके रावोंकी ज़मीन मज्बूत की. पहाड़ोंकी तारीफ़ करवाई कि जिनमें रहकर कई लड़ाइयां कीं, और अपने बेटे पोतोंको इस बातका अभिमान दिया कि हमारा बुज़ुर्ग नामवर था, और दुश्मनों को नुक्सान पहुंचाया.

सगरने दुरसाको पालकीमें बिठाकर उसकी हिफ़ाज़त करवाई. सिरोहीके मुल्कको तहसनहस करके महाराज उदयसिंह जोधपुर और महाराज सगर दिल्ली गये, बादशाह अक्बरने इनको अपने पास रक्खा और फ़र्माया कि तुमको हम उदयपुरका राणा बनादेवेंगे, क्योंकि तुम्हारे भाई जगमालकी यही मुराद थी जो कि पूरी न हुई.

अब यह काम तुम पूरा करो और राणा अमरसिंहको अपना ताबेदार बनाओ, आजसे हमने तुमको 'राणा' का ख़िताब दिया.

महाराज सगरने आदाब बजालाकर नज़्र दी, लेकिन् ख़िताब राणाका नाम मात्र के लिये था. अक्बरने मेवाड़की तरफ़ फिर कोई बड़ी चढ़ाई नहीं की, इससे महाराणा अमरसिंहको फ़ुरसत मिली और मेवाड़को आबाद करने लगे. फिर बादशाह अक्बरका देहान्त होगया जिसका ब्योरेवार हाल ऊपर लिखागया है.

अक्बरके बाद शाहज़ादा सलीम तख़्तपर बैठा और उसने अपना लक़ब "नूरुद्दीन मुहम्मद, जहांगीर" रक्खा. उसने तख़्तपर बैठते ही अपने बापकी उस उम्मेद को जिसे वह दिलमें रखकर मरा था, याद किया और कहा कि उदयपुरके राणाकी मुहिम् मेरे बापने मेरे नाम लिखदी थी, इसलिये मुझे ज़रूर है कि पहिले इसी काम

(१) दूध पिलानेसे इशारा मारनेका है, कि हिन्दुओंके एतिक़ादसे यह शरीर छोड़ दूसरा जन्म लेवे और अपनी माका दूध पीवे.

को करूं. और ऐसा दस्तूर भी है कि जब कोई राजा या बादशाह तख्तनशीन होता है तो अपना रोब जमानेके लिये किसी कठिन कामपर हाथ डालता है.

बादशाह जहांगीरने विक्रमी १६६२ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष [हि० १०१४ रजब = ई० १६०५ नोवेम्बर] में अपने शाहज़ादे पर्वेज़को महाराणा अमरसिंहपर लड़ाईके लिये भेजा और उसके साथ नीचे लिखेहुए सर्दार किये.

आसिफ़खां वज़ीर, अब्दुर्रज़ाक़ मऑमूरी बख़्शी, आसिफ़ख़ांका चचा दीवान मुख़्तारबेग, राजा भारमल्लका बेटा जगन्नाथ, महाराणा उदयसिंहका बेटा राणा सगर, राजा मानसिंह कछवाहेका भाई माधवसिंह, रायसाल शैखावत, शैख़ रुक्नुद्दीन पठान, शेरख़ां, अबुल्फ़ज़्लका बेटा शैख़ अब्दुर्रहमान, राजा मानसिंहका पोता महासिंह, सादिक़ख़ांका बेटा ज़ाहिदख़ां, वज़ीर जमील, क़राख़ां तुर्कमान, मनोहरसिंह (१) शैखावत और १००० अहदी; इन सबको अपने अपने लश्करों समेत शाहज़ादेके साथ करदिया. बादशाह जहांगीर अपनी किताब 'तुज़क जहांगीरी' में लिखता है कि "मेरे बापकी आर्ज़ू पूरी करनेके लिये मेरे जुलूसके मौक़ेपर बड़े बड़े मन्सबदार मए अपनी जमइयतोंके एकट्ठे होगये थे, उन सब उमरावोंको मैंने इस बड़ी मुहिमपर भेजदिया".

इस तरह पर्वेज़ने मेवाड़पर चढ़ाई की. महाराणा अमरसिंहने पहिले तो अपने देशको ऊजड़ करदिया कि जिससे शाही लश्करको कोई रसद खाने पीनेकी न मिले. जब शाहज़ादे पर्वेज़की फ़ौजके कई हिस्से होकर अजमेरसे मेवाड़की तरफ़ रवाना हुए, तो महाराणाके बहादुर राजपूतोंने भी देसूरी, बदनौर, मांडल, मांडलगढ़, चित्तौड़की तलहटीकी शाही फ़ौजोंपर हम्ला करना शुरू किया. इन लड़ाइयोंमें मांडलपर अचलदास चूंडावत व बसीके पहाड़ोंमें जयमल्ल सांगावत वग़ैरह बहुतसे राजपूत दुश्मनोंको मारकर मारेगये. और शाहज़ादे पर्वेज़ने शाही हुक्मके मुवाफ़िक़ राणा सगरको चित्तौड़पर राणा बनाकर गद्दी बिठाया, और अपने दादा अक्बरके वचनको पूरा किया. सगर भी अपने बड़े भाई जगमालका इरादा पूरा करनेके

(१) यह राव मनोहर सिंह फ़ार्सी ज़बान ख़ूब जानता था, और उसमें शाइरी भी करता था, जिसका एक शेअ्र बादशाह जहांगीरने तारीफ़के साथ अपनी किताबमें लिखा है-

शेअ्र--ग़रज़ ज़ि ख़िल्क़ति सायह हमीं बुवद कि कसे, ※ व नूरि हज़्रति ख़ुर्शेद पाय ख़ुद न निहद ※

अर्थका दोहा.

चरण देन रवि किरणपे दोपजान करतार ॥
यह छाया पैदा करी हरज मिटावन हार ॥

लिये मेवाड़के राजा बनकर चित्तौड़पर चंवर उड़वाने लगे, लेकिन यह ऐसे राजा थे कि 'काग हंसकी चाल चलनेलगा. सो अपनी भी भूलगया'; क्योंकि जो मेवाड़के तह्तका आबाद मुल्क था जैसे बदनोर, हुरड़ा, मांडल, जहाज़पुर, मांडलगढ़, वह सब तो बादशाही खालिसेमें शुमार कियागया, और चित्तौड़से पश्चिमी देश मेवाड़का हिस्सा बिल्कुल वीरान पड़ा था, केवल पहाड़ी मुल्क महाराणा अमरसिंहके क़ब्ज़ेमें रहा, फ़क़त् चित्तौड़से पूर्वी इलाक़ा कुछ खेराड़. आंतरी और थोड़ासा मालवेका टुकड़ा सगरकी जागीरमें था. बादशाही मुलाज़िमोंने कहा कि हम मददगार हैं अपने मुल्कको आबाद करके आप क़ब्ज़ेमें लाओ. लेकिन् सगरसे यह कब होसक्ता था.

चित्तौड़ और उदयपुरके बीचकी ज़मीनको तो राजपूत और मुसल्मान बहादुरोंके बलिदानकी भूमि कहना चाहिये, क्योंकि कोई दिन ऐसा नहीं जाता था कि मेवाड़ी राजपूतोंने शाही मुलाज़िमोंपर हम्ला न किया हो. गुजरात, मालवा व अजमेरका शाही मुल्क लूट लूट कर मेवाड़ी राजपूत अपना और अपने मालिकका खर्च चलाते थे. कभी शाही फ़ौजके बहादुर पहाड़ोंमें घुसकर राजपूतोंको क़ैद व क़त्ल करते थे. कभी मेवाड़ी बहादुर बादशाही बहादुरोंको मारकर हटादेते थे.

विक्रमी १६६३ के चैत्र शुक्लपक्ष [हि० १०१४ ज़िल्हिज = ई० १६०६ मार्च] में शाहज़ादा पर्वेज़ चारों तरफ़की शाही फ़ौजको मिलाकर ऊंटाला, और देबारी (देवड़ाबारी) के बीच आया. महाराणा अमरसिंहने भी अपने कुल राजपूतोंको एकट्ठा करके शाही फ़ौजपर हम्ला करनेका विचार किया. पानड़ावाके भील सर्दार पूंजा राणाके बेटेको हज़ारों भीलोंका अफ्सर बनाकर पहाड़ोंमें अपनी फ़ौजका मददगार और शाही फ़ौजकी रसद लूटने पर नियत किया. रातके वक्त शाही फ़ौजपर महाराणा अमरसिंहने हम्ला किया. इस हम्लेसे दोनों तरफ़के बहादुरोंने अपने खूनसे ज़मीनको लाल करदिया, और बादशाही फ़ौजका बहुत नुक़्सान हुआ, शाहज़ादा पर्वेज़ भागकर मांडलकी तरफ़ चलागया.

इस लड़ाईका ज़िक्र फ़ार्सी तवारीखोंमें कहीं भी नहीं लिखा. सिर्फ़ बहुतसे हम्लोंका होना बयान करके विक्रमी १६६३ के वैशाख [हि० १०१५ के मुहर्रम = ई० १६०६ एप्रिल] में लिखा है- कि जहांगीरने पर्वेज़को खुस्रौके फ़सादसे आगरेकी हिफ़ाज़तके लिये बुलालिया, सो वह मेवाड़की मुहिम्पर बादशाही फ़ौज बाज़े सर्दारोंके सुपुर्द करके महाराणा अमरसिंहके बेटे बाघसिंहको लेकर लाहौरमें हाज़िर हुआ. बल्कि जहांगीर बादशाहने अपने तुज़कमें शाहज़ादे पर्वेज़की इस लड़ाईमें फ़त्ह लिखी है. लेकिन् इस लड़ाईका हाल राज

की बहुतसी पोथियोंमें लिखा है जिसकी तस्दीक़ ईस्ट इंडिया कम्पनीके मुलाज़िम लेफ़्टिनेएट कर्नेल् अलिग्जैएडर डाऊकी हिन्दुस्तानकी तवारीख़की तीसरी जिल्दके ४३ वें पृष्ठसे स्पष्ट है, बल्कि डाऊ साहिब लिखते हैं कि जहांगीर ने पर्वेज़से बहुत नाराज़ होकर उसको वली अहदीके हक्क़से ख़ारिज करदिया, और शाही मुलाज़िमोंने जुदी जुदी चिट्ठियां बादशाहको लिखीं, जिनमें एक दूसरेका कुसूर ज़ाहिर करता था.

कर्नेल् टॉड साहिब भी कर्नेल् डाऊ साहिबके मुताबिक़ ही पर्वेज़का शिकस्त खाना अपनी किताबमें लिखते हैं, लेकिन हमारे बर्ख़िलाफ़ वह इस लड़ाईका होना खमनोर मुतअल्लिक़ कुम्भलमेर पर लिखते हैं.

सगर महाराजने चित्तौड़पर नये उमराव और सर्दार बनाना शुरू किया; महाराणा उदयसिंहके परपोते शक्तिसिंहके पोते अचलदासके बेटे नारायणदासको बेगूं ८४ गांवों और रत्नगढ़ ८४ गांव समेत जागीरमें दिया. बादशाह जहांगीरने मुइज़्ज़ुल् मुल्कको बख़्शी बनाकर मेवाड़पर भेजा. इसी फ़ौजने मिर्ज़ा शाहरुख़के बेटे बदीउज़्ज़मांको गिरिफ़्तार किया, जो मालवेमें कुछ फ़साद उठाकर महाराणा अमरसिंह से मिलना चाहता था. इस फ़ौजने भी बहुतसी दौड़ धूप की लेकिन अस्ली मत्लब बादशाहका पूरा नहीं हुआ. तब बादशाह जहांगीरने विक्रमी १६६५ चैत्र शुक्लपक्ष [ हि० १०१६ ज़िलहिज = ई० १६०८ मार्च ] में महाबतख़ांको नीचे लिखीहुई बड़ी जर्रार फ़ौज देकर मेवाड़ पर भेजाः—

१२००० जंगी सवार और सर्दार लड़नेवाले, ५०० पैदल, २००० बर्क़न्दाज़, और १७ तोप गजनाल और शुतरनाल, ६० हाथी व बीस २०००००० लाख रुपये का ख़ज़ाना.

बादशाहने महाबतख़ांको तीन हज़ारी ज़ात और २५०० सवारका मन्सब दिया, और ख़िलअ़त, घोड़ा हाथी और पटका, जड़ाऊ ख़ंजर, इनायत किया, दूसरे उमरावोंको, जो उसके साथ थे, इनआम देकर विदा किया. महाबतख़ां बड़े ग़ुरूरके साथ शाहज़ादे पर्वेज़की फ़ौजकी ख़राबीका बदला लेना चाहता था; वह अजमेरसे निकलकर मेवाड़में शाही थाने ठौर ठौर बिठाता हुआ ऊंटाले तक पहुंचा और यहां अपनी फ़ौजको मज़बूत करके पहाड़ोंमें होकर महाराणा अमरसिंहको फ़त्ह करना चाहता था; उसी अर्सेमें उसको दो तीन रोज़ इस मक़ामपर न गुज़रे होंगे कि महाराणा अमरसिंहने पहाड़ोंसे उदयपुरमें आकर अपने राजपूतोंको शाही फ़ौजपर हम्ला करनेका हुक्म दिया और आप भी पहाड़ोंसे बाहर निकले.

रातका समय था, रावत मेघसिंह गोविन्ददासोत चूंडावतने अपनी होश्यारी से एक हिक्मत सोचकर अपने दस बीस राजपूतोंको कीरोंके लिबासमें भैंसोंके साथ करके शाही लश्करमें भेजदिया और उन भैंसोंमें ख़रबूज़ोंके एवज़ जो वे लोग बेचाकरते हैं आतिश्बाज़ी भरदी. जब ये लोग अपने भैंसोंको लेकर शाही लश्कर में महाबतख़ांकी ड्योढ़ीके पास पहुंचे, तो रावत मेघसिंहने दस बीस आदमियोंको गाय व बैलोंके सींगोंसे फ़लीते ( फ़तीले ) बंधवाकर तीन तरफ़से शाही फ़ौजकी तरफ़ चलाया. महाबतख़ांकी ड्योढ़ीपर उन राजपूतोंने भैंसोंकी आतिश्बाज़ीमें आग डाली, जंगलमें बहुतसी रोशनी दिखाई देनेसे वे लोग घबराकर भागने लगे, हरएकको यह ख़याल होगया- कि बड़ा भारी लश्कर आपहुंचा, जिधर जिसका मुंह उठा भाग निकला.

रावत मेघसिंहने अपने पांचसो सवारोंसे शाही लश्करपर हम्ला करदिया, जिससे नव्वाब महाबतख़ांको भी भागना पड़ा. इस ख़बरके पाते ही मेवाड़के कुल सर्दारोंने शाही फ़ौजका पीछा किया. कहते हैं कि उसी रातमें जितने थाने महाबतख़ांने बिठाये थे, सब भागगये. इस लड़ाईमें हज़ारहा आदमी शाही फ़ौजके मारेगये, और माल अस्बाब मेवाड़के राजपूतोंने लूटा; बादशाह जहांगीरने नाराज़ होकर महाबतख़ांको बुलालिया-इस फ़त्हका हाल भी पर्वेज़की शिकस्तकी तरह जहांगीरने अपनी किताब तुज़क जहांगीरीमें बयान नहीं किया. सिर्फ़ इतना ही लिखा है कि राणाकी लड़ाई जैसी चाहिये थी न हुई, इससे उसको बुलालिया; लेकिन इतने ही लिखनेसे ऊपर लिखी हुई लड़ाईकी सच्चाई मालूम हो सक्ती है.

केवल चित्तोड़पर शाही फ़ौज समेत महाराज सगर व मांडलके थानेपर राजा जगन्नाथ कछवाहा भारमल्लोत ठहरा रहा लेकिन् सम्वत् (१) विक्रमी १६६६ [ हि० १०१८ = ई० १६०९ ] में राजा जगन्नाथ बीमार होकर मरगये, जिनकी छत्री सफ़ेद पत्थरकी मांडलमें विक्रमी १६७० [हि० १०२२ = ई० १६१३ ]में बनाई गई जो अबतक मौजूद है. ( शेषसंग्रह देखो प्रशस्ति नम्बर १ )-इनका जन्म विक्रमी १६०९ पोष कृष्ण ९ [ हि०९५९ ता० २३ ज़िल्हिज = ई० १५५२ ता० ११ डिसेम्बर ] का था; इस राजाके मरनेका बादशाह जहांगीरको भी बहुत रंज हुआ.

फिर जहांगीरने अब्दुल्लाख़ांको बहुत बड़ी फ़ौज देकर मेवाड़में भेजदिया, पेश्तर महाबतख़ांने मोहीके परगनेमें पहुंचकर दर्ख़ास्त किया कि अमरसिंहका खटला

---

( १ ) नैनसी महताने विक्रमी १६६५ लिखा है, लेकिन तुज़क जहांगीरी वग़ैरह किताबोंके देखने से विक्रमी १६६६ मालूम होताहै—

कहां रहता है? किसीने कहदिया कि महाराणाके बालबच्चे जोधपुरके राजा सूरसिंहके मुल्कमें रहते हैं, तब उसने राजा सूरसिंहसे सोजतका परगना ज़ब्त करके राठौड़ चन्द्रसेन उग्रसेनोतको इस शर्तपर देदिया कि राणा व राणाका खटला उस तरफ़ आवे तो हमको फ़ौरन् ख़बर दो; जब अब्दुल्लाखां आया तो सूरसिंहके कुंवर गजसिंहने अपना परगना पीछे लेनेकी कोशिश की. अब्दुल्लाखांने सोजत वापस देकर गजसिंहको नाडोलके थानेपर तईनात किया. अहमदाबादसे एक क़तार कुछ ख़ज़ाना व सामान लेकर आगरेको जाती थी, जिसकी ख़बर अम्बावके पहाड़ोंमें महाराणा अमरसिंहको मिली, और कुंवर कर्णसिंह उस वक़ नीचे लिखे हुए राजपूतोंको साथ लेकर चढ़ेः--

शेखा राणा प्रतापसिंहोत, कुंवर बाघसिंह अमरसिंहोत, झाला शत्रुशाल मानावत, सोलंखी बीरमदेव, राठौड़ किसनदास (कृष्णदास) गोपाल दासोत, राठौड़ हरिदास बलुओत, सीसोदिया माधवसिंह, शार्दूलसिंह राणा उदयसिंहोत, सहसमल्ल राणा प्रतापसिंहोत, सींधल बीदो, सींधल सांवलदास बीदावत, कुंवर अर्जुनसिंह अमरसिंहोत, माधवसिंह राणा उदयसिंहोत, राठौड़ माला भीमकर्णोत, देवड़ा पत्ता कलावत, सींधल अमरा भांडावत, सींधल तोगा भांडावत, सोनगरा केशवदास भाणावत, अक्षयराजका पोता सोनगरा सावन्तसिंह नारायणदासोत और चूंडावत दूदा सांगावत वगैरह. जब मारवाड़में सोनगरा नारायणदास डोडिया गोपालदास, डोडिया सादा, डोडिया सूजा, डोडिया अगरा, डोडिया जगमाल क़तार लूटनेको पहुंचे तो ख़बर लगी कि क़तार निकलकर पेश्तर अजमेर चली गई. इस लिये ये निराश होकर पीछे फिरे, उस वक़ अब्दुल्लाखांकी बादशाही फ़ौज, जो थानोंपर तईनात थी, जा पहुंची, नाडौलसे भाटी गोविन्ददास भी अपनी जमइयत लेकर शाही फ़ौजमें शामिल हुआ, भादराजून और मालगढ़के पास शाही मुलाज़िमोंसे मुक़ाबला हुआ. सख़्त लड़ाई होनेके बाद कुंवर कर्णसिंह भागकर पहाड़ोंमें चलेगये, तरफ़ैनके अक्सर बहादुर कामआए. कर्णसिंहकी तरफ़के नीचे लिखेहुए राजपूत मारेगये-

दूदा सांगावत, राठौड़ हरिदास, नारायणदास सोनगरा, डोडिया गोपालदास, डोडिया सादा, डोडिया सूजा, डोडिया अगरा, और डोडिया जगमाल. यह लड़ाई विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] में हुई; इसके बाद अब्दुल्लाखांका लश्कर कुछ दिनों तक मेवाड़में इधर उधर घूमता रहा, मेवाड़के राजपूत भी जहां मौक़ा देखते हम्ला करते.

एक वक़् कैलवा ग्रामके नज़्दीक राठौड़ ठाकुर मनूमनदास मुकुन्ददासोतने शाही फ़ौजपर छापा मारा; अब्दुल्लाखांसे भी बादशाहकी मन्शाके मुवाफ़िक़् काम न हुआ.

तब विक्रमी १६६८ [ हि० १०२० = ई० १६११ ] में अब्दुल्लाखांको बादशाहने चार लाख (४०००००) रु० देकर गुजरातकी सूबेदारीपर भेजा, और मेवाड़की लड़ाई पर उसके एवज् राजा वासू ( १ ) मुक़र्रर होकर रवाना किया गया.

---

( १ ) राजा वासू, तंवर राजपूत, पंजावके पहाड़ी ज़िलेमें ग्राम नूरपुरका राजा था, जो इलाके जालन्धर ज़िले कांगड़ामें गिनाजाता है.— इनका कुछ तवारीख़ी हाल, नूरपुरके पुरोहित सुखानन्दके काग़ज़ोंसे मालूम हुआ, जो विक्रमी १९४१ [ हि० १३०१ = ई० १८८४ ] में यहां ( उदयपुर ) आया था. उस पुरोहितके पास एक ताम्रपत्र भी, महाराणा अमरसिंहके समय विक्रमी १६६९ श्रावण कृष्ण ९ [ हि० १०२१ ता० २३ जमादियुल अव्वल = ई० १६१२ ता० १३ जुलाई ] का है, जिसकी नक़्ल तारीख़ी अहवालके साथ नीचे लिखीजाती है–

राजा दलीपसे जब दिल्लीकी राजधानी छूटी और उनके पुत्र जैतपाल भेटने नूरपुरको अपनी राजधानी बनाया, उससे २४ वीं पीढ़ीमें राजा वासू हुआ, जो बादशाह जहांगीरके भेजनेसे अपने प्रधान पुरोहित व्यास समेत चित्तौड़ आया. उस समय राजा वासूने महाराणा अमरसिंहसे एक मूर्ति, जो अब नूरपुरके क़िलेमें व्रजराज स्वामीके नामसे प्रसिद्ध और मीरां बाईकी पूजीहुई बताते हैं, मांगी. इसपर महाराणाने उनके प्रधान पुरोहित व्यासको वह मूर्ति एक ग्राम समेत, जिसका ताम्रपत्र नीचे लिखाजायगा, संकल्प करके देदी, इससे मालूम होता है– कि महाराणा अमरसिंहसे राजा वासू मिलगया था.

राजा वासूका बेटा जगतसिंह बड़ा प्रतापी हुआ, जो बादशाहोंसे अक्सर लड़ता रहा. इनके क़ब्ज़ेमें कई लाखका मुल्क होगया था, यह जगतसिंह किसी साधूके कहनेसे हिमालयमें जाकर गलगया.

जगतसिंहसे छठी पीढ़ीमें राजा वीरसिंहके समयमें राजा रणजीतसिंह सिक्खने इनका बहुतसा मुल्क छीनलिया, बल्कि धोखेसे लाहौरमें उसे बुलाया और क़ैद करके क़िला नूरपुर भी लेलिया. वीरसिंहने क़ैदसे छूटने बाद कईवार हम्ले किये, लेकिन राजधानी हाथ न आई.

हालके राजाके क़ब्ज़ेमें दस बारह हज़ार सालाना आमदनीकी जागीर रहगई है, और नूरपुरसे आध मीलके फ़ासिलेपर खुश नगरमें उनका निवास है.

विक्रमी १९१४ [ हि० १२७४ = ई० १८५७ ] के ग़द्र बाद सर्कार अंग्रेज़ीने क़िले नूरपुरको तोड़कर आधा क़िला और कुछ बागबगीचा भी वर्तमान राजा जशवंतसिंहको देदिया.

१ राजा दलीप, २ जैतपाल भेट, ३ त्रिपाल, ४ बुधपाल, ५ जरीपत, ६ जयपाल, ७ सकूनी, ८ जगरथ, ९ राम, १० गोपाल, ११ अर्जुन, १२ विद्धारथ, १३ झगड़मल्ल, १४ राम २, १५ कीरत, १६ धीरवो, १७ जसता, १८ कैलाश, १९ नागा, २० पृथ्वीमल्ल, २१ भीलो, २२ बख़्तमल्ल, २३ पहाड़मल्ल, २४ वासू, २५ जगतसिंह, २६ राजरूप, २७ मानधाता, २८ दयाधाता, २९ पृथ्वीसिंह, ३० फ़त्हसिंह, ३१ वीरसिंह, ३२ यशवन्तसिंह.

महाराणा अमरसिंहने बादशाही फ़ौजसे १७ सत्रह लड़ाइयां कीं, जब अपने बापका क़ौल इनको याद आता तो जोशमें आकर शाही मुलाज़िमोंपर हम्ला किये बग़ैर नहीं रहते थे, लेकिन् तमाम हिन्दुस्तानके बादशाहके साथ छोटेसे मुल्कका मालिक कब बराबरी करसक्ता है, इसके सिवाय आमदनीका मुल्क बिल्कुल वीरान होगया, रिआया इलाक़ा छोड़कर भागगई, सिर्फ़ पहाड़ी हिस्सोंमें भील लोग आबाद थे, जिनसे सिवाय लड़ाईकी मददके कुछ आमदनी नहीं होसक्ती थी. विक्रमी १६२४ [ हि० ९७५ = ई० १५६७ ] से वि० १६७० [ हि० १०२२ = ई० १६१३ ] तक हज़ारहा आदमियों व रणवास वग़ैरहका ख़र्च बड़ी मुश्किलसे चलायागया.

राजपूत लोगोंमेंसे दोदो चारचार पीढ़ियां सबकी मारीगई थीं. पहाड़ोंके चारों तरफ़से बादशाही फ़ौजोंके हम्ले होते थे, आज एक बहादुर राजपूत मौजूद है, कल मारागया, परसों उसके बेटेने भी हम्लाकरके अपनी जान दी, उनकी बेवा औरतें अपने ख़ाविन्दोंके साथ आगमें जलती थीं, उन लोगोंके लड़के लड़की, जो कमउम्र रहजाते, उनकी पर्वरिश भी महाराणाको ही करनी पड़ती थी; जिसपर

---

ताम्रपत्रकी नक़्ल.
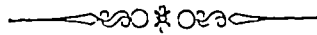
श्रीरामो जयति.

श्रीगणेशप्रसादात्. श्रीएकलिंग प्रसादात्.
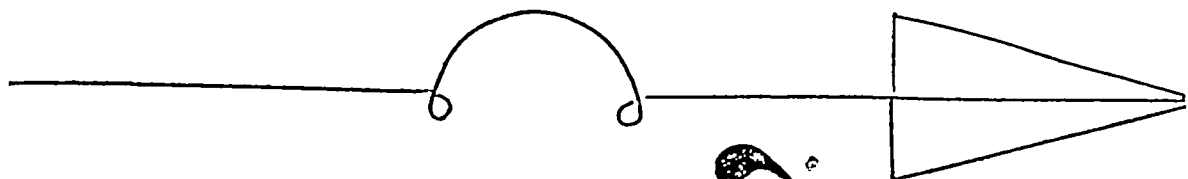
सही

महाराजाधिराज महाराणा श्रीअमरसिंहजी आदेशात् पुरोहित व्यास कस्य,

( १ ) ग्राम झीथ्यो रेवलीरी पाखतीरो उदक आघाट करे मया कीधो. विक्रमी १६६९ वर्षे सावण कृष्णा ९ रवे ऊ स्वदत्त परदत्तं वायेहरंति वसुंधरा षष्ठीवर्ष सहस्राणां विष्टायांजायते क्रमी दुए श्रीमुख प्राति दुए साह डूंगरसी लिखतं पंचोली शंकरदास.

( १ ) अर्थ— रेवल्याके पासका झींत्या ग्राम समर्पण किया.

भी यह खौफ़ था कि हमारे राजपूतोंकी औलाद मुसल्मानोंके हाथ पड़कर गुलाम न बनाई जावे. अगर कभी ऐसा हो भी जाता था तो उस बातका सद्मा महाराणा अमरसिंहके दिलमें छेद करता था, एक एक दिनमें कई जगह रसोई (खाना) करना पड़ा है. यानी एक जगह भोजन तय्यार हुआ और शाही मुलाज़िमोंने आघेरा, फिर दूसरी जगह बनाना पड़ा. वहां भी दुश्मनोंने आदबाया, तब तीसरी जगह किसी पहाड़की खोहमें रोटियां होने लगीं. छोटे छोटे बच्चे अपने अपने मा बापसे खाना मांगते. वे उनको दम देदेकर दिन कटाते थे. लेकिन धन्य है मेवाड़के उन बहादुर राजपूतोंको कि ऐसी तक्लीफ़ें उठानेपर भी अपने बाप दादोंकी इज़्ज़त और कहावतोंपर ख़याल करके मरते और मारते थे. और जो कोई आदमी निकलकर शाही मुलाज़िम होता था उसपर हज़ारहा लानत मलामत करते थे, लेकिन् जो महाराज शक्तिसिंहके समान अपने मालिककी खैरख़्वाहीको दिलमें मज़बूत रखकर शाही नौकरी करते, ऐसे लोगोंको अपने एल्चीके मुवाफ़िक़ जानकर ख़बर वगै़रहका काम निकालते थे. यह लानत मलामत राजपूत लोग महाराज जगमाल व सगर जैसे क़ौमी दुश्मनोंपर करते थे.

जब शाहज़ादा पर्वेज़ व महाबतख़ां और अब्दुल्लाख़ां वगै़रह शिकस्तें खाखाकर नाउम्मेद होचुके, तो बादशाह जहांगीरने सोचा कि बगै़र हमारे जानेके उदयपुरका महाराणा ताबे नहीं होसक्ता. तब खुद बादशाह विक्रमी १६७० आश्विन शुक्ल ४ [हि० १०२२ ता० २ शाबान = ई० १६१३ ता० १९ सेप्टेम्बर] को सात घड़ी रात गये आगरेसे अजमेरकी तरफ़ रवाना होकर मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [ता० ५ शव्वाल = ता० २० नोवेम्बर] को अजमेरमें दाख़िल हुआ.

बादशाहने अपना क़ियाम अजमेरमें रखना मुनासिब जानकर शाहज़ादे खुर्रमको मेवाड़ पर जानेका हुक्म दिया. शाहज़ादेको कपड़े, गहना, हाथी, घोड़े, हथयार, खिल्अ़त व ख़िताबसे बढ़ाकर नीचे लिखे हुए सर्दार, उमरावोंको साथ दियाः—

जोधपुरके राजा सूरसिंह राठोड़ उदयसिंहोत, नवाज़िशख़ां, सैफ़ख़ां, तर्बियतख़ां, अबुल्फ़त्ह दक्षिणी, राजा सूरसिंहके भाई कृष्णगढ़के राजा कृष्णसिंह, सगर राणा उदयसिंहोत, सुलैमानबेग वाक़िआ़ नवीस, बूंदीके राव हाड़ा रत्न, राजा सूरजमल्ल तंवर, नूरपुरके राजा बासूका बेटा जगत्सिंह, राजा विक्रमादित्य भदौरिया, सय्यद अ़ली-ख़िताब सलाबतख़ां, सय्यद हाजी हाजीपुरी, शाहरुख़का बेटा मिर्ज़ा बदीउज़्ज़मां, मीर हिसा-मुद्दीन, रज़्ज़ाक़बेग उज़्बक, दोस्तबेग, ख़्वाजा मुहसिन, अरबख़ां, बारहका सय्यद शिहाब.

विक्रमी १६७० पोष शुक्ल १५ [हि० १०२२ ता० १४ ज़ीक़ाद =

१६१३ ता० २६ डिसेम्बर] को शाहज़ादा खुर्रम, जिसकी उम्र २१ वर्ष ११ महीने ११ दिनकी थी, रवाना कियागया, और सूबे मालवेसे खान् आज़म मिर्ज़ा अज़ीज़ कोकल्ताश सूबेदार, फ़रेदूंखां, सर्दारखां और वहांके सब मन्सबदार; सूबे गुजरातसे अब्दुल्लाखां बहादुर सूबेदार, दिलावरखां काकड़, सज़ावारखां, ज़ाहिद, यारबेग वग़ैरह मन्सब्दार; सूबे दक्षिणमें, जो बादशाही लश्कर शाहज़ादे पर्वेज़के तह्तमें था, उसमेंसे राजा नरसिंहदेव बुंदेला, मुहम्मदखां, याकूबखां नियाज़ी, हाजीबेग उज़्बक, मिर्ज़ा मुराद सफ़वी, शिर्ज़ाखां, अल्लाह यार कूका, गज़नीखां जालोरी वग़ैरह; सबको हुक्म हुआ कि शाहज़ादे खुर्रमकी मददके वास्ते शाही लश्करमें शामिल हों.

हमको एक बात बादशाहनामेकी जिल्द १ सफ़्हे १८५ से, जिसको मौलवी अब्दुल हमीद लाहौरीने लिखा है, बयानकरनी ज़ुरूर हुई, क्योंकि फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंके सिवाय खुद बादशाह जहांगीर भी अपनी शाही फ़ौजोंकी शिकस्त व ख़राबियोंके हालको हज़्म करगया. मुल्ला अब्दुल् हमीद लिखता है कि राणाकी मुहिम् पर जानेसे शाहज़ादे पर्वेज़ व महाबतखां व अब्दुल्लाखांने सिवाय परेशानी व सरगर्दानीके कुछ फ़ायदा न उठाया.

इस कलामके देखने से पढ़ने वालोंको यक़ीन होगा कि ऊपर लिखीहुई शिकस्तोंसे भी बढ़कर शाही फ़ौजोंकी ख़राबियां हुई हैं. हमको मेवाड़ी मुवर्रिख़ जानकर तरफ़्दारीका दोष कोई न लगावेंगे, हमने बहुतसी लड़ाइयोंका हाल, जो कर्नेल् टॉड वग़ैरहने लिखा है, छोड़दिया; क्योंकि एक तो छोटी छोटी लड़ाइयोंके लिखनेसे तवालत (विस्तार) होजाती है- दूसरे हमारी तसल्लीके लायक़ सुबूत न मिले. ख़ैर अब हम अस्ली मत्लबको बयान करते हैं.

-जब शाहज़ादा बादशाही लश्कर समेत मांडलमें, जो मेवाड़में उदयपुरसे ईशान कोनकी तरफ़ क़रीब ४० कोसके है, पहुंचा, तो मुल्ला अब्दुल् हमीद बादशाह नामेकी जिल्द १ सफ़्हे १८७ में लिखता है कि "सुल्तान पर्वेज़ व महाबतखां इस जगहसे आगे न बढ़े थे, सो वास्तवमें उनका यहांसे कामयाबीके साथ आगे बढ़ना नहीं जानपड़ता, क्योंकि जब बढ़े तब ख़राब हालतसे वापस आये,-शाहज़ादे खुर्रमको पहिले यह फ़िक्र हुई कि उदयपुरमें हमारे पास रसद पहुंचनेका पक्का बन्दोबस्त कियाजावे, इसीवास्ते एक फ़ौजका टुकड़ा जमालखां तुर्कीके साथ मांडलमें छोड़ा. दूसरा फ़ौजका हिस्सा कपासनमें दोस्तबेग और ख़्वाजह मुहसिनके हवाले किया, तीसरा थाना ऊंटालेमें सय्यद हाजीके सुपुर्द किया, चौथा नाहर मगरेके थानेपर अरबखांके हवाले रहा, पांचवां थाना डबोकमें नियत किया, और छठे देबारीके थानेपर सय्यद शिहाब

बारहको रक्खा; ये छओं थाने बिठाकर शाहज़ादा उदयपुर आया, जहां दूसरी तय्यारीकी. राजा सूरसिंहने शाहज़ादेको ऊंटालेमें ठहरनेकी राय दी थी, लेकिन् वह उसकी सलाहके बर्खिलाफ़ उदयपुरमें विक्रमी १६७० फाल्गुन [ हि० १०२३ मुहर्रम = ई० १६१४ फ़ेब्रुअरी ] को आपहुंचा; गुजरातसे अब्दुल्लाख़ां भी बहुत बड़ी जमइयतके साथ उदयपुरमें शाहज़ादेके पास हाज़िर हुआ. खुर्रमने पहाड़ोंमें घुस कर हम्ला करनेका पक्का विचार करके नीचे लिखे लोगोंको अलहदा अलहदा तय्यार किया--

पहिले गिरोहका अफ़्सर अब्दुल्लाख़ां बहादुर फ़ीरोज़जंग, जो अहमदाबादसे आया था; दूसरी फ़ौजका मालिक दिलावरख़ां काकड़, और उसकी मददके लिये बैरमबेग बख़्शी; तीसरी सेनाका अफ्सर सय्यद सैफ़ख़ां व कृष्णगढ़का राजा कृष्णसिंह राठौड़; चौथे गिरोहका मुख़्तार मीर मुहम्मद तक़ी मीरबख़्शी हुआ; इन चारों फ़ौजोंने हर तरफ़ लूटना, मारना, जलाना, गिरिफ़्तार करना, शुरू किया.

महाराणा अमरसिंहने भी अपने बहादुर राजपूत, चहुवान राव बल्लू, चहुवान रावत पृथ्वीराज, राठौड़ सांवलदास, झाला हरदास, पंवार शुभकरण, चूंडावत रावत मेघसिंह, चूंडावत रावत मानसिंह, झाला कल्याण, सोलंखी वीरमदेव, राठौड़ कृष्णदास, सोनगरा केशवदास भाणावत, डोडिया जयसिंह भीमसिंहोत वगैरहको मए अपने काका, भाई व बेटोंके जुदा जुदा सेनापति बनाकर शाही फ़ौजका मुक़ाबला करनेको तय्यार किया. राजपूत लोगोंका यह काम था कि पहाड़ों में शाही फ़ौजको न घुसने दें, उनको ग़ाफ़िल देखकर धावा करें और रसद लूटें. लेकिन खुद जहांगीर अजमेरमें बैठकर कुल हिन्दुस्तानकी फ़ौजको मेवाड़के पहाड़ों पर बिदा करचुका, तो कहांतक एक मेवाड़का राजा लड़सक्ता था. बादशाही फ़ौज पहाड़ोंमें अपना क़ब्ज़ा बढ़ाती जाती थी. अब्दुल्लाख़ांने, जो पहाड़ोंमें बढ़गया था, महाराणा अमरसिंहके आलमगुमान नामी हाथीको, जो पांच हाथियों समेत उसके हाथ आया, विक्रमी १६७१ चैत्र शुक्ला ११ [ हि० १०२३ ता० ९ सफ़र = ई० १६१४ ता० २२ मार्च ] को लाकर शाहज़ादेके नज़्र किया.

जब महाराणा अमरसिंहने शाही फ़ौजोंका ज़ियादा ज़ोर शोर देखा तो लाचार चावंडको छोड़कर ईडरके पहाड़ोंकी तरफ़ चले. उस वक्त ये हाथी पीछे रहगये थे, जिनको अब्दुल्लाख़ांके आदमियोंने गिरिफ़्तार करलिया. दिलावरख़ां व बैरमबेगके क़ब्ज़ेमें भी महाराणाके कई हाथी आगये और दूसरे सर्दारोंने भी जिसके जो हाथ आया शाहज़ादेके पास पहुंचाया. शाहज़ादेने आलम् गुमान हाथी समेत सत्रह हाथी फ़त्ह किये हुए बादशाह जहांगीरके पास अपने दीवान जादूरायके

साथ अजमेर भेजदिये. बादशाहने इन हाथियोंको देखकर और फ़त्हकी खुशख़बरी सुनकर अपने बेटे खुर्रमको बहुत तारीफ़के साथ ख़ास अपने हाथसे फ़र्मान लिख भेजा. शाहज़ादेने बादशाही फ़ौजोंके नीचे लिखेहुए थाने क़ायम करदिये. कुम्भलमेरमें बदीउज़्ज़मांको अच्छे बन्दूक़दारों समेत, झाड़ोलमें सय्यद सैफ़ख़ांको, गोगूंदेमें राणा सगरको, आंजणेमें दिलावरख़ांको, ओगनेमें फ़रेदूंख़ां और हाड़ा रत्नसिंह बूंदी वालेको चावंडमें, मुहम्मद तक़ी मीरबख़्शीको, बीजापुरमें बैरमबेगको, जावरमें इब्राहीमख़ांको, मादड़ीमें मिर्ज़ा मुरादको, पानड़वेमें सज़ावारख़ांको, केवडेमें ज़ाहिद, और सादड़ीमें राठौड़ राजा सूरसिंहकी फ़ौजको मुक़र्रर किया.

इन थानोंमेंसे हरएकपर इसक़दर फ़ौज रक्खीगई थी- कि एक दूसरेकी मददका सहारा न देखे. इसतरह मेवाड़के उत्तरी पहाड़ोंको शाही फ़ौजोंने क़ब्ज़ेमें करलिया, जिससे उनके लिये रसद आनेमें कुछ भी खटका न रहा, क्योंकि उत्तरी मेवाड़में राजपूतों का पहुंचना बिल्कुल बन्द होगया था. महाराणा और उनके सर्दार व बालबच्चे दक्षिणी पहाड़ोंमें रहे. गर्मियोंके मौसममें कभी कभी कहीं कहीं लड़ाइयां होती रहीं. बदनौरवालोंका बुज़ुर्ग जयमल्ल मेड़तिया जो विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] को चित्तौड़की लड़ाईमें मारागया था, उसका बेटा मुकुन्ददास गोड़वाड़में राणपुरके मन्दिरोंकी ख़राबी करनेवाली बादशाही फ़ौजसे लड़कर मारा गया, जिसका बेटा मन्मनदास बदनौर और विजयपुरका जागीरदार रहा.

झाला मानसिंह देलवाड़ेका जागीरदार, जिसकी शादी महाराणा उदयसिंहकी बेटीसे हुई थी, और जो विक्रमी १६३३ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० ९८४ ता० १ रबी-उलअव्वल = ई० १५७६ ता० ३१ मई] को हल्दीघाटीमें शाही फ़ौजसे लड़कर मारागया था, उसके बेटों शत्रुशाल, कल्याण, और आसकरण मेंसे शत्रुशाल महाराणा प्रतापसिंहकी बहिनका बेटा होनेके कारण तेज़ मिज़ाजीके साथ महाराणासे बोलचालमें खटपट रखता था. किसी वक्त देलवाड़ेमें दस्तक (धौंस) होनेपर रूबरू महाराणा प्रतापसिंहसे तक़ार होगई. शत्रुशाल नाराज़ होकर निकला, महाराणाने अंगरखेका दामन पकड़कर रोका, उन्होंने पेशक़ब्ज़से दामन काटडाला. महाराणाने फ़र्माया कि शत्रुशालके नामवालेको मैं कभी अपने राजमें न रक्खूंगा, शत्रुशालने अर्ज़ किया कि मैं भी ज़िन्दगी भर सीसोदियोंकी नौकरी न करूंगा. यह कहकर वह यहांसे निकलकर जो-धपुरके महाराजा सूरसिंहके पास चलागया. वहांसे उनको भाद्राजूनका पट्टा जागीरमें मिला. महाराणाने राठौड़ मन्मनदासको देलवाड़ा इनायत किया, मन्मनदासने अर्ज़ की कि शत्रुशाल आपकी बहिनके बेटे हैं, अर्ज़ मारूज़ या मुहब्बतसे उनका ठिकाना उनको पीछे दियाजावे तो मेरी हंसी होगी, महाराणाने क़सम खाकर फ़र्माया कि

तुम्हारी ज़िन्दगी तक देलवाड़ा तुमसे हर्गिज़ तागीर (तग़ीर) न होगा, शत्रुशालके छोटे भाई कल्याण और आसकर्ण देलवाड़ा ख़ालिसे होनेसे कुछ अर्से तक चीरवामें, जो ब्राह्मणोंका सासण ग्राम है, रहे; जब महाराणा प्रतापसिंहका देहान्त हुआ और महाराणा अमरसिंहने बहुतसी लड़ाइयां बादशाही फ़ौजोंसे कीं, तब कल्याणने भी महाराणाको कई लड़ाइयोंमें अपनी बहादुरी दिखलाई. महाराणाने किसी जागीरका हुक्म दिया. कल्याणने अर्ज़ की कि हमारे बापका ठिकाना तो देलवाड़ा है वही इनायत कीजिये. महाराणा अमरसिंहने फ़र्माया कि देलवाड़ातो राठोड़ मन्मनदासकी ज़िन्दगी तक उनके क़ब्ज़ेमें रखनेके लिये श्री दाजीराज (पिता) का हुक्म है, जिसको हम नहीं मिटासके.

विक्रमी १६६७ [हि० १०१९ = ई० १६१०] में जब राठोड़ मन्मनदासका देहान्त हुआ तब राज कल्याणको महाराणा अमरसिंहने देलवाड़ा इनायत किया, और राठोड़ मन्मनदासके बेटे सांवलदास बदनोरमें रहे, जब इस वक्त शाहज़ादे ख़ुर्रमकी फ़ौजके ज़ोरशोर से भालोंको अपने ख़ैरख़्वाह राजपूत जानकर महाराणा अमरसिंहने राज कल्याणको हुक्म दिया कि तुम जोधपुर जाकर अपने भाई शत्रुशालको ले आओ, हम उनको दूसरी जागीर देंगे; महाराणाके हुक्मसे कल्याण जोधपुरकी तरफ़ गया, शत्रुशाल अपने मालिक पर बादशाही फ़ौजकी चढ़ाई जानकर सूरसिंहके साथ शाही फ़ौजमें न आया. जोधपुरमें कुंवर गजसिंहने शत्रुशालको हंसीके तौरपर कहा कि आज कल महाराणा अपनी रानियों समेत पहाड़ों में दौड़ते फिरते हैं. शत्रुशालने कहा कि हां बादशाहोंको बेटियां देकर आराम लेना दूसरोंके अनुसार उन्होंने पसन्द नहीं किया. और इस इज़्ज़तकी तक्लीफ़ को वे इज़्ज़तीके आरामसे बिहतर जानकर मुसल्मानोंको वे अपनी बहादुरी दिखला रहे हैं. कुंवर गजसिंहने गुस्सेमें आकर कहा कि ऐसे ख़ैरख़्वाहोंको तो शाही फ़ौजसे लड़कर मरना चाहिये. शत्रुशाल उठखड़ा हुआ और कुंवरसे कहा कि मैं आपकी नसीहतको ग़नीमत जानकर शाही फ़ौजसे लड़ूंगा.

शत्रुशाल जोधपुरसे रवाना होकर मेवाड़की तरफ़ आता था, कल्याण रास्तेमें मिला और महाराणाका हुक्म अपने भाईको सुनाया. शत्रुशालने सुनकर जवाब दिया कि मैंने महाराणाकी नौकरी करनेकी सौगन्द खाई है, और जिस कामके लिये बुलाते हैं वह काम करना मुझे फ़र्ज़ है, जोधपुरकी सरगुज़श्त भी अपने भाईको कहसुनाई. दोनों भाइयोंने सलाहकरके मेवाड़ मारवाड़के बीच पहाड़ी घाटेकी अंबल् संबल्की नालमें नव्वाब अब्दुल्लाख़ांके ज़ेरदस्त जो शाही फ़ौज तईनात थी, उसपर हमला किया. तरफ़ैनके बहादुर ख़ूब लड़े; भाला भोपत वग़ैरह बहुतसे राजपूत कल्याण

और शत्रुशालके मारेगये. शत्रुशाल तो ज़ख्मी होकर मेवाड़के पहाड़ोंमें चलागया, और कल्याण अपना घोड़ा मारेजाने और खुद ज़ख्मी होनेके सबब बादशाही फ़ौजसे घिरगया. वह एक मन्दिरमें बैठकर कमानसे तीर चलाने लगा और जबतक तीर रहे किसीको नज़्दीक न आने दिया; जब तीर न रहे तो लोगोंने उसको चारों तरफ़से हमलाकरके गिरिफ्तार करलिया. नव्वाब अब्दुल्लाखांनेराज कल्याण ज़ख्मीको पालकी में बिठाकर शाहज़ादे खुर्रमके पास भेजदिया. शाहज़ादेने मर्हम पट्टी वगैरह इलाजका हुक्म दिया. शत्रुशालने पहाड़ोंमें तन्दुरुस्तहोकर गोगूंदेके थानेपर, जहां राणा सगर वगैरह शाही मुलाज़िम बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ तईनात थे, हमला किया. क्योंकि शत्रुशाल तो जोधपुरसे मरना ठानकर निकला था इसलिये गोगूंदेकी फ़ौजसे लड़ता-हुआ रावल्यां गांवमें मारागया. यह खबर सुनकर महाराणा अमरसिंहने सब सर्दारों केसाम्हने हुक्म दिया कि शत्रुशाल गोगूंदेमें मारागया जिससे गोगूंदा ही हमने उसकी औलादके लिये जागीरमें इनायत किया. फिर अमन हुआ तो उसवक्त गोगूंदा शत्रु-शालके छोटे बेटे कान्हकी जागीरमें रहा और बड़े नाथसिंह मदारके जागिरदार कह-लाये, जो अब देलवाड़ेके ताबेदार राजपूतोंमें हैं. इसका ज़ियादा ज़िक्र सर्दारोंकी तवारीखमें लिखाजायगा. राज कल्याणको तन्दुरुस्त होनेके बाद शाहज़ादेने क़ैदसे छोड़ दिया, [जिसका ज़िक्र बादशाहनामेकी पहिली जिल्दके अव्वल दौर, दूसरे हिस्सेके दूसरे सफ़्हेमें लिखा है.]

बर्सात आनेपर शाही फ़ौजोंने अपने अपने थानोंको मज़बूत किया, और मेवाड़ी राजपूत कभी २ रात या दिनको धावा मारजाते थे. जब बर्सात गुज़री और सर्दीका मौसम आया तो शाही फ़ौजने ज़ियादा ताक़त पाई.

दिन बदिन मेवाड़ी राजपूतोंका बल कम होने लगा, तब सब रियासती आदमियोंने कहा कि अब सुलह किये बिना राज्य रहना कठिन है; महाराणाने हुक्म दिया कि एक दोहा हम लिखदेते हैं जो खानखानां अब्दुर्रहीमके पास पहुंचायाजाय, क्योंकि वह अक्बर बादशाहका मुसाहिब और हमारा ईमान्दार मित्र है; उसका उत्तर आनेपर हम जवाब देंगे. यह दोहा किसी दोस्तकी मारफ़त क़ासिदोंके हाथ दाक्षिण में खानखानांके पास पहुंचाया गया, और उसने भी उसका जवाब दोहेमें लिखभेजा- वे दोनों दोहे नीचे लिखेजाते हैं.

महाराणाका लिखाहुआ दोहा

गोड़ कछाहा राठवड़ गोखां जोख करंत ॥
कहजो खानांखानने बनचर हुआ फिरंत ॥ १ ॥

अर्थ– गौड़ कछवाहा राठौड़ महलोंके झरोखोंमें आराम करते हैं इसवास्ते ख़ानांख़ानको कहना कि हम ( महाराणा ) बन मानुष हुए फिरते हैं. महाराणाका यह इशारा था. कि तुम कहो तो हम भी अपनी आज़ादीको छोड़कर मुसल्मान बादशाहोंके नौकर कहलावें–यह दोहा पढ़कर ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमने मारवाड़ी भाषा ही में जवाबी दोहा लिखा–

जवाबी दोहा.

धर रहसी रहसी धरम खपजासी खुरसाण ॥
अमर विशंभर ऊपरा राखो निहचो राण ॥ १ ॥

अर्थ—ज़मीन और ईमान रहेगा. और खुरासानी लोग अर्थात् मुग़ल नाश होजाएंगे. ऐ राणा अमरसिंह आप इस दुन्याके पालने वाले पर भरोसा रक्खें. अब्दुर्रहीमका यह मत्लब था कि ज़मीन और ईमान्दारी सदा क़ायम रहती है और बादशाहत हमेशा ग़ारत हुआकरती है. इसलिये हिम्मत रखना चाहिये, अर्थात् गैरतके आरामसे इज़्ज़तकी तक्लीफ़ अच्छी है.

यह ख़ानख़ानां अरबी. फ़ार्सी. तुर्की. संस्कृत. और हिन्दीका आलिम व शाइर था. हिन्दी शाइरोंके ज़रीएसे महाराणाकी और उसकी दोस्ती थी.

इस दोहेके पहुंचनेसे महाराणाको और भी ज़ियादह हिम्मत हुई, और अपने सर्दारोंको यह दोहा बतलाया; फिर कुछ दिनों तक ऐसी लड़ाइयां होती रहीं, कि ज़िन्दगीकी उम्मेद भी बाक़ी न रही.

इसलिये कुल राजपूतोंने मिलकर कुंवर कर्णसिंहसे सलाह की कि अब क्या करना चाहिये ? खानेको अन्न व पहन्नेको कपड़ा नहीं रहा, लड़ाईका सामान भी नहीं है, एक एक घरानेकी चार चार पुश्तें मारीगईं. किसीके बालबच्चे मुसल्मानोंके हाथ पड़जाते हैं, तो लौंडी गुलाम बनायेजाते हैं, गूलरके फल खा खाकर दिन काटने पड़ते हैं, इसपर भी मरनेके सिवाय इज़्ज़त बिगड़नेका ख़ौफ़ लगारहता है, क्योंकि मेवाड़ी राजपूतोंके बालबच्चे पकड़े जानेपर राठौड़ व कछवाहे उनको देखकर हंसते हैं, हमारी बहादुराना हिम्मतको जिहालत और अपनी आरामीको बुद्धिमानी जानकर घमंड करते हैं; हम लोग मरनेसे डरकर आपसे यह नहीं कहते हैं. ८७ वर्ष बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें उठाकर निकाले, और यह उम्मेद नहीं कि कब तक्लीफ़ें ख़त्म होंगी. यह सुनकर कुंवर कर्णसिंहने कुल भाई बेटे और राजपूतोंकी बहादुरी व ख़ैरख़्वाहीपर हज़ारों धन्यवाद देकर कहा– कि मैं भी जानता हूं कि मेरे प्यारे भाई और राजपूत गूलरके फल खा खाकर शाही फ़ौजोंपर हम्ले करते हैं, लेकिन्

दाजीराज (अमरसिंह), श्री महाराणा प्रतापसिंहके उस तानेको जो उन्होंने बादशाही तावेदार बननेकी बावत दिया था, यादकरके हर्गिज़ सुलह करना नहीं चाहते; तब झाला हरदास और पँवार शुभकर्णने अर्ज़ की कि हम सब लोग सुलह करनेपर तय्यार होंगे तो अकेले महाराणा क्या करसक्ते हैं ? अव्वल शाहज़ादे खुर्रमके मन्शाको जांचें, कि पाटवी बड़े कुंवरके शाही दर्बारमें जानेपर सुलह करसक्ता है या नहीं ! अगर आपके जानेपर सुलह होजावे तो कुछ हर्ज नहीं क्योंकि अपने यहां पाटवी कुंवरकी बैठक बड़े दरजेके कुल उमराव सर्दारोंके नीचे है. बादशाह तो यह समझेंगे कि पाटवी कुंवर आगये और हम अपने यहांसे इस बातको एक सर्दारका जाना ख़याल करेंगे.

इन दोनों सर्दारोंकी सलाह सबने पसन्द की और एक ज़बान होकर कहदिया कि यही करना चाहिये, लेकिन् कुंवर कर्णसिंहने कहा कि यह सलाह महाराणाके कान तक पहुंचेगी तो कभी पसन्द न करेंगे, इसलिये तुम दोनों आदमी, उनके बग़ैर हुक्म शाहज़ादे खुर्रमके पास चलेजाओ. तब उन्होंने अर्ज़ की कि पेश्तर काग़ज़ भेजकर शाहज़ादेका मन्शा दर्याफ़्त कीजिये कि अगर इस शर्तपर सुलह मन्ज़ूर हो तो कीजावे, वर्ना हम लोग राजपूत हैं तलवारसे सवाल जवाब करेंगे. इसको भी सबने पसन्द किया और इस मुआमलेका काग़ज़ राय सुन्दरदास (१) की मारफ़त शाहज़ादेके पास भेजा गया, सुन्दरदासने शाहज़ादेके पास जाकर कुल हाल इस सुलहका जिसतरहपर कुंवर कर्णसिंह चाहते थे अर्ज़ किया. तब खुर्रमके इशारे से सुन्दरदासने तसल्लीका जवाब लिखा जिससे कुंवर कर्णसिंहने हरदास झाला और पँवार शुभकर्णको भेज दिया, इसके बाद शाहज़ादेने मौलवी शुक्रुल्लाह और सुन्दरदासको महाराणा अमरसिंहके पैग़ामी काग़ज़ देकर बादशाह जहांगीरकी ख़िदमतमें अजमेरको रवाना किया. इन दोनों सर्दारोंने वहां पहुंचकर कुल हाल बादशाहसे अर्ज़ किया, जिससे वह खुश हुआ, और इस खुशख़बरी पहुंचानेके एवज़ मुल्ला शुक्रुल्लाहको 'अफ़्ज़लखां' व राय सुन्दरदासको 'रायरायां' का ख़िताब देकर उसी वक्त वापस उदयपुर भेजदिया और एक फ़र्मान महाराणा अमरसिंहके नाम जिसमें बहुतसी ख़ातिर, तसल्लीकी बातें लिखी थीं, और एक ढाकेकी मलमलके टुकड़े पर बादशाहके ख़ास पंजेका निशान केसरकी रंगतका लगाहुआ, (जो अभीतक रियासतमें मौजूद है), भेजा. इस पंजेके निशानसे बादशाहका यह मत्लब था कि

---

(१) मेवाड़की पोथियोंमें जयपुरवाले कछवाहोंकी मारफ़त भेजाजाना लिखा है, शायद उनमेंसे भी कोई शरीक होगा.

इसको हमारा वचन समझकर राणा अमरसिंह कुछ खौफ़ न करे, और शाहज़ादेको लिखा कि राणा उदयपुर जिन शर्तोंके साथ दर्ख्वास्त पेश करे, वह मंज़ूर करके कुंवर कर्णसिंहको हमारे पास लेआओ. सुन्दरदास और शुक्रुल्लाहके अजमेरसे पीछे आनेपर झाला हरदास व शुभकर्ण दोनों तसल्लीका जवाव पहुंचनेसे राय सुन्दरदास की मारफ़त शाहज़ादेके पास हाज़िर हुए, जिनको वहुत तसल्ली देकर अपने आदमियोंके साथ मए शाही फ़र्मानके रुख़सत दी.

गोगूंदेके पश्चिमी पहाड़ोंमें, जिनको आज कल ढाणा बोलते हैं महाराणा अमरसिंह मए अपने राजपूत व भाई वेटोंके आगये थे- ये पहाड़ बड़ेही विकट हैं- जव इतनी वात होचुकी और फ़र्मान कुंवर कर्णसिंहके पास पहुंचगया, तव मए कुल्ल सर्दार व भाई वेटोंके कुंवर कर्णसिंहने महाराणाके पास जाकर सुलहका सव हाल अर्ज़ किया, महाराणा अमरसिंह सुनकर चुप होगये, ज़वान से कुछ न कहा, लेकिन चिहरे पर ऐसी उदासी छा गई कि मानो कोई आसमानी वला एक दम उनके सिर पर आपड़ी है. उस ख़ामोशीके आलममें थोड़ी देरके वाद महाराणाने कहा कि मैं अकेला अव क्या करसक्ता हूं? तुम सव लोगों की यही मरज़ी है तो मुझको भी सहना पड़ेगा, दाजीराजका ताना सहन करनेका इरादा मेरा नहीं था लेकिन् ईश्वरने आंखसे दिखाया. सव सर्दारोंने जो आक़िल और दाना थे, वहुतसी नसीहतोंसे अर्ज़ किया कि वादशाहके साम्हने आपके वड़े कुंवर भेजेजाते हैं, जो उम्रावके वरावर हैं. तव महाराणाने कहा कि तुम लोग जो मेरी तसल्लीके लिये वातें करते हो वह सव ठीक हैं, लेकिन् फ़र्मानकी पेश्वाईको जाना, ख़िलअ़त पहन्ना और शाहज़ादेके पास जाकर सलाम करना, जो आजतक मेरे वड़े वूढ़ोंने कभी नहीं किया, वह मुझको करना पड़ा. इस तरह अफ़्सोस करनेके वाद दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई वग़ैरह करके शाही फ़र्मान लियागया.

इसके वाद सवको एकट्ठा शाहज़ादेके पास जानेमें दग़ाका खौफ़ होनेसे, कुंवर कर्णसिंहको डेरोंपर छोड़कर महाराणा अमरसिंह शाहज़ादे खुर्रमके पास गये, भीमसिंह, सूरजमल्ल, वाघसिंह महाराणाके तीनोंवेटे, और सहसमल्ल, कल्याण भाइयों वग़ैरहने महाराणाको अकेला न जानेदिया, और साथ होलिये. इनके सिवाय दूसरे भी १०० वड़े दरजेके वहादुर राजपूत सर्दार, मए अपने अपने चुनेहुए मुलाज़िमोंके हम्राह चले, गोगूंदा मक़ाममें लश्करके नज़्दीक पहुंचे तो शाहज़ादेने महाराणाकी पेश्वाईके लिये अब्दुल्लाहख़ां वहादुर (गुजरातका सूवेदार), राजा सूरसिंह (जोधपुरवाला), राजा नरसिंहदेव वुंदेला, सुखदेव

व सय्यद सैफ़ख़ां बारहको भेजा. इन लोगोंने लश्करके बाहर आकर पेश्वाई की ओर बड़ी इज़्ज़तके साथ शाहज़ादेके पास लाये. दस्तूरके मुवाफ़िक़ सलाम कलामके बाद शाहज़ादेके बाईं तरफ़ महाराणा बिठाये गये.

महाराणा अमरसिंहकी तरफ़से एक बहुत उम्दा लाल (१) जो तोलमें ८ टांक, और क़ीमतमें रु० ६०००० का था, और दूसरे जवाहिरात बेश क़ीमत, जड़ाऊ शस्त्र, ९ हाथी व ९ घोड़े शाहज़ादेको नज़्र कियेगये. और शाहज़ादेने भी ख़िलअ़त और जड़ाऊ जम्धर व तलवार जड़ाऊ और घोड़ा १ सोनेके साज़ समेत और हाथी १ चांदीकी झूल समेत दिया, और महाराणाके ३ बेटे, दो भाई व ५ राजपूत सर्दारों मेंसे, जो बड़े इज़्ज़तदार थे, हरएक को ख़िलअ़त व जड़ाऊ जम्धर और घोड़ा, और चालीस अमीर सर्दारोंको ख़िलअ़त व घोड़ा, और पचास राजपूतोंको ख़ाली ख़िलअ़त दिये, और बड़े आदर सत्कारके साथ महाराणा को विदा किया, शुक्रुल्लाह अफ़्ज़लख़ां व सुन्दरदास रायरायांको महाराणाके पहुंचानेके लिये पेश्वाईकी जगह तक भेजा.

महाराणा पीछे अपने स्थानपर गये और कुंवर कर्णसिंहको शाहज़ादेके पास जानेकी आज्ञा दी. शाहज़ादेने भी अफ़्ज़लख़ां व रायरायां सुन्दरदासको हुक्म दिया कि आज ही कुंवर कर्णसिंहको लावें, क्योंकि आज की ही तारीख़ ज्योतिषियोंने रवानगीके लिये मुक़र्रर कीहै.

कुंवर कर्णसिंह उसी दिन शाहज़ादेके पास गये, इज़्ज़तके साथ अफ़्ज़-लख़ां और सुन्दरदास पेश्वाई करके उनको लेआये, शाहज़ादेने कर्णसिंहको ख़िल-अ़त व जड़ाऊ जम्धर व घोड़ा सोनेके सामान समेत व हाथी चांदीके गहने व झूल समेत दिया. जब शाहज़ादेने कर्णसिंहको अपने साथ अजमेर चलनेके लिये कहा, तो कर्णसिंहने अपने मुल्ककी बर्बादी व तक्लीफ़ोंका हाल कहकर जल्दी सफ़र न करसकनेका उज़्र किया, शाहज़ादेने ५०००० रु० नक़्द अपने पाससे सफ़र ख़र्चके लिये कुंवरको दिये. तब कुंवरने अपना सामान दुरुस्त करके शाहज़ादेके साथ चलनेकी तय्यारी की.

---

(१) यह लाल मारवाड़के राजा मालदेवके पास था जो उनके बेटे चंद्रसेनने महाराणा उदयसिंहको दिया था, जब शाहज़ादे ख़ुर्रमने अजमेर पहुंचकर जहांगीरकी नज़्र किया, तो जहांगीरने इस लाल पर यह खुदवाया कि (बसुल्तान ख़ुर्रम दर हीने मुलाज़मत, राना अमरसिंह पेशकश नमूद). वही लाल विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में किसी सौदागरकी मारफ़त हिन्दुस्तानमें बिकनेको आया था, जिसका ज़िक्र कई अख़बारोंमें सुना गया.

शाहज़ादा खुर्रम कुंवर कर्णसिंहको लेकर कूच दरकूच विक्रमी १६७१ फाल्गुन कृष्ण ५ [ हि० १०२४ ता० १९ मुहर्रम = ई० १६१५ ता० १८ फ़ेब्रुअरी ] को अजमेरमें पहुंचा, जहां बादशाहके हुक्मसे सब अमीरोंने शाहज़ादेकी पेश्वाई की. दूसरे रोज़ शाहज़ादा बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुआ, उस वक्तकी खुशी बादशाह जहांगीरकी जो कोई शख़्स मालूम करना चाहे वह तुज़क जहांगीरी को देखले. जब कुंवर कर्णसिंह बुलायेगये उस वक्त इंग्लिस्तानके बादशाह अव्वल जेम्सका एल्ची सर टामस रो शाही दर्बारमें मौजूद था. वह लिखता है कि "बादशाहने कुंवर कर्णको कटहरेके भीतर बुलाया और उसका सिर चूमा". बादशाह जहांगीर लिखता है कि- "मैंने कर्णकी जंगली तबीअत देखकर उसको खुश करनेके लिये मिहर्बानी की कोई बात बाक़ी न रक्खी, उसको ख़िलअ़त और तलवार जड़ाऊ, और इसके दूसरे दिन तलवार जड़ाऊ, फिर ख़ासा इराक़ी घोड़ा जड़ाऊ ज़ीन समेत बख़्शा, और उसी दिन कर्ण ज़नाने महलपर गया, तो नूरजहां बेगमकी तरफ़से ख़िलअ़त, तलवार जड़ाऊ, घोड़ा ज़ीन समेत और १ हाथी मिला. पीछे एक माला मैंने कर्णको दी. दूसरे दिन हाथी ख़ासा बख़्शा".

बादशाहने चाहा कि कर्णको तमाम चीज़ोंमेसे एक एक देनी चाहिये, इस लिये तीन बाज़, ३ जुर्रे, १ तलवार ख़ासा, १ ज़िरह बक्तर और दो अंगूठियां एक लाल जड़ीहुई दूसरी पन्नेकी, बख़्शी. इसी महीनेके अंतमें क़ालीन नम्दा तक्या और हर तरहकी खुशबू और सोनेके बरतन व दो बैल गुजराती और दुशाले वगैरह, १०० किश्तियोंमें रखकर कर्णको दिये, और दिन दिन ज़ियादा मिहर्बानी बढ़ती रही. एक माला नीलम और मोतियोंकी जिसमें लाल था बख़्शी, और पांचहज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया.

बादशाहने विक्रमी १६७२ ज्येष्ठ कृष्ण ८ [ हि० १०२४ ता० २२ रबीउस्सानी = ई० १६१५ ता० २१ मई ] में कुंवर कर्णसिंहको जिस तफ़्सीलके साथ जागीर इनायत की, उसके फ़र्मानका तर्जुमा नीचे लिखाजाता है-

जहांगीर बादशाहके फ़र्मानकी नक़्ल-

उन इक़रारोंके मुवाफ़िक़ जो १९ वीं तीर सन् १० जुलूसको हुए हैं, इस वक्तमें बड़े दर्जेवाला फ़र्मान मिहर्बानीके तरीक़ेसे जारी किया जाता है- कि पांच किरोड़ तीस लाख छः हज़ार आठसौ बत्तीस दाम, बुज़ुर्ग सर्दार मिहर्बानियोंके लायक़ बादशाहके पसन्दीदा कुँवर कर्ण, बड़ी इज़्ज़तवाले ख़ान्दानी राणा अमरसिंहके बेटेकी जागीरमें मुक़र्रर होकर सोंपे जाते हैं.

मुनासिब है कि बड़े हाकिम, अहल्कार, जागीरदार और काम्दार दीवानी वाले, बादशाही हुक्म मानने वाले और कामोंके संभालनेवाले, बड़े पाक हुक्मके मुवाफ़िक़ तामील करके उन परगनोंको, ज़िक्र किये हुए आदमीके क़ब्ज़ेमें छोड़कर, वहांके क़ायदोंमें किसी तरहका फ़र्क़ न डालें.

चौधरी, क़ानूनगो, पटैल, रअ़य्यत और किसानोंको चाहिये- कि नीचे लिखे हुए परगनोंमें ऊपर लिखेहुए आदमीको अपना जागीरदार (हाकिम) जानकर अच्छी तरह दीवानीकी रस्मोंमें क़ायदेके मुवाफ़िक़ फ़स्ल फ़स्लपर और वर्ष वर्षपर जवाबदिही करते रहें, किसी तरह इस काममें कमी न करें-- उस (कर्ण) के हिसाबी गुमाश्तोंकी सलाह और तदबीरसे बख़िलाफ़ न होकर उनकी जगहमें उनके पास हाज़िर होते रहें, हुक्मसे बख़िलाफ़ कोई काम न हो, अपने क़ायदेपर जमे रहें.

कुंवर कर्ण, राणा अमरसिंहके बेटेकी जागीर-

५ क़िरोड़.

३० लाख.

६ हज़ार ८ सौ ३२ दाम.

याद्दाश्तकी मुवाफ़िक़ तारीख़ दिन आज़र ३१ वीं उर्दीबिहिश्त सन् १० जुलूस वृहस्पति वार सन् १०२४ हिज्री ता० २२ रबीउस्सानी को बादशाही उम्दा सर्दार और बादशाही कामोंके मुख़्तार एतिमादुद्दौलाके रिसालेमें, और बड़े अ़क्लमन्द हकीम मसीहुज़्ज़मांकी चौकीमें, और छोटे ख़ैरख़्वाह इसहाक़की वाक़िआ़ नवीसीकी बारीमें, बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ, कि कुंवर कर्ण, राणा अमरसिंहके बेटेकी जागीर मुवाफ़िक़ मन्सब पांचहज़ारी ज़ात और सवारके इस तरह मुक़र्रर हो- बादशाही याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ लिखा गया.

यह लिखावट वाक़िएके मुवाफ़िक़ है- बयान लिखावटका एतिमादुद्दौला दुबारा अर्ज़ करे- बयान बादशाही दर्गाहके हाज़िरबाश मुख़्लिसख़ांके हाथसे लिखाहुआ तारीख़ ५ वीं ख़ुर्दाद सन् १० जुलूस मुवाफ़िक़ २७ वीं रबीउस्सानीको दुबारा अर्ज़ होकर, एतिमादुद्दौलाके हाथसे बुज़ुर्ग फ़र्मान लिखा जावे.

५ हज़ार सवार मए ख़ास,

मुक़र्रर तन्ख्वाह
८२ लाख दाम,
ख़ास पांच हज़ारी ज़ात
३० हज़ार ४० दाम,
१२ लाख दाम,
मुक़र्रर वर्षके सवार, रियासती हिस्सेके,
५ किरोड़,
७२ लाख दाम ख़ास चौथके,
माल
५ किरोड़
३९ लाख दाम.
३८ लाख,
६ हज़ार ७ सौ ३४ दाम— रत्लामके परगने, उज्जैनके ज़िले, मालवेके सूबेमेंसे.

याद्दाश्तके क़रारसे
दिन आज़र उर्दी सन् १० जुलूस
मुवाफ़िक़ शनिवार २८ वीं महीने सफ़र
सन् १०२८ हिज्रीको, उम्दा सर्दार, बादशाहके
वज़ीर, मुल्कके बख़्शी, ख़्वाजह अबुल् हसन, के रिसालेमें,
और मिहर्बानीके लायक़, दाजदख़्वां ख़्वाजा इब्राहीम हुसैनकी चौकीमें,
और बादशाही दर्गाहके ताबेदार अस्करी मामूरीकी वाक़िआनवीसीकी
बारीमें, बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ, कि कुँवर कर्ण, राणा अमरसिंहका बेटा "पांच हज़ारी ज़ात
और सवार", के मन्सबपर सर बुलन्द हो- याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ लिखागया— यह बयान
वाक़िआनवीसकी लिखावटके मुवाफ़िक़ है;
दूसरा बयान बुज़ुर्ग सर्दार एतिमादुद्दौलाकी लिखावटका दुबारा अर्ज़में पहुंचा, और बयान मिहर्बानीके
लायक़ मिर्ज़ा सादिक़की लिखावटका तारीख़ पहली आबान फ़रवर्दी सन् १० जुलूस मुवाफ़िक़ ६ रबी-
उल्अव्वल सन् १०२८ हिज्री "पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवार", दुबारा बादशाहसे अर्ज़ हुआ.

इक़रारकी लिखावट कुंवर कर्णके दस्तख़तसे, १९ वीं महीने खुर्दाद सन् १० जुलूसके मुवाफ़िक़. मतलब इस लिखेहुएसे यह है, कि मेरानाम कुंवर कर्ण है पांच किरोड़ उन्तालीस लाख दामकी जागीर, नीचे लिखे हुए इलाक़ोंमेंसे, शुरू खरीफ़कीसे अपनी रजामन्दीके साथ कुबूल करताहूं—कि लिखावट एतिमादुद्दौलाकी एतिबार कीजावे—नीचे लिखे मुवाफ़िक़—

५ किरोड़
३९ लाख २ सौ ६६ दाम.

लिखावट तारीख़ माह इलाही,
रवीअ़, तविश्कां ईल.

फ़स्ल रबीअ़ (१) तविश्कां ईलसे–
३ किरोड़
१५ लाख
५४ हज़ार ७ सौ दाम.

आधी रबीअ़ तविश्कां ईल बदनौर परगनेसे–
५० लाख दाम.

दूसरी लिखावट
आधी तविश्कां ईलसे.

फ़स्ल ख़रीफ़ तविश्कां ईलसे–
एक किरोड़
३५ लाख
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

ख़रीफ़ तविश्कां ईलसे

---

(१) हिन्दू लोग चार या बारह वर्षका एक युग मानते हैं, उसी तरह तुर्किस्तान के लोगोंने बारह वर्षका एक दौर ठहराकर उन बारह वर्षोंके जुदे २ जानवरों के नाम पर नाम रक्खे है– जिनका फल भी उन्हीं जानवरोंकी आदतसे निकालते हैं— उन जानवरोंके नाम यह हैं—

१ सिच्क़ां = चूहा
२ ऊद = गाय
३ पारस = चीता
४ तविश्क़ां = ख़रगोश
५ लोए = मगर
६ पीलां = सर्प
७ योत = घोड़ा
८ कोए = गाडर
९ वीचे = बन्दर
१० तख़ाक़ = मुर्ग़
११ ईत = कुत्ता
१२ तुंगोज़ = सूअर

और ईल, वर्षको कहते हैं, जिससे जानवरके नामके बाद ईल लगायाजाता है–जैसे तविश्क़ां ईल वग़ैरह.

आधेकी मुवाफ़िक़–
२ किरोड़
६२ लाख.
५० हज़ार दाम.

३८ लाख ६ हज़ार ७ सौ ३४ दाम परगने रतलाम, ज़िले उज्जैन, सूबे मालवासे निकाले गये.

रावल गिर्धरदास ज़मींदार बांसवालाकी जागीरमेंसे रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे निकालनेका हुक्म हुआ–
३३ लाख
९९ हज़ार दाम.

४४ लाख १३ हज़ार २ सौ ३६ दाम, इस तरह द्वारिकादासकी जागीरमेंसे–
५ लाख
३६ हज़ार ७ सौ ३७ दाम.

शम्शेर अरबकी जागीर रबीअ़ तविश्क़ां ईल अपने तौरपर ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे निकालने का हुक्म हुआ.–
४ लाख
७ हज़ार ७ सौ ३४ दाम.

ज़ियादा जागीर शम्शेर अरब
६२ हज़ार ५ सौ २ दाम.

२ किरोड़
३१ लाख
४३ हज़ार २ सौ ६६ दाम.

रबीअ़ तविश्क़ां ईल मेंसे–
४६ लाख
४० हज़ार ७ सौ दाम.

ख़रीफ़ तविश्क़ां ईल मेंसे–
१ किरोड़,
३५ लाख,
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईल परगने बदनौरसे–
५० लाख दाम.

(परगना.)

फूलिया वगैरह सूबे अजमेरमेंसे—
२ किरोड़,
१९ लाख,
१६ हज़ार ४ सौ ४१ दाम.

२९ लाख ७७ हज़ार ८ सौ ७५ दाम, परगने जीरणसे, जो दूसरी जागीरमें लिखा गया.

१ किरोड़
८९ लाख
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे—
४ लाख दाम.

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईल परगने बदनौरसे—
५० लाख दाम.

ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे—
१ किरोड़
३५ लाख
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

फूलिया वगैरह, रावत सगरकी जागीर मेंसे, जिसकी रबीअ़ तविश्क़ां ईल भामावत करोरीकी नौकरीमें ख़ालिसे से मुक़र्रर हुई. ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे जागीरदारको हुक्म मिला—
१ किरोड़
८ लाख
८८ हज़ार ३१ दाम.

बदनौर वगैरह—
८० लाख
५० हज़ार ५ सौ ३० दाम.

फूलिया, भामावत कम्बोकी नौकरी में—
४४ लाख दाम.
अस्ल—
३० लाख दाम.
इज़ाफ़ा—

मांडलगढ़ वगैरह हरीदासकी नौकरीमें—
६४ लाख
८८ हज़ार ३१ दाम.
मांडलगढ़, पुर, रावत सगर ४४ लाख से उतारकर—

रबीअ़ तविश्क़ांईलसे—
४ लाख दाम.
ख़रीफ़ तविश्क़ांईलसे—
२६ लाख
५० हज़ार
५ सौ ३० दाम—

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे—
५० लाख दाम.

२९ लाख
७७ हज़ार
८ सौ ७५ दाम.

२६ हज़ार ७ सौ ९५ दाम.

| बसार- | ग्यासपुर- |
| --- | --- |
| ९ लाख | २ लाख |
| ६६ हज़ार ३ सौ | ६० हज़ार ४ सौ |
| ७५ दाम. | २० दाम. |

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे-
२ किरोड़
६९ लाख
५० हज़ार दाम.

परगने उदयपुर वग़ैरह सूबे अजमेरसे-
८० किरोड़
४४ लाख
३८ हज़ार ७ सौ ६१ दाम.

---

परगना.

परगना उदयपुर वग़ैरह, जो हमेशा बादशाही नौकरोंकी तन्ख़्वाहमें रहा है, क़रार यादाश्त वाक़े दिन आज़र तारीख़ शुरू माह ख़ुर्दाद इलाही सन् १० जुलूस, मुवाफ़िक़ शुक्रवार रबीउस्सानी सन् १०२४ हिज्री, रिसाले नव्वाब शाहज़ादे इज़्ज़तदार और चौकी इरादतख़ां और नौबत वाक़िआनवीसी मुहम्मद ज़ाहिद मर्वारीदमें जारी हुआ. वाज़े परगने, इलाक़े रानाकी ज़मीनके पासवाले, मुद्दतसे दो तरफ़ा अमलमें रहे. और वह परगने मिहर्बानीसे तनख़्वाहमें जागीर दारोंको मिले; अगरचि ज़ाहिर है कि जागीरदार कुछ नहीं पाते थे.

इस वक्त कि जागीर और तन्ख़्वाह कुंवर कर्णकी पेश है. हुक्म हुआ कि आधी तन्ख़्वाह दें, और अर्ज़ करें कि परगने मज़्कूर जो काग़ज़ोंमें अमली सीग़ेमें दाख़िल हैं उनमें से आधी ग़ैर अमल तन्ख़्वाह होती है— जो हक़ीक़त उस तरफ़की बादशाहसे अर्ज़ हुई, हुक्म बादशाही सादिर हुआ. कि वह परगने मुवाफ़िक़ अर्ज़ कुंवर कर्णके उसको देवें और दीवान आधेमें ग़ैर अमल एतिबार करके तन्ख़्वाह देवें. मुवाफ़िक़ तस्दीक़ यादाश्तके लिखा गया. हाशियेका [illegible] वाक़िएके मुवाफ़िक़ है, शरह जुम्दतुल्मुल्कके ख़तसे दोबारा अर्ज़में पहुंची.

दूसरी शरह मुख़्लिसख़ांके ख़तसे तारीख़ माह इलाही सन् १०. [illegible] रबीउस्सानी सन् १०२४ हिज्री दूसरी दफ़ा अर्ज़ हुई-

६४ लाख
३८ हज़ार ७ सो ६१ दाम.

उदयपुर वगैरह- ३ परगने उदयपुर चार परगने भीलवाड़ २१ लाख २० हज़ार दाम.

बेगूं, रावत सगर की जागीरसे- ११ लाख ७५ हज़ार ७ सौ २९ दाम.

शाहज़ादा आबाद, उर्फ़ कपासन, रावत सगरकी जागीरसे- ५ लाख ८५ हज़ार ९ सो दाम.

बादशाही रिआयत- ६ लाखदाम.

ज़ियादा- ४ लाख ८५ हज़ार ९ सो दाम.

शाहआबाद उर्फ़ बसार- ९ लाख, ५ हज़ार ९ सो दाम.

बादशाही रिआयत- ८ लाख १२ हज़ार ३ सो दाम.

ज़ियादा- ९२ हज़ार ७ सो दाम.

सादड़ी, रावत सगरसे उतार कर- ४ लाख २० हज़ार ८ सौ दाम.

कोसमाना- २ लाख ६३ हज़ार ८ सो १२ दाम.

अरनोद- २ लाख.

मदारिया- १ लाख ६० हज़ार दाम.

इस्लामपुर- १ लाख ८ हज़ार ९ सौ दाम.

(परगना).

डूंगरपुर, गैर अमली, ८० लाख दाम.

बयान जुब्दतुल्मुल्कके ख़तका, डूंगरपुर की जमा एक किरोड़ साठ लाख दाम क़रार पाई, ज़ियादाकी निस्बत दूसरा जो कुछ कि हुक्म होगा अमलमें लाया जावेगा.

( परगना ).

बाक़ी ज़िला कुम्भलमेर और ज़िला गोगूंदा वग़ैरह, राना अमरसिंहके मुल्क में से-

८० किरोड़
२५ लाख
११ हज़ार
२ सौ ३९ दाम.

मुवाफ़िक़ याद्दाश्त तारीख़ दिन गोश १४ तारीख़ महीना ख़ुर्दाद इलाही सन् १० जुलूस, मुवाफ़िक़ बृहस्पति वार तारीख़ १७ जमादियुल्अव्वल् सन् १०२४ हिज्री, रिसाले एतिमादुद्दौला, चौकी हकीम मसीहुज़्ज़मां, नौबत वाक़िआनवीसी इस्हाक़में, हुक्म बादशाही सादिर हुआ, कि जागीर कुंवर कर्णकी ख़ास और सवार पांच हज़ारी, एवज़ परगने रतलाम, ज़िला उज्जैन, सूबे माल्वासे इस तरह मुक़र्रर हो.

मुवाफ़िक़ बादशाही याद्दाश्तके लिखा गया,- बयान हाशियेका मुवाफ़िक़ वाक़िएके है- बयान जुम्दतुल्मुल्कने दूसरी बार अर्ज़ किया- बयान मुख़लिसख़ांके ख़तसे तारीख़ आठवीं माह तीर सन् १० को दूसरी दफ़ा बादशाहसे अर्ज़ हुआ. बयान जुम्दतुल्मुल्कके ख़तसे यह है कि फ़र्मान आलीशान लिखा जावे.

३८ लाख

६ हज़ार ७ सौ ३४ दाम की जमा कुंवर कर्णकी बहाल जागीरमें मुक़र्रर तनख़्वाह, नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है-

२९ लाख.
१३ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

जहाज़पुर ज़िला और सूबा अजमेर, राजा सूरजसिंहकी जागीरसे-

१८ लाख
१३ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

इस्लाम्पुर, ज़िला चित्तौड़, कर्मसेन और रामसिंहसे उतारकर- ११ लाख दाम.

मन्सब वग़ैरा देनेके बाद बादशाहने लिखा है–कि "कुँवर कर्णकी रुख़्सतके दिन नज़्दीक आगये थे, और मैं अपने बन्दूक़ चलानेका फ़न् कर्णको दिखलाना चाहता था, इसी अर्सेमें शिकारी एक शेरनीके आनेकी ख़बर लाये. मैंने अह्द किया था, कि सिवाय शेरनरके मादाका शिकार न करूंगा, लेकिन् इस ख़यालसे कि शायद इसके जाने तक कोई और शेर न मिले, शेरनी ही के शिकारपर मुतवज्जिह हुआ, और कर्णसे पूछा कि जिस जगह तुम कहो वहीं गोली लगाऊं, तब कर्णने दहिनी आंखमें लगानेको कहा. इत्तिफ़ाक़से उस वक़्त हवा तेज़ चलती थी, और सवारीकी हथनी भी शेरके ख़ौफ़से घबराकर एक जगह न ठहरती थी; इन दो बातोंके होनेपर भी मेरी गोली मुक़र्रर जगह याने दहिनी आंखमें लगी–ख़ुदाने मुझे उसके सामने शर्मिन्दा न किया, ख़ास बन्दूक़ कुंवर कर्णने मांगी, मैंने उसी वक़्त उसको देदी– फिर कुंवर कर्णको मैंने मज्लिसमें क़बाय परमनर्म (दुशाला) ख़ासा और १२ हिरन और १० कुत्ते ताज़ी और दूसरे दिन ४० घोड़े और तीसरे दिन ४१ घोड़े; चौथे दिन २० घोड़े; पांचवें दिन १० चीरे, १० क़बा, १० कमरबन्द और छठेदिन १ लाल और एक कलग़ी २००० रुपयेकी कर्णको दी. जब कर्णने घरजानेकी रुख़्सत पाई, तो घोड़ा और हाथी ख़ासा और ख़िलअ़त और मोतियोंका एक झुब्बा क़ीमती ५००० रु० का और ख़ंजर क़ीमती २००० रु० का कर्णको देकर राणा अमरसिंहके लिये घोड़ा व हाथी और मुबारिकबाद सज़ावलको पहुंचानेके लिये साथ किया".

जहांगीर बादशाह फिर लिखता है– कि "मैंने कुंवर कर्णको हाज़िरीके समयसे रवानगी तक जवाहिरात, शस्त्र और नक़्द वग़ैरा जो कुछ दिया, उसकी क़ीमत दो लाख है, और सिवाय इसके ११० घोड़े और ५ हाथी दिये, शाहज़ादे ख़ुर्रमने जो सामान और नक़्द कई दफ़ा दिया है, वह भी इसके सिवाय है. बहुत सी बातें मुहब्बत व नसीहतकी राणा अमरसिंहको कहलाई."

इस पुस्तकके पढ़ने वालोंको याद रखना चाहिये कि जिस तरह ब्रिटिश इंडिया गवर्मेन्ट इस समय में अफ़्ग़ान लोगोंके साथ बर्ताव कर रही है, उसी तरह मेवाड़ी राजाओंके साथ जहांगीरने किया था, अगर यह मुआमिला वर्तमान समयसे पीछे मुसल्मान बादशाहोंके साथ मेवाड़ी राजपूतोंका हुआ होता तो हम बेशक ब्रिटिश इंडिया गवर्मेन्ट व अफ़्ग़ान राजनीतिको उपमा और उसको उपमेय कहते, लेकिन उसके पहिले और इसके पीछे होनेसे प्रतीप अलंकार समझना चाहिये. सर टॉमस रो इंग्लिस्तानके जेम्स बादशाहका एल्ची उस वक़्त वहां मौजूद था उसने केन्टरबरी के आर्चबिशप अर्थात् केन्टरबरीके मुख्य लॉर्ड

पादरीको, जो चिट्ठी लिखी उसमें बयान करता है कि "एक पोरसके ख़ान्दानका राजकुमार, मुग़ल बादशाहके दर्बारमें आया, जिसको बड़े मुग़ल (बादशाह) ने बख़्शिशों से ताबे बनाया है, तलवारके ज़ोरसे नहीं." अब सोचना चाहिये कि इस चिट्ठी के मज़्मूनसे या जहांगीरकी कर्णके साथ मुल्की तदबीरसे इस घरानेके राज कुमारोंको दिल्लीके मुसलमान बादशाह किस कठिनताके साथ अपने क़ाबूमें लाये थे.

कुंवर कर्णसिंह अजमेरसे निकलकर अपने मुल्क मेवाड़को, जितना हो सका, आबाद करतेहुये उदयपुरमें पहुंचे, और महाराणा अमरसिंहको बड़ी रंजीदा हालतमें पाया, जो अपने नामके अमर महलमें गोशानशीन थे. कर्णसिंहके आते ही राज्यका कुल काम महाराणा अमरसिंहने उनके सुपुर्द करदिया. कोठार व राय (राज्य) आंगन तथा उसके पूर्व पश्चिमकी चोपाड़ें, जो अब 'नीकाकी चौपाड़', 'पांडेकी ओवरी' तथा 'पांणेरा' के नामसे मश्हूर हैं, महाराणा उदयसिंहने बनवाये थे, और महाराणा प्रतापसिंहने थोड़ीसी इमारत चावंडमें रहनेके लायक़ बनवाली थी, क्योंकि उन को लड़ाईकी तक्लीफ़ोंसे उदयपुरमें ज़ियादा रहनेका मौक़ा न मिला. इन महाराणा अमरसिंहने, जिनका प्रधान भामाशाह ओसवाल कावड़िया गोतका महाजन बड़ा आक़िल् और बहादुर था, उसीके प्रधानेमें महलोंका अव्वल दर्वाज़ा, जिसको 'बड़ी पोल' कहते हैं, और 'अमर महल', जो ज़नाने महलोंके नज़्दीक हैं बनवाये थे.

भामाशाह बड़ी जुरअतका आदमी था, महाराणा प्रतापसिंहके शुरू समयसे महाराणा अमरसिंहके राज्यके २॥ तथा ३ वर्ष तक प्रधान रहा, इसने ऊपर लिखी हुई बड़ी बड़ी लड़ाइयोंमें हज़ारों आदमियोंका ख़र्च चलाया. यह नामी प्रधान सम्वत् १६५६ माघ शुक्ल ११ [हिज्री १००८ ता० ९ रजब = ई० १६०० ता० २७ जैन्यूअरी] को ५१ वर्ष ७ महीनेकी उम्रमें परलोकको सिधाया; इसका जन्म सम्वत् १६०४ आषाढ़ शुक्ल १० [हिज्री ९५४ ता० ८ जमादिउल्अव्वल् = ई० १५४७ ता० २८ जून] सोमवारको हुआ था, इसने मरनेके एक दिन पहिले अपनी स्त्रीको एक बही अपने हाथकी लिखी हुई दी, औरकहा कि इसमें मेवाड़के ख़ज़ानेका कुल हाल लिखा हुआ है, जिस वक्त तक्लीफ़ हो, यह बही उन (महाराणा) की नज़र करना. यह ख़ैरख़्वाह प्रधान इस बहीके लिखे हुए ख़ज़ाने से महाराणा अमरसिंहका कई वर्षों तक ख़र्च चलाता रहा. मरनेपर इसके बेटे जीवाशाहको महाराणा अमरसिंहने प्रधाना दिया था, वह भी ख़ैरख़्वाह आदमी था. लेकिन् भामाशाहकी सानीका होना कठिन था.

जब कुंवर कर्णसिंह बादशाह जहांगीरके पास अजमेर गये, तब शाह जीवराज भी साथ था. जीवराजके पीछे भी महाराणा कर्णसिंहने उसके बेटे अक्षयराजको प्रधाना दिया. इसके घरमें तीन पुश्त तक तीन महाराणाओं

का प्रधाना रहा. भामाशाहके बाप भारमल्लको महाराणा सांगाने रणथम्भोरकी क़िलेदारी दी थी, जो पीछे सूरजमल्ल हाड़ा बूंदी वालेको मिली, इसपर भी क़िले रणथम्भोरमें एतिबारी नौकरी और कुल कारबार भारमल्लके ही हाथ रहा था. इस ख़ैरख़्वाह घरानेके आदमी कुल अच्छे ही थे, परन्तु भामाशाहके नामसे ओसवाल ज़ातके हरएक महाजनको घमंड होता है, जिसतरह वस्तपाल तेजपाल, जो अन्हलवाड़ेके सोलंखी राजाओंके प्रधान थे और जिन्होंने आबूपर जैनके मन्दिर बनवाये, वैसाही पराक्रमी और नामी भामाशाहको भी जानना चाहिये, जिसकी नौकरीके एवज़ में वर्तमान समय तक उसकी औलादके कावड़िये महाजन महाजनोंके बड़े जल्सोंमें सबसे पहिले पेशानीपर तिलक पाते हैं, अब उन लोगोंमें कोई मश्हूर आदमी नहीं रहा, तो भी भामाशाहका नाम कुल मुल्कमें मश्हूर है.

कुंवर कर्णसिंह उदयपुरमें आये और मुल्क की रिआयाको बुला बुलाकर आबाद किया. कुछ दिनों बाद कुंवर कर्णसिंहके बड़े पुत्र भंवर (१) जगत्सिंहको हरदास झाला और बहुतसे राजपूतों समेत, बादशाह जहांगीरके पास भेजा; बादशाहने २०००० रुपये और १ हाथी व १ घोड़ा और ख़िलअ़त और शाल ख़ासा, भंवर जगत्सिंहको, ५००० रुपये और १ घोड़ा ख़िलअ़त हरदास झालाको देकर विदा किया.

जब कुंवर कर्णसिंह अजमेरसे उदयपुरको आये थे, तभी सगर अपने राणा पदको क़िले चित्तौड़में छोड़कर मए अपने बालबच्चोंके जहांगीरके पास पहुंचे, तब बादशाहने रावतका ख़िताब और ऊमरी भदौराका परगना उनको जागीरमें दिया, जो अबतक उनकी औलादके क़ब्ज़ेमें चला आता है. क़िला चित्तौड़ महाराणा अमरसिंहके क़ब्ज़ेमें आया, लेकिन् नारायणदास अचलदासोत शक्तावतने बेगूं का क़ब्ज़ा नहीं छोड़ा, जो सगरका जागीरदार था; कुंवर कर्णसिंहने रावत मेघसिंह गोइन्ददासोत चूंडावतको उसके निकालदेनेके लिये भेजा, मेघसिंहने बेगूं जाकर नारायणदासको समझाया- कि महाराणा अपने मालिक व मा बाप हैं, उनसे साम्हना न करना चाहिये, इस तरह समझानेसे नारायणदास वहांसे निकल गया, और बेगूं व रत्नगढ़में महाराणाका क़ब्ज़ा होगया महाराणा अमरसिंहके हुक्मसे कुंवर कर्णसिंहने बल्लू चहुवानको बेगूंका पट्टा लिखदिया, जिससे नाराज़ होकर रावत मेघसिंहने उदयपुर आकर रुख़्सत चाही

---

(१) दादेकी मौजूदगीमें कुंवरके बेटेको मेवाड़में भंवर कहते हैं.

कुंवर कर्णसिंहने तानेके तौरपर कहा कि क्या बादशाहके पास जाकर मालपुरेका पट्टा पाओगे ? इसी ताने पर रावत मेघसिंह वहांसे निकल कर दिल्ली पहुंचा. एक दिन बादशाह जहांगीरने कहा कि तुमने एक रातमें मेवाड़के कुल बादशाही थाने किस तरह उठादिये थे, उसी तरहका लिबास पहिनकर हमारे साम्हने आओ.

मेघसिंहने डेरे जाकर मए अपने राजपूतोंके काले कपड़े पहिने और सिरपर धोंकड़े की टहनियोंके एवज़ रजकेकी किलंगियें लगाकर छोटी मश्क पानी पीनेकी बग़लमें रखी, बन्दूक़ तलवार कसकर बादशाहके साम्हने आया, तब जहांगीरने कहा कि इसको 'काली मेघ' कहना चाहिये. बादशाह खुश हुआ और मेघसिंहकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ मालपुरा जागीरमें देदिया, इस बाबत बादशाही फ़र्मान व शाहज़ादे खुर्रमके निशान, जो मेघसिंह और उसके बेटे नरसिंहदासके नाम आये थे, उनका तर्जुमा यहां लिखाजाता है-

---

जहांगीर बादशाहका फ़र्मान, रावत् मेघसिंहके नाम.

फ़र्मान, अबुल् मुज़फ़्फ़र,
नूरुद्दीन मुहम्मद, जहां-
गीर बादशाह ग़ाज़ी.

इस वक्त बड़े दरजेका नेक फ़र्मान जारी किया जाता है- कि बाईस लाख अड़तीस हज़ार पांच सौ दामकी जागीर, परगने मालपुरेकी, शुरू फ़स्ल रबीअ ईत ईल ( चैती ) से, मौजूद ज़मानेके मुवाफ़िक़, रावत मेघाकी तन्ख्वाही जागीरमें मुक़र्रर कीजावे.

मुनासिब है कि हाकिम, काम्दार, जागीरदार, दीवानीके अहलकार और हिसाबी ज़िम्मेदार, पाक और बुज़ुर्गहुक्मके मुवाफ़िक़ अमल करके, उन गांव और जागीरको ज़िक्र कियेहुए आदमीके क़ब्ज़ेमें छोड़ दें- किसी तरहका फ़र्क़ और कोई तब्दीली उसके क़ायदोंमें न करें.

चौधरी, क़ानूनगो, पटैल, रअय्यत, किसान वग़ैरहको चाहिये कि ज़िक्र किये हुए रावतको अपना जागीरदार ( हाकिम ) जानें.

दीवानी और माली हिसाब किताबको दस्तूरके मुवाफ़िक़ हर फ़स्ल और हर वर्ष पर उसे समझावें और जवाब देते रहें.

किसी तरह इसमें कमी न करें, उसकी हिसाबी तदबीरोंसे बर्ख़िलाफ़ी न करके हर बातके लिये ज़िक्र कियेहुए रावतके पास हाज़िर होते रहें-हुक्मकी ताबेदारी ज़रूर समझें.

( काग़ज़की पीठकी तश्रीह ).

जागीर

रावत् मेघाके नाम याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ यह है–

सुब्हके वक़ दिन आस्मान २७ इस्तिक़ार इलाही सन् १० जुलूस, बुधवार हिज्री १०२५ ता० २७ सफ़र (१) को जुम्दतुलमुल्क, मदारुलमहाम, मुख़्तारुद्दौला, एतिमादुद्दौलाके रिसालेमें, और नेकबख़्त मुस्तफ़ाख़ांकी चौकी, और बादशाही ताबेदार मुहम्मदअली शुक्रुल्लाहकी वाक़िआनवीसी में, बुज़ुर्ग, रोशन हुक्म जारी हुआ–कि रावत् मेघाकी जागीर ज़ाती चारसौ और सवार दोसौ इस तरह मुक़र्रर कीजावे– तस्दीक़के मुवाफ़िक़ लिखागया, बयान वाक़िआनवीसका सहीह है, दूसरा बयान जुम्दतुलमुल्क, मदारुलमहाम, एतिमादुद्दौला वज़ीरके ख़तसे दो बारा अर्ज़हुआ, दूसरा बयान ख़ास मुसाहिब दियानतख़ांने ११ जुलूस, मुवाफ़िक़ मंगलवार तारीख़ १० रबीउलअव्वल सन् १०२५ हिज्री को कार्रवाईमें हुक्मके मुवाफ़िक़ दोबारा अर्ज़ हुआ– दूसरा बयान जुम्दतुलमुल्क वज़ीरके ख़तसे, फ़र्मान लिखा जावे.

२०० सवार मए ख़ास

तनख़्वाह

२२३८५०० दाम.

मुक़र्रर एवज़

परगना भरसावर, ज़िला उज्जैन, सूबे मालवासे, जो केशवदासको तनख़्वाहमें मिला था.

दूसरी बार १०००००० दाम ज़ियादा तनख़्वाह, २०० सवार,

३२३८५०० दाम.

मुक़र्रर तनख़्वाह परगने मालपुरा, ज़िले रणथम्भोर, सूबे अजमेरमेंसे, जो मिर्ज़ा रुस्तमसे उतारकर ख़ालिसेमें दाख़िल हुआ था.

अरह
याद्दाश्त दिन आस्-
मान २७ बहमन, १० जुलूस,
मुताबिक़ मंगलवार २७ मुहर्रम सन्
१०२५ हिज्रीको बड़े सर्दार बख़्शीउल्मुल्क
ख़्वाजा अबू इस्हाक़के रिसाले, और मिहर्बानियोंके लाय-
क़ तातारख़ांकी चौकीमें, वाक़िआनवीसके मुताबिक़ यह मत्लब
हुआ–कि रावत मेघाका मन्सब जागीरके सिवाय हुआ–बादशाही हुक्म जारी
हुआ–कि ज़ात और सवारके मुवाफ़िक़ सरबुलन्द है–दियानतख़ांकी लिखावटसे
सन् १० जुलूस मुवाफ़िक़ मंगलवारको कार्रवाईकी फ़र्द दोबारा अर्ज़ हुई–चारसौ ज़ात,
दोसौ सवार.

(१) विक्रमी १६७२ चैत्र कृष्ण १४ = सन् १२१६ ई० ता० १६ मार्च.

बयान जुम्दतुल्मुल्क वज़ीरका यह है, कि शुरू इन उल्से वाक़िआमें दाखिल करें– दूसरा बयान जुम्दतुल्मुल्कका यह है कि ज़िक्र कियेहुए रावत मेघाकी तनख्वाहके लिये जागीरमें बांटदियाजावे.

---

शाहज़ादे खुर्रमका निशान, रावत् मेघसिंहके नाम–

खुरम
शाह जहां फ़रज़न्द बुलन्द
... ख़ुर्रमशाह, बिन शाह ज-
हांगीर ...
अक्बर.

निशान, आलीशान् खुर्रम, इब्ने अबु-
ल् मुज़फ़्फ़र, नूरुद्दीन मुहम्मद, जहांगीर
बादशाह ग़ाज़ी . ॥

बराबरी वालोंमें उम्दा रावत मेघ, शाही मिहर्बानीका उम्मेदवार होकर जाने– हम उसको अपना ख़ैरख़्वाह, कारगुज़ार राजपूत जानते थे, इसलिये हमने उसको कांगड़ेके झगड़ेपर मुक़र्रर किया था– उसने अपनी जागीरमें जाकर इस क़दर देर लगादी कि ख़ैरख़्वाह मददगार तावेदार रतिवारके लायक़ राजा विक्रमादित्यने सूरजमल्लके मुआमलेको थमा रक्खा– इसलिये बड़े हज़रत ( जहांगीर ) बुज़ुर्ग दरजेके बादशाहने उसकी जागीर उतारनेके लिये हुक्म दिया था, लेकिन् ख़ैरख़्वाह सर्दार मिहर्बानियोंके लायक़ कुंवर भीमने हमसे अर्ज़ किया कि वह ज़रूरतके सबब ठहरगया है, अब पूरा ख़याल है कि वह रवाना होचुका होगा– इस बातको हमने बादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ करके उसकी जागीर साबिक़ दस्तूर बहाल रक्खी है, और बुज़ुर्ग निशान् उस मुआमलेकी बाबत हमने भेजदिया.

दुबारा उसका एक ख़त ख़ैरख़्वाह सर्दार ख़्वाजा अबुल्हसनके नाम पहुंचा, जिसका मज़्मून हज़रत शहनशाहके हुज़ूरमें अर्ज़ हुआ, तो मालूम हुआ, कि वह

अबतक कांगड़ेके लश्करकी तरफ़ रवाना नहीं हुआ, इस लिये बड़े हज़्रतने उसकी जागीर उत्तार कर ख़ास ख़ैरख़्वाह बड़े दरजेके सर्दार मिहर्बानीके लायक़ बादशाहतके मोतबर आसिफ़ख़ांको इनायत फ़र्मादी. अगर वह चाहता है कि इस क़ुसूरका एवज़ करे, और बड़े हज़्रत उसकी ख़ता मुआफ़ करें, तो मुनासिब है कि अच्छी जमइयत लेकर बाला बाला अपने घरसे ज़िक्र किये हुए राजाके पास चलाजावे. जब कि राजा उसके और ज़ाबतेकी मुवाफ़िक़ उसकी जमइयत पहुंच जानेकी बाबत अर्ज़ी लिखेगा, तो उस वक्त हम बड़े हुज़ूरकी ख़िदमतमें अर्ज़ करके उसका क़ुसूर मुआफ़ करादेंगे- और बड़े दीवानको हुक्म देंगे कि उसकी जागीर किसी दूसरे मुनासिब इलाक़ेसे तनूख़्वाहके तौर जारी करदें- अगर इस तरीक़ेपर अमल न करे, और हमारी ख़िदमतमें नौकरीका इरादा रखता हो, तो फ़ौरन् हाज़िर हो जावे कि उसके लायक़ मिहर्बानियोंके साथ सरबुलन्दी बख़्शी जावे- और जो नहीं तो जहां चाहे चलाजावे, कोई रोकने वाला नहीं है- तारीख़ २६ बहमन् इलाही सन् १३ जुलूस, मुताबिक़ सन् १०२७ हिज्री.

पीठकी इबारत.

बड़े ख़ैरख़्वाह ताबेदार अफ़्ज़लख़ांके रिसाले और वाक़िआ नवीसीमें जारी हुआ.

शुक्रुल्ला
अफ़्ज़लख़ां बन्द-
इ शाहजहां.

जहांगीर बादशाहका फ़र्मान, नरसिंहदासकी जागीरके लिये-

फ़र्मान, अबुल्मुज़फ़्फ़र, नूरुद्दीन मुहम्मद, जहांगीर बादशाह ग़ाज़ी.

इस वक्त बुज़ुर्ग फ़र्मान जारी कियागया कि २९८१०० दो लाख अट्ठानवे हज़ार एक सौ दामकी जागीर, परगने मालपुरा, ज़िले रणथम्भोर, सूबे अजमेरमें से शुरू रबीअ् ईत ईलसे रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासकी जागीरी तन्ख़्वाहमें मुक़र्रर की जावे- मुनासिब है कि हाकिम, जागीरदार और दीवानीके अहलकार और हर तरहके

बादशाही नौकर हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल करके, ज़िक्र कियेहुए आदमीके क़ब्ज़ेमें रखदें- किसी तरह वहांके ज़ाबितों और क़ायदोंमें हेर फेर न करें- चौधरी, क़ानूनगो, पटैल, रअ्य्यत् और किसानोंको लाज़िम है, कि ज़िक्र कियेहुए आदमीको वहांका जागीरदार समझकर माली और दीवानी जवाबदिही दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके पास फ़स्ल फ़स्ल और साल साल पर करते रहें, किसी तरह इस बातमें कमी नकरें-उसकी हिसाबी तदबीरोंसे बर्ख़िलाफ़ न रहकर उसके पास हाज़िर होते रहें- इस हुक्मके मुवाफ़िक़ तामील ज़ुरूरी समझें- तारीख़ २२ उर्दीबिहिश्त इलाही सन् ११ जुलूस, मुताबिक़ सन् १०२५ हिज्री.

पीठकी तफ़्सील.

जागीर

रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासके नाम, यादाश्तकी मुवाफ़िक़ दिन आसमान् तारीख़ २७ इस्तिफ़्क़ार मुताबिक़ बुधवार २७ सफ़र सन् १०२५ हिज्री को, ज़ुब्द-तुल्मुल्क मदारुल् महाम् एतिमादुद्दौला वज़ीरके रिसालेमें, और नेक ख़ान्दान् मुस्त-फ़ाख़ांकी चौकीमें, बादशाही नौकर मुहम्मद हयात शुक्रुल्लाहकी वाक़िआ नवीसीके मुवाफ़िक़ बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासकी जागीर, चार बीसी ज़ात, २० सवार की बाबत, मुक़र्रर की जावे- तस्दीक़से लिखा गया- हाशियेका बयान वाक़िआ नवीसके ख़तसे दुरुस्त है- दूसरा बयान ज़ुब्दतुल्मुल्क वज़ीरके ख़तसे दुबारा अर्ज़ हुआ- दूसरा बयान बादशाही मुसाहिब दियानत-ख़ांके ख़तसे- दिन आबान् ता० १० फ़र्वर्दी सन् ११ जुलूस, मुवाफ़िक़ बुधवार ता० ११ रबीउल्अव्वल् सन् १०२५ को मुहम्मद हयात ख़ुश् नवीसकी वाक़ि-आ नवीसीसे दुबारा अर्ज़ हुआ- दूसरा बयान वज़ीरके ख़तसे लिखा गया, कि फ़र्मान लिखा जावे-

रु० २१ सवार मए ख़ास.
मुक़र्रर दरमाहा-
३०८०० दाम.
ख़ास
चार बीसी ज़ात-
मुक़र्रर दरमाहा-
४०३७० दाम.

यादाश्तका बयान रोज़ मुर्दाद छठी इस्तिफ़्क़ार सन् १० जुलूस मुताबिक़ बुधवार ६ सफ़र सन् १०२५ हिज्री को बड़े दरजेके सर्दार बादशाही ख़ैरख़्वाह बख़्शि-युल्मुल्क ख़्वाजा अबू इस्हाक़के रिसालेमें और नेक

वावत ——————
फ़ी नफ़र २० वीस सवार
१६८०० दाम–
मुक़र्रर साल्याना सिवाय
३३८८०० दाम.
४८४०० दाम ख़ास.
२९८१०० दाम.

ख़ान्दान् मुस्तफ़ाख़ांकी चौकी और वादशाही नौकर मुहम्मद मुक़ीमकी वाक़िआ नवीसीमें बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासका मन्सब, जो वापके साथ इन दिनोंमें रानाके पाससे आया, ज़ात और सवार इस मुवाफ़िक़ मुक़र्रर किया जावे–बयान वाक़िआ नवीसके ख़तसे सहीह है–दूसरा बयान जुम्दतुल्मुल्क मदारुल्महाम एतिमादुद्दौला वज़ीरके ख़तसे दुवारा अर्ज़ हुआ–दूसरा बयान मिहर्बानियोंकी लायक़ दियानतख़ांके ख़तसे दिन आवान् १० फ़र्वर्दी सन् ११ जुलूस मुवाफ़िक़ बुधवार, हुक्म की मुवाफ़िक़ अर्ज़ होगया–

चार सौसी.
वीस सवार.

मुक़र्रर तन्ख़्वाह परगना मालपुरा, ज़िला रणथम्भोर, सूवा अजमेरसे, जो मिर्ज़ा रुस्तम्से वापस ख़ालिसे में करोरीके मातहत मुक़र्रर हुआ था.

दूसरा बयान जुम्दतुल्मुल्क वज़ीरके ख़तसे, वाक़िअमें दाख़िल कियाजावे–
२९८१०० दाम.

ज़ि शाहे जहांगीर किश्वर कुशाय; शुदह राय वन्मालिये रामराय.

हसनख़ां मुरीदे जहांगीर शाह.

सादिक़ख़ां मुरीदे जहांगीर वादशाह.

## जहांगीर बादशाहकी तरफ़से रावत मेघसिंहकी मन्सबी जागीरका फ़र्मान.

अल्लाहु अक्बर.

तारीख़ दिन आज़र शुरू मिहर इलाही सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ सोमवार महीना शव्वाल् सन् १०२७ हिज्री को जुम्दतुल्मुल्क मदारुल्महाम बादशाही सर्दार एतिमादुद्दौला वज़ीरके रिसालेमें और बड़ेदरजेके सर्दार मोतमदखांकी चौकी, और बादशाही ताबेदार अलीनक़ी की वाक़िआ नवीसीमें, बुजुर्ग हुक्म जारी हुआ कि, रावत मेघ वग़ैरह की जागीर ५०० पांचसौ ज़ात, २५० सवारकी बाबत, नीचे लिखी तफ्सीलके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर की जावे––बादशाही यादाश्तके मुवाफ़िक़ लिखा गया.

मीज़ान.

मुक़र्ररा तन्ख़्वाह–

३२५८२०० दाम.

अगले दस्तूरके मुवाफ़िक़ –

२५०४७०० दाम.

इन दिनोंकी तरक़्क़ी, मुवाफ़िक़ १३ उर्दी बिहिश्त इलाही सन् १३ जुलूस के–

७०४५०० दाम.

२३००० दाम हाथियोंकी खुराक़.

३२३५२०० दाम.

जागीर–

ज़ात ५०० पांचसौ सवार २५० ढाईसौ.

२५१ सवार मए ख़ास

मुक़र्रर दरमाहा–

३०७२०० दाम.

ख़ास——————

५०० पांचसौ ज़ात.

२४४० दाम.

मातह्त जमइयत——————

२५० सवार.

२२१४०० दाम.

मन्सबदार

३ तीन आदमी–

बाबत १३८०० दाम.

फूलदास हरीदास
बीसी. बीसी.

परसराम
बीसी.

४६०० दाम.

जमइयत
२४७
६००८०० दाम.

१९७६०० दाम.

९६००० दाम.

मुक़र्रर साल्याना सिवाय–

३३८१४०० दाम.

३८१३५० दाम.

ख़ास–– चार मन्सब्दार–
२६४००० दाम. ३७३५० दाम.

याद्दाश्तका बयान–

तारीख़ आज़र १३ उर्दीबिहिश्त सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ १७ जमादियुल् अव्वल् सन् १०२७ हिज्री शनिवार को बड़े इज़्ज़त्दार, उम्दा सर्दार, बख़्शियुल्मुल्क ख़्वाजा अबुल् हसनके रिसालेमें और बड़े अक्लमन्द होश्यार हकीम मसीहुज़्ज़मांकी चौकी, और बादशाही नौकर मुहम्मद मुक़ीम हिजाज़ी की वाक़िआ नवीसिके मुताबिक़, बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि रावत मेघा अस्ल मन्सब और तरक़ी के साथ सरबुलन्द रहे–बख़्शी की तस्दीक़ से याद्दाश्त लिखीगई–हाशियेका बयान वाक़िआ नवीसके ख़तसे सहीह है––बयान वज़ीरके ख़तसे दुबारा अर्ज़ हुआ– दूसरा बयान उम्दा सर्दार दियानतख़ांके ख़तसे ता० आज़र इस्फ़न्दार २९ उर्दीबिहिश्त सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ शनिवार ता० २३ जमादियुल् अव्वल् सन् १०२७ हिज्री–– अलावल की वाक़िआ नवीसी में दुबारा अर्ज़ होगया––वज़ीर के ख़त से यह बयान लिखागया कि तफ़्सील करदें ––

५०० ज़ात.
२५० सवार.

पहला मन्सब–
४०० चारसौ ज़ात.
२०० दोसौ सवार.

इनदिनों में, दोवर्ष दो महीने सोलह दिन पीछे तरक़ी दीगई––
१०० ज़ात.
५० सवार.

मुसव्वदा—

रावत मेघका भाई, तीन बीसी ज़ात, दो बीसी सवार—

११ सवार.

मुक़र्रर दरमाहा

१९००० दाम

| ख़ास— | अर्दली— |
|---|---|
| तीन बीसी ज़ात | १० सवार |
| २७५ दाम | ८०० दाम |
| ११००० दाम. | ७००० दाम. |

मुक़र्रर साल्याना, सिवाय

बख़्शिश—

२०९००० दाम.

३०२५० दाम ख़ास—

मुक़र्रर तन्ख़्वाह

१७८७५० दाम

३२३५२०० दाम.

| जागीर— | मदद ख़र्च— |
|---|---|
| ३१३५२०० दाम. | १००००० दाम. |

बयान जुम्दतुल्मुल्क एतिमादुद्दौला वज़ीरके ख़त्तसे लिखागया कि वाक़िएमें दाख़िल करें—

बयान तारीख़ २० रमज़ान सन् १०२७ हिज्री का, इस लिखावट से यह मत्लब है कि मैं बादशाही दरगाहका नौकर रावत मेघ हूं, मैं कुबूल करता हूं, कि तीन महीनेके बाद ज़ाबितेके मुवाफ़िक़ कांगड़ेके मुत्सद्दियोंके पास जाकर घोड़ोंको फ़ौजी दाग़ करायाजावेगा, अगर न कराया जावे तो तरक़्क़ीकी जागीर ज़ब्त फ़र्मावें—यह कई फ़िक़्रे लिखेगए—जुम्दतुल्मुल्क वज़ीरका यह बयान है, कि यह आदमी कांगड़ेकी नौकरी पर मुक़र्रर कियागया और हज़रत शाहज़ादे तज्वीज़ करते हैं कि अपने पुराने आदमियोंके घोड़ोंको वहां पर फ़ौजी दाग़ हासिल करावें, इस लिये यह लिखाहुआ मंज़ूर कियाजाता है, लेकिन अगर बादमें बख़िलाफ़ी करे तो जागीर उतारलें

बयान वक़ाए-उल्मुल्क सादिक़-ख़ांका यह है, कि मंज़ूर रक्खें

साबिक़ दस्तूर परगने मालपुर वग़ैरा से २५०४७०० दाम.

परगना मालपुर ज़िला रणथम्भोर सूबा अजमेर जो मिर्ज़ा रुस्तमसे उतारकर बादशाही ख़ालिसे, } परगना ताल, ज़िला मन्दसोर, सूबा मालवा फ़स्ल ख़रीफ़ लोय ईल से

मुक़र्रर हुआ था, शुरू रबीअ़ लोय ईल २६६२०० दाम.
२७इस्फ़न्दारमुज़ सन् १० जुलूससे–
२२३८५०० दाम.

---

इन दिनोंकी तरक़ी एक सौ ज़ात, पचास सवार मन्सब,
७४०५०० दाम
२३००० दाम. हाथियोंकी ख़ुराक
७३०५०० दाम.
मुक़र्रर तन्ख़्वाह. ७३०५००. दाम

बयान जुम्दतुल्मुल्क वज़ीरके ख़तसे फ़स्ल ख़रीफ़ ईत ईलसे–

जागीर परगना इकनोद, ज़िला मन्दसौर, सूबे मालवासे, जो सेवाकिशन मारूसे उतारी गई और जिसको बांसवाड़ा परगनेमें एवज़ दिया गया–
८०७०६१ दाम.
१७६५६१ दाम दूसरेको तन्ख़्वाह दीजायगी,

बयान कुबूलियत–
इस लिखावटका यह मत्लब है– कि मैं रावत मेघ हूं, ६३०५०० दाम परगने इकनोदमें शुरू फ़स्ल ख़रीफ़ ईत ईलसे मैंने कुबूल किये– यह बयान सनदके तौर मैंने लिख दिया, ता० ५ शहरीवर इलाही सन् १०२७ हिज्री. मक़ाम महमूदाबाद–

१३०५०० दाम.

---

मदद ख़र्चके एवज़में याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ रोज़ बहमन् दूसरी शहरीवर इलाही सन् १३ जुलूस, मुताबिक़ ६ रमज़ान सन् १०२७ हिज्रीको मिहर्बानियोंके लायक़ सर्दार मोतमदख़ांके रिसाले, और मिहर्बानियोंके लायक़ आक़िलख़ांकी चौकी, और बादशाही नौकर अब्दुल्वासिअ़की वाक़िआ़ नवीसीमें ख़िद्मतगारख़ांने अ़र्ज़ किया कि रावत मेघ, मदद ख़र्च यानी ख़ालिसेका महसूल अदा करनेमें, उज़्र और बहाना करता है– बज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि जो कुछ मददख़र्च सर्कारी रावत मेघके ज़िम्मे है, [illegible]

ते और सनदके मुवाफ़िक़, बादशाही दीवानीके अहल्कार उसकी जागीरसे वुसूल करलें, याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ तस्दीक़ लिखी गई-

५३०० दाम, मदद ख़र्च याद्दाश्त ता० १० दै इलाही सन् ११ जुलूस के मुवाफ़िक़ हुक्म हुआ कि ५००० रुपये रावत मेघके महसूली दारोग़ा कमाल हुसैनसे लिये जावें, और मुचल्का लिखवाया जावे कि परगने माल्पुरामेंसे, जो उसकी जागीर है, फ़स्ल रबीअ़ और ख़रीफ़ ईलाईल सन् १२ जुलूस अजमेरके फ़ौज्दार शार्दूलके पास भिजवादें कि वह ख़ज़ाने में पहुंचा देगा.

१०७८ वुसूल हुए, शार्दूलको लिख दिया जावे-

४३२२ मुक़र्रर मीआ़दके मुवाफ़िक़, जब बराबर होंगे, एवज़ दिया जावेगा-

यह है बयान जुम्दतुल्मुल्क एतिमादुद्दौलाका
१००००० दाम कि वह कांगड़ेकी लड़ाई पर मुक़र्रर हुआ,
बादशाही कामके लिये उसकी तमाम तन्ख्वाहमेंसे मदद ख़र्चके तौर
ताकीद लिखी गई- कि वह वुसूल किये जावें- दुबारा वज़ीरके बयानसे
१०००००दाम वुसूल किये जावें- नौकरी पर मुक़र्रर हुआ है उसकी तन्ख्वाहसे

१००००० दाम.

अल्लाहु अक्बर (खुदा बुजुर्ग है.)
दिन आबान १० वीं तारीख़ मिहर सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ बुद्धवार १३ वीं शव्वाल १०२७ हिज्री को नईमाके वाक़िएमें दुबारा अर्ज़ हो चुका, और नौकरीके वास्ते ज़बरदस्त हुक्म जारी हुआ-

हाशिया
अल्लाहु अक्बर
वाक़िएके मुवाफ़िक़ है-

जब शाही फ़ौज कांगड़ेकी तरफ़ जानेलगी, तो मेघसिंहको भी उसमें जानेका हुक्म हुआ उसने इन्कार किया, परन्तु अपने तीनों बेटों रामचन्द्र, लक्ष्मण, और कल्याणको शाही फ़ौजके साथ भेजदिया- लक्ष्मण और कल्याण तो कांगड़ेकी लड़ाईमें मारेगये. और रामचन्द्रके पीछे आनेपर रावत मेघसिंह ने कहा कि तुम हमारे कामके न रहे, क्योंकि अटक (१) उतरजाने बाद आदमी मुसलमान होजाता है - लाचार रामचन्द्रको मुसलमान होना पड़ा. यह बात जहांगीरने सुनी, तो काज़ीका (२) ख़िताब और फ़ीरोज़पुर जागीरमें दिया-यह बेगूं वालोंका बयान है.

विक्रमी १६७३ चैत्र शुक्क ३ [ हिज्री १० २५ ता० ५ रबीउल्अव्वल = ई० १६१६ ता० २० मार्च ] में कुंवर कर्णसिंह बादशाह जहांगीरके पास दिल्ली पहुंचे और १०० अशर्फ़ी. एक हज़ार रुपये, चार घोड़े, और एक हाथी नज़्र किया, फिर कुछ दिन ठहरकर पीछे लौटते हुए मालपुरेमें आये, मेघसिंहने बहुतसी ख़ातिर की. भोजन करते समय कुंवर कर्णसिंहने हाथ खेंचलिया, तब मेघसिंहने अर्ज़ की, कि चाकरी बतलानी चाहिये. आप भोजन क्यों नहीं करते ? उन्होंने उत्तर दिया कि तुमको दाजीराज ने बुलाया है. उदयपुर चलना चाहिये. मेघसिंहने पहिली नाराज़गीका गुबार निकाला, लेकिन् कुंवरने तसल्ली दी और मेघसिंहने चलनेको कहा. तब कुंवरने भोजन किया. मेघसिंह उदयपुर आया और महाराणा अमरसिंहसे बेगूंका पट्टा (३) उसको मिला. और बल्लू चहुवानको बेगूंके बदले गंगारका परगना जागीरमें दियागया. कुछ अर्से बाद खुर्रमने मेघसिंहको बुलानेके लिये निशान् लिखभेजा.

जब बादशाह जहांगीर दक्षिणकी तरफ़ गये, तो शाहज़ादा खुर्रम उदयपुरमें आया. महाराणा अमरसिंहने मुलाक़ात की, शाहज़ादे ने जड़ाऊ तलवार, घोड़े हाथी. ख़िलअत वग़ैरह उनको और उनके भाई बेटोंको दिये.

महाराणाने भी ५ हाथी, २७ घोड़े, व जवाहिरातका भराहुआ एक थाल नज़्र किया, परन्तु शाहज़ादेने तीन घोड़े लेकर बाक़ी सामान वापस करदिया.

---

(१) शायद वह फ़ौज अटक नदीके पार किसी कामके लिये गई होगी, वर्ना कांगड़ेका इलाक़ा अटकके पार नहीं है.

(२) क़ाज़ी कोई ख़िताब नहीं है और न यह किसी नये मुसल्मानको मिलता है, बल्कि एक ओहदे का नाम था, जो सिवाय किसी बड़े आलिम शरूसके दूसरे को नहीं मिलता था.

(३) जागीरकी तफ़सील यह है- बेगूं ग्राम ८४ से, रतपुर ग्राम ८४ से, गोठोलाई ग्राम १२ से, नीमोतो ग्राम १२ से, बांसिया ग्राम १२ से, और तीन ग्राम उदयपुरके पास घास लकड़ीके वास्ते दिये.

शाहज़ादे खुर्रमके साथ डेढ़ हज़ार सवार सहित कुंवर कर्णसिंहका दक्षिण में जाना ठहरा.

कुंवर कर्णसिंहने दक्षिणकी लड़ाइयोंमें बड़ी बहादुरी दिखलाई. कुछदिनों बाद जहांगीरके पास जाकर इसकी खुशख़बरी सुनाई, और उदयपुर चले आये. फिर राजा भीम ( महाराणा अमरसिंहका बेटा ) व भंवर जगत्सिंह शाही दर्बारमें गये और कश्मीरके सफ़रमें बादशाहके साथ रहे. इन दोनों राजकुमारोंपर बादशाह निहायत मिहर्बानी करता था. बादशाह जहांगीरके लौटनेके वक़् ये दोनों राजकुमार भी लश्करके साथ थे.

इन्हीं दिनोंमें रावत मेघसिंह चूंडावत और शक्तावतोंमें बखेड़ा हुआ, जिस का हाल इसतरहपर है, कि बेगूंके एक ग्रामका रहनेवाला शक्तावत पीथा बाघावत मेघसिंहको अपना मालिक नहीं समझता था. इसलिये मेघसिंहने उसका ग्राम जलादिया, तब पीथाने नारायणदास शक्तावतके पास भणायमें जाकर सब अहवाल कहा, जिससे भाई बन्धु सगे सम्बन्धी सब १२०० सवार एकट्ठे करके नारायणदासने चढ़ाई की, उस वक़् मेघसिंह तो कहीं विवाह करनेको गया था और उसका बड़ा बेटा नरसिंह दास क़िलेके किवाड़ बन्द करके बैठरहा; नारायणदास बेगूंके चारों तरफ़ घोड़ा फेरकर एक हाथी मेघसिंहका लेगया. मेघसिंह पीछा आया तो अपने बेटे नरसिंहदासको निकालदिया और अपने भाई चूंडावतोंकी फ़ौज एकट्ठी करने लगा, लेकिन् पीछे आपसके वंश नाश होनेके ख़यालसे मेघसिंहने सब्र किया. पँवार केशवदाससे, जिसके पट्टेमें भैंसरोड़गढ़ था, मेघसिंहकी लड़ाई हुई, तो मेघसिंहके छोटे बेटे राजसिंहने केशवदासको भाला मारकर हाथीसे गिरादिया. भैंसरोड़में भी मेघसिंहका क़ब्ज़ा होगया, लेकिन् महाराणा अमरसिंहने नाराज़ होकर वह मक़ाम वापस पँवारोंको दिलवाया.

मेघसिंहने महाराणासे अपने मरते समय अर्ज़ कराया कि मेरे बाद मेरे ठिकानेका मालिक राजसिंह रहे, जब रावत मेघसिंहका देहान्त होगया तब आपस का झगड़ा मिटानेके लिये नरसिंहदासको तो गोठोलाई, जो सब चूंडावतोंका क़दीमी वतन है, और राजसिंहको बेगूं, रत्नगढ़ वगैरह देकर दोनोंका दरजा बराबर रक्खा.

विक्रमी १६७६ माघ शुक्क २ बुधवार [ हि० १०२९ ता० १ रबीउल् अव्वल् = ई० १६२० ता० ३० ऑक्टोबर ] को महाराणा अमरसिंहका देहान्त उदयपुरमें हुआ. उनकी आख़िरी सवारी बड़ी धूमधामके साथ होकर अहाड़ ग्राममें

पहुंची. वहां गंगोद्भव कुण्डपर उनकी दग्ध क्रिया की गई, और उनके साथ १० रानी, ९ खवास और ८ सहेलियां सब २७ औरतें सती हुईं, उनकी छत्री महाराणा कर्णसिंहने सफ़ेद पत्थर की बहुत बड़ी बनवाई, जो अब तक मौजूद है. (महाराणा कर्णसिंह बड़े पिताभक्त थे, कहते हैं कि वे १२ महीने तक अपने पिताके दग्धस्थानपर रहे, और वहां अर्ज़ेकरके सब राज्यका कारोबार चलाते थे). इन महाराणाका जन्म संवत् १६१६ विक्रमी चैत्र कृष्ण ३० [हि० ९६७ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १५६० ता० २६ मार्च] को हुआथा.

महाराणा अमरसिंहका क़द लम्बा, रंग गेहुवां सियाही मायल, आंखें बड़ी, चिहरा रोबदार. मिज़ाज तेज़ था, लेकिन् वह दयावान, और सच्चे व मिलनसार, दोस्तीके पूरे. इक़ारको पूरा करने वाले थे. इनके देहान्तका मेवाड़के सर्दार, भाई, बेटे. रिआया वग़ैरा कुल्लको बहुत बड़ा रंज हुआ, इनके गुज़रनेकी ख़बर कश्मीरसे लौटते हुए बादशाह जहांगीरको मिली, उसने कुंवर जगत्सिंह व भीमसिंहकी बहुत तसल्ली की. बादशाह लिखते हैं कि– "मैंने भीमको व जगत्सिंहको ख़िलअ़त देकर राजा कृष्णदासको कुंवर कर्णके वास्ते तसल्लीका फ़र्मान व ख़िलअ़त और एक हाथी और एक घोड़ा देकर बिदा किया, जिसने जाकर मातमपुर्सी व मस्नद नशीनीकी रस्म अदा की."

इन महाराणाके ६ बेटे– १ कर्णसिंह, २ सूरजमल्ल, ३ भीम, ४ अर्जुनसिंह, ५ रत्नसिंह, ६ बाघसिंह, और एक बेटी बछवन्तां बाई थी.

इनके समयके १८ वर्ष तो लड़ाई झगड़ोंमें बीते, और पिछले ५ वर्ष देशमें अम्न रहा.

## शेष संग्रह– (नम्बर १).

ग्राम माउलमें राजा जगन्नाथ कछवाहे की बत्तीस थंभोंकी छत्रीकी प्रशस्तिकी नक़ल.

स्वस्ति श्रीगणेशायनमः यंब्रह्मवेदांत विदोवदंति पर प्रधानं पुरुषं तथान्यः विश्वोद्गतं कारणमीश्वरंवा तस्मैनमोविघ्न विनाशनाय ॥ १ ॥ हजरत श्री पातिसाह अकब्बर जीकी जलाल दीनगाज़ीकी पातसाही सलामति श्री पातसाह हज़रति साहि सलेम जहांगीर विजय राज्ये पातिसाह दिल्लीके मुगल्बेक ताको उमराव महाराज श्री जगन्नाथजी राज श्री भारमल सुत कछाहा राजा आमेरका, ताकी छत्री सं[illegible] राज श्री अभैकरसिहजी [illegible] श्री करमचंद सुतः छत्रीकी प्रतिष्ठा हुई सम्वत् १[illegible]

का वरषे शाके १५३५ प्रवर्तमाने मार्गशिर सुदि ११ एकादशी शुक्रवारके दिन श्री सिंहेश्वर महादेव थाप्या सन् १०२२ (हिज्री) मकाम माडिल छत्री काराई, तमाम राज श्री आसानंदजी पदम सुतत्रेसर जसुतः पोतदार सहा धरमदास खंडेलवाल मुसरफ़ी ठाकुर सीतलदास कायथ माथुर वास गढरणथंभ सुत्रधार माधोगोविंदः रामदास गढका आज्ञा उदयपुरसु पंडित टोडाका सुवाई खीजमतदार श्रीशुभंभवतु श्रीः

छन्द तोटक.

जवही शिवलोक प्रताप गये । अमरेश वरेश नरेश भये ॥
पत शाहिय फ़ौज प्रवंध कियो । वह थानक व्यूह वखेर दियो ॥ १ ॥
सुत ऊदल सागर मान मते । गत कूरम मान कुमार नते ॥
पहुंचे वहिं संग दिलीप ढिगे । प्रद रानप पायरु रीत डिगे ॥ २ ॥
सुल्तान चढ्यो पर्वेज़ जवे । अमरेश किये वहु जुद्ध तवे ॥
कछु राज चितौर कियो सगरे । जिंहते वल जीवनको विगरे ॥ ३ ॥
चढ़ खान महावत धार धुके । रजपूतन तें इस्लाम रुके ॥
पत शाहिय थानक लूट लिये । फिरकें अब्दुल्ल प्रफुल्ल अये ॥ ४ ॥
चढ़कें फिर कर्ण कुमार लरे । अरु वासुकि सेनप होय अरे ॥
सुल्तान चढ्यो जव शाह जहां । घुस पव्वय वोलत रान कहां ॥ ५ ॥
कलियान सता मकवान दहूं । जिनके गुन फैलिय चक्क चहूं ॥
जव शाहिय फ़ौजन ज़ोर चढ्यो । रजपूतनपें दुख घोर वढ्यो ॥ ६ ॥
अमरेशरु खान सलाह करी । निज वानि नसीहत काव्य भरी ॥
पतशाहनतें नृप संधि नई । सुल्तान दिवान मिलान भई ॥ ७ ॥
अजमेरहि कर्ण कुमार गये । जिनपें अति शाह प्रसन्न भये ॥
तज रानप रावत सम्म वने । भट मेघ रिसानरु मान मनें ॥ ८ ॥
अमरेश गये शिवलोक सही । जिनकी सव आदत रीत कही ॥
अभिलाप-मनोभव सज्जनतें । फ़तमाल प्रभा गुन कज्जनतें ॥ ९ ॥
सच वीरन वीर विनोद लह्यो । कविराज तवें यह खंड कह्यो ॥
यह वीर कथा श्रुत धीर धरे । भ्रम होय यथा लखि शुद्ध करे ॥ १० ॥

महाराणा अमरसिंह अव्वल- पञ्चम प्रकरण समाप्त.
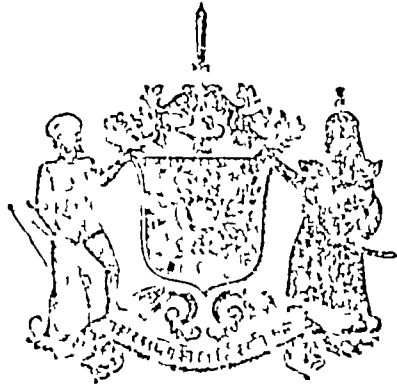
## महाराणा कर्णसिंह-षष्ठ प्रकरण.

महाराणा कर्णसिंहका राज्याभिषेक विक्रमी १६७६ माघ शुक्ल २ बुधवार [हि० १०२९ ता० ३० सफ़र = ई० १६२० ता० ७ फ़ेब्रुअरी ] को हुआ, जिसके लिये पहिली वार राजा कृष्णदास राज्यतिलकका टीका (१) और खिलअ़त बादशाह जहांगीरकी तरफ़से लेकर आये, इसके लेने बाद दूसरे राजाओंका भेजाहुआ दस्तूरी सामान लियागया.

इन महाराणाके समयमें सारे देश भर में चैन और आनन्द रहा, किसीतरहका झगड़ा नहीं हुआ.

महाराणा अमरसिंह व शाहज़ादे खुर्रमकी सुलहके बाद से ही इनका राज्य कहना चाहिये, क्योंकि महाराणा अमरसिंहने तो उसी दिनसे अकेले रहना इख्तियार किया था और सारे कामकी संभाल इन्हींके ज़िम्मे थी; इन्होंने मेवाड़ देशमें जुदे जुदे परगने क़ायम किये और ग्रामोंमें पटैल, पटवारी, सेना, और गांव बलाई बनाये, लेकिन् फिर भी हासिलका एक क़ायदा सारे देशमें न होसका.

थोड़ेही दिनोंमें यहदेश प्रजासे आबाद होगया, फिर ज़नाना रावला ( महल

---

(१) गद्दीनशीनीके समय जो छोटे बड़े और बराबरी वाले महाराजाओंकी तरफ़से राज्य [illegible] में हाथी घोड़े वग़ैरह आनेका दस्तूर है, उसे राज्य तिलक का टीका कहते हैं.

रसोड़ा ( रसोड़ेका बड़ा महल ), तोरण पौल, सभाशिरोमणि (बड़ा दरीखाना), गणेश ड्योढ़ी, दिल्खुशाल( दिलकुशा ), महलके भीतरकी चौपाड़, चन्द्रमहल, महलोंकी सूर्य हस्तीशाला के नीचे के दालान, जो लदावसे बड़े मज्बूत बनेहुए हैं और जिनके ऊपर हाथियोंके बांधनेकी जगह है, और कृष्णनिवास के हौज़ तथा चंपाबाग़ वगैरह तय्यार कराये; भटियानी चौहटेके गुम्बज़, जो अब देलवाड़ेराजकी हवेलीमें आगये हैं, जग-मन्दिरके बड़े गुम्बज़, जिनकी नीव विक्रमी १६७०-७१ [ हि० १०२२-२३ = ई० १६१३--१४ ] में शाहज़ादे खुर्रमने डाली थी, पूरे तय्यार कराये.

महाराणाने रोहड़िया बारहट लक्खाको लाख पशाव और तीन ग्राम ( मन्सूवो, थरावली, जडाणा ) इनायत किये, जिनका दानपत्र चित्तौड़के रामपोल दर्वाज़ेपर पत्थर में खुदा है- ( शेष संग्रह नम्बर १ ) देखो. यह लक्खा बारहट बादशाह जहांगीरके दर्बारमें मन्सब्दार शाइर था, जैसे कि दूसरे राजाओंके पौलपात ( १ ) होते हैं उसी तरह अपनी पौलका नेग भी बादशाह इसको देता था.

इन्हीं दिनोंमें कश्मीरके सफ़रमें बादशाह जहांगीरने महाराणाके भाई भीम-सिंहको राजाका ख़िताब और मन्सब दिया, फिर वह शाहज़ादे खुर्रमके पास नौकरीपर रक्खागया, जिससे शाहज़ादेका ख़ास सर्दार बना.

अब बादशाह जहांगीरकी नाराज़गीके सबब शाहज़ादे खुर्रमका महाराणा कर्णसिंहके वक़ उदयपुरमें रहनेका हाल लिखाजाता है-

फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंने इस हालको बिल्कुल छोड़दिया है परन्तु उदयपुरमें शाहज़ादे खुर्रमके रहनेकी कई मज़्बूत दलीलें हैं.

अव्वल, राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें, जिसको महाराणा राजसिंहने बनवाया था, पांचवें सर्गके १३ वा १४ वें श्लोकमें साफ़ लिखा है, कि खुर्रम जब जहांगीरसे बर्ख़िलाफ़ था, उस वक़ उसको अपने देश मेवाड़में रक्खा, और जहांगीरके देहान्त होने बाद अपने भाई अर्जुनसिंहको साथ देकर उसे दिल्लीका मालिक बनाया, वह श्लोक यह है-श्लोक- दिल्लीश्वरा जहांगीरा त्तस्यः खुर्रम नामकम् ॥ पुत्रंविमुखता प्राप्तं स्थापयित्वा निज क्षितौ ॥ १३ ॥ जहांगीरे दिवंयाते संगेभ्रातरमर्जुनं ॥ दत्वा दिलीश्वरंचक्रे सोऽभूत् शाहजहांभिधः ॥ १४ ॥ यह प्रशस्ति महाराणा राजसिंहके पुत्र महाराणा जयसिंहके समयकी खुदीहुई है, और इसका

( १ ) राजपूतानाके छोटे बड़े सब राजपूत लोगोंमें रिवाज है कि जिस तरह पुरोहित मंगल वा अमंगल कार्यों में दस्तूर लेता है, उसी तरह ये लोग मंगलीक, जन्म, विवाहआदि कार्योंमें दस्तूर पाते हैं, परन्तु ग़मीमें नहीं लेते, उस पौलपात लेनेवालेको बारहट कहते हैं, इसका पूरा हाल पहिली जिल्दमें देखना चाहिये.

बनाने वाला रणछोर भट्ट महाराणा कर्णसिंहके पुत्र महाराणा जगत्सिंहके समयमें मौजूद था.

दूसरे, बीकानेरकी तवारीख़में ( जो जोधपुरके रेज़िडेण्ट, लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल् पाउलेटने बीकानेरकी रियासतसे बड़ी कोशिशसे तहक़ीक़ात करके मंगाई, और जिस की एक नक्ल मुझे दी ), लिखा है- कि शाहज़ादा खुर्रम कितनेही महीनों तक जहांगीरकी नाराज़गीके सबब उदयपुरमें रहा.

तीसरे, बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करके खुलासे वंशप्रकाशमें भी ऐसाही लिखा है.

चौथे, कर्नेल् टॉड अपनी किताबमें इस बातको बड़ी मज़्बूतीके साथ पुख़्ता करते हैं.

पांचवें, इक़बालनामह जहांगीरीके ६१३ पृष्ठमें लिखा है- कि विक्रमी १६८३ [ हि० १०३५ = ई० १६२६ ] में महाबतखां, बादशाह जहांगीरकी नाराज़गीके कारण शाहज़ादे खुर्रम ( शाह जहां ) के पास चलागया. जहांगीरने इसके पकड़लाने अथवा सरहद से बाहर निकाल देनेके लिये फ़ौज भेजी थी, इससे वह राणाके इलाक़े की घाटियोंमें रहने लगा; इससे भी पुख़्ता यक़ीन होता है, कि उस समय शाहज़ादा खुर्रम ( शाह जहां ) भी मेवाड़ में था, क्योंकि उदयपुरके सिवाय उसके छिपे रहनेके लिये और कोई स्थान न होगा- मुसीबतके वक़्में एक दूसरे का आश्रय और दो तक्लीफ़ वालोंका मेल रहा करता है, और ज़ियादा तर ऐसी दशामें जब कि महाबतखां और खुर्रमको बादशाही फ़ौजसे एकसाही डर था, और जब कि महाबतखां पहाड़ोंकी जगहको मज़्बूत जानकर यहां रहा तो, खुर्रम किस लिये इस जगहकी मज़्बूती पर ख़याल न करता.

छठे, कुल फ़ार्सी तवारीख़ों तुज़क जहांगीरी, इक्बाल नामह जहांगीरी, बादशाह नामा और शाहजहांनामा वग़ैरह में शाह जहांकी इन तक्लीफ़ोंका हाल लिखा है.

शाहजहांने तख़्तपर बैठनेके बाद महाबतखांको अपना सेनापति बनाया. यह उस समयकी दोस्तीका फल था, परन्तु यह किसी तवारीख़में नहीं देखा. कि शाहजहांके मक़ाम स्थान स्थानके तारीख़वार लिखेहों, लेकिन् बीच बीचमें इस मुआमलेके कई महीनोंका हाल नहीं मिलता, कि शाहज़ादा कहां रहा; इसलिये यही गुमान होता है कि वह उदयपुरमें ही रहा होगा. और महाबतखांका मिलना भी शाहज़ादे शाहजहांसे उसी समय में साबित होता है.

सातवें, शाहज़ादेकी लाल पगड़ी अभी तक एक काठके डिब्बेमें रक्खीहुई

जूद है, जो शाहज़ादेने महाराणा कर्णसिंहसे भाईचारे (१) में बदली बतलाते हैं.

अगर कोई यह एतिराज़ करे कि दोसौ साठ या दोसौ पैंसठ वर्ष तक कपड़ा नहीं रहसक्ता, तो हमारा यह जवाब है कि शाहज़ादेके मेवाड़में रहनेसे दस बारह वर्ष पहिले, जो बादशाह जहांगीरने महाराणा अमरसिंहको तसल्लीका फ़र्मान भेजा था, उसका लपेटा ढाकेके मलमलका, जिस पर ख़ास बादशाह के पंजेका लगाया हुआ केसरका निशान है, अबतक साबित है, उस कपड़ेकी मज़बूती तार निकालकर देखनेसे नये कपड़ेके बराबर पाईजाती है; यक़ीन होता है कि बहुत वर्षों तक और भी उस कपड़ेका कुछ नहीं बिगड़ेगा. दूसरा कोई यह एतिराज़करे कि इतने बड़े बादशाहके शाहज़ादेने एक राजासे पगड़ी बदलकर अपनी बराबरी दिखलानेको किस तरह ऐसा काम किया होगा; इस बातका हम यह जवाब देते हैं कि जब तक जहांगीरसे सुलह न हुई, तब तक यह राजा भी अपने को एक खुद मुख़्तार बादशाह समझते थे और सुलह होनेपर भी इनका बड़प्पन, जहांगीरकी किताब 'तुज़क जहांगीरी' के देखनेसे ज़ाहिर होता है, और तक्लीफ़में हरएक शख़्स अपने रुतबे का गुरूर छोड़देता है, जैसे इसी शाहज़ादेने अपनी इस तक्लीफ़ के शुरूमें ख़ान् ख़ानां अब्दुर्रहीमसे कहा था कि "हमारी शर्मका लिहाज़ रखना"-(देखो शाहजहां नामह क़लमीका पृष्ठ १३).

आठवें, शाहज़ादे खुर्रमने किसी शहीद या वलीकी मन्नत मानकर जगमन्दिरोंमें एक छोटीसी ज़ियारत बनवाई थी, जिसको अब भी बहुतसे आदमी कपूरबाबा कहकर पूजते हैं (इसका सहीह नाम ग़फ़ूर बाबा होगा).

नवें, शाहज़ादे खुर्रमके रहनेके लिये, जो महल बनवायागया था, वह बड़ा गुम्बज़दार पच्चीकारीके कामका (शाहज़ादेकी यादगार) अभी तक मौजूद है, जिसका नक़्शा बिलकुल् शाहजहांनी इमारतोंसे मिलता है.

दसवें, क़िस्से कहानीके तौरसे भी यह बात इतनी मश्हूर है, कि राजपूताना के किसी ग्रामके रहनेवालेसे भी पूछाजाय, तो यही कहेगा, कि शाहज़ादा उदयपुरमें रहा था, जिसके लिये यह बड़ा गुम्बज़ बनवाया गया. सोचना चाहिये कि शुहरत भी बिलकुल बे बुनियाद नहीं हुआकरती.

ग्यारहवें, उदयपुरके पहाड़ोंकी जगह ऐसी महफ़ूज़ थी, कि ४८ वर्ष तक बादशाह अक्बर और जहांगीरने कई दफ़ा पूरा पूरा इरादा किया, कि उदयपुरके राजाओंको ताबेदार करें, लेकिन् सिवाय परेशानी व सरगर्दानीके कुछ भी बस

---

(१) हिन्दुस्तानकी रस्म है, कि जब कोई शख़्स किसीसे भाईचारा करता है, तो आपसमें एक दूसरेसे पगड़ी बदलता है.

न चला, और सुलह होनेके बाद भी मेवाड़के राजाधिराजोंको दिल्लीके बादशाह ने दामउपायसे ज़ेर किया था, जो सर टॉमस रो की ऊपर लिखी हुई चिट्ठीसे बख़ूबी साबित होता है. दूसरे सफ़र करने वाले जौन एल्बर्ट डी मेंडलस्लो जर्मनकी फ्रांसीसी ज़बानकी किताबके अंग्रेज़ी तर्जुमेसे भी यही पायाजाता है, जो हैरिसके सफ़रनामेकी पहिली जिल्दके ७५८ पृष्ठ में लिखा है–"कि अहमदाबादके शहरसे थोड़ी दूर बाहरकी तरफ़ मारवा ( १ ) के बड़े पहाड़ दिखाई देते हैं, जो २१० माइलसे ज़ियादा आगरेकी तरफ़ फैले हुए हैं, और ३०० माइलसे अधिक औयो (२) की तरफ़, जहां विकट चटानोंके बीच गढ़ चित्तौड़में राजा राणाका वासस्थान था. मुग़ल और पाटन ( ३ ) के बादशाहकी मिलीहुई फ़ौजें मुश्किलसे उसको जीत सकीं, मूर्तिपूजक हिन्दुस्तानी लोग अभीतक उस राजाकी बड़ी ताज़ीम करते हैं, जो उनके कहनेके मुताबिक़ युद्धक्षेत्रमें एक लाख बीस हज़ार सवार लानेके योग्य था." इससे भी साफ़ साबित होता है, कि सुलह होनेके बाद भी मेवाड़के राजा कैसे ताक़तवर और बे खौफ़ थे; तो ऐसे राजाके बे खौफ़ मुल्कमें शाहज़ादेका उस हालतमें रहना सम्भव है.

अब शाहज़ादे ख़ुर्रमपर शाहन्शाह जहांगीरकी नाराज़गीका हाल शुरूसे आख़िर तक लिखा जायगा.

लेकिन् पेश्तर हमको बादशाह जहांगीरकी बेगम नूरजहांका हाल लिखना ज़ुरूर है, जो कि इस फ़साद की बुन्याद डालने वाली थी.

## नूरजहां बेगमका हाल.

ख़्वाजा मुहम्मद शरीफ़, जो पेश्तर हिरातके हाकिम मुहम्मदख़ां तकलूका दीवान और उसके मरने बाद ईरानके बादशाह तहमास्पका वज़ीर हो गया था, उसने बादशाह हुमायूंकी तक्लीफ़ोंमें हिरातके मक़ाम पर बहुत ख़ातिर्दारी की थी, जबकि पठान लोग उसे निकालकर दिल्लीके मालिक हो गये थे. ख़्वाजा मुहम्मद शरीफ़ मरगया, तो उसके दो बेटे ग़यासबेग व मुहम्मद ताहिरबेग ज़मानेकी गर्दिशसे ईरान

( १ ) मारवाड़ अथवा मेवाड़ होगा.
( २ ) शायद उज्जैन होगा.
( ३ ) पाटनसे मुराद गुजराती बादशाह होंगे, क्यौंकि पहिले गुजरातकी राजधानी पट्टनमें थी.

छोड़कर हिन्दुस्तानको रवाना हुए, ग़यासबेगके साथ उसकी बीबी और दो लड़के और एक लड़की थी. कन्धारके मक़ामपर बहुत तक्लीफ़की हालतमें एक लड़की और पैदा हुई, जिसका नाम मिहरुन्निसा रक्खा-- ( यही नूर जहां थी ).

ग़यासबेगकी तक्लीफ़ोंका ज़ियादा लिखना फ़ुज़ूल समझकर मुख़्तसर करदिया गया है.

किसी ज़रीएसे यह लोग बादशाह अक्बरके दर्बारमें पहुंचे, ग़यासबेग पढ़ा लिखा और होश्यार आदमी था, कुछ इल्मके ज़रीएसे या हुमायूं शाहकी ख़िद्मतोंके सबब बादशाह अक्बरके दर्बारमें इज़्ज़तदार होगया, इसको एतिमादुद्दौलाका ख़िताब और विकालतका उहदा मिला; जब बादशाहके ज़नानख़ानेमें इसकी औरत आने जाने लगी, तो उसके साथ मिहरुन्निसा भी जाती थी, इसकी ख़ूबसूरती पर शाहज़ादा सलीम याने जहांगीर माइल होगया और कुछ छेड़छाड़ भी करने लगा, जिसकी ख़बर बादशाहके कानों तक पहुंची, तो बादशाहने मिहरुन्निसाका निकाह शेरअफ़्गनके साथ करादिया. यह शेरअफ़्गन ईरानके बादशाहज़ादे इस्माईल शाहके बावरचीख़ानेका दारोग़ा था, जिसका अस्ली नाम अली कुली और क़ौम इस्तजलू है; इस्माईलके मरजाने पर यह शख़्स ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमके ज़रीएसे शाही दर्बारमें पहुंचा, और इसने कई लड़ाइयोंमें बहादुरी करनेके सबब शेरअफ़्गनका ख़िताब पाकर सूबे बंगालेमें जागीर हासिल की.

जब बादशाह अक्बरका इन्तिक़ाल होगया, और जहांगीर बादशाह हुआ, ( जिसके दिलपर मिहरुन्निसाकी मुहब्बत जमीहुई थी ) तो उसने ख़्वाजह सलीम चिश्ती वलीके पोते कुतुबुद्दीनको बंगालेका सूबेदार बनाकर ख़ानगीमें कह दिया, कि शेर अफ़्गनको समझादेना, कि वह मिहरुन्निसाको तलाक़ दे; अगर वह ऐसा नकरे तो किसी तुहमतसे या लड़ाई से क़त्ल या क़ैद कियाजावे; जब कुतुबुद्दीनने बंगालेमें पहुंचकर शेर अफ़्गनको इशारेसे बादशाहका मन्शा ज़ाहिर किया, तो उसने गुस्सेमें आकर कुतुबुद्दीनको तलवार से मारडाला, और कुतुबुद्दीन के आदमियोंने शेर अफ़्गनख़ांका भी काम तमाम किया. मिहरुन्निसा एक लड़की समेत, जो कि शेर अफ़्गनसे थी, क़ैद करके शाही दर्बार में पहुंचाई गई, जहां ४ वर्ष बाद विक्रमी १६६८ [ हि० १०२० = ई० १६११ ] को वह बादशाह जहांगीरके निकाहमें आई. उसका ख़िताब बादशाहने पहिले 'नूर महल' और पीछे 'नूरजहां' रक्खा, और कुछ अर्से बाद उसके ऐसा इख़्तियारमें होगया, कि मुहर और सिक्केमें भी उसका नाम खुदवादिया था. इसके भाई अबुल्हसनको पहिले एतिक़ादखां और पीछे आसिफ़ख़ांका ख़िताब

इनायत हुआ. जिसकी बेटी हमीदाबानू ('मुम्ताज़महल') की शादी शाहज़ादे खुर्रमके साथ हुई, इसी सबबसे नूरजहां पहिले शाहज़ादे खुर्रमकी बड़ी मददगार थी.

शाहज़ादे खुर्रमकी इज़्ज़त बादशाह जहांगीरने इतनी बढ़ाई, कि किसी शाहज़ादे की न हुई होगी; इस शाहज़ादेको चालीस हज़ारी ज़ात मन्सब व शाहजहांका ख़िताब और शाही दर्बारमें तख़्तके सामने कुर्सीपर बैठनेका रुतबा मिला था. नूरजहां बेगम की बेटी, जो शेर अफ़्ग़नसे थी, उसका निकाह कुछ अ़र्से बाद शाहज़ादे शहरयारके साथ कियागया, यही बात शाहजहांकी इज़्ज़त और आरामके जंगलमें चिंगारी के समान हुई. क्योंकि बादशाह जहांगीर तो मोमकी पुतलीके मानिन्द जिधर नूरजहां फेरती थी उसी तरफ़ फिरजाता, वह नामके लिये बादशाह था, शहनशाहीका झंडा नूरजहां बेगम के हाथमें समझना चाहिये, जिसकी मुहरमें यह शिअ़्र खुदाहुआ था--

शिअ़्र

नूर जहां गश्त व हुक्मे इलाह-
हमदमो हमराज़े जहांगीर शाह.

अर्थ- नूरजहां खुदाके हुक्मसे, जहांगीर बादशाहकी दोस्त और सलाहकार हुई.

मुहरके हालको देखकर पढ़नेवालोंको ज़ियादा अचंभा न करना चाहिये, क्योंकि ख़ास जहांगीरके सिक्केमें भी नीचे लिखा हुआ शिअ़्र दर्ज था-

शिअ़्र

व हुक्मि शाहे जहांगीर याफ्त सद ज़ेवर-
व नामे नूरजहां बादशाह बेगम ज़र.

अर्थ- जहांगीर बादशाहके हुक्मसे और नूरजहां बादशाह बेगमके नामसे रुपयेने बहुतसी रौनक़ पाई.

ऊपर लिखे हुए शिअ़्रोंके पढ़नेसे हरएक आदमी अच्छी तरह जान सक्ता है, कि बेगमको सब कुछ इख़्तियार था. उसने शाहजहांकी तरफ़से बादशाहके दिलको फेरना शुरू किया, वह चाहती थी कि मेरा दामाद शहरयार वलीअ़हद किया जावे. शाहज़ादे शाहजहांने दक्षिणकी मुहिम्मसे लौटकर मांडूके क़िलेसे बादशाहके पास ज़िले धौलपुरको अपनी जागीरमें मिलानेकी दर्ख़्वास्त भेजी, और दर्या नाम पठानको वहांकी हुकूमतके लिये रवाना किया, लेकिन् नूरजहां बेगमने यह जागीर पहिले ही शहरयारके नामपर लिखवाकर शरीफुल्मुल्कको धौलपुर भेजदिया था; जब दर्याख़ां वहां पहुंचा, तो दोनोंमें लड़ाई हुई. शरीफुल्मुल्क

में तीर लगनेसे अन्धा हुआ. यह खबर नूरजहांके कान तक पहुंची, वह मक्कार बेगम तो पहिलेसे ही बहाना ढूंढरही थी यह ताज़ा गुनाह शाहज़ादेका उसके हाथ आया, बेगमने बादशाहको खूब भड़काया. बादशाहने शाहज़ादे खुर्रमको लिखभेजा, कि तुम कन्धारकी तरफ़, ( जो उन्हीं दिनों ईरानके बादशाहने अपने क़ब्ज़ेमें करलिया था ), रवाना हो. इससे बेगमका यह मत्लब था, कि खुर्रमको हिन्दुस्तानके बाहर निकालदियाजावे और शहरयारका रोब बढ़ायाजावे. शाहज़ादे खुर्रमने अपने दीवान अफ़्ज़ल्ख़ांके साथ बहुत नरमीसे बादशाहके पास अर्ज़ी भेजी और चाहता था, कि यह फ़साद रफ़ा हो; दीवानने बहुत कोशिश की, लेकिन् कुछ पेश न गई, और ना उम्मेद फिर आया. शाहज़ादेके दुश्मन मौका पाकर बेगम और बादशाहके सामने बनावटकी बातें पेशकरने लगे, और आसिफ़ख़ां नूरजहांके भाईसे भी उसका दिल फेरदिया, आसिफ़ख़ांको आगरेका सूबेदार करके वहां भेजा, और महाबतख़ांको काबुलसे बुलाया, लेकिन् महाबतख़ांने उज़्र किया, कि जबतक आसिफ़ख़ां और मोतमदख़ां मेरे दुश्मन वहां रहेंगे, उस वक्त तक मैं हाज़िर नहीं होसक्ता; आसिफ़ख़ांको सूबे बंगालपर भेजाजावे, और मोतमदख़ां मारडाला जावे, तो बेशक मैं आसक्ता हूं. बेगमने महाबतख़ांके बेटे अमानुल्लाको मन्सब तीन हज़ारी ज़ात और सतरह सौ सवारका दिलाया, और महाबतख़ांको लिखागया, कि इसको अपनी जगहपर काबुलमें छोड़ कर जल्दी चलाआवे.

लाहौर मकामपर महाबतख़ां हाज़िर हुआ और उसकी जगह याकूबख़ां बदख़्शीको नक़्क़ारा देकर काबुलकी सूबेदारीपर भेज दिया. इसी मक़ामपर ईरान के बादशाह अब्बासके एल्ची हैदरबेग वगैरह आये. हम उस ज़मानेके बादशाहोंकी पोलिटिकल् कार्रवाइयोंको दिखलानेके लिये इस किताबके पढ़नेवालों को उन दोनों काग़ज़ोंके तर्जुमोंसे भी बेख़बर नरक्खेंगे, जो शाह अब्बास और जहांगीरने आपसमें लिखे थे–

ईरानके बादशाह अब्बासके ख़तका तर्जुमा–

उन दुआओंकी हवाएं, जिनकी कुबूलियतकी खुशबूओंसे मुरादकी कली खिलकर रिश्तेदारीके दिमाग़की खुशी बढ़ाती है, और उन तारीफ़ोंकी किरनें, जिन की साफ़ चमकसे दोस्तीकी महफ़िल् रौशन् होकर बेगानगी के अंधेरे को दूर करती है, उन बड़े हज़रत सायह खुदाकी महफ़िल का इत्र और उन खुदाके नूरपले हुएकी सच्चाई और सफ़ाईकी महफ़िल्का चिराग़ बनाकर, रौशन अक्ल और रौशनी फैलानेवाले साफ़ दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है– कि उन जानकी बरा-

वर भाई के होश्यारी पसन्द करनेवाले दिल और आस्मान्की बराबर बलन्द तबीअत पर, जो दानाई और होश्यारीका आईना और पैदाइशकी हक़ीक़तोंकी सूरतका शीशा है, रोशन और मालूम होगा-कि बादशाह स्वर्गवासीके बे इलाज मुआमलेके (गुज़रनेके) पीछे बहुतसे झगड़े ईरानमें ज़ाहिर हुए, जिनमें बाज़े इलाक़े इस बुज़ुर्ग खान्दान्के क़ब्ज़ेसे निकल गये. जब यह बे पर्वाह दर्गाह (खुदा) का आजिज़ (मैं) बादशाहतके कामोंको चलाने लगा, तो खुदाकी मिहर्बानियोंकी बरकत और दोस्तों की उम्दह तवज्जुहसे तमाम मौरूसी इलाक़े. जो दुश्मनोंके क़ब्ज़ेमें थे, छीन लिये गये. क़न्धारको, जो उस बड़े खान्दान् (आप) के एजन्टोंके क़ब्ज़ेमें था, अपना ही जानकर झगड़ा न किया गया, भाई बन्दी और दोस्तीके तरीक़ेसे हमको उम्मेद थी कि आप भी अपने स्वर्ग वासी बाप दादोंकी तरह पर उसके सौंप देनेमें तवज्जुह फ़र्मावेंगे; आपने जब ग़फ़लतसे परवाह न की, तो कई बार काग़ज़ और पैग़ामके ज़रीएसे इशारे और साफ़ बयान् भी उसके मांगनेके वास्ते किये गये; शायद आपकी हिम्मत के आगे यह कमदरजा मुल्क इस लायक़ न मालूम हुआ, कि इस खान्दान्के वारिसोंको देकर दुश्मनोंका बद गुमान और बदख्वाहोंकी ज़बानदराज़ी और ऐबजोई दूर करें; कुछ लोगोंने पहिले इस बातको देरमें डाल दिया. जब इस मुआमलेकी हक़ीक़त दोस्त और दुश्मनोंमें फैलगई, और आपकी तरफ़ से कोई जवाब इक़ार और इन्कार की बाबत न पहुंचा, तो मेरी साफ़ तबीअत में यह खयाल आया, कि क़न्धारकी तरफ़ सैर व शिकार किया जावे, शायद इस वसीलेसे उन नामवर मक्सदवर भाईके एजेन्ट दोस्ती और मुहब्बतके तरीक़ोंसे, जो आपसमें जारी हैं, इक़्बालमन्द लश्करकी पेश्वाई करके मेरी खिदमत्में पहुंचेंगे, और नये सिरसे दुन्याके लोगों पर दोनों तरफ़की एकताकी बड़ाई ज़ाहिर होकर दुश्मनों और बदी चाहने वालोंकी ज़बानकी रुकावटका सबब हो. इस इरादे पर बग़ैर भारी सामान क़िला लेनेके मुतवज्जिह होकर, जब फ़राह मक़ाम पर पहुंचे, तो एक हुक्म मिहर्बानीके साथ क़न्धारकी सैर व शिकारका मन्शा ज़ाहिर करनेको वहांके हाकिमके पास भेजा, ताकि मिहमानीका सामान् करे; इज़्ज़तदार ख्वाजह बाक़ी कर्कराक़ को बुलाकर वहांके हाकिम और अमीरोंको, जो क़िलेमें थे, पैग़ाम दिया, कि बड़े हज़रत बादशाह (जहांगीर) और हमारी सल्तनतमें जुदाई नहीं है, और जो कुछ आपसमें जान पहिचान है, वह सब जानते हैं; हम सैरके तरीक़ेपर उस सूबेकी तरफ़ आते हैं, ऐसा न करें, कि कोई रंजीदगी की बात पैदा हो. उन्होंने हुक्मके मज़्मून और पैग़ाम की मस्लहतको सफ़ाईके साथ न सुना और दोनों तरफ़ की मुहब्बत और दोस्तीकी रस्मोंपर खयाल न रखकर गुस्ताखी और गुनाह-

गारी ज़ाहिर की. जब हम क़िलेके पास पहुंचे तो फिर इज़्ज़तदार ख़्वाजह बाक़ी को बुलाकर जोकुछ नसीहतका हक़ था उसको कहलाभेजा, और दस रोज़ तक फ़तहमन्द लश्करको ताकीद फ़र्मादी, कि क़िलेके गिर्द न भटकें; लेकिन् नसीहतोंने कुछ फ़ायदा न दिया, और दुश्मनीसे ज़िद्द की. जब कि इससे ज़ियादा नरमीकी गुन्जाइश न मालूम हुई, क़ज़लबाश लश्करने बावजूद क़िलागीरीका सामान न होनेके क़िलेका मुहासरा शुरू किया, थोड़े दिनोंमें बुर्ज और चारदीवारीको ज़मीन की तरह बराबर करके क़िलेवालोंको लाचार करदिया, जिससे उन्होंने पनाह मांगी. हमने भी मुहब्बतका तरीक़ा, जो बहुत दिनोंसे इन दो बड़े ख़ान्दानोंमें जारी चला आता है, और भाईबन्दीका लिहाज़, जो नयेसिरेसे उस बड़े दरजे और बुज़ुर्गीके तख़्तनशीनकी हुकूमतके वक्तसे हमारी सल्तनतके साथ इस तरहपर मज़्बूत हुआ था, कि दुन्याके बादशाहोंको जलन पैदा हुई, अपनी नज़रमें क़ायम रखकर, ज़ाती मुरव्वतके सबब से उनके क़ुसूरों और नालायक़ियों को, अपनी बख़्शिशसे मुआफ़ करके मिहर्बानियोंके साथ बिल्कुल् सहीह सलामत हैदरबेग तूरबाशीके हमराह, जो इस ख़ान्दानके सच्चे ख़ैरख़्वाहोंमेंसे है, बड़ी दरगाह ( आपके पास ) को रवाना किया. क़सम है कि मौरूसी मुहब्बत और मामूली दोस्तीकी बुन्याद इस सफ़ाई ढूंढनेवाले की (मेरी) तरफ़से ऐसी बलन्द और मज़्बूत नहीं है, कि बाज़े कामोंके ज़ाहिर होनेके सबब, जो ख़ुदाकी क़ुदरत से पैदा होजाते हैं, नुक़्सान पावे.

शिअ्र.

मियाने मा ओ तो रस्मे जफ़ा नख़्वाहद बूद,
बजुज़ तरीक़ए मिहरो वफ़ा नख़्वाहद बूद.

तर्जुमा-हमारे और तुम्हारे दर्मियान् सख़्तीका तरीक़ा न बर्ताजावेगा, सिवाय मुहब्बत और वफ़ादारीकी रस्मके दूसरी बात न होगी.

यह उम्मेद कीजाती है, कि आपकी तरफ़से भी यही उम्दा तरीक़ा जारि रहकर बाज़े इत्तिफ़ाक़िया कामों को नेक निशान नज़रसे पसन्द न फ़र्माकर, अगर कोई नुक्सान मुहब्बतके तरीक़ेमें पैदा हुआ हो, तो ज़ाती मिहर्बानी और क़ुदरती मुहब्बतकी उम्दगीसे, उसके दूर करनेमें कोशिश करके हमेशाकी बहारवाले एक दिली और एकताके फूलको सरसब्ज़ और ताज़ा रखकर, अपनी बलन्द हिम्मतको दोस्तीकी जड़ोंकी मज़्बूती और इत्तिफ़ाक़की मन्ज़िलोंकी दुरुस्तीपर, जो जहान और जहान वालोंकी आराम बख़्शने वाली हैं, मसरूफ़ फ़र्मावें, और हमारे क़ब्ज़ेके कुल्ल इलाक़ोंको अपने तअ़ल्लुक़में जानकर, जिस किसीको चाहें, अता फ़र्माकर इत्तला

बख़्शें, कि बिला तअम्मुल उसको सौंप दिया जावे. इन छोटी बातोंपर कुछ ख़याल न करना चाहिये. जो अमीर और सर्दार क़िलेमें थे, उनसे अगरचि कई, ऐसे काम, जो दोस्तीकी रस्मोंके ख़िलाफ़ थे, ज़ाहिर हुए, लेकिन् जो कुछ भी हुआ हमारी तरफ़से समझें; उन लोगोंने, जो कुछ नौकरी और वफ़ादारीका हक़ था, अदा किया. मुझको यक़ीन है, कि वह हज़रत भी बादशाही बुज़ुर्गी और बड़ी मिह्र्बानी उनके हालपर ज़ाहिर फ़र्माकर, हमको उनसे शर्मिन्दा न करेंगे. ज़ियादा क्या लिखाजावे, हमेशा आस्मान तक पहुंचनेवाले नेज़े ख़ुदाकी तरफ़से मदद पाते रहें.

---

इसके जवाबमें शहन्शाह जहांगीरने शाह ईरानको
जो ख़त लिखा उसका तर्जुमा यह है–

वह शुक्र, जो क़ियासकी हद्दसे बाहर है, और वह तारीफ़, जो ज़ाहिरी मिसालोंसे अलहदा है, उस बुज़ुर्ग ख़ुदाको लायक़ है, जिसने बड़े बादशाहोंके इक़ारों और क़ानूनोंकी मज़्बूतीको दुन्याके इन्तिज़ामका सबब, और जहानमें हुकूमत रखनेवालोंको आदमियोंकी आसानी और आरामका ज़रीआ जो ख़ुदाकी एक अमानत है, बनाया है. इस बयान और मुआमलेकी पूरी मिसाल वह मुवाफ़क़त और दोस्ती है, जो इस बड़े ख़ान्दान बलन्द दरजेके दरमियान क़ायम हुई, और हमारी रोज़ बरोज़ बढ़नेवाली बादशाहतके वक़्में नये सिरसे उस दरजेपर बलन्द और मज़्बूत हुई, कि ज़मानेके बादशाहोंको रंज दिलाने लगी. उन बादशाह जमशेदके दरजे, सितारोंकी फ़ौज, आस्मानकी दरगाह, और कैयानी ख़ान्दानके चमकने वाले ताज, बादशाही तख़्तके लायक़, बुज़ुर्ग बादशाहतके बाग़के फलदार दरख़्त, बड़े ख़ान्दानके चुनेहुए, सफ़वी घरानेके सरताजने, बग़ैर किसी सबबके दोस्ती और भाई बन्दी और एक दिलीके बाग़को परेशान किया, जिसपर ज़मानोंके गुज़रने और वक़्तोंके बदलनेसे नुक़्सानकी धूलके जमनेका मौक़ा न हुआ था. ऐसी ज़ाहिरी दोस्ती और मुहब्बत दुन्याके मामूली हाकिमोंमें होती है, कि ऐन मज़्बूती और भाईबन्दी और दोस्तीमें, जिसपर क़सम खालीजाती है, और निहायत रूहानी मुवाफ़क़त और जिस्मानी सच्चाईसे, जिसके सबबसे जान तककी भी परवाह न रखकर मुल्क और मालकी कुछ हक़ीक़त नहीं समझीजाती, इसतरह पर सैर व शिकार कियाजावे.

मिसरअ्

सद हैफ़ बर मुहब्बते वेश अज़ क़ियासे मा.

अर्थ– हमारी क़ियाससे ज़ियादा मुहब्बत पर सैकड़ों अफ़्सोस हैं.

मुहब्बत भरे हुए खतके आनेसे, जो कन्धारकी सैर और शिकारके उज्ममें, नेकवख्त हैदरबेग और वलीबेगके हाथ भेजा था, और उस फ़रिश्तोंकी आदत वाली ज़ातकी तन्दुरुस्तीके हालसे भरा हुआ था, खुशीके निशान मुबारक हालतके साथ पैदा हुए. उन बड़े दरजेके मक्सदवर भाईकी दुन्या संवारनेवाली रायपर पोशीदा न रहे, कि बुजुर्ग पैग़ाम वाले रम्बलबेगके हमारी दरगाहमें पहुंचने तक कभी तहरीरी या ज़बानी ख्वाहिश कन्धारके मुआमलेकी बाबत न ज़ाहिर की गई थी. जब कि हम उम्दा इलाके काश्मीर की सैर व शिकारमें मश्गूल थे, उसवक्त दक्षिणके कमहिम्मत लोगोंने बेवकूफ़ीसे ताबे-दारीके तरीक़ेसे क़दम बाहर रखकर गुनहगारीका तरीक़ा इख्तियार किया, जिससे बाद-शाही हिम्मत पर उन बेवकूफ़ोंकी सज़ा और तंबीह लाज़िम हुई, और हमारा लश्कर दारुस्सल्तनत लाहौरमें पहुंचा. प्यारे बेटे शाहजहांको ज़बरदस्त फ़ौजके साथ उन बदबख्तोंपर मुक़र्रर फ़र्माया, और हम आप दारुल्ख़िलाफ़त आगरेकी तरफ़ रुजूअ़ हुए; उस वक्त रम्बलबेग पहुंचा, और मुहब्बत बढ़ाने वाला और तख्त की रौनक़ बख़्शनेवाला खत पेश किया; हम उस दोस्तीके तावीज़को एक अच्छा शगून ( शकुन ) समझकर दुश्मनोंकी शरारतके दूर करनेके इरादेपर आगरेकी तरफ़ रवाना हुए. उस बड़े क़ीमती खतमें कन्धारकी ख्वाहिश ज़ाहिर न कीगई थी, रम्बलबेगने ज़बानी कहाथा, जिसके जवाबमें हमने फ़र्मादिया था, कि "हमको उन मक्सदवर भाईसे किसी चीज़में तअम्मुल नहीं है, अगर खुदाने चाहा तो दक्षिणकी मुहिम्के तै होने बाद जिस तौरपर कि हमको मुनासिब मालूम होगा, तुमको रुख्सत करेंगे", और हमने फ़र्माया था, कि वह दूर दराज़ सफ़र तै करके आया है, थोड़े दिन लाहौर में रास्तेकी तक्लीफ़ोंसे आराम ले, फिर बुलालिया जावेगा; आगरेमें पहुंचनेके बाद हमने उसको तलब किया, ताकि रुख्सत दीजावे. खुदाकी मिहर्बानियें उसकी दरगाहके ताबेदारके (मेरे) हालपर जारी हैं, इस सबबसे फ़तहके साथ तबीअ़तको इत्मी-नान हासिल हुआ, और मैं पंजाबको रवाना होकर इसी बातकी फ़िक्रमें था, कि क़ासिदको रुख्सत करूं, बाज़े ज़रूरी कामोंके पूरा होनेके बाद इलाके काश्मीर की तरफ़, जो आब हवाकी दुरुस्ती और सफ़ाईमें तमाम दुन्याके सय्याहोंके नज़्दीक उम्दा मानाहुआ है, मुतवज्जिह हुए; उस दिलपसन्द इलाकेमें पहुंचने पर रम्बल्बेगको हमने रुख्सतके लिये बुलाया, ताकि अपने साथ रखकर उस जगहकी एक एक ताज़गी और खुशी बख्शनेवाली चीज़को उसे दिखलावें. इसी मौक़ेपर उन मक्सदवर भाईके कन्धारको लेनेके इरादेकी ख़बर, जो हर्गिज़ खातिरमें न गुज़री थी, पहुंची; बड़ा तअ़ज्जुब मालूम हुआ, कि एक भट्टी की मुवाफ़िक़ गांवकी क्या हक़ीक़त है, जिसके लेनेकेवास्ते खुद मुतवज्जिह और

दोस्ती व भाईबन्दी ओर मुहब्बतकी आंख बन्द करलें. अगरचि सच्चे सहीह कौल वाले मुख़्बिर इत्तला देते थे. लेकिन् हम यक़ीन नहीं करते थे. जब कि यह ख़बर तहक़ीक़ होगई. फ़ौरन् अब्दुल्अज़ीज़ख़ांको हमने हुक्म भेजदिया, कि उन मक़्सद-वर भाईकी मरज़ी से बर्ख़िलाफ़ी न करे, अभी तक भाईबन्दीका बर्ताव मज़्बूत है; इस दोस्ती ओर एकताके दरजेको हम एक जहान भरसे ज़ियादा जानते हैं, और किसी चीज़को उसके बराबर नहीं समझते. बस इसवास्ते भाई बन्दीके लायक़ ओर मुनासिब यह था. कि एल्चीके आने तक. जो शायद अपने मत्लब व मुद्द-आके मुवाफ़िक़ ख़िद्मतमें पहुंचता. सब्र फ़र्माते. एल्चीके पहुंचनेसे पहिले ऐसा नुक्सान ख्या रखनेपर ज़माने वालोंके नज़्दीक इक़ार ओर सच्चाईके क़ानून, और मुर-व्वत व हिम्मतवरीके तोड़नेका क़ुसूर किसकी तरफ़ समझा जावेगा. बुज़ुर्ग खुदा हर-एक हालतमें निगहबान ओर मददगार रहे.

---

शाहज़ादे खुर्रमकी जागीरें. जो गंगा जमुनाके आसपासकी थीं, ज़ब्त होकर दूसरे सर्दारोंको देदी गई. ओर शाहज़ादेको लिखागया. कि मालवे, दक्षिण ओर गुजरातकी तरफ़ अपनी जागीर मुक़र्रर करे. सूबे दक्षिणमें जिस क़दर बादशाही फ़ौज मोजूद है, फ़ौरन् कन्धारकी मुहिम्के लिये यहां भेजदे. यह सब हुक्म बेगमकी तरफ़से होता था. बादशाहकी दिली ख्वाहिश नहीं थी.

इस फ़सादके वक्त बादशाह काश्मीर व लाहोरकी तरफ़ था, शाहज़ादेके दक्षिणसे आगरेकी तरफ़ कूच करनेकी ख़बर सुनकर बादशाह भी लाहोरसे आगरे को रवाना हुआ: उसी वक्त आगरेसे आसिफ़ख़ांकी अरज़ी पहुंची. कि जो ख़ज़ाना तलब फ़र्माया गया है, उसके भेजनेका वक्त नहीं है, क्योंकि शाहज़ादे खुर्रमका इरादा बद मालूम होता है, ओर उसके आगरेकी तरफ़ आनेकी ख़बर गरम है. इस पर बादशाहने बहुत ख़फ़ा होकर शाहज़ादे खुर्रमका नाम 'बेदोलत' रख-दिया, बल्कि तहरीरोंमें भी यही नाम लिखनेका हुक्म होगया. बादशाह ख़ास अपनी तुज़क जहांगीरी नाम किताबमें निहायत रंजसे लिखता है- कि-

"वह पर्वरिशें ओर मिहर्बानियें, जो उस (खुर्रम) के हक़में मुझसे ज़ुहूरमें आई हैं में कह सक्ता हूं, कि अब तक किसी बादशाहने अपने बेटे पर नकी होंगी: जो मेरे बापने मेरे भाइयोंको उहदे दिये थे, मैंने उसके नोकरोंको इनायत किये. ख़िताब व नेज़ा ओर नक़ारा उनको दिया गया. जैसा मैं सिलसिले

किताबमें पहिले लिख आया हूं, पढ़ने वालोंसे पोशीदा न रहेगा; जिस क़दर तवज्जुह और मिहर्बानी उस पर की गई, क़लमको उसके लिखनेकी ताक़त नहीं है, ज़ियादा रंजके सबब नहीं लिखाजासक्ता. इस वक़्में, जब कि सफ़रकी थकान और मिज़ाजकी कमज़ोरी और आब हवाकी ना मुवाफ़क़त मौजूद है, मुझको सवार होकर ऐसे नालायक़ बेटेकी तरफ़ चलना पड़ता है, बहुतसे नौकर, जिनको बहुत वर्षों तक मैंने पाला था, और अमीरीके दरजेपर पहुंचाया था, और वह आजके दिन उज़बक या क़ज़लबाश क़ौमकी लड़ाईमें काम आते, वे बेदौलतकी बदबख़्तीसे बे फ़ायदा सज़ाको पहुंचे, और मेरे हाथसे ख़राब हुए; लेकिन् मैं खुदाका शुक्र करता हूं, कि उस बुज़ुर्ग और पाकने इसक़दर हिम्मत और बुर्दबारी मुझको बख़्शी है, कि इन तमाम तक्लीफ़ोंको उठालूंगा, और अपनी उम्रके दूसरे अहवालकी तरहपर पूरा करके आसान करलूंगा, लेकिन् जो बात मेरे दिलपर भारी गुज़रती है, और मेरे ग़ैरत्दार मिज़ाजको परेशानीमें डालती है, वह यह है, कि ऐसे वक़्में मुनासिब था, कि मेरे नेकबख़्त लड़के और साफ़ दिल सर्दार आपसमें एक इरादा होकर कन्धार और खुरासानकी कारगुज़ारीको, जो हिन्दुस्तानकी बादशाहतके लिये इज़्ज़त है, इख़्तियार करते, इस बे नसीबने अपने पांवपर कुल्हाड़ी मारकर, इस इरादेको रोक दिया, और कन्धारके मुआमलेकी गिरह मेरे दिलमें पड़ी रहगई, जिसका सुलझना देरमें होगा; मैं उम्मेद रखता हूं, कि बुज़ुर्ग खुदा इन फ़िक्रोंको मेरे दिलसे दूर करेगा".

बादशाहकी इबारतका तर्जुमा इस वास्ते लिखा गया, कि पढ़ने वालोंको मालूमहो, कि बूढ़े बादशाहको मत्लबी लोगोंने किस तरहकी तक्लीफ़ें पहुंचाईं. इस वक़ महाबतख़ांने अपनी पुरानी दुश्मनीका बदला लेना शुरू किया, मुहतरमख़ां ख़्वाजेसरा, ख़लीलबेग ज़बिल्क़द्र और फ़िदाईख़ां मीरतुज़क तीनों आदमियों पर शाहज़ादे खुर्रमसे ख़तकिताबत रखनेका इल्ज़ाम लगाया, मुहतरमख़ां और ख़लीलबेगको मिर्ज़ा रुस्तमके क़सामिया बयान व नूरुद्दीन कुलीकी तस्दीक़से और अबूसईदके कई खूनी मुक़द्दमातकी तुहमत लगानेसे महाबतख़ांने शाही हुक्मके मुताबिक़ अपनी तलवारसे बेगुनाह क़त्ल किया, और फ़िदाईख़ांको बे क़ुसूर जानकर क़ैदसे छोड़दिया.

बादशाहने राजा रोज़अफ़्ज़ूंको शाहज़ादे पर्वेज़के लानेके लिये बंगाले व बिहारकी तरफ़ डाकमें रवाना किया; जब बादशाह नूरसराय मक़ामपर पहुंचा, तो उस वक़ एतिबारख़ांकी अर्ज़ीसे मालूम हुआ, कि शाहज़ादा खुर्रम फ़तहपुर और आगरेके पास पहुंचा, और क़िलेके मज़्बूत होनेसे भीतर न घुसने पाया,

ताहम बाहर जहां कहीं क़ाबू पाया, वहां बिगाड़ किया, जैसे लश्करख़ांके मकानसे नौ लाख रुपये और दूसरे अमीरोंसे जितना मिलसका, शाहज़ादेके मुलाज़िम सुन्दरदासने लूटलिया. बादशाह जहांगीरने मूसवीख़ांको इस वारदातकी ख़बरके पहिले शाहज़ादेकी दिली ख़्वाहिश जानने व फ़हमाइशके वास्ते रवाना करदिया था, वह ख़ुर्रमके पास पहुंचा, तो शाहज़ादा दिलसे चाहता था, कि मैं अकेला बापकी ख़िदमत्में हाज़िर होजाऊं, जिससे दोनोंकी नेकनामीको दाग़ न लगे; मूसवीख़ांके साथ अपने मोतमद क़ाज़ी अब्दुलअज़ीज़को शहन्शाही ख़िदमत्में भेजदिया, और आप आगरे और फ़त्हपुरकी तरफ़से चला गया. बादशाहको तो नूरजहांने आगका शोला बनारक्खा था, क़ाज़ीकी एक बात भी न सुनी, और क़ैदकरके महाबतख़ांके हवाले किया.

जब बादशाह दिल्ली पहुंचे, तो बहुतसी फ़ौजें एकट्ठी होगईं, शाहजहां के मुक़ाबलेके लिये पच्चीस हज़ार सवार अब्दुल्लाख़ां और ख़्वाजह अबुल्हसनकी मातहती में, लश्करख़ां, फ़िदाईख़ां और नवाज़िशख़ां वग़ैरह समेत भेजे, वह मालवेकी सरहद्द पर शाहज़ादेकी फ़ौजके नज़्दीक पहुंचे थे, कि शाहज़ादेने अपने बापकी फ़ौजसे मुक़ाबला करना वाजिब न जानकर या और किसी सबबसे परगने कोटलाकी तरफ़ किनारा किया, जो रास्तेसे २० कोस बाईं तरफ़ था; शाही फ़ौजको रोकनेके लिये ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमके बेटे दाराबख़ां व राजा विक्रमादित्यको छोड़ा, दोनों तरफ़के फ़ौजी अफ़्सरोंने लड़ाईके लिये लश्करोंकी दुरुस्ती की, लेकिन् मुक़ाबलेके वक्त अब्दुल्ला-ख़ां शाही हरावल फ़ौजका बड़ा अफ़्सर शाहज़ादेकी फ़ौजसे जामिला, उस वक्त ज़बरदस्तख़ां व शेरपंजा व शेरहम्ला व मुहम्मदहुसैन ख़्वाजह जहांका भाई और नूरज़मां असदख़ां मामूरीका बेटा वग़ैरह अब्दुल्लाख़ांकी फ़ौजसे लड़कर मारेगये, और शाहज़ादेकी फ़ौजका अफ़्सर राजा विक्रमादित्य भी गोली लगनेसे हलाक हुआ; दोनों तरफ़की फ़ौजोंमें शोर मचगया, क्योंकि शाही फ़ौजसे तो अब्दुल्लाख़ां शाहज़ादे की तरफ़ आगया और शाहज़ादेकी फ़ौजका बड़ा अफ़्सर ( राजा विक्रमादित्य ) ( १ ) मारागया, इसी सबबसे दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला होना बन्द रहा. फिर शाही फ़ौज तो लौटकर अजमेरकी तरफ़ आई और शाहज़ादा मए अपनी फ़ौजके मांडूमें पहुंचा.

---

( १ ) यह राजा विक्रमादित्य क़ौमका ब्राह्मण और पहिले बादशाही तोपख़ानेका दारोग़ा था, जो ख़ुर्रमका साथी होगया.

शाहज़ादा पर्वेज़ बंगालेसे शाही ख़िदमत्में हाज़िर हुआ. बादशाह जहांगीरने उसको शाही फ़ौजका अफ्सर बनाकर शाहज़ादे खुर्रमके पीछे रवाना किया, और पर्वेज़का मददगार महाबतख़ां हुआ. शाही फ़ौज जब मालवेमें पहुंची तो शाहज़ादे शाहजहांने भी अपनी फ़ौज उसके मुक़ाबलेको रवाना की, लेकिन् रुस्तमख़ां (जिसको शाहज़ादे शाहजहांने अदना दरजेसे पंजहज़ारी मन्सब देकर गुजरातका सूबेदार बनाया था) भागकर महाबतख़ां व पर्वेज़की फ़ौजसे मए अपने साथियोंके जामिला, जिससे शाहजहांकी फ़ौजका इन्तिज़ाम बिल्कुल बिगड़ गया, और कुल अपने साथी सर्दारोंसे शाहज़ादेका एतिबार उठगया, तो जो अपनी फ़ौज थी उसको बुलाकर क़िले मांडूसे नर्मदाके पार होकर बैरमबेग बख़्शीको थोड़ी फ़ौजके साथ नर्मदा किनारे छोड़कर आप क़िले आसेरगढ़ व बुर्हानपुरकी तरफ़ चलागया, किसी क़दर नर्मदा पर जो किश्तियां थीं वे बैरम बेगने अपने क़ब्ज़ेमें करलीं, इस वक्त मुहम्मद तक़ी बख़्शीने एक चिट्ठी पकड़कर शाहज़ादे खुर्रमको नज़की, जो ख़ान्ख़ानां अब्दुर्रहीमकी तरफ़से महाबतख़ांके नाम लिखीगई थी, उसमें यह शिअ्र दर्ज था.

शिअ्र.

सद् कस् ब नज़र निगाह मेदारन्दम्,
वरना बिपरीदमे ज़ि बे आरामी.

अर्थ--मुझको सैकड़ों आदमी निगाह रखते हैं, नहीं तो बे क़रारीसे निकल भागता.

जब यह चिट्ठी ख़ान्ख़ानांको मए उसके लड़केके तलब करके शाहज़ादेने दिखलाई तो उससे कुछ जवाब न दियागया, इस लिये क़ैद कियागया.

शाहजहां क़िले आसेरमें बहुतसा खटला मए लौंडी बांदियोंके छोड़कर गोपालदास राजपूतको वहांका हाकिम बनाने बाद आप बुर्हानपुरकी तरफ़ चलागया.

पीछेसे शाहज़ादा पर्वेज़ मए महाबतख़ांके शाही फ़ौजको लेकर नर्मदा नदी पर आया, लेकिन् बैरमबेग शाहज़ादे खुर्रमका मुलाज़िम पेश्तरसे ही किश्तियोंको अपने क़ब्ज़ेमें करलेनेसे दक्षिणी किनारेको तोपख़ाने व अपने बहादुर सिपाहियोंसे मज़्बूत करके लड़ाईको तय्यार था. महाबतख़ांने नदी उतरना मुश्किल जानकर ख़ान्ख़ानां अब्दुर्रहीमको पोशीदा लिखावटसे अपनी तरफ़ मिलाया. उस बूढ़ेने भी महाबतख़ांके दावमें आकर शाहज़ादेको फ़रेबसे कहा, कि अब सुलह इख़्तियार करना बिहतर है, मैं आपका ख़ैरख़्वाह हूं, अगला कुसूर मुआफ़ कर

दीजिये अब हर्गिज़ ख़िदमत् गुज़ारीमें फ़र्क़ न आवेगा. शाहज़ादा ख़ुर्रम उसके कहनेको सच मानगया और कुरआनकी सौगन्द दिलाने पर उसको महाबतख़ांकी तरफ़ रवाना किया, और उसके बेटोंको अपने क़ब्ज़ेमें रक्खा, उसको चलते वक्त लाचारीसे यह भी कहा, कि हर तरह इज़्ज़त हाथसे न देना चाहिये. ख़ान्‌ख़ानां दक्षिणी किनारेसे हुक्मके मुवाफ़िक़ सुलहके लिये तहरीरी शर्तें कररहा था, जिससे जंगी लोग मए बैरमबेगके सुस्त होगये; रातके वक्त शाही फ़ौजके मुलाज़िम नदी उतर आये और ख़ानूख़ानां उनसे मिलगया. बैरमबेगने भागकर शाहज़ादेको इस हालकी ख़बर दी, शाही फ़ौजने बुर्हानपुर तक पीछा किया, और शाहज़ादा ख़ुर्रम गोलकुंडा वग़ैरह ग़ैर अमल्दारीमें होताहुआ उड़ीसेकी तरफ़ पहुंचा; वहांके हाकिमोंने सामना न किया, जो कुछ माल अस्बाब हाथ आया लेताहुआ बर्द्‌वानको गया; वहांका हाकिम मुहम्मद सालिह कुछ मुक़ाबलेसे पेश आया, लेकिन् भागकर इब्राहीमख़ां सूबेदार बंगालाको ख़बर दी.

ख़ुर्रमने उसको मिलाना चाहा लेकिन् वह नमक हलाल नूरजहां बेगमका मौसा बादशाही ख़ैरख़्वाहीपर निगाह रखकर शाहज़ादेसे न मिला, और ढाकेसे चलकर राजमहलके पास मुक़ाबला करनेको तय्यार हुआ. शाहज़ादेने भी राजा भीम महाराणा अमरसिंहके बेटे, अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंग, ख़्वाजा साबिर, ख़ानूदौरां, दर्याख़ां, बहादुरख़ां सहेला, अलीख़ां व शेरबहादुर वग़ैराको तय्यार करके उसकी तरफ़ मुक़ाबलेके लिये भेजा. इब्राहीमख़ांने भी मए पांच हज़ार सवार व जंगी हाथियोंके मुक़ाबला किया, दोनों तरफ़के बहुतसे बहादुर आदमी मारेगये, और अब्दुल्लाख़ांके किसी सर्दारने इब्राहीमख़ांका सिर काटकर अपने मालिकके पास पेश किया. शाहज़ादेने ढाकेपर क़ब्ज़ा करलिया, वहांसे चालीस लाख ४०००००० (१) रुपया नक़्द व पांच सौ हाथी हासिल हुए; शाहज़ादा ख़ुर्रम ख़ान्‌ख़ानांके बेटे दाराबख़ांको बंगालेका नाज़िम मुक़र्रर करके उसके बेटे शाहनवाज़ व एक बेटी और उसकी औरतको साथ लेकर जौनपुर व इलाहाबादकी तरफ़ रवाना हुआ. बंगालेके बहुतसे सर्दार शाहज़ादे ख़ुर्रमसे आमिले, और सय्यद मुबारकने हाज़िर होकर क़िला रुहतास (रोहिताश्व) शाहज़ादेके सुपुर्द किया; उसी क़िलेमें विक्रमी १६८१ कार्तिक कृष्ण ११ [ हि० १०३३ ता० २५

---

(१) इनमेंसे तीन लाख रुपये अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंगको, दो लाख रुपये राजा भीम सीसोदियेको, एक लाख रुपये दाराबख़ां, एक लाख दर्याख़ां, पचास पचास हज़ार रुपये वज़ीरख़ां, शुजाअतख़ां, मुहम्मद तक़ी और बैरमबेगमें से हरएकको दिये.

ज़िलहिज = ई० १६२४ ता० ९ ऑक्टोबर] शनिवारको चार घड़ी रात गये शाहजहांके बेटे शाहज़ादे मुरादबख़्श का जन्म हुआ. शाहज़ादा खुर्रम अपने ज़नानेको इसी क़िलेमें छोड़कर जौनपुर गया.

बादशाह जहांगीरने शाहज़ादे पर्वेज़को मए शाही लश्कर व बड़े अमीरोंके बुर्हानपुरकी तरफ़से इलाहाबाद जानेका हुक्म दिया, और पर्वेज़को यह भी लिखा कि ख़ान्ख़ानां अब्दुर्रहीम नज़रबन्द रक्खाजावे, क्योंकि उसका बेटा दाराबख़ां, शाहजहांके पास है, पर्वेज़ने वैसाही किया, लेकिन् ख़ान्ख़ानां के एक गुलाम फ़हीम नामीने क़ैद होना पसन्द न करके अपने एक बेटे और चौदह आदमियों समेत लड़कर जान दी. अब्दुल्लाख़ांने इलाहाबादका क़िला जाघेरा, लेकिन् पर्वेज़ और महाबतख़ांके पहुंचनेसे उसे छोड़कर पीछे लौटनापड़ा. शाहज़ादे खुर्रमने गंगा पर बन्दोबस्त कररक्खा था, कि शाही फ़ौज न उतरसके, बादशाही लश्करने उतरना चाहा; वहां मुहम्मद ज़मान् शाही लश्करके अफ़्सरसे लड़कर खुर्रमका सर्दार बैरमबेग मारागया, और बादशाहकी सेना गंगा उतर गई.

जब शाहज़ादा खुर्रम टोंस नदीपर पहुंचकर अपने सर्दारों से सलाह करनेलगा तो अब्दुल्लाख़ांने दिल्लीकी तरफ़ होकर दक्षिणमें जानेकी सलाह दी, और कहा कि ४०००० बादशाही फ़ौजसे अपनी सात हज़ार फ़ौजका लड़ना कठिन है; लेकिन् राजा भीमसिंह अमरसिंहोतने उसके बर्ख़िलाफ़ लड़नेके लिये ज़िद की. शाहज़ादेने भी यही सलाह पसन्द की और दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला हुआ. मेवाड़की पोथियों में व शाइरोंने दो बातें फ़ार्सी तवारीख़ोंसे ज़ियादा लिखी हैं, वे ये हैं-

राजा भीमने जौनपुर मक़ामपर अपने राजपूत सर्दारोंको ज़िरह बक्तर व घोड़े तक़्सीम किये, और केसरिया (१) कपड़े पहनाये, उस वक़ राजा भीमने मानसिंह शक्तावतके लिये, जो उनका पूरा मित्र था, एक घोड़ा और एक ज़िरह बक्तर बाक़ी रक्खा, तब सब लोगोंने कहा कि वह मेवाड़में बहुत दूर है इस लड़ाईमें इतनी दूरसे किसतरह आसक्ता है! राजाने कहा कि वह मेरा पूरा मित्र है मेरी तक्लीफ़ों और ऐसे तीर्थोंके मौक़े पर लड़ाइयोंका हाल सुनकर ज़ुरूर आवेगा. जब यह लड़ाई टोंस नदीपर शुरू हुई, उस वक़ मानसिंह गया, और अपनी ज़िरह बक्तर पहनकर बड़ी बहादुरीके साथ लड़ाईमें मारागया.

---

(१) राजपूतोंमें आम तरीक़ा है, कि जब जीनेसे बिल्कुल ना उम्मेद होजाते हैं, और मरना इख़्तियार करलेते हैं, तब केसरिया कपड़े पहनते हैं. ऐसा लिबास करने बाद या तो मारे जावें, या फ़त्ह करें, वर्ना दूसरे सबबोंसे जीते वापस नहीं फिरते.

दूसरी बात यह है, कि जयपुरके राजा जयसिंह कछवाहे और जोधपुरके राजा गजसिंह राठौड़ने, जो शाही फ़ौजमें पर्वेज़के साथ थे, राजा भीमसिंहसे कहलाया कि तुम कहाकरते थे कि क़िला चित्तौड़ हमारे सिरपर बन्धा है, अब उसको पैर से बांधकर किसतरह घसीटते फिरतेहो (२), जिसपर भीमसिंहने कहलाया कि मैं भागता नहीं हूं, कोई तीर्थका मौक़ा देखता हूं, जहां लड़ाई होनेसे हज़ारहा आदमियोंको मोक्ष मिले. इसी बातपर शाहज़ादेसे कहा कि हम तो ज़ुरूर लड़ कर मारे जावेंगे, और आप उदयपुर महाराणा कर्णसिंहके पास पहाड़ोंमें जाकर ठहरें. इस पिछली बातकी तस्दीक़ कुछ कुछ तुज़ुकजहांगीरीसे भी लड़ाईकी सलाह देनेसे होती है.

राजा भीमसिंह अपने बहादुर राजपूतोंके साथ बादशाही फ़ौज पर हमला करनेको तय्यार हुआ, उस वक्त राजाका साला शार्दूलसिंह प्रमार, जिसने पेश्तरकी लड़ाइयोंमें कईजगह बड़ी बहादुरियें दिखलाई थीं, घबराया; तब राजाने कहा कि "तू इस तरह क्यों डरता है, यह वक्त राजपूतोंके वास्ते खुशीका है". इस तरह पर समझाकर राजाने उसका हाथ पकड़ लिया और लड़ाईमें चलनेके लिये कहा, तब शार्दूलसिंह बोला कि पहिली लड़ाइयों में मुझको हाथी मैंडक और आदमी मच्छरके बराबर दिखाई देते थे, और अब पहाड़ व मशेरके मानिन्द नज़र आते हैं और तलवार व भालोंकी चमक, तोपोंकी धमकसे मेरा कलेजा फटा जाता है. भीमसिंहने उसका हाथ छोड़कर अपने हाथको गंगाजलसे धोया, शार्दूलसिंह भागकर घरको गया, और राजा भीमसिंहने अपने साथियों समेत घोड़ोंकी बाग शाही लश्कर पर उठाई. महाराजा आंबेर व महाराजा जोधपुर के लश्करोंको तितर बितर करता हुआ शाहज़ादे पर्वेज़के नज़्दीक पहुंचा, जोताजोत एक बड़े नामी हाथीको, जो लड़ाईमें अपना सानी न रखता था, राजा भीमने तलवारों और बर्छोंसे मारकर गिरादिया; क़रीब था कि शाहज़ादे पर्वेज़को भी अपनी तलवारोंसे बहादुरीका तमाशा दिखावे, लेकिन् खुर्रमकी फ़ौजके दूसरे सर्दारों मेंसे किसीने मदद न की, इससे भीमसिंह सत्ताईस ज़ख्म भाले और तलवारोंके अपने बदनपर खाकर, शाहज़ादे पर्वेज़की खास अर्दलीके लोगोंके हाथसे मारेगये. इस राजा भीमकी बहादुरीका हाल तुज़ुक जहांगीरी, बादशाह नामा, मुन्तखबुल्लुबाब, शाहजहां नामा वग़ैरा बहुतसी किताबोंमें बखूबी लिखा है, जिनमेंसे मुन्तखबुल्लुबाब, के बयानका तर्जुमा नीचे लिखाजाता है—

(२) यह एक ताना था, कि अब ग़ैरत छोड़कर भागते फिरते हो.

"राजा भीम और शेरख़ांने बहादुरीके साथ शाहज़ादे पर्वेज़की फ़ौजके मुक़ाबिल आकर तोपख़ानेपर ऐसी तेज़ी और जोशसे सख़्त हम्ला किया, कि बयानमें नहीं आसक्ता, ख़ास राजा भीम अपने हाथसे तलवार मारताहुआ वफ़ादार हमराहियों समेत फ़ौजकी सफ़्को चीरकर ख़ास सुल्तान् पर्वेज़के गिरोह तक पहुंच गया. इस मौक़ेपर जो कोई उसके सामने आया तलवार और भालेसे क़त्ल हुआ, उसके सुल्तान पर्वेज़ की फ़ौजमें पहुंचने तक बहुतसे बहादुर आदमी और नामी सर्दार घोड़ोंसे गिरकर जानसे गये, और क़रीब था, कि चालीस हज़ार सवारकी बादशाही फ़ौजका जमाव बिखरजावे, महाबतख़ांने फ़र्माया, कि उसके मुक़ाबिल मस्त हाथी कियाजावे. राजा भीम और शेरख़ांने दूसरे राजपूतोंके साथ उस काली बला याने हाथीको तलवार और बर्छियोंके ज़ख़्मसे सूंड काटकर ज़मीनपर गिरादिया, हर बार जब कि वह ज़ोर शोरसे हम्ला करता, दोनों तरफ़से तारीफ़ सुनीजाती. आख़िरमें ख़ुद महाबतख़ां कई दिलेर हमराहियों समेत उसके मुक़ाबिल पहुंचा; राजा भीम बहुतसे सख़्त ज़ख़्म उठाकर कई हम्ले करने बाद महाबतख़ांके सामने घोड़ेसे गिरा, जब एक आदमी उसका सिर काटनेके इरादेपर पास आया, तो फिर उसने ग़ैरतके जोशसे खड़ेहोकर अपने दुश्मन्का काम तमाम किया, और जबतक कि उसके दममें दम रहा, तलवार हाथसे न डाली, शेरख़ां भी कई राजपूतों समेत दिलेरीसे लड़कर मारागया".

राजा भीमके मारेजानेसे शाहज़ादे खुर्रमकी फ़ौजी ताक़त कम होगई, तो भी वह दिली मज़्बूतीसे शाही फ़ौजपर ख़ुद हम्ला करना चाहता था, लेकिन् अब्दुल्लाख़ांने मए कितने एक दूसरे अमीरोंके बाबर व हुमायूंकी मिसाल देकर शाहज़ादेको रुहतास गढ़की तरफ़ बचेहुए सवारों समेत पीछे लौटाया. शाहज़ादा रुहताससे अपने बेटे व बेगमोंको लेकर दक्षिणकी तरफ़ रवाना हुआ, जिसकी ख़बर जहांगीरको मिली. बादशाहने शाहज़ादे पर्वेज़को लिखा, कि सूबे बंगालेको महाबतख़ांके सुपुर्द करके तुम फ़ौरन् दक्षिणकी तरफ़ जाओ और शाहजहांका पीछा करो. ख़ान्ख़ानां अब्दुर्रहीमके बेटे दाराबख़ांने शाहज़ादे खुर्रम के साथ जानेमें चन्द उज्र लिख भेजे, इसलिये अब्दुल्लाख़ांने दाराबख़ांके बेटेको शाहजहांके बग़ैर इत्तिला मारडाला, और दाराबख़ांको महाबतख़ांने क़त्ल किया. फिर शाहज़ादे शाहजहांने दक्षिणमें पहुंचकर सूबे बुर्हानपुर पर क़ब्ज़ा किया.

विक्रमी १६८३ [ हि० १०३५ = ई० १६२६ ] तक का हाल, जो शाहज़ादे शाहजहांपर गुज़रा, नहीं मिलता, कि वह सन् १०३४ हिज्रीके किस किस महीनेमें कहां कहां रहा था ? इससे पाया जाता है, कि शायद वह इन दिनोंमें

उदयपुर रहा, और महाराणा कर्णसिंहसे पगड़ी बदलकर भाईचारा किया, क्योंकि जहांगीरके ख़ौफ़से उसको ठहरनेकी जगह न मिलती थी और उन दिनों पर्वेज़ वारिस तख़्तका ज़िन्दा था और ख़ुर्रमको जहांगीरके बाद तख़्त लेनेकी आर्ज़ू थी, इस लिये उसने ऐसे राजपूतोंके गिरोहके मालिक महाराजाको अपना मददगार बनाया, और वह बड़ा गुम्बज़, जो पेश्तरसे तय्यार होरहा था, महाराणा कर्णसिंहने उसके रहने के लिये बहुत जल्द पूरा करवाया, लेकिन् यह इमारत शाहज़ादेकी सलाहसे शुरू और इस वक्त भी उसकी मरज़ीके मुवाफ़िक़ तय्यार हुई; यह कहाजासक्ता है. कि इसी नमूनेके मुवाफ़िक़ उसने मुम्ताज़गंजके रौज़ेका काम बनवाया; अलबत्ता यह इमारत बहुत छोटी है जिसमें पच्चीकारीके बेलबूटे भी मोटे और थोड़े हैं, लेकिन् तर्ज़में दोनों कुछ कुछ एकसे कहे जासक्ते हैं.

यहां आम आदमियोंकी ज़बानी इस तरह मश्हूर है, कि शाहज़ादा पहिले देलवाड़ेकी हवेलीके गुम्बज़ोंमें ठहरायागया था, लेकिन् सवारियों और नक़्क़ारख़ानों वग़ैरा रियासती दस्तूरोंको उसने अपने सामने होना बे अदबी बयान किया, तब महाराणा कर्णसिंहने उसको जगमन्दिरोंके उसी गुम्बज़में मिहमान रक्खा. यह साबित होता है, कि कुछ अर्से बाद शाहज़ादा वापस दक्षिणको चलागया; मेरे क़ियाससे तो शाहज़ादेने, जब दुबारा दक्षिणको गया, याने वि० १६८१ [ हिज्री १०३३ = ई० १६२४ ] के बाद, उदयपुरको अपना पोशीदा क़ियामगाह रक्खा होगा, और दक्षिण, गुजरात व सिन्ध वग़ैरा मुल्कोंमें यहांसे निकलकर जाना और उन्हीं मुल्कोंमें अपना रहना मश्हूर किया होगा. इससे पीछे जब गुजरातमें रहा उस समय भी उदयपुरमें रहना ख़याल किया जासक्ता है.

शाह्जहांने वि० १६८३ [ हिज्री १०३५ = ई० १६२६ ] में अपने दो शाहज़ादों दाराशिकोह व औरंगज़ेबको बादशाह जहांगीरके हुज़ूरमें भेजदिया. उन्हीं दिनोंमें बादशाह जहांगीर महाबतख़ांसे नाराज़ हुए, जो अपनी जान व इज़्ज़तके ख़ौफ़से भागकर शाहज़ादे ख़ुर्रमके पास चलागया. महाबतख़ां कुछ अर्से तक उदयपुर व देवलियाके पहाड़ोंमें रहा और उसने देवलियाके रावत जसवन्तसिंहको क़ीमती जवाहिरकी जड़ीहुई एक अंगूठी भी दी. इन्हीं तक्लीफ़ोंके वक्तकी मुहब्बतके सबबसे उसने हरिसिंहको शाहजहां बादशाहसे मन्सब दिलाकर देवलियाका ठिकाना उदयपुरकी मातहतीसे जुदा किया. इसी सालमें शाहज़ादे ख़ुर्रमने सिन्धमें ठठेकी तरफ़ धावा किया और उसी मक़ामपर महाबतख़ां शाहज़ादेसे जा मिला; फिर वहांसे गुजरातकी तरफ़ गया. अब शाहज़ादेका हाल छोड़कर महाराणा कर्णसिंहका बाक़ी बयान लिखा जाता है.

इन्हीं दिनोंमें महाराणा कर्णसिंहने मेवाड़के मेरोंकी सरकशीसे उनपर ठाकुर जयसिंह डोडियाकी अफ्सरीमें फ़ौज भेजी; फ़ौजने मेरोंकी सरकशी तो मिटादी, लेकिन् ठाकुर जयसिंह लड़ाईमें मारा गया. इसके बाद महाराणा कर्णसिंह ने बादशाही अह्दके खिलाफ़ क़िले चित्तौड़की मरम्मत करानी शुरू की.

इन महाराणाके वृत्तान्तमें लिखनेके लायक़ यही शाहज़ादे खुर्रमका यहां रहना था, जो मुफ़स्सल लिखागया.

इन्हीं दिनोंमें बादशाह जहांगीरका देहान्त हुआ, यह सुनकर शाहजहां (खुर्रम) दक्षिणसे गुजरात होता हुआ आगरेकी तरफ़ तख़्त नशीनीके लिये जाते समय गोगूंदेमें ठहरा. महाराणाने मुलाक़ात करके अपने भाई अर्जुनसिंहको शाहजहांके साथ करदिया, और आप उदयपुर चले आये, जहां बीमारीने आघेरा और उसी बीमारीसे उनका इन्तिक़ाल होगया. इनका गेहुवां रंग, मझोला क़द, बड़े नेत्र और बड़ी पेशानी थी और दयावान, बहादुर, हँसमुख और सच्चाई व सफ़ाई पसन्द करनेवाले थे, परन्तु मुआमले व मुक़द्दमोंमें हर एक रीतिसे काम निकाललेनेको भी रवा रखते थे.

यह पहिले बहुत तक्लीफ़ पानेके कारण अपने राज्यके समयमें ऐसा ज़ियादा ख़र्च नहीं करते थे जैसा कि उनके बड़ोंने किया था. इन महाराणाका जन्म विक्रमी १६४० श्रावण शुक्ल १२ [ हि० ९९१ तारीख़ ११ रजब = ई० १५८३ ता० १ ऑगस्ट ] को और देहान्त विक्रमी १६८४ फाल्गुन् [ हि० १०३७ रजब = ई० १६२८ मार्च ] को हुआ.

अब इनका हाल ख़त्म करके बादशाह जहांगीरकी वफ़ात इन्हीं दिनोंमें होनेसे उसका मुख़्तसर हाल यहां लिखाजाता है.
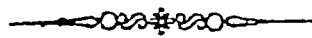
अबुल् मुज़फ़्फ़र नूरुद्दीन मुहम्मद
जहांगीर बादशाह.

इस बादशाहका जन्म हिज्री ९७७ ता० १७ रबीउल् अव्वल् [ वि० १६२६ आश्विन् कृष्ण ३ = ई० १५६९ ता० ३० ऑगस्ट ] को फ़तहपुर सीकरीमें शैख़ सलीम चिश्तीके घरपर आंबेरके राजा भारमल्ल कछवाहेकी बेटीसे हुआ था, और हिज्री १०१४ ता० १३ जमादियुस्सानी [ वि० १६६२ कार्तिक शुक्ल १४ = ई० १६०५ ता० २६ ऑक्टोबर ] को तख़्त नशीनी समझी जाती है, क्योंकि इसी दिन बादशाह अक्बरका देहान्त हुआ था.

जब बादशाह अक्बरका देहान्त हुआ उस वक्त राजा मानसिंह कछवाहा और ख़ानेआज़म मिर्ज़ा अज़ीज़ कूकेने शाहज़ादे खुस्रौको तख़्तपर बिठा दिया, जो जहांगीरका बड़ा बेटा और राजा मानसिंह कछवाहेका भानजा था, जहांगीर झगड़ेके डरसे अपनी हवेलीमें चुपचाप बैठारहा, सातवें रोज़ अर्थात् २० वीं जमादियुस्सानी [ मार्गशीर्ष कृष्ण ६ = ता० २ नोवेम्बर ] को शाहज़ादा खुस्रौ तो अपने दादेकी क़ब्रपर हलवा बांटने गया और शैख़ फ़रीद बख़्शीने जहांगीरको क़िलेमें बुलाकर तख़्तपर बिठादिया— हक़दार होनेके सबब सब लोगोंने ताबेदारी क़बूल की. सलीमने तख़्तपर बैठकर अपना ख़िताब अबुल्मुज़फ़्फ़र नूरुद्दीन जहांगीर रक्खा, और नीचे लिखेहुए १३ हुक्म जारी किये—

( १ )—एक सोनेकी ज़ंजीर आगरे क़िलेके शाह बुर्जसे जमना किनारे एक छोटे पत्थरके मूंडे तक लगादी थी, इस ज़ंजीरमें एक घंटा लटकाया था, जो ज़ंजीर हिलानेसे बजता था— हरएक फ़र्यादी जिसने किसी हाकिमसे ज़ुल्म उठाया हो, इस ज़रीएसे इन्साफ़को पहुंच सक्ता था.

( २ )—हर क़िस्मके मज़्हबी और मुल्की महसूल, जो सूबेदार और जागीरदारोंने जारी कर रक्खे थे, मौक़ूफ़ किये.

( ३ )—हुक्म था, कि ऊजड़ रास्तोंमें, जहां लूट मारका डर हो, एक सराय और कुआ व मस्जिद तय्यार कराई जावे—यह जगह ख़ालिसेमें हो तो सर्कारी अहल्कार, और अगर जागीरमें हो तो वहांका ज़मींदार इसका बन्दोबस्त करे, और किसी सौदागरका माल बग़ैर उसकी रज़ामन्दीके न खोला जावे.

( ४ )—मुल्कमें जो कोई ग़ैर मज़्हबी आदमी या मुसल्मान मरजावे, तो उसका माल

अस्वाब उसके वारिसोंको दियाजावे, अगर कोई वारिस न मिले तो उसके खर्चसे पुल, तालाब और कुए रअय्यतके फ़ायदेको बनवाये जावें.

( ५ ) - शराब और दूसरी नशेदार चीजें कोई न बनावे और न बेचे; बादशाह कहता है कि- "अगरचि मैं इस ख़राबीमें पड़रहा हूं, लेकिन् दूसरोंके लिये इसका नुक्सान पसन्द नहीं करता."

( ६ ) - किसी आदमीके घरपर दख़्ल न कियाजावे.

( ७ ) - कोई आदमी किसी क़ुसूरवारके नाक, कान न काटे, बादशाही तरफ़से भी यह सज़ा किसीको न दी जावे.

( ८ ) - हुक्म दियागया, कि ख़ालिसेके अहल्कार और कोई जागीरदार रअय्यत की ज़मीन न दबावें.

( ९ ) - ख़ालिसेका हाकिम या किसी परगनेका जागीर दार बगैर बादशाही हुक्म के आपसमें रिश्तेदारी न करे.

( १० ) - हर एक बड़े शहरमें शिफ़ाख़ाने तय्यार होकर दवाके वास्ते हकीम और वैद्य मुक़र्रर किये जावें, और इसका तमाम ख़र्च सर्कारसे दिया जावे.

( ११ ) - अक्बरके तरीक़े पर हुक्म दिया, कि १८ वीं रबीउल्अव्वलको, जो बादशाहकी पैदाइशका दिन है, और हर अठवारेमें दो दिन और इतवार ( रविवार ) को; जिस दिन कि अक्बर पैदा हुआ था, तमाम मुल्कमें कोई जानवर न मारा जावे.

( १२ ) - अक्बरके वक़्की जागीरें और मन्सब बहाल रक्खे गये, और किसी क़दर तरक़्क़ी दी गई.

( १३ ) - जुलूसके दिन तमाम क़ैदी छोड़ दियेगये.

इस बादशाहने अपने नामका सिक्का जारी करके उसमें यह शिअ्र खुदवाया.

रूए ज़र्रा सारूत नूरानी बरंगे मिहरो माह,
शाह नूरुद्दीं जहांगीर इब्ने अक्बर बादशाह.

अर्थ- रुपयेकी सूरतको चांद और सूर्यकी तरह पर, अक्बर बादशाहके बेटे नूरुद्दीन जहांगीर शाहने रौशन किया.

शरीफ़ख़ांको वज़ीर आज़मका उहदा, अमीरुल्उमराका ख़िताब व पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, और राजा मानसिंह कछवाहेको भी बंगालेकी सूबेदारी पर बहाल रक्खा.

यद्यपि राजाने खुस्रोको तख़्तपर बिठाकर बड़ा भारी फ़साद करना चाहा था, परन्तु जहांगीर शाहने इस बातपर कुछ भी ख़याल न किया.

वादशाहने इस समय बड़ा भारी लश्कर एकट्ठा देखकर अक्बर बादशाहकी मन्शाके मुवाफ़िक़ महाराणा मेवाड़को अपना तावेदार बनानेके लिये शाहज़ादे पर्वेज़को भेजा, जिसका पूरा हाल महाराणा अमरसिंहके ज़िक्रमें लिखागया है– ( देखो एष्ठ २२२ ).

इसके वाद यह हुक्म हुआ, कि पुराने नौकरोंको उनके वतनमें जागीरें दी जायें, जो हमेशा वहाल रहें, ऐसी जागीरके फ़र्मानोंपर शंगर्फ़ ( हिंगलू ) की मुहर लगाई जाती. जिसकी डिविया सोने की थी.

इसी वर्षमें ग़यूरवेग कावुलीके वेटे ज़मानावेगको डेढ़ हज़ारी मन्सव और महावतखांका ख़िताव दिया– राजा नरसिंहदेव वुंदेलेको तीन हज़ारी और राजा मानसिंह कछवाहेके वेटे भावसिंहको डेढ़ हज़ारी मन्सव दिया.

आंवेरके राजा भगवानदासके छोटे वेटे अक्षयराज के तीन बेटों अभयराम. जयराम, और श्यामराम ने वादशाहके विना हुक्म आगरेसे चुपके निकलकर महाराणा अमरसिंहके पास चलाजाना चाहा, यह ख़बर सुनकर वादशाहने इन तीनोंको शरीफ़खां अमीरुल्उमराकी निगरानीमें नज़र क़ैद करदिया.

जब इनके हथियार, खुलवाने चाहे तो ये लोग मरने मारनेपर तय्यार हुए, और तलवार व जम्धरसे लड़कर तीनों मारेगये, और बादशाही मुलाज़िमोंमेंसे दिलावरख़ां कई अहदियों सहित इनके हाथसे क़त्ल हुआ. बादशाहने हिन्दुस्तान व कावुलका सायर ( देश दान ) विल्कुल मुआफ़ करदिया.

इसी सनूमें आठवीं ज़िल्हिज्ज [ वि० १६६३ चैत्र शुक्ल १० = ई० १६०६ ता० १८ मार्च ] को शाहज़ादा खुस्रौ क़िलेसे भागकर पंजावकी तरफ़ चला गया, उसके पीछे शेख़ फ़रीद वख़्शीको भेजकर दूसरे दिन आप भी सवार हुआ, पानीपतसे आगे अब्दुर्रहीम खुस्रौसे मिलकर उसका मुसाहिव वनगया, और शाहज़ादेने मलिक अनवर राय का ख़िताव दिया; पानीपतके मक़ामसे दिलावर-ख़ांने भागकर लाहौरका क़िला मज़्वूत किया. दो दिनके वाद खुस्रौ लाहौर पहुंचा और उसने क़ब्ज़ा करना चाहा, लेकिन् दिलावरख़ांने शहरमें घुसने दिया, और सईदख़ां भी कश्मीरसे दिलावरख़ांकी मददको आ पीछेसे वादशाहके आनेकी ख़बर मिली, यह सुनकर खुस्रौ लाहौर से मुक़ावलेको चला; वादशाही फ़ौजके आदमियोंने सुल्तानपुरके पास मुक़ा उसको भागना पड़ा, चनाव नदीमें उतरनेके वहांके वाशिन्दों और

नौकरोंने शाहज़ादेको हिज्री १०१४ ता० २९ ज़िल्हिज्ज [ वि० १६६३ वैशाख शु० १ = ई० १६०६ ता० ८ एप्रिल ] को गिरिफ़्तार करलिया.

हिज्री १०१५ ता० ३ मुहर्रम [ वि० वैशाख शु० ५ = ई० ता० १२ एप्रिल ] को लाहौरमें खुस्रौको मए अब्दुर्रहीम (१) मुसाहिब व हुसेनबेगके हाज़िर किया, बादशाहने खुस्रौको क़ैदमें रखकर अब्दुर्रहीमको गधेके और हुसेनबेगको गायके चमड़ेमें सिलाया और गधोंपर लटकवाकर शहरमें फिरवाया; हुसेनबेग तो उसी हालतमें मरगया, और अब्दुर्रहीम जीतारहा, बादशाहने उसका अब्दुर्रहीम खर नाम रक्खा. बाक़ी जो शाहज़ादेको गिरिफ़्तार करनेवाले थे उनको जागीर और ज़मीन दी, और खुस्रौके साथी जो गिरिफ़्तार हुए थे सड़कके दोनों तरफ़ सूलीपर चढ़ादिये गये. इन्हीं दिनोंमें खुस्रौका उपद्रव सुनकर ईरानके क़ज़लबाश लोगोंने कन्धारपर हम्ला किया. लेकिन् शाहबेगख़ांकी दिलेरीसे वे क़िला न लेसके; उसकी मददके लिये लाहौरसे मिर्ज़ा ग़ाज़ीको मए फ़ौजके भेजा, इसके बाद अर्जुन नाम हिन्दू फ़क़ीरको पकड़वाकर क़त्ल करवादिया, जो खुस्रौका करामाती मददगार बनगया था. यह आदमी नानकके पन्थ में ( सिक्खोंका गुरु ) था.

शाहज़ादा पर्वेज़ जो मेवाड़की मुहिम्से आगरे आया था, लाहौरमें हाज़िर हुआ, बादशाहने उसको छत्र छांगी और दस हज़ारी मन्सब दिया. जहांगीरकी मा, जो राजा भारमल्लकी बेटी थी, लाहौरमें आई, बादशाहने पेश्वाई वग़ैरह बहुत कुछ ताज़ीम की, इसके बाद राजा मानसिंह कछवाहेसे बंगाले और उड़ीसेकी सूबेदारी उतारकर कुतुबुद्दीन कूकेको दी.

अज़ीज़ कूकेका ख़त, जो खुस्रौका ससुर और उसका मददगार था, पकड़ागया, जो उसने अक्बर बादशाहके समयमें फ़ारूक़ी राजे अलीख़ांको बादशाहकी बुराईमें लिखा था. जहांगीरशाहने उसके हाथमें देकर पढ़वाया. और शर्मिन्दा न होनेपर बहुतसी लानत मलामत करके उसका मन्सब और जागीर ज़ब्त करली.

इन्हीं दिनोंमें बीकानेरके राजा रायसिंह और उनके बेटे दलपत पर नाराज़ होकर ज़ाहिदख़ां और अबुल्फ़ज़्लके बेटे अब्दुर्रहमान व राणा सगर उदयसिंहोत व मुइज़्ज़ुलमुल्क वग़ैरह को भेजा, नागोरके पास मुक़ाबला होनेपर रायसिंह भागगया.

बादशाहने काबुलकी तरफ़ कूच किया, और शहर गुजरातमें मकाम हुआ. जिसको बादशाह अक्बरने गूजरोंके बसाये जानेसे गुजरात नाम दिया था.

---

( १ ) यह लाहौरके सूबेमें दीवान था.

वहांसे कश्मीरकी सैर करताहुआ हिज्री १०१६ ता० १ मुहर्रम [ वि० १६६४ वैशाख शुक्ल ३ = ई० १६०७ ता० २९ एप्रिल ] को क़िले रुहतासमें पहुंचा, और वहांसे रावलपिंडी, अटक, पेशावर, होता हुआ हिज्री तारीख़ १४ सफ़र [ वि० ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ई० ता० १० जून ] को काबुलमें दाख़िल हुआ; इसी सफ़रमें विज़ारतका उहदा अमीरुल् उमरा शरीफ़ख़ांसे बुढ़ापेके सबब लेकर आसिफ़ख़ां को दिया.

हिज्री तारीख़ १२ रबीउल्अव्वल् [ वि० आपाढ़ शुक्ल १३ = ई० ता० ७ जुलाई ] में शाहज़ादे ख़ुस्रोको क़ैदसे छोड़ा, इन्हीं दिनोंमें राजा मानसिंह के पोते महासिंह और रामदास कछवाहेको बंगशके फ़सादियों पर फ़ौज देकर विदा किया और इसी महीनेमें राणा सगरको ढाई हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया.

फिर शेर अफ़्गन और कुतुबुद्दीन कूकाके मारेजानेकी ख़बर बंगालेसे पहुंची, जिसका हाल पृष्ठ २७२ में लिखागया है. नूर जहां इसी शेर अफ़्गनकी बीबी थी—( पृष्ठ २७३ ).

हिज्री तारीख़ ४ जमादियुल्अव्वल् [ वि० भाद्रपद शु० ६ = ई० ता० २८ ऑगस्ट ] में बादशाह जहांगीर काबुलसे हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवाना हुए. इन्ही दिनोंमें मिर्ज़ा शाहरुख़ मालवेके सूबेदारके मरनेकी ख़बर आई.

रास्तेमें फिर शाहज़ादे ख़ुस्रोने जहांगीरको मारडालनेका इरादा किया. यह बात ख़ुस्रोके मिलावटी लोगोंमेंसे एकने ख़ुर्रमके दीवान ख़्वाजह वैसी से कही. जिस ने ख़ुर्रमके कान तक पहुंचाई और उसने बादशाहको इत्तिला दी. बादशाह जहांगीरने उसी समय हकीम फ़त्हुल्लाको क़ैद किया, जो फ़सादी लोगोंमें मुख्य था, और नूरुद्दीन व एतिमादुद्दौलाके बेटे शरीफ़ वग़ैरहको क़त्ल करवादिया.

इसी सफ़रमें यह ख़बर मिली कि मिर्ज़ा शाहरुख़का बेटा बदीउज़्ज़मां महाराणा अमरसिंहसे मिलकर कुछ फ़साद उठाना चाहता था, लेकिन् अब्दुल्लाख़ांने गिरिफ़्तार करलिया. पंजाबमें अमीरुल्उमरा शरीफ़ख़ांकी मारिफ़त बीकानेरका राजा रायसिंह राठौड़ बादशाहके पास हाज़िर होगया. जहांगीरने उसका कुसूर मुआफ़ करके मन्सब व जागीर पहिलेके मुवाफ़िक़ बहाल रक्खी.

इसी हिज्री सालके शव्वाल [ वि० मार्गशीर्ष = ई० डिसेम्बर ] में रामपुरेके राव दुर्गभान चन्द्रावतके मरनेकी ख़बर मालूम हुई, और हिज्री ता० ८ ज़ीक़ाद [ वि० फाल्गुन शु० १० = ई० १६०८ ता० २५ फ़ेब्रुअरी ] को बादशाह दिल्ली पहुंचे. हिज्री ज़िल्हिज [ वि० १६६५ चैत्र शुक्ल = ई० १६०८ मार्च ] में बूंदीके राव रत्न हाडाको सरबुलन्द रायका ख़िताब दिया. इन्हीं दिनोंमें जोधपुरका महाराजा सूरसिंह राठौड़ हाज़िर हुआ, और महाराज जगमालके

बेटे और महाराणा उदयसिंहके पोते श्यामसिंहको साथ लाया. बादशाह लिखता है, कि श्यामसिंह हाथीपर अच्छा सवार होता है.

हिज्री १०१७ ता० ४ रबीउल्अव्वल् [ वि० १६६५ आषाढ़ शुक्ल ६ = ई० १६०८ ता० २० जून ] को आंबेरके राजा मानसिंहकी पोती और जगतसिंहकी बेटीकी शादी बादशाहके साथ हुई ( १ ). इन्हीं दिनोंमें महबतखांको फ़ौजके साथ मेवाड़में भेजा, जिसका ज़िक्र महाराणा अमरसिंहके हालमें लिखागया है.

इसी संवत् और सन्में बीकानेरका राजा रायसिंह मरगया, और उसके बेटे दलपतको बीकानेरका राजा बनाया, इसी वर्ष बादशाहने हुक्म जारी किया, कि कोई मेरे मुल्कमें बच्चे या आदमीको जान बूझकर खोजा ( हिजड़ा ) बनावेगा तो उसे जन्म क़ैद या क़त्लकी सज़ा दीजावेगी, और कोई गुलाम बेचने और ख़रीदने न पावे.

इसी वर्षमें अक्बरका मक़्बरा सिकन्दरेमें तय्यार हुआ, जिसपर १५ लाख रुपये ख़र्च पड़े. इन्हीं दिनोंमें ख़ान्ख़ानांको दक्षिणकी मुहिम् पर भेजा और उसके साथ जोधपुरके राजा सूरजसिंह ( सूरसिंह ) को तीन हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवार का मन्सब दिया.

इसके बाद हिज्री ता० ४ ज़िल्हिज्ज [ वि० १६६५ के फाल्गुन् शु० ६ = ई० १६०९ ता० १२ मार्च ] को शाहज़ादे खुस्रोके ख़ाने आज़मकी बेटीसे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम बलन्द अख़्तर रक्खागया.

हिज्री १०१८ मुहर्रम [ वि० १६६६ चैत्र शुक्ल = ई० १६०९ एप्रिल ] में महाबतख़ांको मेवाड़की लड़ाईसे बुलाया और उसके एवज़ अब्दुल्लाख़ांको फ़ीरोज़ जंगका ख़िताब देकर भेजदिया, जिसका हाल महाराणा अमरसिंहके बयानमें लिखागया है.

राजा मानसिंह कछवाहेको दक्षिणमें भेजा और जगन्नाथके बेटे रामचन्द्रको भी दो हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर पर्वेज़ के साथ दक्षिणकी तरफ़ रवाना किया.

---

( १ ) मआसिरुल् उमरा वाला, बूंदीके राव भोज हाड़ाके बयानमें इस शादीकी बाबत लिखता है–कि बादशाह जहांगीरने इरादा किया, कि राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगतसिंहकी बेटी बादशाही महलमें दाख़िल कीजावे, राव भोज जो इस लड़कीका नाना था इस बातसे राज़ी न हुआ, इस सबबसे बादशाहने चाहा था कि रावको पूरी सज़ा दी जावे, लेकिन् वह बादशाहके काबुलसे वापस आनेके पहिले हिज्री १०१६ [ वि० १६६४ = ई० १६०७ ] में मरगया.

हिज्री ता० २८ मुहर्रम [ वि० ज्येष्ठ कृ० १४ = ई० ता० १५ मई ] को भारमल्लके बेटे जगन्नाथ कछवाहेको पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दियागया. इन्हीं दिनोंमें भांग वगैरह नशीली चीज़ोंके न बेचनेकी सख्त ताकीद हुई, और जुआ खेलना बिल्कुल् बन्द कराया. हिज्री ता० २५ रमज़ान [ वि० पौष कृ० ११ = ई० १६०९ ता० ३ जेन्यूएरी ] को रामचंद्र बुंदेलेकी लड़कीके साथ बादशाह की शादी हुई. इसी वर्षकी ता० १४ ज़िलहिज् [ वि० फाल्गुन् शुक्ल १५ = ई० ता० २० मार्च ] को अब्दुर्रहीमका कुसूर मुआफ़ करके शिकार ख़ानेका दारोग़ा बनाया.

हिज्री १०१८ ता० ४ सफ़र [ वि० १६६६ वैशाख शु० ६ = ई० १६०९ ता० १० मई ] को जाली खुस्रो पकड़ा गया; यह कोई बदमआश था. जो कहता था. कि मैं शाहज़ादा खुस्रो हूं, और क़ैदसे भाग आया हूं; बहुतसे बदमआशोंने उसके साथ होकर पटनेका क़िला दबा लिया, और पुनपुना नदीपर अफ़्ज़लख़ांसे मुक़ाबला किया– फिर लड़ाईसे भागकर पटनेमें जा घुसा, अफ़्ज़लखांने पकड़कर मरवाडाला.

इसी सालके रमज़ान [ वि० मार्गशीर्ष = ई० डिसेम्बर ] में आगरेके जंगलोंमें बादशाह शिकारको गया था, शेरने बादशाहपर हमला किया, उस समय राजा अनूपसिंह बड्गूजर शेरसे लिपटगया. शेरने उसका हाथ चाबा और उसने खंजर और तलवारसे शेरको घायल किया. बादशाह भी इस धक्कम् धक्केमें ज़मीनपर गिर पड़ा, दूसरे लोगों ने शेरपर वार किये और अनूपसिंहको छुड़ा लिया, पीछेसे उसने फिर तलवार मारी. शेर पीछे उसपर चला. तब उसने तलवारसे उसका सिर ज़ख्मी किया, और शेर मरगया; बादशाहने अनूपसिंहको बहादुरीके एवज़ सिंहदलन अनीरायका ख़िताब दिया.

हिज्री १०२० ता० २४ मुहर्रम [ वि० १६६८ वैशाख कृष्ण १० = ई० १६११ ता० ९ एप्रिल ] को ईरानके शाह अब्बासका एल्ची आया. जिसको ख़िल्अत और ३०००० तीसहज़ार रुपया खर्चके लिये दिया. इसी वर्ष बादशाहने नूर जहांके साथ निकाह किया, और काबुलमें पठानोंने फ़साद उठाया. जिसको बादशाही सर्दारोंने दूर किया.

ग़यासबेग एतिमादुद्दौलाको विज़ारत दी गई, और अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़-जंगको मेवाड़से गुजरातकी सूबेदारीपर भेजा, उसकी जगह राजा बासू मुक़र्रर हुआ. इसी वर्षमें रामदास कछवाहेको राजाका ख़िताब और क़िला रणथम्भोर देकर दक्षिणकी लड़ाईपर भेजा. इन्हीं दिनोंमें मिर्ज़ा शाहरुखके बेटे बदीउज़्ज़मांको

मेवाड़ पर भेजा. फिर इसी वर्षके ज़ीक़ाद [वि० पौष = ई० १६१२ के जैन्यूएरी] में नीचे लिखे हुए हुक्म जारी किये-

(१)-कोई भरोखेमें न बैठे. (२)-अपने मददगार अमीर लोगोंसे पहरा चौकी न ले. (३)-हाथी न लड़ावे. (४)-किसी कुसूरपर अन्धा न करें, और नाक, कान न काटें. (५)-ज़बर्दस्ती किसीको मुसल्मान न बनावें. (६)-अपने नौकरोंको कोई ख़िताब न दें. (७)-बादशाही नौकरोंसे ताज़ीम न लें. (८)-दर्बारके क़ाइदेपर गवय्ये लोगोंसे कोई बारी बांधकर न गवावें. (९)-सवारीके वक्त नक़ारा न बजावें. (१०)-हाथी घोड़ा जब अपने नौकरों या बादशाही आदमियों को दें, तो उनके क़न्धेपर अंकुश रखाकर सलाम न करावें. (११)-अपनी सवारीमें बादशाही नौकरोंको पैदल न चलावें. (१२)-अगर बादशाही आदमियोंको कुछ लिखें तो मुहर काग़ज़की पेशानी पर न लगावें. ये क़ाइदे तमाम मुल्कमें जारी किये गये.

इसके सिवाय ख़फ़ीख़ां मुन्तख़बुल्लुबाबमें इतना और ज़ियादा लिखता है-कि घोड़ोंके वास्ते कोई सुर्ख़ कपड़ेकी झूल न बनावे, और उसपर बेल बूटे भी न खेंचे. इन्हीं दिनों बंगालेमें उस्मानख़ां पठानने उपद्रव उठाया, जिसको इस्लामख़ां और सुब्हानख़ां वग़ैरह बादशाही सर्दारोंने फ़त्हमन्दीके साथ मिटा दिया.

हिज्री १०२१ [वि० १६६९ = ई० १६१२] में अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़-जंगने मए राजा रामदास कछवाहे के दक्षिणी फ़ौजपर हम्ला किया, लेकिन् शिकस्त खाकर भागना पड़ा. इस वर्षमें महाराजा रायसिंह बीकानेरवालेका देहान्त हुआ, जहांगीर शाह अपने तुज़कमें लिखते हैं, कि-

"दलीप (राव दलपत) दक्षिणसे हाज़िर हुआ, उसका बाप राव रायसिंह गुज़र गया था, इस लिये मैंने उसको ख़िलअ़त पहिनाकर रावका ख़िताब दिया. रायसिंह अपने दूसरे बेटे सूरजसिंहको राज देना चाहता था, क्योंकि उसकी मा से वह ज़ियादा मुहब्बत रखता था. जिस वक्त रायसिंहके मरनेका ज़िक्र होरहा था, सूरजसिंह कम अक़्ली और कम उम्रीसे अर्ज़ करने लगा, कि बापने मुझको टीका दिया है, तब मैंने कहा, कि हम दलीपको इज़्ज़तके साथ टीका देते हैं. मैंने अपने हाथसे उसके टीका लगाकर वतनकी जागीर इनायत की."

इसी वर्षके ज़ीक़ाद [वि० पौष = ई० १६१३ जैन्यूएरी] में बादशाहकी सौतेली मा सलीमा सुल्तान जो उसे मासेभी ज़ियादा प्यारी थी, मरगई, इसका बड़ा रंज हुआ. इन्हीं दिनोंमें ख़ाने आज़मको मेवाड़पर जानेकी इजाज़त मिली.

हिज्री १०२२ ता० २ शअ़बान [ वि० १६७० आश्विन शु० ४ = ई० १६१३ ता० १८ सेप्टेम्बर ] को बादशाहने अजमेर आकर ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत और उदयपुरपर चढ़ाई की, जिसका ज़िक्र महाराणा अमर-सिंह के हालमें लिखागया ( देखो पृष्ठ २२९ ).

हिज्री ता० ५ शव्वाल [ वि० मार्गशीर्ष शु० ७ = ई० तारीख़ २० नोवेम्बर ] को बादशाह अजमेर में दाख़िल हुआ, इसके दो दिन बाद शिकार के लिये पुष्कर गया, और वहां जो रावत् ( राणा ) सगरका बनवाया हुआ श्री वाराह भगवानका मन्दिर था उसकी मूर्तिको नापसन्द होनेके कारण तालाब में डलवादिया. फिर आप तो अजमेरमें रहा, और शाहज़ादे खुर्रमको महाराणा अमरसिंह पर बड़ी फ़ौजके साथ भेजा-

हिज्री १०२३ [ वि० १६७१ = ई० १६१४ ] में बीकानेरके राव दलपतने उपद्रव किया, इससे उसके छोटे भाई सूरसिंहको बीकानेरका राव बनाया, और दलपत गिरिफ़्तार होकर मारागया, जिसका बयान बीकानेरके हालमें लिखाजायगा; शाहज़ादे खुस्रोको सलाम करजानेका हुक्म मिलगया, लेकिन् थोड़े ही दिनोंके बाद उसका आना फिर बन्द हुआ. इसी वर्षमें राजा मानसिंह कछवाहे का दक्षिणमें देहान्त हुआ. बादशाह जहांगीर लिखता है, कि-

"मैंने अक्सर बादशाही नौकरोंको दक्षिणकी मुहिम्पर भेजा था, इनमेंसे राजा मानसिंह भी था; वह उस तरफ़ मरगया, तो मैंने उसके होश्यार बेटे भावसिंहको हुजूरमें बुलाया, वह शाहज़ादगीके दिनोंसे मेरी ख़िदमत् बहुत करता था. आंबेरकी रियासत हिन्दुओंके क़ाइदोंके मुवाफ़िक़ महासिंहको पहुंचती थी, जो जगतसिंहका बेटा और मानसिंहका पोता है. मैंने इसको पसन्द न किया, भावसिंहको मिर्ज़ा राजाका ख़िताब, चार हज़ारी मन्सब और आंबेरकी जागीर इनायत की. महासिंहके खुश रखनेको उसके मन्सबमें तरक़्क़ी करके गढ़का इलाक़ा इनआममें दिया".

इसी वर्षमें आनासागरकी पालको दुरुस्त करवाकर उसपर सफ़ेद पत्थरके बहुत उम्दा मकान बाग़ समेत बनवाये. इसी वर्षमें शाहज़ादे खुर्रमकी मारिफ़त महाराणा उदयपुरसे सुलह हुई. हिज्री १०२४ [ वि० १६७२ = ई० १६१५ ] में शाहज़ादे खुर्रमके हमीदाबानू ( मुम्ताज़महल ) से दाराशिकोह पैदा हुआ. इसके बाद जोधपुरके राजा सूरजसिंहको पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. मोटे राजा उदयसिंहके बेटे सूरसिंहका मुसाहिब गोइन्ददास भाटी और मोटे राजाका दूसरा बेटा किशनसिंह अजमेरमें लड़मरे, जिसका पूरा हाल कृष्णगढ़ की तवारीख़में लिखाजायगा. आंबेरके राजा मानसिंह कछवाहेके बड़े बेटे जगत्-

सिंहके बेटे महासिंहको राजाका ख़िताब दिया. राजा रायसिंह कछवाहा दक्षिणमें मरगया. और उसके बेटे रामदासको एक हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. हिज्री १०२६ [ वि० १६७३ = ई० १६१६ ] में दक्षिणियोंसे शाही फ़ौजकी लड़ाई हुई. बिहार और पटनेकी तरफ़को खेड़ाके रईस दुर्जनसालको, जिसके इलाकेमें हीरेकी खान थी, गिरिफ़्तार करलिया. और उसके इलाकेपर बादशाही क़ब्ज़ा हुआ; इस लड़ाईमें इब्राहीमखांको फ़तहजंगका ख़िताब मिला.

इसी वर्षमें हमीदाबानू ( मुम्ताज़महल ) से शाहज़ादा शुजाअ़ पैदा हुआ, और नूरमहलको नूरजहांका ख़िताब और उसके बाप एतिमादुद्दौलाको सात हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवारका मन्सब दिया. अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़ जंग गुजरातके सूबेदारने वाक़िआनवीसको अपनी बुरी ख़बरें लिखनेके सबब धमकाया; यह ख़बर सुनकर बादशाहने हुक्म दिया. कि दियानतखां जाकर उसे अहमदाबादसे पैदल निकाले और रास्तेमें घोड़ेपर लावे और सूबेदारी उतार-ली जावे. बेचारे अब्दुल्लाखांने अहमदाबादके रवज़ आधेसे ज़ियादा रास्ता पैदल तै किया, दियानतखांने मुश्किलसे सवार कराया; कुछ अर्से तक ड्योढ़ी मुआफ़ रही, फिर शाहज़ादे ख़ुर्रमकी सिफ़ारिशसे सलाम हुआ. राव मनोहर कछवाहा शेखा-वत दक्षिणमें मरगया, जो वहां बादशाही नौकरीपर गया हुआ था. इन्हीं दिनोंमें महाराणा अमरसिंहके बेटे कुंवर कर्णसिंहको रुख़्सतके समय ख़िल्अ़त, घोड़ा, हाथी और शस्त्र देकर बिदा किया; लाहौरके सूबेदार मुर्तज़ाखांके मरनेकी ख़बर मिली. इस के बाद एक तरहकी ऐसी मरी फैली कि जिससे हज़ारहा आदमी मरने लगे. बांधूगढ़का राजा विक्रमादित्य शाहज़ादे ख़ुर्रमकी मारिफ़त हाज़िर हुआ, और ग़ैर हाज़िरीका क़ुसूर मुआफ़ किया.

जैसलमेरके बारेमें बादशाह जहांगीर लिखता है-कि "कल्यान जैसलमेरी, जिसके बुलानेको राजा कृष्णदास गया था, हाज़िर हुआ. और उसने १०० अशर्फ़ी, एक हज़ार रुपया नज़ किया. उसका बड़ा भाई भीम जागीरदार था, जब वह गुज़र गया, तो उसने दो महीनेका बच्चा छोड़ा, वह भी ज़ियादा न जिया. शाहज़ादगीके दिनोंमें उसकी बेटीको मैंने ब्याहा था, और मलिकए जहां ख़िताब दिया था. ये लोग मुद्दतसे हमारे ख़ैर ख़्वाह रहे हैं, और इनसे रिश्तेदारी भी होगई थी, इसलिये मैंने रावल भीमके भाई कल्याणको बुलाकर राजका टीका और रावलका ख़िताब दिया."

हिज्री जमादियुल्अव्वल [ वि० ज्येष्ठ = ई० मई ] में शाहज़ादे ख़ुर्रमकी

एक बेटी मरगई, जिसका बादशाहको बड़ा रंज हुआ. बादशाहने आपही दक्षिणमें जाना विचारा और शाहज़ादे पर्वेज़को दक्षिणसे इलाहाबाद जानेका हुक्म दिया, और शाहज़ादे खुर्रमको शाह खुर्रमका ख़िताब दिया. इसी सालकी ता० १ ज़ीक़ाद [ वि० १६७३ कार्तिक = ई० १६१६ नोवेम्बर ] को अजमेरसे बग्गी (१) में सवार होकर बादशाह दक्षिणको रवाना हुआ, देवराई ग्राममें पहिला मक़ाम किया, और वहांसे चलकर रामसरमें आठ दिन तक ठहरा रहा; इस मक़ामसे महाराणा अमरसिंहके पोते जगत्सिंह को घोड़ा और ख़िलअ़त देकर उदयपुरकी रुख़्सत दी, और उसके साथ केशवदास झालाको भी घोड़ा इनायत किया. राजा महासिंह कछवाहेका बेटा मक़ाम रणथम्भोर में हाज़िर हुआ, शामके वक़् बादशाहने वहांके क़ैदियों को छोड़दिया.

इन्हीं दिनों ता० २५ ज़ीक़ाद [ वि० मार्गशीर्ष कृ० ३० = ई० ता० ९ डिसेम्बर ] को उदयपुरमें महाराणा अमरसिंहके बनवायेहुए बड़ीपोल दर्वाज़े ( जो राज-महलका सदर दर्वाज़ा है ) की छतके नीचे पत्थरमें क़ाज़ी मुल्ला जमालने कुछ अरबी आयत व एक शिअ़्र वग़ैरह लिखा, और एक तरफ़ पंडित लोगोंने तीन पङ्क्ति नागरीमें लिखी. ये अक्षर खुदवाकर उनके भीतर सुर्ख़ी भरवादीगई थी– ( देखो शेपसंग्रह नम्बर २ ).

हिज्री १०२६ [ वि० १६७४ = ई० १६१७ ] में बादशाह उज्जैन पहुंचे, वहां जालोरके जागीरदार ग़ज़नीख़ांके बेटे पहाड़ख़ांको उसकी माके मारडालने के क़ुसूरपर क़त्ल करवाया, और यहींपर जगरूप नामके एक सन्यासीके दर्शनको गया, जिसके फ़क़ीरी ढंग और वेदान्तकी बातोंसे बहुत खुश हुआ. चार महीने और दो दिनमें अजमेरसे चलकर क़िले मांडूपर पहुंचे, जहां क़िलेकी मरम्मत करवानेमें तीन लाख रुपये ख़र्च किये, इस क़िलेमेंसे नसीरुद्दीन ख़िल्जी की क़ब्रको खुदवाकर नर्मदामें फिकवादिया, इस ख़यालसे कि उसने अपने बाप ग़यासुद्दीनको ज़हर देकर मारडाला था. शाहज़ादे खुर्रमने बुर्हानपुर पहुंचकर आदिलशाह बीजापुरीपर दबाव डाला, उसने बरारका इलाक़ा छोड़कर सालयाना ख़िराज देना क़ुबूल किया. इन्हीं दिनोंमें बादशाहने तम्बाकूका पीना बन्द करदिया, जो उसी समयमें यूरोपियन लोग अमेरिकासे लाये थे. मिर्ज़ा राजा भावसिंह कछवाहेको पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, और सूबे गुजरातकी दीवानी केशवदाससे उतारकर मिर्ज़ा हुसैनको दी. इन्हीं दिनोंमें राजा मानसिंह

---

( १ ) यह सवारी पहले पहल अंग्रेज़ी एल्ची सर टॉमस रो ने इसी मक़ामपर बादशाहको नज़ की थी, जिसको बादशाहने तुज़क जहांगीरीमें फ़रंगी रथ लिखा है.

कछवाहेका पोता महासिंह बरारके इलाकेमें ज़ियादा शराब पीनेके सबब ३२ वर्षकी उम्रमें मरगया. तुज़क जहांगीरीमें लिखा है, कि-"इसका बाप भी इसी बत्तीस वर्षकी उम्रमें ज़ियादा शराब पीनेके कारण मरा था". इसी मौकेपर महाराणा अमरसिंहने बादशाहके लिये दो घोड़े, गुजराती थान और आचार, मुरब्बा भेजा, और बादशाहने आदिलखां बीजापुरीकी तरफ़का आया हुआ मस्त हाथी गजराज, महाराणाके लिये भेजा. बांसवाड़ेका रावल समरसी बादशाहके पास हाज़िर हुआ, जिसने तीस हज़ार रुपया और तीन हाथी वगैरा नज़्र किये; इसके बाद अहमदनगर फ़त्ह करनेकी ख़बर शाहज़ादे ख़ुर्रमने बादशाहको भेजी, और इसी वर्षमें बादशाहने ख़ास लिबासके लिये भी हुक्म जारी किया, कि दूसरे लोग इस तरहके कपड़े न पहिनने पावें- लिबास नादिरी, तूसी, ज़रीका पटका वगैरह.

हिज्री ता० २८ शअ्‌बान [ वि० भाद्रपद कृ० १४ = ई० ता० ३० ऑगस्ट ] को आंबेरके राजा मानसिंहके पड़पोते और महासिंहके बेटे जयसिंहको बादशाहने अपने पास बुलाकर एक हज़ारी ज़ात और पांच सौ सवारका मन्सब दिया, और आदिल्शाह बीजापुरीके नाम शाहज़ादोंके मुवाफ़िक़ फ़र्मान लिखा गया. इन्हीं दिनोंमें शाहज़ादे ख़ुर्रमके एक बेटी पैदा हुई, जिसका नाम रौशनआरा रक्खा गया. चन्द्रकोटेके रईस हरिभानको दो हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब दिया, और विक्रमादित्य भदौरियेका लड़का भोज दक्षिणसे बादशाहके पास हाज़िर हुआ.

हिज्री ता० ११ शव्वाल [ वि० आश्विन शुक्ल १३ = इ० ता० १३ ऑक्टोबर ] को शाहज़ादा ख़ुर्रम दक्षिणसे मांडूमें बादशाहके पास हाज़िर हुआ, और नीचे लिखे हुए शाहज़ादेके साथी सर्दारोंकी नज़्रें हुईं.

ख़ाने जहां लोदी, अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंग, महाबतख़ां, मिर्ज़ा राजा भावसिंह कछवाहा, दाराबख़ां, सर्दारख़ां, शुजाअ्‌तख़ां अरब, दियानतख़ां, मोतमदख़ां बख़्शी, ऊदाराम मरहठा, बीजापुरी आदिलख़ांके वकील वगैरह.

इस फ़त्हके इनआममें बादशाहने शाहज़ादेको तीस हज़ारी ज़ात और बीस हज़ार सवारका मन्सब और तख़्तके सामने कुर्सीकी बैठक व शाहजहांका ख़िताब दिया, और शाहज़ादेने भी बहुतसी चीज़ें नज़्रमें पेश कीं, जिनमेंसे बीस लाख रुपयेकी क़ीमती चीज़ें बादशाहने रखकर बाक़ी फेर दीं. बादशाह मांडूसे अहमदाबादकी तरफ़ रवाना हुआ, और कई दिन पीछे परगने हलवदपर, जो केशवदासकी जागीरमें था, मक़ाम हुआ.

हिज्री १०२७ [ वि० १६७५ = ई० १६१८ ] में बादशाह खम्भात पहुंचे, जहां

किश्तियोंमें बैठकर दर्याकी सैर की—यह व्यापारका बड़ा बन्दर था. बादशाहने कुल सायर ( दाण ) का महसूल मुआफ़ करदिया. बादशाह अहमदाबादमें आया, और गुजरातका देश शाहज़ादे खुर्रमको जागीरमें देदिया. ईडरके राव कल्याणने हाज़िर होकर एक हाथी और नौ घोड़े नज़ किये. बादशाहको अहमदाबादका शहर बिल्कुल ना पसन्द आया, और इसी जगह यह हुक्म जारी किया, कि जती लोगोंको बादशाही इलाक़ोंसे निकाल दियाजावे, जो कि जैनी महाजनोंके गुरू हैं.

शाहबाज़खां लोदी व विक्रमादित्य राजाको कांगड़ेका फ़साद मिटानेके लिये भेजदिया, जो नूरपुरके राजाने किया था, और वहांसे आगरेकी तरफ़ कूच किया, मही नदी पर राजा जाम जस्सा ( जेहा ) हाज़िर हुआ, और उसने ५० घोड़े नज़ किये, कूचविहारका राजा लक्ष्मीनारायण भी इसी जगह आया. फिर सीसोदिया रावत् सगर उदयसिंहोत सूबे विहारमें मरगया. यह ख़बर सुनकर बादशाहने उसके बेटे रावत मानसिंहको दो हज़ारी ज़ात और छःसौ सवारका मन्सब दिया. भुजका राव भारा जाड़ेचा भी हाज़िर हुआ, जो उस समय नव्वे वर्षकी उम्र का था. इसी सफ़रमें बादशाहने यह हुक्म जारी किया, कि कोई मुज्रिम वगैर तीन हुक्मके क़त्ल न कियाजाय.

हिज्री ता० १ शव्वाल [ वि० आश्विन शु० ३ = ई० ता० २३ सेप्टेम्बर ] को राजा भारा जाड़ेचाको जड़ाऊ तलवार, घोड़ा, और ख़िलअ़त देकर वतन की रुख़्सत दी. ता० १५ ज़ीक़ाद [ वि० मार्गशीर्ष कृ० १ = ई० ता० ४ नोवेम्बर ] को शाहज़ादे खुर्रमके बेगम मुम्ताज़महल से शाहज़ादा औरंगज़ेब पैदा हुआ. बादशाह उज्जैनकी तरफ़ आया, जहां महाराणा अमरसिंह के बेटे कुंवर कर्णसिंह गये.

हिज्री १०२८ [ वि० १६७५ = ई० १६१८ ] में बादशाह रणथम्भोर होतेहुए अख़ीर मुहर्रम [ वि० माघ कृष्ण पक्ष = ई० डिसेम्बर ] को आगरे पहुंचे. यह मेवाड़, मालवा और गुजरातका सफ़र पांच वर्ष और चार महीनेमें तै हुआ. इन दिनोंमें कांगड़े और मऊका क़िला फ़त्ह हुआ, और राजा सूरजमल्ल वहांसे भागगया; उसके छोटेभाई जगत्सिंहको वहांका राजा बनाया. राजा कृष्णसिंहके छोटे बेटे जगमाल और भारमल्लको पांच सौ ज़ात और सवादो सौ सवारका मन्सब दिया. शाहनवाज़ख़ांके मरनेपर उसके भाई दाराबख़ांको पांच हज़ारी ज़ात व सवार का मन्सब दिया, और बूंदीके हाड़ा राव रत्नसिंहको सर बलन्द राय का ख़िताब मिला. शाहज़ादा पर्वेज़ इलाहाबाद ( प्रयाग ) से हाज़िर हुआ.

हिजी शव्वाल [ वि० १६७६ भाद्रपद = ई० १६१९ सेप्टेम्बर ] में जोधपुरके राजा सूरजसिंहके मरनेकी खबर मिली, जो दक्षिणकी फ़ौजमें था, उसके बेटे गजसिंहको राजाका ख़िताब और तीन हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारका मन्सब दिया. फिर बादशाहने हुक्म दिया, कि आगरेसे दिल्ली और अटक तक पंजाबमें और बंगाले तक पूर्वमें सड़कें बनाकर दोतरफ़ा पेड़, व कोस कोसपर मीनार और तीन तीन कोसपर कुआ बनाया जावे. शाहज़ादे ख़ुसरोको क़ैदसे छोड़कर सलाम करजानेकी इजाज़त दी. मिर्ज़ा राजा भावसिंह कछवाहेको दक्षिणकी फ़ौजमें भेजा, इसके बाद बादशाह दिल्लीकी तरफ़ होता हुआ कश्मीरको चला.

हिजी १०२९ ता० ११ मुहर्रम [ वि० मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० ता० २१ डिसेम्बर ] को शाहज़ादे ख़ुर्रमके हमीदाबानू ( मुम्ताज़ महल ) से एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम उम्मेदबख़्श रक्खागया.

जब बादशाह कश्मीरको जाते हुए हसन अब्दालसे एक मंज़िल आगे ग्राम सुल्तानपुरमें पहुंचे, तो वहां महाराणा अमरसिंहके देहान्तकी ख़बर मिली, तब महाराणाके वलीअहद पोते जगत्सिंह और छोटे बेटे भीमसिंहको, जो उस वक्त बादशाही लश्करमें मौजूद थे, मातमी ख़िलअ़त देकर जगत्सिंहको उदयपुरकी रुख़्सत दी, और राजा कृष्णदासको टीके ( गद्दी नशीनी ) का सामान देकर उदयपुर भेजा. बादशाह कश्मीरमें पहुंचे, जहां राव मनोहर शेखावतके बेटे पृथ्वीचन्दके कांगड़ेकी लड़ाईमें मारेजानेकी ख़बर सुनी.

कुछ दिनों पीछे दक्षिणियोंके फ़सादकी ख़बर मिली, दाराबख़ांने उनको शिकस्त देकर हबशी मन्सूर दक्षिणीको पकड़ लिया. इन्हीं दिनोंमें बादशाहने महाराणा अमरसिंहके छोटे बेटे भीमसिंहको राजाका ख़िताब दिया, और सीसोदिया रावत सगरके बेटे मानसिंहको डेढ़ हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब इनायत किया.

हिजी ज़िल्हिज [ वि० १६७७ कार्तिक = १६२० नोवेम्बर ] में बादशाह कश्मीरसे पंजाबकी तरफ़ रवाना हुए.

हिजी १०३० [ वि० १६७७ = ई० १६२१ ] में शाहज़ादे ख़ुर्रमको साढ़े छः सौ मन्सबदार, एक हज़ार अहदी, एक हज़ार बर्कन्दाज़, एक हज़ार गोलंदाज़ और बहुतसा तोपख़ाना व हाथी देकर दक्षिणको रवाना किया, जहां इकत्तीस हज़ार सवार पहिलेसे मौजूद थे. इन्हीं दिनोंमें उदयपुरसे महाराणा कर्णसिंहके कुंवर जगत्सिंह बादशाहके पास गये, जिनको शाहज़ादे ख़ुर्रमके साथ दक्षिणमें भेज दिया. बूंदीके हृदयनारायण हाड़ाको नौसौ ज़ात और छः सौ सवारका मन्सब दिया.

हिज्री रबीउल्‌अव्वल [वि॰ माघ = ई॰ १६२१ फ़ेब्रुअरी] में बादशाह आगरे आये, ईरानके तीन एल्चियोंको रुख़्सत दी. ख़ाने आलम (१) के भतीजेको इस कुसूरमें क़त्ल करवाया, कि उसने किसी आदमीको मरवाडाला था. हिज्री शव्वाल [वि॰ १६७८ भाद्रपद = ई॰ १६२१ ऑगस्ट] में एतिक़ादख़ां नूरजहांके भाईको चार हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवार, व राजा गजसिंह जोधपुर वालेको चार हज़ारी ज़ात और तीन हज़ार सवारका मन्सब दिया. अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंग दक्षिणसे बग़ैर हुक्म चला आया, जिससे उसकी जागीर छीनकर वहीं जानेका हुक्म हुआ.

इन दिनों बादशाहको दमेकी बीमारी हुई, इससे शुरू हिज्री १०३१ [वि॰ १६७८ = ई॰ १६२१] में आगरेका सूबेदार मुज़फ़्फ़रख़ांको बनाकर काश्मीरकी तरफ़ रवाना हुए. आंबेरका मिर्ज़ा राजा भावसिंह, जो दक्षिणकी तरफ़ तईनात था, ज़ियादा शराब पीनेके कारण हिज्री १०३१ सफ़र [वि॰ पौष = ई॰ डिसेम्बर] में परलोक सिधारा, और उसके बड़े भाई जगत्‌सिंहका पोता और महासिंहका बेटा जयसिंह आंबेरका राजा बनायागया. नूरजहांके बाप और मा दोनों मरगये, इसी अर्सेमें बादशाहको पंजाबमें शाहज़ादे ख़ुर्रमकी अर्ज़ीसे मालूम हुआ, कि ख़ुस्रौ मरगया. राजा किशनदासको दिल्लीकी फ़ौज्दारी दी, और फ़ौज्दारी फ़ैसलेकी लगान सारे मुल्कसे मुआफ़ करदी. शाहज़ादे ख़ुर्रमकी सुफ़ारिशसे अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंगको छः हज़ारी मन्सब और जोधपुरके राजा गजसिंहको नक़्क़ारा इनायत हुआ.

बादशाह हिज्री १०३१ जमादियुल् अव्वल [वि॰ १६७९ चैत्र शुक्ल पक्ष = ई॰ १६२२ मार्च] में कश्मीर पहुंचे. इन दिनोंमें मालूम हुआ, कि ईरानके बादशाह अब्बासने कन्धारको घेरलिया, इसपर जहांगीर शाहने भी कश्मीरसे चलनेकी तय्यारी की. शाहज़ादे ख़ुर्रमको भी दक्षिणसे बुलाया था, लेकिन् उसकी अर्ज़ी वर्षाके बाद हाज़िर होनेके उज़्रसे आई, जिसपर बादशाहने नाराज़ होकर मुसल्मान और राजपूत सर्दार व मन्सबदारोंको भेजदेनेका हुक्म दिया. इस समयसे शाहजहां पर बादशाहकी नाराज़गी बढ़ने लगी, क्योंकि नूरजहां उसकी दुश्मन होगई थी, जिसकी बेटी जो शेर अफ़्गनसे थी, शाहज़ादे शहरयारके साथ

(१) इसके बाप दादा तीमूरके समयसे इज़्ज़तदार नौकर चलेआते थे, और इसको भी बादशाह जहांगीरने पांच हज़ारी मन्सब और ख़ाने आलमका ख़िताब, व शाहजहांने छः हज़ारी मन्सब दिया. इसका अस्ली नाम मिर्ज़ा बरख़ुर्दार था.

ब्याही गई थी, और वह उसको वलीअहद बनाना चाहती थी. यह कुल हाल शाहजहां और जहांगीरकी ना इत्तिफ़ाक़ीका ऊपर लिखा गया है- ( देखो पृष्ठ २७५ ). कन्धार, जो ईरानके बादशाहने लेलिया, और जिसपर जहांगीर शाह और शाह अब्बासके दर्मियान जो खत किताबत हुई, वह शाहज़ादेकी बग़ावतके हालमें लिखी गई है. बादशाहने शाहज़ादे शहरयार और मिर्ज़ा रुस्तमको बहुतसी फ़ौजके साथ कन्धार भेजा, लेकिन् उन्हें मुल्तानमें ठहरनेका हुक्म था. इन्हीं दिनोंमें बादशाहको स्वासकी बीमारीने बहुत सताया, इस कारण मोतमदखांको हुक्म हुआ, कि तुज़कजहांगीरी, जो बादशाह खुद लिखा करते थे, आगेको वह लिखा करे और दिखा दिया करे.

हिज्री १०३२ [ वि० १६८० = ई० १६२३ ] में बादशाह दिल्लीके पास पहुंचे, वहां आंबेरका राजा पहिला जयसिंह हाज़िर हुआ.

राजा नरसिंहदेव बुंदेलेको महाराजाका खिताब दिया, फिर शाहज़ादे खुर्रम के मुक़ाबलेपर महाबतखांको फ़ौज देकर भेजा, आगरेके पास लड़ाई हुई, जिसमें शाहज़ादेका मुसाहिब रायरायां सुन्दरदास मारागया. इसके बाद बूंदीका राव सर-बलन्द राय रत्न हाज़िर हुआ, और आंबेरके राजा जयसिंहको तीन हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब दिया. जब बादशाह हिंडौन स्थानपर पहुंचे, तो वहां बंगालेकी तरफ़से शाहज़ादा पर्वेज़ हाज़िर हुआ, जिसको चालीस हज़ारी ज़ात और तीस हज़ार सवारका मन्सब दियागया. इन्हीं दिनोंमें मिर्ज़ा शाहरुखका बेटा बदीउज़्ज़मां अपने भाइयोंके हाथसे मारागया, लेकिन् मारनेका कुसूर उनपर साबित न हुआ.

जोधपुरके राजा गजसिंह व बीकानेरके राजा सूरसिंह भी हाज़िर हुए, इनमेंसे पहिलेको पांच हज़ारी ज़ात और चार हज़ार सवारका मन्सब दिया, और दोनों पर्वेज़के साथ शाहज़ादे खुर्रमपर भेजे गये, बंगालेकी सूबेदारी आसिफ़-खांको दी. इसके बाद हिज्री रजब [ वि० वैशाख = ई० एप्रिल ] में बाद-शाहकी मा आंबेरके राजा भारमल्लकी बेटीका देहान्त हुआ. इसके बाद शाह-ज़ादे खुर्रमको बादशाही लोगोंने गुजरातसे भी निकाल दिया, वह सूरतकी तरफ़ होता हुआ बंगालेमें पहुंचा.

हिज्री १०३३ सफ़र [ वि० १६८० मार्गशीर्ष = ई० १६२३ डिसेम्बर ] में महा-राणा कर्णसिंहके कुंवर जगत्सिंहको बादशाहने उदयपुरकी रुख्सत दी. राजा गिरधर कछवाहा, पर्वेज़ और महाबतखांकी फ़ौजमें मारागया, जिसका हाल इस तरहपर है, कि सय्यद कबीरके आदमियोंमेंसे किसी शख्सने तलवार साफ़ करनेके लिये

सैक़लगरको दी थी, जिसपर तक़ार हुई, वह सैक़लगर राजा गिरधरके पड़ोसमें रहता था, मज़्दूरी देने लेनेकी बाबत झगड़ा बढ़ा, और राजपूत व सय्यदोंमें लड़ाई हुई, उसमें राजा गिरधर २६ आदमियों समेत सैक़लगरकी हिमायत करनेके सबब मारागया, और ४० राजपूत घायल हुए; सय्यदोंकी तरफ़के चार आदमी क़त्ल और कई ज़ख़्मी हुए. इसपर राजपूत और सय्यदोंकी दो बड़ी फ़ौजें लड़नेको तय्यार होगई, इस फ़सादको शाहज़ादे पर्वेज़ और महाबतख़ांने बड़ी मुश्किल से रोका, और सय्यद कबीरको महाबतख़ांने पकड़कर क़त्ल किया, इससे राजपूतोंका जोश कम हुआ.

इसके बाद मेवातके मेव और जाटोंने लूटमार शुरू की, वहां ख़ानेजहां लोदीको भेजा, उसने मारकूटकर फ़सादियोंको ज़ेर किया. इन्हीं दिनोंमें राजा वासूके बेटे जगत्सिंहने कांगड़ेकी तरफ़ फ़साद किया, जहां सादिक़ख़ां भेजा गया, उसने राजाको क़िलेमें घेरलेनेके बाद बादशाहके पास हाज़िर किया.

इसी वर्षमें बादशाहने आब हवा बदलनेके इरादेसे कश्मीरकी तरफ़ कूच किया, सरहिन्दके पास पहुंचकर बादशाहको ख़बर मिली, कि शाहज़ादा ख़ुर्रम दक्षिण और उड़ीसे होता हुआ बंगालेमें पहुंचा; अक़ीदत्ख़ांकी अर्ज़ीसे जानागया, कि जोधपुरके राजा गजसिंहकी बहिनके साथ शाहज़ादे पर्वेज़ने हुक्मके मुवाफ़िक़ शादी की.

इसी वर्षमें ख़ाने आज़म मिर्ज़ा अज़ीज़ कोकेके मरनेकी ख़बर मिली, और इसी वर्षसे मोतमदख़ांके एवज़ मिर्ज़ा मुहम्मद हादीने जहांगीरके तुज़ुकको लिखना शुरू किया. इसी सालमें बादशाहकी बहिन आरामबानू बेगम चालीस वर्षकी उम्र पाकर मरगई; उज़्बक लोगोंने काबुलियोंसे मिलकर सरहद्दपर फ़साद किया, जो सय्यद हाजी व सिंहदलन अनीरायने उनको निकालकर मिटाया. फिर अर्ज़ हुई, कि शाहज़ादे पर्वेज़ और महाबतख़ांने बंगालेमें शाहजहां ( शाहज़ादा ख़ुर्रम ) पर फ़त्ह पाई; इसपर महाबतख़ांको ख़ानख़ानांका ख़िताब और सिपहसालारीका उहदा दियागया.

हिज्री १०३४ [ वि० १६८२ = ई० १६२५ ] में बादशाह कश्मीरसे पंजाबको लौटे, और पंजाबकी सूबेदारी आसिफ़ख़ांको और बंगालेकी महाबतख़ांको दीगई. शाहज़ादा ख़ुर्रम बंगालेसे भागकर दक्षिणमें पहुंचा. इन्हीं दिनोंमें ख़बर मिली, कि महाबतख़ां बंगालेमें ज़ियादा ज़ुल्म करता है; इस बातकी तहक़ीक़ातके लिये अरबख़ां भेजागया, हुक्म था, कि महाबतख़ांको लेआवे, महाबतख़ां अच्छे अच्छे राजपूतोंकी फ़ौज बनाकर रवाना हुआ.

हिज्री १०३५ [ वि० १६८३ = ई० १६२६ ] में बादशाह पंजाबमें फिर-

कश्मीरकी तरफ़ चले, और ख़बर मिली, कि क़िले बुर्हानपुरमें बूंदीके हाड़ा राव रत्नने ख़ुर्रमकी फ़ौजसे अच्छा मुक़ाबला किया, और क़िला हाथसे नहीं जाने दिया; इसके इन्आममें बादशाहने रत्नको रावरायका ख़िताब और पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया. इन्हीं दिनोंमें ख़ुर्रमके दोनों शाहज़ादे दाराशिकोह व औरंगज़ेब बादशाहके पास बुलालियेगये. सर्दी आजानेके कारण बादशाह कश्मीरसे लौटे; अब्दुर्रहीम ख़ानख़ानां बादशाहके पास हाज़िर हुआ, बादशाहने तसल्ली दी. अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंगने भी ख़ानेजहांकी मारिफ़त क़ुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, जो बादशाहने मंज़ूर की.

इन दिनोंमें महाबतख़ांपर भी बादशाही नाराज़गी बढ़गई, और उसके जमाई बरख़ुर्दारको क़ैद करदिया, बादशाह काबुलको रवाना हुए; महाबतख़ां और आसिफ़ख़ांसे तक्रार होगई थी, इसी सबब नूरजहां बेगम अपने भाईकी हिमायत से महाबतख़ांको मरवाडालना चाहती थी, महाबतख़ांने पांच हज़ार राजपूतोंके साथ तय्यार होकर जिहलम नदीके किनारेपर बादशाहको घेरकर अपने क़ाबूमें करलिया, जब कि तमाम बादशाही लश्कर नदीके पार उतरगया था; दो हज़ार राजपूतों को नदीकी तरफ़ भेजा और बाक़ी तीन हज़ार सवारोंको साथ लेकर बादशाही डेरोंकी तरफ़ चला, और दो सौ राजपूतोंके साथ ख़ास डेरोंमें जाकर जहांगीरको घेरलिया. महाबतख़ां ज़बानी बहुत अदबके साथ पेश आया, और बादशाहको हाथीपर सवार कराकर अपने डेरोंमें लेआया. नूरजहां बेगम अपने भाई आसिफ़ख़ांके पास पहिले ही नदी पार फ़ौजमें जापहुंची थी, वहांसे उसने मए शाही फ़ौजके हम्ला किया. बहुतसे सवार नदीमें डूब मरे, और ख़ास बेगमकी दोहिती, जो हाथीपर उसके पास सवार थी, तीर लगनेसे ज़ख़्मी हुई, और शाही फ़ौज ख़राब होकर दर्याकी तरफ़ लौटी; आख़िरको नूरजहां बेगम बड़े बड़े सर्दारों सहित महाबतख़ांकी फ़ौजमें चलीआई, और आसिफ़ख़ां क़िले अटकमें जा छिपा, लेकिन् वहांसे क़ैद होकर महाबतख़ांके पास लायागया, उसके कई दोस्तोंको महाबतख़ांने मरवाडाला. फिर बादशाहको महाबतख़ां अपने क़ाबूमें लेकर काबुलको रवाना हुआ, और जलालाबाद होते हुए सब काबुल पहुंचे; वहां महाबतख़ांके राजपूत और बादशाही अहदियोंमें फ़साद हुआ, सैकड़ों राजपूत वग़ैरह मारेगये, इससे महाबतख़ांकी ताक़तमें फ़र्क़ आगया. इस ख़बर को सुनकर शाहज़ादा ख़ुर्रम भी दक्षिणसे अजमेर व मारवाड़ होताहुआ ठठ्ठे की तरफ़ चला, अजमेरमें उसका बड़ा सर्दार राजा भीमका बेटा कृष्णसिंह मरगया, जो पांच सौ राजपूत सवारोंका अफ़्सर था, इससे शाहज़ादेको बहुत रंज हुआ. बादशाह भी काबुलसे लाहौरकी तरफ़ लौटे, और नूरजहांकी सलाह

से महाबतख़ांपर ज़ियादा मिहर्बानी ज़ाहिर करते थे, जिससे वह ग़ाफ़िल रहने लगा; क़िले रुहतासके पास नूरजहां बेगमने अपनी फ़ौजकी हाज़िरीके बहानेसे बादशाह को महाबतख़ांसे अलग किया, यह हाल पेश आनेसे महाबतख़ां जान लेकर भागा, लेकिन् दानयालके शाहज़ादे और आसिफ़ख़ां व उसके बेटे अबूतालिबको क़ैदी बनाकर साथ लेगया. बादशाहके कहलानेसे दानयालके बेटेको तो छोड़दिया, लेकिन् आसिफ़ख़ां व उसके बेटेको, जबतक दूर न निकलगया, न छोड़ा.

हिज्री १०३६ मुहर्रम [ वि० १६८३ आश्विन = ई० १६२६ सेप्टेम्बर ] में बादशाह लाहौर पहुंचे, वहां अब्दुर्रहीम ख़ान्ख़ानांका सात हज़ारी मन्सब बहाल करके अजमेर जागीरमें दिया, और महाबतख़ांका पीछा करनेको तईनात किया, और मुकर्रमख़ांको बंगालेकी सूबेदारी इनायत की. इसी हिज्रीकी ता० ७ सफ़र [ वि० कार्तिक शुक्ल ९ = ई० ता० २९ ऑक्टोबर ] को शाहज़ादा पर्वेज़ ३८ वर्ष की उम्रमें मरगया. बादशाहने आसिफ़ख़ांके बेटे अबूतालिबको शायस्ताख़ांका ख़िताब दिया. इन्हीं दिनोंमें याकूतख़ां हबशीने राव राजा रत्न हाड़ेकी मारिफ़त बादशाही ताबेदारी कुबूल की. शाहज़ादे खुर्रमने ईरान जानेका विचार किया था, परन्तु पर्वेज़ के मरजानेसे उस इरादेको छोड़कर दक्षिण पहुंचा. बादशाहने आसिफ़ख़ांको सात हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. ख़ानेजहांने तीन लाख होन ( १५ लाख रुपये ) लेकर बाला घाटका इलाक़ा दक्षिणियोंको देदिया; इसी वर्षमें अब्दुर्रहीम ख़ान्ख़ानां मरगया. बादशाहको ख़बर मिली कि महाबतख़ां खुर्रमके पास पहुंचगया, और उसने उसको अपनी फ़ौजका अफ़्सर बनाया.

बादशाह कश्मीरकी तरफ़ चले, और रास्तेमें बीमारीसे ज़ियादा तक्लीफ़ हुई, आख़िरकार राजौर मक़ामपर हिज्री १०३७ ता० २८ सफ़र [ वि० १६८४ कार्तिक कृष्ण १४ = ई० १६२७ ता० ९ नोवेम्बर ] में बादशाह जहांगीरका देहान्त हुआ. शाहज़ादा खुर्रम ( शाहजहां ) अपने ससुर आसिफ़ख़ांकी मददसे कई भाई भतीजोंको क़त्ल कराकर बादशाहतका मालिक बना, जिसका पूरा ज़िक्र मौक़ेपर किया जायगा.

हम बादशाह जहांगीरका कुछ चाल चलन लिखना चाहते थे, लेकिन् जॉन-हेरिस डी, डी, और एफ़, आर, एस के सफ़रनामेमें, जो ईसवी १७६४ [ वि० १८२१ = हि० ११७७ ] में लंडनमें छपा है, उसका ज़िक्र मिलगया, इसलिये उसका ही तर्जुमा यहांपर लिखदिया जाता है. इस सफ़रनामेकी पहिली जिल्द, दूसरा बाब, बाईसवां खंड और नवें लेखके ६३७ पृष्ठमें लिखा है- कि "इस बादशाह जहांगीरकी लयाक़त ( ज़ाती तौरपर ) उसके बापसे बहुतही कम थी, और

ऐबोंमें वह उससे बहुतही बढ़कर था. वह खाना व पीना जितना बादशाहोंको चाहिये उससे बहुत ज़ियादा पसन्द करता था, और ख़ास सबब उसके मुसल्मानी तरीक़ेके बर्ख़िलाफ़ क्रिस्तानी मज़्हबकी तरफ़ झुकनेका यह था, कि इस मज़्हबमें उसको खाने पीनेकी बाबत कुछ रोक टोक नहीं थी, जैसी कि पहिलेमें. वह बहुत दिलेर था, गो कि अपने बुज़ुर्गोंकी तरह लड़ाई पसन्द नहीं करता था, परन्तु जब कभी उसको लड़ाईके मौक़ेपर जाना पड़ता, तब वह फ़ौज लेजानेमें वैसी ही लयाक़त दिखलाता, जैसे कि उसके बुज़ुर्ग. वह फ़िरंगी अर्थात् यूरोपी लोगोंको बहुत चाहता था, क्योंकि वे लोग मुसल्मानोंकी बनिसबत ज़िन्दगीके उस तरीक़ेकी तरफ़ ज़ियादा माइल थे, जिसे वह सबसे ज़ियादा पसन्द करता था, और मुसल्मानोंके साथ बड़ी सख़्ती और रुखाईसे सुलूक करता, क्योंकि वह सालके उस वक़्में दावतें देना पसन्द करता था, जब कि अपने क़ानूनके मुवाफ़िक़ उनको फ़ाक़ा अर्थात् रोज़ा रखना ज़ुरूर होता था, अगर ऐसे वक़् पर वे उसकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ खाने पीनेसे इन्कार करते, तो उन्हें खाना खानेकी कोठरीकी खिड़की मेंसे बाहर फेंक देनेकी धमकी देता, जहां हमेशा दो शेर ज़ंजीरोंसे बंधे रहते थे. इससे जानाजाता है, कि वह हठी और ज़ालिम था, परन्तु यह निश्चय है, कि कोई बादशाह औरतों या वज़ीरोंके ज़ेर असर उससे ज़ियादा न था".

अब हम इस बादशाहके ज़ालिम होनेके और भी सुबूत लिखते हैं, कि वह आदमियोंको ऐसी सख़्त सज़ा देता था, कि उसके बापने किसीको न दी होगी, इसने अपनी शाहज़ादगीके वक़् इलाहाबाद (प्रयाग) में एक आदमी की खाल खिंचवाकर भुस भरवाया, और बादशाह होनेपर सर टॉमस रो (एल्ची जेम्स बादशाह इङ्गलेण्ड) के सामने एक महलकी औरत को ज़िन्दा ज़मीनमें गड़वाया, और खोजेसराको हाथीके पैरोंसे खुंदवाडाला. यह बात सर टॉमस रो की किताबके ३७ वें पृष्ठमें लिखी है. जहांगीर आप भी अपनी किताबमें लिखता है, कि मैं हिज्री १०१८ [वि० १६६६ = ई० १६०९] में जब सामरका शिकार कररहा था, उस वक़् एक अर्दलीका सिपाही और दो कहार, बीचमें आगये, उनमेंसे सिपाहीको तो जानसे मरवाडाला और कहारों के पैर कटवादिये. उस ज़मानेके सब बादशाह वग़ैरा ऐसा ज़ुल्म करते थे, परन्तु यह अक्बरका बेटा होनेके कारण ज़ालिम समझागया. वरना पहिले ख़िल्जी, तुग़्लक़ वग़ैरह बादशाहोंके ज़ुल्म देखते, यह बादशाह बड़ा नेक और रहमदिल था, अगरचि वह बाज़ दफ़ा गुस्से और शराबके जोशमें बाज़े सख़्त हुक्म देता था— लेकिन् दिलसे हमेशा इन्साफ़ पसन्द करता था, जैसा कि आगरा क़िलेके

बुर्जसे जमुनाके किनारे तक फ़र्यादियोंके लिये ज़ंजीर लटकाने, और कुसूरवारोंके हाथ पाँव न काटनेकी बाबत ताकीदोंसे ज़ाहिर है. इस बादशाहकी औलाद पांच शाहज़ादे और दो बेटियां थीं:- १ खुस्रौ, २ पर्वेज़, ३ ख़ुर्रम, ४ जहांदार, ५ शहरयार, और बेटियोंमें बड़ी सुल्ताननिसा और छोटी बहारबानूबेगम.

शाहज़ादा खुस्रौ हिज्री ९९५ [ वि० १६४४ = ई० १५८७ ] में राजा भगवानदास कछवाहे की बेटीसे पैदा हुआ था, जो बापके सामने मरगया. शाहज़ादा पर्वेज़ हिज्री ९९७ [ वि० १६४६ = ई० १५८९ ] में ज़ैनखां कोकेकी बेटीसे पैदा हुआ था, जो बापसे एक वर्ष पहिले गुज़र गया. तीसरा खुर्रम हिज्री १००० के रबीउल्अव्वल [ वि० १६४८ पौष = ई० १५९१ डिसेम्बर ] में मोटेराजा उदयसिंह जोधपुरवालेकी बेटीसे पैदा हुआ, जो बापके बाद बादशाह बना. चौथा शाहज़ादा जहांदार और पांचवां शहरयार था, ये दोनों पासवानोंके पेटसे पैदा हुए थे, जिनमेंसे पहला तो बापके सामने ही मरगया, और पिछला शाहजहांके बादशाह होनेपर क़त्ल कियागया; सुल्तान निसाबेगम केशवदास मेड़तिया राठौड़की बेटीसे हिज्री ९९८ [ वि० १६४७ = ई० १५९० ] में पैदा हुई, और बहार बानूबेगम हिज्री ९९९ [ वि० १६४८ = ई० १५९१ ] में कर्मसी राठौड़की बेटीसे पैदा हुई. इनमेंसे जहांगीरके बाद शाहजहां और दोनों बेटियां ही बाक़ी रहीं.

---

## शेषसंग्रह ( नम्बर १ ).

( यह प्रशस्ति चित्तोड़ गढ़के रामपोल दर्वाज़े बाहर जातेहुए दहिनी तरफ़ है ).

श्री महाराजा धिराज महाराणा श्री कर्णसिंहजी आदेशातु बारहठ लखा कस्य- पहिली श्री दिवाण, लखाजी हे गाम तांबापत्र करेदीधा, यां गांवांरा पत्र गढ़ चित्र- कोटरी पोले लिखायो, १ गाम मन्सवो मांडलगढ़रो, १ गाम थरावली फुल्यारो, १ गाम जडाणो भिणायरो, संवत् १६७८ वर्षे आसोज शुदि १५. गंगामस्तु धारि आलाअरांमें सु कोई चोलण करे, श्रीएकलिंगजीरी आण-लिखितं पंचोली शवरदास रामदास उपादेली लिखितं ॥

## शेपसंग्रह ( नम्बर २ ).

ख़याल कियागया है, कि मेवाड़के महाराणा सुलह होनेपर भी बादशाही ख़ैरख़्वाही से नफ़्त करते थे, और फिर लड़ाई फ़सादका इरादा रखते थे इस लिये दर्वाज़ेकी हिफ़ाज़त के वास्ते क़ाज़ी मुल्ला जमालसे (जो यहांपर बादशाही मुक़र्रर किया हुआ क़ाज़ी होगा), अरबीकी आयत व फ़ार्सी शिअ्र लिखवाकर खुदवाया, कि जिसमें मुसल्मान लोग इस दर्वाज़े ( बड़ी पोल ) व महल वग़ैरहको न तोड़ें.

बड़ीपोल दर्वाज़ेकी छतके अन्दरकी खुदीहुई इबारत व शिअ्र-

श्रीएकलिङ्गजी प्रसादात्. श्रीगणेशायनमः संवत १६७३ वर्षे मार्गसिर वदी ४ शुक्रे राजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी चिरंजीव महाराजकुंअर श्री करणजी चरण कमलानु ---- श्रीमेदपाटेनृप सूनु कर्णे --- विण -- परागमेविस्ममंडनोयं ॥ -- विसूत्रधारास्तेने कितंभूपतिवल्लभोयम् ॥ १ ॥ शुभं भवतु ---- सेवक सुतार मुकन्दरामको वेटो ------ तूरकी ईअर, लिखा क़ाज़ी मूला जमालखां.

---

### बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.

नस्रुम्मिनल्लाहे व फ़त्हुन क़रीब, व बश्शिरिलमुअ्मिनीन : फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़ा.
अर्थ- मदद और फ़त्ह खुदाकी तरफ़से आसान है, और खुशख़बरी ईमान्दारोंके वास्ते हो; वेशक खुदा उम्दा हिफ़ाज़त करने वाला है.

### शिअ्र.

या हाफ़िज़ हरकि दरीं ख़ानः नज़र वद कुनद,
ऐ निगाहवान चश्म शवद कोरो शिकम दर्द (१) कुनद.

अर्थ-अगर इस मकानमें कोई वद निगाह करे, तो उसकी आंख अंधी हो, और पेट दर्द करे.

दर अमले राणा अमरसिंह, व कुंवर कर्णसिंह, क़ाज़ी मुल्ला जमाल.
अर्थ-राणा अमरसिंह और कुंवर कर्णसिंहके वक्त में क़ाज़ी जमालने तय्यार किया.

तारीख़ २२ ज़िल्क़ाद
सन् १०२५ हिज्री.

---

(१) दर्दके एवज़ रद रक्खाजावे, तो शिअ्रका वज़्न और क़ाफ़िया ठीक होजावे, लेकिन अस्ल प्रशस्तिमें ऐसा ही लिखाहै.

## त्रिभंगी छन्द.
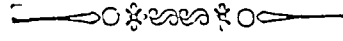
नृप अमर निदानं, गे सुरथानं, जान जहानं, हानि भई ॥
परिजन दुखहर्नं, भूपति कर्नं, नीति वितर्नं, प्रीति नई ॥
खुर्रम जुवराजा, पितु भय भाजा, छोर समाजा, छांह लई ॥
नृप कर्ण सहाई, व्है शर्णाई, कै निज भाई, बांह दई ॥ १ ॥
बेगम बढ़ि मानं, नूरजहानं, ता ढ़त गानं, लेख भयो ॥
फिर नृप ईरानी, मधु कटु बानी, दल बड़मानी, सार लयो ॥
जन्नत्त मकानी, उत्तर ठानी, दुस्सह हानी, मान दयो ॥
प्रिय सुत विपरीतं, संगर नीतं, जान अनीतं, शाह नयो ॥ २ ॥
राणावत भीमं, साहस सीमं, दै जुध नीमं, जुज्झ परयो ॥
फिर भूपति कर्णं, गेशिव शर्णं, लोक विवर्णं, शोक भरयो ॥
अक्बर सुत तासं, कछु इतिहासं ,श्यामलदासं, लेख कियो ॥
नृप सज्जन इच्छा. फ़तमल शिच्छा पूरण दिच्छा पूर हियो ॥ ३ ॥
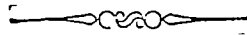
महाराणा कर्णसिंह-षष्ठ प्रकरण

समाप्त.
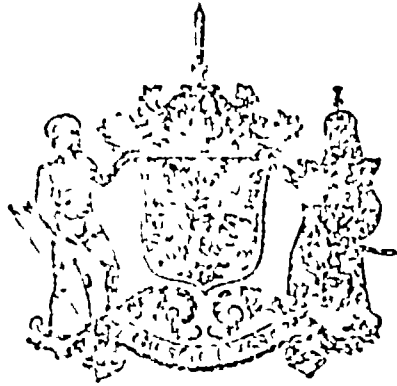
## महाराणा जगत्सिंह-अव्वल.
## सप्तम प्रकरण.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १६८४ के फाल्गुन् [ हि० १०३७ रजब = ई० १६२८ मार्च ] में, और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १६८५ वैशाख शुक्ल ५ [ हि० १०३७ ता० ३ रमज़ान = ई० १६२८ ता० ९ मई ] को हुआ. यह महाराणा मेड़ेचा राठोड़ जसवन्तसिंहकी बेटी जाम्बुवती बाईके पेटसे पैदा हुए थे; इनकी तबीअत बालकपनेसे ही तेज़ थी; जब यह बालकपनमें बादशाह जहांगीरके पास गये, तो बादशाहने भी इनकी शान शौकत व बहादुराना सूरतकी तारीफ़ की. यह अपने पिता व दादाके वक्तमें जहांगीरके साथ हरिद्वार काश्मीर वगैरह हिन्दुस्तानके कई हिस्सोंका सफ़र कर चुके थे. महाराणा कर्णसिंहके वैकुंठवास होनेके पहिले इन्होंने विक्रमी १६८२ [ हि० १०३४ = ई० १६२५ ] के क़रीब ढुंढाड़के एक नरूका राजपूतको, जो उन्हींके पास रहता था, किसी क़ुसूरपर मरवाडाला. उस राजपूतके छोटे भाईने अपने बड़े भाईका माराजाना सुनकर पगड़ीके एवज़ सिर पर रूमाल बांधना इख़्तियार किया, कि जबतक मैं अपने भाईके मारने वालेको न मारलूंगा, पगड़ी न बांधूंगा; उसके घरमें एक उम्दा और बड़े धावेका घोड़ा था, जिसपर वह सवार होकर उदयपुर आया. और चारण खेमराजके हाथसे मारागया, जिसका हाल इस तरहपर है :-

महाराणा प्रतापसिंहके पुत्र सहसमल्लके बेटे भोपतराम बाठरड़ाके

थे, और अब उनकी औलाद वाले धरयावदके जागीरदार रावत कहलाते हैं; ग्राम ऊंटालाके नज़्दीक धारता ग्रामके चारण दधिवाड़िया जयमल्लका बेटा खेमराज अपनी ग़रीबी हालतमें धारतेसे निकलकर बाठरड़े जाता था, धूपकी गरमीसे दुपहरीके वक्त बड़के दरख्तके नीचे सोरहा, थोड़ी देरमें उसके मुंहपर धूप आने लगी, उस समय एक काले सांपने अपने फनसे छाया की; इस मौकेपर माहोलीका एक ओसवाल महाजन किसी ज़रूरी कामके लिये कहीं जाताहुआ उधर आ निकला, महाजनको देखकर सर्प तो चलागया, लेकिन् महाजनने सर्पका साया करना देखलिया था, खेमराजको जगाकर कहा, कि तुमको जो शकुन हुआ है, उसका फल मुझको दे दीजिये. खेमराज पन्दरह वर्षकी उम्रका था, लेकिन् होश्यारीसे उसने इन्कार किया, फिर उस महाजनने कहा, कि जब आपका रुत्बा बढ़े, तब काम करनेका इक़ार मुझको लिखदीजिये, खेमराजने इसपर भी बहुत इन्कार किया; आख़िरकार महाजनकी हुज्जतसे लिखदिया, महाजनने भी जो दस बीस रुपये उसके पास थे, खेमराजको देदिये, वह लेकर बाठरड़े पहुंचा, और महाराज भोपतरामके पास रहने लगा, कभी बाठरड़े कभी उदयपुर आता जाता रहा; अपनी होश्यारीके सबब भोपतरामके कुल कामका मुरूतार होगया. बल्कि उसके कुंवर विजयसिंहसे भी उसकी सर्कारमें खेमराजकी हुकूमत ज़ियादा थी.

एक दिन घोड़ा दौड़ा कर खेमराज शहर (उदयपुर) में आता था. उस वक्त वह नरूका राजपूत भी उसी तरफ़ आया, जिसने अपनी तलवार निकालकर एक सैकलगरको दी और कहा, कि पांच रुपये ले और मेरी तलवारकी धारको ऐसा दुरुस्त करदे, कि इसके मुवाफ़िक़ किसी दूसरे की न हो. यह बात खेमराजने सुनकर विचार किया, कि ऐसा घोड़ा और ऐसे ढंगसे अजनबी बहादुर आदमी पहर रात गये अपनी तलवारकी धार दुरुस्त करने के लिये पांच रुपये देता है, बग़ैर किसी ज़रूरी सबबके न होगा, खेमराजने भी अपनी तलवार किसी दूसरे सैकलगरको देकर उसीतरह पांच रुपये दिये; उस राजपूतने दो घड़ी रात रहे तलवार लेनेका इक़ार किया, इसने चारघड़ी रात रहे लेनेका वादा किया, और पांच घड़ी रात रहे एक अमव्वा दुपट्टा सिरपर बांधकर और उसी रंगका अंगरखा पहनकर अबलक़ घोड़े पर सवार होकर सैकलगरसे वादेके मुवाफ़िक़ तलवार मांगली, और भटियाणी चौहट्टे होताहुआ शीतला माताके पास पहुंचा; वह नरूका राजपूत भी अपने वादेके मुवाफ़िक़ सैकलगरसे तलवार लेकर बाटेश्वर महादेव व महोली चौहट्टेमें होता हुआ वहीं पहुंचा, जहां खेमराज तय्यार खड़ा था.

कुंवर जगत्सिंह दिन निकलते ही छोटे घोड़ेपर सवार होकर बीस तीस शागिर्दपेशा लोगोंके साथ हमेशा ख़रगोशोंके शिकारके वास्ते कृष्णपौल दर्वाजे बाहर जाया करते थे; बाप बेटोंमें ज़ियादा मुहब्बत होनेके कारण महाराणा कर्णसिंह दिल्कुशाल (दिल्कुशा) के गोखड़ेसे अपने बेटे को आतेवक्त देखते रहते थे, उस दिन भी देखने लगे. उस नरूके राजपूतने खेमराजसे कहा, कि मेराघोड़ा तेरे घोड़े से बिगड़ता है. इसलिये दूर रह, जिसपर खेमराजने जवाब दिया, कि मेरा भी घोड़ा है घोड़ी नहीं. इसके सिवाय तेरा घोड़ा क्रोध करता हो तो तूही दूर चलाजा, राजपूतको दूसरा काम करना था, चुप हो रहा; महाराजकुमार जगत्सिंह भी उस वक्त कृष्णपौलकी तरफ़से नज़्दीक आये. उस राजपूतने तलवार निकालकर आवाज़ दी, कि कुंवर मैं अपने भाईका बैर मांगता हूं. यह कहकर अपना घोड़ा उनकी तरफ़ दौड़ाया; खेमराजने अपने घोड़ेको खेंचकर एक हाथ तलवारका मारा, जिससे उस राजपूतका सिर और तलवारका हाथ बदनसे जुदा होकर कुंवर जगत्सिंहके सामने जापड़ा; खेमराज तो उसी समय अपने घोड़ेको मोड़कर भोपतरामकी हवेली चलाआया. महाराणा कर्णसिंह दिल्कुशाल (दिल्कुशा) के गोखड़ेसे अपने बेटेको आताहुआ देखरहे थे. तलवारका निकलना देखकर घबराये, और कहा. कि मेरा घर डूबगया. इधर कुंवर और उनके साथवाले भी भयचकसे रहगये. किसी ने कहा. कि खुद एकलिंगजीने आकर आपकी रक्षा की है, किसीने कहा. इस शरूसको मारनेवाला कोई दैवी मनुष्य था. आख़िरकार उस नरूके राजपूतका सिर और घोड़ा लेकर कुंवर अपने पितासे आमिले. महाराणाने भी अपने बेटेकी ज़िन्दगी नई जानकर हज़ारहा रुपया लोगोंको खैरातमें दिया.

कुंवरने अर्ज़ की कि मैंने अपनी जान बचानेवालेको देखा है. वह कोई मेवाड़ी बहादुरोंमेंसे था. तब सबने कहा, कि ऐसी बड़ी नौकरीपहुंचकर वह क्यों चलागया? इस बातका आश्चर्य है. महाराणाने हुक्म दिया, कि उमराव सर्दार व भाई बेटे कुल अपनी अपनी जमइयतोंके साथ बड़ीपोलमें होकर महलोंके नीचे हो हुए पीछोलेकी पालकी तरफ़ निकल जावें. महाराज भोपतरामने घोड़े पसीना और खेमराजके कपड़ोंपर खूनके छींटे देखकर कहा, कि बेटे अगर यह काम तैंने किया हो तो बहुत बड़ी बात है. मेरी और तेरी इज़्ज़त कारण होगा, छिपानेकी बात नहीं है; तब खेमराजने सारी कार्रवाई भोपतरामने खेमराजको छातीसे लगाकर उसी घोड़ेपर और मए अपनी जमइयतके महलोंकी बड़ी पोलमें लाया; नज़र

ज कुंवर जगतसिंहने महाराणासे अर्ज़ की, कि मेरा प्राण रक्षक यही शख्स है, जो अब्लक़ घोड़ेपर चढ़ा आता है. महाराणाने खुश होकर मए महाराज भोपतरामके खेमराजको ऊपर बुलाया और दौड़कर खेमराजको छातीसे लगाकर कहा, कि अबतक मेरे तीन बेटे थे, आजसे तुझ समेत चार हुए, फिर उसको कुंवर जगतसिंहके पास रखदिया, और उसका कुल्ल ख़र्च अपने छोटे बेटोंके मुवाफ़िक़ सर्कारसे मुक़र्रर किया. कुंवर जगतसिंह भी खेमराजको भाई कहाकरते थे. जब जगतसिंह गादीपर बैठे, तो थोड़े ही अर्सेके बाद खेमराजको ७०००० सत्तर हज़ार रुपये सालयाना आमदनीकी जागीरके कई ग्रामों सहित ठीकरिया ग्राम दिया, और उसका नाम खेमपुर रक्खा- ( देखो शेपसंग्रह नम्बर १ ).

जब महाराणा जगतसिंहका राज्याभिषेक हुआ, उस समय बादशाह शाहजहांने राजा बीरनारायण बड़गूजर दक्षिणीके साथ गद्दी नशीनीका दस्तूरी सामान ( टीका ) महाराणा जगतसिंहके लिये भेजा, जिसमें खिल्अत खासा, जड़ाऊ खपुवा मए फूलकटारेके, जड़ाऊ तलवार, घोड़ा खासा मए सुनहरी सामानके, और खासा हाथी चांदी के असबाब सहित था. राजा बीर नारायणने आकर गद्दी नशीनीके वक्त सब दस्तूर अदा किये.

जब शाहजहां बादशाहने महाबतखांको खानखानांका खिताब और सिपहसालारीका उह्दा इनायत किया, तब कुछ दिनोंके बाद वह देवलियाके महारावत जशवन्तसिंहकी तरफ़दारी करने लगा, क्योंकि तक्लीफ़के वक्त जहांगीरकी नाराज़गी से वह देवलियामें रहा था. देवलियाका जशवन्तसिंह, रावत सिंहाकी गादीपर विक्रमी १६७९ [ हि० १०३१ = ई० १६२२ ] में बैठा था, जब वह महाबतखांकी तरफ़दारीसे उदयपुरके हुक्मकी बर्खिलाफ़ी और सर्कशी करने लगा, तब कई दफ़ा लिखागया, लेकिन् उन्होंने हिमायतसे जगतसिंहके हुक्मको बिल्कुल न माना; महाराणाने किसी आदमीको भेजकर तसल्लीके साथ रावतको उदयपुर बुलवाया. जशवन्तसिंह दिलमें महाराणाकी तरफ़से खटका होनेके कारण अपने छोटे बेटे हरीसिंहको देवलियाका कुल बंदोबस्त सौंपकर आप मए बड़े बेटे महासिंह व एक हज़ार अच्छे राजपूतोंके उदयपुर आया, और चम्पाबागमें डेरा किया, जो महाराणा कर्णसिंहका बनवाया हुआ शहरसे एक मीलके फ़ासलेपर पूर्वी तरफ़ है. जशवन्तसिंहको महाराणाने यहांकी फ़र्मांबर्दारीके बर्खिलाफ़ न रहनेकी बाबत बहुतसी नसीहत की, लेकिन् उसके दिलमें महाबतखांकी हिमायत का ज़ोर भरा हुआ था, महाराणाके मन्शासे खिलाफ़ जवाब दिया. महाराणाने अपने सलाहकारोंसे पूछा, तो सबने अर्ज़ की, कि जशवन्तसिंह यहांसे चला गया, तो बिल्कुल आपकी हुकू-

मतसे अलहदा होजावेगा. तब महाराणाने अपने सलाहकारोंके कहनेपर अमल करके, अपने बड़प्पनको बट्टा लगानेवाली बात, याने जशवन्तसिंहका मारडालना इख्तियार किया.

महाराणाको मुनासिब था, कि जशवन्तसिंहको अपने यहांसे विदाकरके देवलिया पर फ़ौज भेजते, लेकिन् उन्होंने धोखेके साथ कार्रवाई की, और रामसिंह (१) राठोड़को फ़ौज देकर आधीरातके वक्त चम्पाबाग़में महारावतके घेरलेनेका हुक्म दिया; रामसिंहने वैसा ही किया. जशवन्तसिंह मए अपने कुंवर महासिंह व एक हज़ार राजपूतोंके अच्छी तरह लड़कर मारे गये, महाराणाके राजपूत भी बहुतसे काम आये. यह झगड़ा विक्रमी १६८५ [ हि० १०३८ = ई० १६२८ ] में हुआ.

इस नामुनासिब कामके करनेसे देवलिया महाराणाके हाथसे निकल गया, क्योंकि जशवन्तसिंहके छोटे बेटे हरीसिंहने, जो देवलियाकी गादीपर बैठा, अपने बाप और भाईके मारेजानेसे बिल्कुल विश्वास उठालिया, इस खौफ़से कि महाराणा फ़ौज भेजकर मुझे मरवा डालेंगे. वह अपनी गादी नशीनीका दस्तूर करके सीधा दिल्ली बादशाह शाहजहांके पास चलागया. इस वक्तसे देवलिया वालोंको उदयपुरकी हुकूमतसे अलहदा होनेका मौक़ा मिला. अगरचि इस वक्तकी अलहदगी बहुत अर्से तक न रही. लेकिन् जिस वक्त ताक़त पाई, तब ही जुदा होनेकी कोशिश करते रहे. हरीसिंहके विचारके मुवाफ़िक़ ही नतीजा पैदा हुआ, कि हरीसिंह तो अपने बाप और भाईके मारेजानेकी खबर सुनते ही दिल्लीकी तरफ़ चलागया, और राठौड़ रामसिंह फ़ौज लेकर देवलिये पहुंचा, जहां बहुतसी लूटखसोट करके उस इलाकेको बर्बाद किया. उसी संवत्में डूंगरपुरके रावल पूंजा पर, जो बादशाही मन्सबदार होकर उदयपुर की सरपरस्तीको नहीं मानता था, महाराणाने अपने प्रधान अक्षयराजको फ़ौज देकर डूंगरपुरकी तरफ़ भेजा. पेश्तर महाराणा प्रतापसिंहके वक्तमें डूंगरपुरके रावल आशकरण बादशाह अक्बर के मन्सबदार होगये थे, तबसे डूंगरपुरवाले भी उदयपुरकी फ़र्मांबर्दारीसे निकलगये थे, इस लिये यह फ़ौज भेजीगई. रावल पूंजा तो पहाड़ोंमें भागगया, और फ़ौजने डूंगरपुरको बर्बाद करके चन्दन के गोखड़ेको,

---

(१) राव मालदेवके बेटे चन्द्रसेन और चन्द्रसेनके बेटे उग्रसेन और उसके बेटे कर्मसेनका बेटा रामसिंह था, जो महाराणा जगतसिंहकी बहिनसे पैदा हुआ, और महाराणाके पास नौकरीमें रहनेलगा था; वह हिज्री १०५० [ वि० १६९७ = ई० १६४० ] में बादशाह शाहजहांके पास गया, और हज़ारी ज़ात व छःसौ सवारका मन्सब व खिल्अ़त पाकर बादशाही नौकर हुआ—यह रामसिंह रोटलाके नामसे अबतक मश्हूर है.

इसी तरह बांसवाड़ेके रावल समरसीने भी महाराणा प्रतापसिंहकी अगली पर्वरिश को भूलकर बादशाही हिमायतका सहारा लिया. महाराणा जगत्सिंहने अपने प्रधान भागचन्दको फ़ौज देकर बांसवाड़े पर भेजा, रावल समरसी वहां से भागकर पहाड़ोंमें चलागया, सो प्रधान भागचन्द छः महीने तक वहां ही ठहरा रहा. रावल समरसीने अपने शहर व मुल्ककी बर्बादी के बाद २००००० दो लाख रुपया जुर्माने के तौर नज़्र करके कुसूरकी मुआफ़ी चाही, उदयपुरसे भी उसकी तसल्ली कीगई. यह हाल किसी क़दर ग्राम वेड़वासकी बावड़ी की प्रशस्तिमें ( जो इसी प्रधान भागचन्दके बेटे फ़त्हचन्दकी बनवाई हुई है ) लिखा है — ( देखो शेष संग्रह नम्बर २ ).

महाराणा जगत्सिंहने अपनी बहिनकी शादी तो बीकानेरके महाराज कर्णसिंहके साथ की, और अपनी बेटी बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाको ब्याह दी. इन शादियोंमें लाखों रुपये इनआम व इक्राम वगैरहमें ख़र्च हुए. पहिले लिखागया है, कि बूंदीके राव शत्रुशालके बुजुर्ग उदयपुरकी ताबेदारी करते थे, जिनको बादशाह अक्बरने अपना नौकर बनाया था; शत्रुशालने इस ख़ानदानसे बेटी मिलनेका मौक़ा ग़नीमत समझकर चारणोंको बहुतसे हाथी इनआममें दिये; लिखा है, कि महलोंकी सीढ़ियोंपर चढ़ते गये और फ़ी सीढ़ी एक एक हाथी देतेगये. एक चारण संडायच हरीदासको ग़फ़्लतसे हाथी न दियागया, तब हरीदासने नाराज़ होकर मारवाड़ी ज़बानमें यह दोहा कहा—

दोहा.

जाती काया सांसवें राव कवड्डी रेस ॥
शत्रशल माया ऊधमे छाया फल जगतेस ॥ १ ॥

इसका मत्लब यह है, कि बड़े सूम ( कंजूस ) शत्रुशाल एक कौड़ी के वास्ते अपने बदनको दुब्ला करते हैं, लेकिन् इस वक्त जो दौलत उड़ाते हैं, महाराणा जगत्सिंहकी छाया पड़नेका नतीजा है.

जब चित्तौड़की मरम्मत व डूंगरपुर, बांसवाड़ा और सिरोही वगैरह पर फ़ौजकशी करनेकी शिकायतें बादशाह शाहजहांके कान तक पहुंचीं, तो महाराणा जगत्सिंहने, जो बड़े बुद्धिमान थे, अपने सलाहकारोंसे राय ली, कि अब बादशाही गुस्से को ठंढा करना चाहिये वर्ना वही ढंग फिर होजायगा, जो अक्बर व जहांगीरके वक्तमें था. झाला राज कल्याणको मए एक हाथी व चन्द तुहफ़ोंके दिल्लीकी तरफ़ रवाना किया, उसने बादशाह शाहजहांके दर्बारमें पहुंचकर महाराणाकी तरफ़से वह हाथी और तुहफ़े नज़्र किये. विक्रमी १६९० फाल्गुण कृष्ण ६

[हि० १०४३ ता० २० शअ़्बान = ई० १६३४ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने राज कल्याणको खुश होकर ख़िलअ़त और घोड़ा इनायत किया, और महाराणाके लिये उम्दा ख़िलअ़त और दो घोड़े, जिनमें से एकपर सुनहरी सामान और दूसरे पर सोनेका मुलम्मा कियाहुआ था, और एक हाथी देकर रुख़्सत किया.

जब बादशाही तक़ाज़ा ज़ियादा होनेलगा, कि एक हज़ार सवार जहांगीरी अ़हद्के मुवाफ़िक़ दक्षिणमें भेजना चाहिये, तब महाराणाने भोपतराम (१) वग़ैरह राजपूतोंको भेजदिया; वहां उन लोगोंने शाही फ़ौजमें रहकर अच्छी कारगुज़ारी दिखाई. भोपतरामने विक्रमी १६९३ भाद्रपद शुक्ल पक्ष [हि० १०४६ रबीउस्सानी = ई० १६३६ सेप्टेम्बर] को दिल्ली पहुंचकर दक्षिणकी फ़तहकी मुबारकबादी बादशाह शाहजहांको दी, और उदयपुर आया. कुछ अ़र्से बाद विक्रमी १६९४ [हि० १०४७ = ई० १६३७] में राज कल्याण झालाको कुछ चीज़ें बादशाहके वास्ते देकर महाराणाने रवाना किया, उसने वहां पहुंचकर बादशाही दर्बारमें सामान नज़्र किया. बादशाहने बहुत खुश होकर एक घोड़ा और एक हाथी राज कल्याणको और महाराणाके लिये बहुत उम्दा ख़िलअ़त और हाथी देकर रुख़्सत किया.

इसके बाद पौष कृष्ण १ [ता० १५ रजब = ता० ३ डिसेम्बर] को जब बादशाह शाहजहां अजमेरसे रवाना होनेलगा, तो महाराणा जगत्सिंह के कुंवर राजसिंहको, जो वहां गया था, जड़ाऊ ख़िलअ़त, खपुवा (२) और सोनेके सामानकी तलवार, हाथी घोड़ा तथा इनके साथवाले राजपूत राव बल्लू चहुवान और रावत मानसिंह चूंडावत वग़ैरहको ख़िलअ़त और घोड़े, और महाराणा जगत्सिंहके लिये हाथी देकर विदा किया.

विक्रमी १६९८ [हि० १०५१ = ई० १६४१] में महाराणा जगत्सिंहने अपनी माता जाम्बुवती बाईको द्वारिकानाथकी यात्राके लिये बड़ी फ़ौजके साथ भेजा; द्वारिकापुरीमें जाकर उन्होंने सोनेकी तुला वग़ैरह लाखों रुपयेका दान दिया, फिर पीछे उदयपुर आनेपर बाईजीराजको गंगास्नान करनेके लिये सोरमजीकी तरफ़ मए कुंवर राजसिंहके रवाना किया. वे शूकर क्षेत्र याने सोरमजीमें पहुंचे, तब बाईजीराज और कुंवर राजसिंहने सुवर्णकी तुला की. इसके सिवाय और भी लाखों रुपयेका धन वहां

(१) भोपतराम धरयावद वालोंका पूर्वज था.

(२) यह एक छोटी क़िस्मके हथियार का नाम है.

ख़ैरात किया. फिर पीछे बाईजीराज व महाराजकुमार उसी जर्रार फ़ौजके साथ उदयपुर आये, लेकिन् दोनों वार सफ़रमें जो बादशाही मुल्क रास्तेमें पड़ते थे इस से कहीं कहीं बेजा रोक टोकके सबब मुसल्मानोंसे छोटे छोटे बखेड़े भी होगये, जिनको शाही मुलाज़िमोंने बड़ी तूल तवील शिकायतोंके साथ लिखकर बादशाहके कान तक पहुंचाया. बादशाह दिलमें नाराज़ होकर महाराणा जगत्सिंहको फ़ौजी ताक़त दिखलानेके लिये तय्यार हुआ, कि जिससे कुल्ल राजपूतानाके राजपूत दबे रहें.

शाहजहांने ज़ाहिरा ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारतके बहानेसे विक्रमी १७०० मार्गशीर्ष कृ० ४ [ हि० १०५३ ता० १८ शअ्बान = ई० १६४३ ता० १ नोवेम्बर ] चन्द्रवारको आगरेसे रवाना होकर बाग़ नूरमन्ज़िलमें मक़ाम किया, और सय्यद ख़ानजहांको ख़िलअ्त उम्दा देकर आगरेकी हिफ़ाज़तके वास्ते छोड़ा, किश्वरख़ांके बेटे शेख़ अल्लाहदियाको, कि जो पहिले एक हज़ारी ज़ात और आठ सौ सवारका मन्सब रखता था, डेढ़ हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारका मन्सब दिया. मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [ ता० २० शअ्बान = ता० ३ नोवेम्बर ] को नूरमन्ज़िलसे बुस्तान सराय मक़ाम किया; सुबह रूपवासमें ठहरकर कितनेही अमीरोंको फ़त्हपुर की तरफ़ रुख़्सत करके आप वहां शिकार खेलने लगा, जहां सलाबतख़ांको नक़्क़ारा व निशान मिला, और दो शेर बादशाहकी बन्दूक़से शिकार हुए. मार्गशीर्ष कृष्ण १० [ ता० २४ शअ्बान = ता० ७ नोवेम्बर ] को ख़्वाजेजहांकी सरायके पास डेरा हुआ. इस मन्ज़िलमें इस्लामख़ां वग़ैरह कई सर्दार हाज़िर होगये. मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [ ता० १ रमज़ान = ता० १३ नोवेम्बर ] को चाटसूके पास राजा जयसिंहने मए अपने बेटोंके आंबेरसे आकर हाज़िरी दी, क्योंकि उनकी राजधानी यहांसे क़रीब थी; मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [ ता० ३ रमज़ान = ता० १५ नोवेम्बर ] को महाराजा जयसिंहने एक हाथी और ९ घोड़े बादशाहको नज़ किये. मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [ ता० ७ रमज़ान = ता० २० नोवेम्बर ] को जोगी तालाबपर मक़ाम हुआ, जो अजमेरके क़रीब है.

जब आगरेसे जर्रार फ़ौजके साथ बादशाहका रवाना होना अजमेरकी तरफ़ सुना, तो महाराणा जगत्सिंहने सोचा, कि चित्तौड़की मरम्मत कराना व डूंगरपुर, बांसवाड़ व सिरोहीपर फ़ौजका भेजना और तीर्थ यात्रामें हमारी फ़ौजका शाही मुलाज़िमोंके साथ कुछ कुछ बखेड़ा करना और बादशाह जहांगीरके वक़्त बड़े कुंवर को शाही दर्बारमें भेजनेका जो इक़ार हुआ था, उसमें भी हमारी गद्दी नशीनीके बाद टाला टूली रहना, नापसन्द हुआ; ज़रूर अजमेरकी ज़ियारतके बहानेसे बादशाहका इरादा मेवाड़ पर चढ़ाई करनेका होगा, क्योंकि पहिले भी बादशाह अक्बरने

शिकारके बहानेसे आगरेको छोड़कर चित्तौड़की तरफ़ कूच किया था, और जहांगीरने भी विक्रमी १६७० [ हि० १०२२ = ई० १६१३ ] में अजमेरमें रहकर मेवाड़पर फ़ौज भेजी थी. इसलिये कुंवर राजसिंहको बादशाही दर्बारमें भेजकर सफ़ाई करलेना चाहिये. इस ख़यालसे कुंवर राजसिंहको उदयपुरसे रवाना किया. वे अजमेरके नज़्दीक जोगी तालावपर शाही दर्बारमें पहुंचे, और वहां हाज़िर होकर एक हाथी नज़्र किया, बादशाहने भी इनकी हाज़िरीसे खुश होकर कुंवर राजसिंहको ख़िल्अ़त उम्दा और सरपेच, जड़ाऊ जम्धर और घोड़ा मए सोनेके सामानके दिया.

विक्रमी १७०० मार्गशीर्ष शुक्ल १० [ हिज्री १०५३ ता० ८ रमज़ान = ई० १६४३ ता० २१ नोवेम्बर ] को बादशाह मक़ाम अजमेरके तालाव आनासागरकी पालपर पहुंचे, वहां ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत करके रु० १०००० दस हज़ार वहांके ख़ादिम और मुहताजोंको देकर डेरोंमें आये, फिर अपने शिकार किये हुए रोझके गोश्तका पुलाव बड़ी देग ( १ ) में पकवाकर मुहताजोंको खिलाया. इसी मक़ामपर महाराजा जशवन्तसिंह जोधपुरवाला भी हाज़िर हुआ, और आंबेरके महाराजा जयसिंहने पांच हज़ार सवार राजपूतों समेत हाज़िरी दी. पौष कृष्ण १ [ ता० १५ रमज़ान = ता० २७ नोवेम्बर ] को बादशाहने आगरेकी तरफ़ कूच किया, और महाराजा जशवन्तसिंह व महाराजा जयसिंहको ख़िल्अ़त देकर अपने अपने वतन जानेकी रुख़्सत दी, और महाराजा जयसिंहके कुंवर रामसिंह और कीर्तिसिंहको घोड़ा और सिरोपाव देकर उनके बापके साथ विदा किया. पौष कृष्ण २ [ ता० १६ रमज़ान = ता० २८ नोवेम्बर ] में कुंवर राजसिंहको ख़िल्अ़त उम्दा, तलवार, ढाल व सामान सुनहरी मीनाकार समेत घोड़ा व हाथी तथा कुछ ज़ेवर जो राजपूत राजा पहनते थे, और अव्वल दरजेके दो सर्दारोंको ख़िल्अ़त और घोड़े और आठ सर्दारोंको ख़िल्अ़त दिये, और महाराणा जगत्सिंहके वास्ते मोतियोंकी माला और तलवार, ढाल सुनहरी मीनाकारीकी व दो घोड़े, एक अरबी और एक इराक़ी मए सोने के सामानके देकर रुख़्सत किया. पौष कृष्ण ४ [ ता० १८ रमज़ान = ता० ३० नोवेम्बर ] के दिन सादुल्लाखांको ख़िल्अ़त और डेढ़ हज़ारी ज़ात और तीन सौ सवारसे दो हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका मन्सब देकर ख़िदमत मीरसामानीपर मुक़र्रर किया. पौष कृष्ण १० [ ता० २४

( १ ) इस देगमें १४५ मन बादशाही तोलके चावल, गोश्त, घी, मसाला वग़ैरह एकबार पकता है, इसे बादशाह जहांगीरने हिज्री १०२३ [ वि० १६७१ = ई० १६१४ ] में बनवाकर भेट किया था.

रमज़ान = ता० ६ डिसेम्बर] को मालपुरेमें मक़ाम हुआ, जो राजा विट्ठलदास गौड़की जागीरमें था; राजा विट्ठलदासने एक हाथी और एक हथनी बादशाह को नज़्र की; जिसमेंसे हथनी रक्खी गई. रामपुरकी तरफ़ होतेहुए पौष शुक्ल १ [ता० आख़िर रमज़ान = ता० १२ डिसेम्बर] को बाड़ी पहुंचे, वहां राजा कृष्णसिह भदौरियेके मरनेकी ख़बर पहुंची. कृष्णसिंहके औलाद न होनेके सबब उसके भतीजे बदनसिंहको गोद रखकर राजाका ख़िताब व ख़िलअ़त और मन्सब इनायत किया, और अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंगकी जागीर ज़ब्त होकर जो रु० १००००० एक लाख सालियाना नक़्द मुक़र्रर होगये थे, बादशाहने फिर मिहर्बान होकर छः हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवारका मन्सब दिया. इसके बाद माघ कृष्ण १ [ता० १५ शव्वाल = ता० २७ डिसेम्बर] को बादशाह आगरे दाख़िल होगये. कुंवर राजसिंह भी बादशाहसे रुख़्सत होकर उदयपुर आये.

जब राव अमरसिंह राठौड़ नागौर वाला आगरेमें सलाबतख़ांको मारकर शाही दर्बारमें अर्जुन गौड़के हाथसे मारागया और यह बात मश्हूर हुई, उस वक़्त राठौड़ बल्लू चांपावत व राठौड़ भावसिंह कूंपावत, जो बादशाही नौकर थे, अमरसिंहके मकानके पास रहते थे. अर्जुन गौड़का मकान भी अमरसिंह के मकानके पासही था. अमरसिंहके आदमियोंमेंसे जिनका जी नहीं ठहरा वे तो उसी वक़्त भागकर नागौरकी तरफ़ चलेगये, और कितने ही राजपूतोंने अर्जुन गौड़को मारकर अपने मालिकका बदला लेना चाहा, बल्लू व भावसिंह भी इनके शरीक होगये; जिस वक़्त बल्लू राठौड़ मरनेके लिये तय्यार हुआ उसी वक़्त महाराणा जगत्-सिंहका भेजाहुआ नीला घोड़ा उसके पास पहुंचा.

यह इस तरह हुआ, कि राठौड़ बल्लू चांपावत जोधपुरके महाराज सूरसिंहके पास रहता था, इसका मिज़ाज बहुत तेज़ था, सो कुछ तक्रार होनेके सबब उदयपुर में महाराणा अमरसिंहके पास आरहा, फिर कुछ अर्से बाद महाराणा कर्णसिंहके वक़्त कुंवर अमरसिंह राठौड़ने इसको बुलालिया अमरसिंह बादशाही मन्सब-दार होगया, तब इन दोनों राजपूतोंको भी शाही ख़िदमतमें हाज़िर किया, और बादशाही मुलाज़िम बनवाया. कुछ अर्सेके बाद उदयपुरमें महाराणा जगत्सिंह के पास एक काठियावाड़ी चारण तीन घोड़े लाया और हर एक की क़ीमत दस हज़ार रुपये बयान की. रुपये ज़ियादा होनेके बाइस एतराज़ हुआ, तब उस सौदागरने घोड़ोंका सख़्त इम्तिहान करनेको कहा, उसी तरह एक घोड़ेका इम्तिहान किया गया, उस घोड़ेके दोनों बग़लमें पूरे पूरे पेशक़ब्ज़ मारकर जितनी दूरका वादा

कियागया था, वहांतक घोड़ेने बराबर धावा किया, और फिर घोड़ा मरगया. सौदागरको तीस हज़ार रुपये तीनों घोड़ोंके दियेगये, एक इम्तिहानमें मरा, दो बाक़ी रहे; महाराणाने फ़र्माया, कि एक घोड़ेपर हम चढ़ेंगे, और दूसरा बल्लू चांपावतके लायक़ है; उस दूसरे नीले घोड़ेको मए सामानके आगरेकी तरफ़ रवाना किया, वह घोड़ा उसी वक्त पहुंचा कि जब बल्लू मरनेको तय्यार होरहा था. घोड़ेपर सवार होकर महाराणा जगत्सिंहसे अर्ज़ करवाई, कि मुझको ऐसे वक्तमें घोड़ा इनायत करके पूरा राजपूत बनाया, जिसका शुक्रिया अदा नहीं कर सक्ता, मैं तो माराजाऊंगा और इसका बदला ईश्वर आपको देगा. यह कहकर बल्लू चांपावत मारागया, जिसका हाल मौक़ेपर लिखा जायगा.

जबसे महाराणा जगत्सिंहने मेवाड़का राज्य पाया, तबसे वह मज़्हबी अक़ीदोंको तरक़्क़ी देते रहे, विक्रमी १७०४ [ हि० १०५७ = ई० १६४७ ] में ऊँकारनाथकी यात्रा करनेके लिये उदयपुरसे कूच किया, पहिला मक़ाम उदयसागरकी पालपर हुआ; पालके नीचे नालेपर अपने बनवाये हुए महलोंमें, जो शिकस्ता अभी तक मौजूद हैं, रात रहे, वहांसे मन्ज़िल बमन्ज़िल बड़े लश्करके साथ उज्जैन पहुंचे, जहां मालवेका सूबेदार रहता था. सूबेदारसे कुछ बिगाड़ होगया, लेकिन् फ़ौजकी ज़ियादतीके सबब वह दब गया, वहांकी तीर्थ यात्रा और क्षिप्रा ( छपरा ) नदी का स्नान करके मान्धातापुरी ( ऊँकारनाथ ) में पहुंचे, और नर्मदा स्नान करनेके बाद विक्रमी १७०५ आषाढ़ कृष्ण ३० [ हि० १०५८ ता० २९ जमादियुल्-अव्वल् = ई० १६४८ ता० २२ जून ] को सुवर्णका तुला दान (१) किया-- ( शेषसंग्रह प्रशस्ति नम्बर ३ ), और पीछे उदयपुर पधारे. मालवेके सूबेदारने महाराणाकी बड़ी लम्बी चौड़ी शिकायत शाही दर्बारमें लिख भेजी, जिससे बादशाह दिलसे नाराज़ हुआ, परन्तु शाहजहां अपने पिताके ज़मानेमें उदयपुरकी सुलह अपनी मारिफ़त होना व शाहज़ादगीमें अपनी पनाहकी जगह जानकर दरगुज़र करता था.

फिर इन महाराणाने राजधानी उदयपुरमें जगन्नाथरायजीका मन्दिर बनवाकर विक्रमी १७०९ द्वितीय वैशाख शुक्ल १५ गुरु वार [ हि० १०६२ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १६५२ ता० २४ मई ] को प्रतिष्ठा की-( शेषसंग्रह, नम्बर ४ ), जिसमें कृष्ण भट्टको बहुत दान दिया, मुकुन्द व भूधर गजधरको बहुत इनआम दिया. इस मन्दिरके

---

(१) इस तुला दानका तोरण कृति श्वेत पाषाणका ऊँकारनाथके द्वारपर है, और काले पत्थरकी प्रशस्ति मन्दिरकी दक्षिणी दीवारमें अभीतक मौजूद हैं.

पास उत्तर दिशा एक दूसरा मन्दिर इन महाराणाकी धायने इसी ज़मानेमें बनवाया- (शेषसंग्रह, प्रशस्ति नम्बर ५). इन महाराणाने इसी वर्षके अख़ीरमें तीर्थ यात्रा करनेका इरादा किया था, लेकिन् ईश्वरेच्छासे वह न होसका, उनकी उम्रका भी अन्त आचुका था; आख़िरकार विक्रमी १७०९ कार्तिक कृष्ण ४ [ हि० १०६२ ता० १८ ज़ीक़ाद = ई० १६५२ ता० २५ ऑक्टोबर.] को इस संसारसे परलोक निवासी हुए.

इन महाराणाके देहान्तसे हिन्दुस्तानके अक्सर लोगोंको बड़ा ही रन्ज हुआ: इनकी प्रकृति मिलनसार रहमदिल् थी, कभी कभी लोगोंके कहनेसे बेरहमी भी करते थे, परन्तु बहुत कम; यह बुलन्द हिम्मत थे, इनकी बख़्शिश मश्हूर है, कि अपनी गद्दीनशीनीके दिनसे देहान्त तक हर साल सुवर्णका तुलादान करते थे, तुलादानके चिन्ह सफ़ेद पत्थरके तोरण, ॐकारनाथ व श्री एकलिंगजीकी पुरी व उदयपुरमें बड़ीपोलके भीतर पूर्वी दीवारपर खड़े हैं. यह अपने मज़्हबके बड़े पाबन्द थे, ब्राह्मण और चारणोंको इन्होंने जो दान दिया उसकी संख्याका एक दोहा मश्हूर है--

दोहा.

सिन्धुर दीधा सातसै हैवर छपन हज़ार ॥
एकावन सासण दिया जगपत जगदातार ॥ १ ॥

इसी तरह एक श्लोक भी लिखा है-

लक्षं हयान् सप्त शतं गजानां ग्रामान् शतं षोडश दान युक्त ॥
योदत्तवानर्थि जनाय भूपतिः कस्तंनृपं स्तोतु मिह प्रसज्येत् ॥ १ ॥

ऊपरके दोहे और श्लोकमें इख़्तिलाफ़ है, इसका यह सबब मालूम होता है, कि दोहेमें जो दिये हुए हाथी, घोड़े, ग्राम हैं, वह तादाद चारणोंको मिलनेकी है, और श्लोकमें ब्राह्मण चारण वग़ैरह कुल्लको मिलनेकी तादाद होगी. दोहेकी तादाद- हाथी ७००, घोड़े ५६०००, ग्राम ५१. श्लोककी तादाद- हाथी ७००, घोड़े १०००००, और ग्राम १००. उनके प्रजापालन व नौकरोंकी पर्वरिशका बयान अबतक मेवाड़के छोटे बड़े लोगोंकी ज़बानपर जारी है. एक दोहा मारवाड़ी भाषामें आम लोगोंकी ज़बानी मश्हूर है-

दोहा.

साईं करे परेवड़ा जगपतरे दरबार ॥
पीछोले पाणी पियां कण चुग्गां कोठार ॥ १ ॥

मतलब इसका यह है, कि ईश्वर हमको जानवर भी बनावे, तो जगत्सिंहके दर्बारका कबूतर करे, ताकि पीछोले तालाबमें पानी पियें और कोठारके दाने चुगें. इन महाराणाका दर्मियानीक़द, मज्बूत बदन, बड़ी आंख, चौड़ी पेशानी, हंस मुख चिहरा, और सियाही माइल गेहुवां रंग था; इन्होंने चित्तौड़गढ़की मरम्मत करवाई, माला बुर्ज, पाडल पोल, लक्ष्मण पोलका शुरू तो महाराणा कर्णसिंहने किया था, लेकिन् इन्होंने तमाम तय्यार कराया; जगमन्दिरोंमें बड़ा गुम्बज़ महाराणा कर्णसिंहने तय्यार करवादिया था, लेकिन् इन्होंने ज़नाना महल व बाग़ीचा वगैरह बनवाकर उन महलोंका जगमन्दिर नाम रक्खा, और अपने संग्रहीता स्त्री अर्थात् ख़वासके बेटे मोहनदासके नामसे छोटासा मोहनमन्दिर महल पीछोलेमें बनवाया, जो शहरके पास पश्चिम तरफ़को है, इन्होंने उदयसागर तालाबकी पालके नीचे पूर्वी तरफ़ नालेपर महल बनवाया. इन महाराणाके पुत्र २, बड़े राजसिंह और छोटे अरिसिंह थे. महाराणाका जन्म विक्रमी १६६४ भाद्रपद शुक्ल ३ [ हि० १०१६ ता० १ जमादियुल्अव्वल् = ई० १६०७ ता० २५ ऑगस्ट ] को हुआ था.

---

अबुल् मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद ख़ुर्रम, साहिब क़िराने सानी,

शाहजहां बादशाह.

इस बादशाहका जन्म हिज्री १००० ता० आख़िर रबीउल्अव्वल् [ वि० १६४८ माघ शुक्ल १ = ई० १५९२ ता० १७ जेन्यूअरी ] को हुआ. जब बादशाह जहांगीरका देहान्त हुआ, उस समय एक साथ तहलका मचगया, परन्तु आसिफ़ख़ां बड़ा होश्यार आदमी था, जिसने शाहज़ादे ख़ुस्रोके बेटे बुलाक़ीको क़ैदसे निकालकर नामके वास्ते तख़्तपर बिठाया, और अपने दामाद शाहजहांके पास बनारसी नामी क़ासिदको अपने नामकी अंगूठी देकर दक्षिणकी तरफ़ रवाना किया.

नूरजहां बेगम अपने दामाद शहरयारको तख़्त नशीन करना चाहती थी, उसने आसिफ़ख़ांको बुलाया. लेकिन् वह न गया; सब लोग जहांगीरकी लाश लेकर नूरजहां सहित लाहौर पहुंचे. वहां नूरजहांके बाग़में उसको दफ़्न किया. सब अमीर आसिफ़ख़ांकी दिली ख़्वाहिशको जानते थे, कि वह अपने दामाद शाहजहांको

तख़्तनशीन करेगा, इसलिये उससे मिलावट करने लगे. ये लोग तो फ़ौज सहित नदीके पार थे, शाहज़ादे शहरयारने लाहौरमें ख़ज़ाने व शाही कार्ख़ानोंपर क़ब्ज़ा किया और बहुतसे इनआम इक्राम व मन्सब देनेलगा, एक फ़ौज एकट्ठी करके आसिफ़ख़ां वगैरहकी फ़ौजसे सामना किया. नूरजहां बेगम आसिफ़ख़ांकी हिरासतमें नज़रबन्द थी, लड़ाईमें शहरयार हारकर भागा, और क़िले लाहौरमें जा घुसा. आख़िरकार वह गिरिफ़्तार होकर बुलाक़ीके सामने लाया गया, फिर अल्लाहवर्दी-ख़ांकी सुपुर्दगीमें क़ैद हुआ और उसकी आंखोंमें सलाई फेरदीगई; शाहज़ादे दानयालके दो बेटे तहमूर्स और हौशंग भी, जो शहरयारके सिपहसालार बने थे, गिरिफ़्तार होकर क़ैद कियेगये.

बनारसी क़ासिद आसिफ़ख़ांकी मुहर लेकर २० दिनमें निज़ामुल्मुल्ककी हद्द मुल्क दक्षिणके ख़ैबर मक़ामपर शाहज़ादेके लश्करमें पहुंचा. पहिले महाबतख़ां से सब हाल कहा, जो उसको शाहजहांके पास लेगया, और आसिफ़ख़ांकी अंगूठी नज़्र करके उसकी ख़ैरख़्वाहीका हाल बयान किया. शाहजहांने उसी समय एक फ़र्मान आसिफ़ख़ांके नाम लिखकर अमानुल्लाह व बायज़ीदख़ांके हाथ अपनी रवानगीके बारेमें भेजा, और दूसरा फ़र्मान दक्षिणके सूबेदार ख़ानेजहांके पास जांनिसारख़ांके हाथ पहुंचाया, लेकिन् ख़ानेजहांने शाहजहांके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई की. निज़ामुल्मुल्कसे मिलकर कुछ मुल्क तो उसके सुपुर्द किया, और आप मए राजा गजसिंह जोधपुरवाले व राजा जयसिंह आंबेरवाले वगैरह शाही सर्दारोंके मांडूमें पहुंचकर दक्षिण व मालवेमें क़ब्ज़ा करलिया, क्योंकि वह जहांगीरका बड़ा एतिबारी सर्दार और शाहजहांका दुश्मन था.

शाहजहांने हिज्री १०३७ ता० २३ रबीउल्अव्वल् [ वि० १६८४ मार्गशीर्ष कृष्ण ९ = ई० १६२७ ता० ४ डिसेम्बर ] को कूच किया. नाहरख़ां उर्फ़ शेरख़ांकी अर्ज़ी अहमदाबादसे पहुंची, कि बन्दह तो आपका नौकर है, परन्तु सैफ़ख़ां का दिल बिल्कुल फिराहुआ है. इस अर्ज़ीके जवाबमें शेरख़ांको अहमदाबादका सूबेदार मुक़र्रर करके सैफ़ख़ांको गिरिफ़्तार करलानेका हुक्म दिया, लेकिन् बादशाहकी बेगम मुम्ताज़महलकी बहिन (आसिफ़ख़ांकी दूसरी बेटी) का विवाह सैफ़ख़ां के साथ हुआ था, इस ख़यालसे ख़िदमतपरस्तख़ांको भेजदिया, कि सैफ़ख़ांको नज़रबन्द हमारेपास लेआवे, और उसे किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो. शाहजहां, नर्मदा पार होकर सिनौरमें पहुंचा, वहीं सालगिरहका जश्न किया, और ख़िदमतपरस्तख़ां सैफ़ख़ांको लेकर हाज़िर हुआ. शाहजहांने मुम्ताज़महलकी सुफ़ारिशसे उसे छोड़दिया. फिर वहांसे अहमदाबादमें पहुंचकर कांकरिया

तालाबपर ठहरा और शेरख़ांको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर गुजरात का सूबेदार बनाया; मिर्ज़ा ईसातरख़ांको चार हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब और पटनेकी सूबेदारी मिली. सात दिन तक यहीं ठहरे, और उसी जगहसे एक ख़ास दस्तख़ती फ़र्मान आसिफ़ख़ांके नाम ख़िदमतपरस्तख़ांके हाथ लिखकर लाहौर भेजा, कि इस वक्त बहुत सख़्त गर्मी पड़रही है, अगर दावरबख़्श व गुर्शास्प ख़ुस्रोके बेटे और शाहज़ादा शहरयार व शाहज़ादे दानयालके बेटे तहमूर्स व होशंग, पांचोंको मारडालाजावे, तो सब झगड़ा दूरहोकर बे फ़िक्री हो.

हिज्री १०३७ ता० २२ जमादियुल्अव्वल् [ वि० १६८४ माघ कृष्ण ८ = ई० १६२८ ता० ३० जैन्यूअरी ] को "अबुल्मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब क़िराने सानी शाहजहां बादशाह ग़ाज़ी" के नामसे लाहौरमें ख़ुत्बा पढ़ागया. उसी वक्त दावरबख़्श क़ैद हुआ, और उसी महीनेकी २५ तारीख़ [ वि० माघ कृष्ण ११ = ता० २ फ़ेब्रुअरी ] को रज़ाबहादुरके हाथसे पांचों शाहज़ादे लाहौरमें मारेगये ( १ ). शाहजहां अहमदाबादसे कूच करके गोगूंदे आया, वहां महाराणा कर्णसिंहने मुलाक़ात ( २ ) की. दस्तूरके अनुसार नज़्र व बख़्शिश हुई; महाराणाने अपने छोटे भाई अर्जुनसिंहको फ़ौज सहित शाहजहांके साथ करदिया. उस ( शाहजहां ) ने अपने लश्करकी हरावलमें अर्जुनको मुक़र्रर किया. फिर मांडल के तालाबपर ३६ वर्षकी उम्र पूरी होकर सैंतीसवां साल शुरू होने के सबब शाहजहांकी सालगिरहका जश्न ( उत्सव ) सूर्यके हिसाबसे हुआ.

ता० १७ जमादियुल् अव्वल् [ माघकृष्ण ३ = ता० २५ जैन्यूअरी ] को अजमेरमें पहुंचकर ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत की, और एक मस्जिद संग मरमरकी वहां बनवाई, जो अबतक मौजूद है. ता० २६ जमादियुल्अव्वल् [ माघ कृष्ण १२ = ता० ३ फ़ेब्रुअरी ] गुरुवार को रात्रिके वक्त आगरे पहुंचकर नूरजहांके बाग़में ठहरा, और ता० ८ जमादियुस्सानी [ फाल्गुन् कृष्ण १४ = ता० ७ मार्च ] को तख़्तपर बैठकर अपना ख़िताब "अबुल् मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब क़िराने सानी शाहजहां बादशाह

---

( १ ) मारवाड़की ख्यातमें लिखा है, कि इस वक्त शाहजहांके हुक्मसे आसिफ़ख़ांने शाही ख़ान्दानके १८ शाहज़ादोंकी जान ली, एक दोहा भी इस बाबत मारवाड़ी भाषामें मश्हूर है—

दोहा.

सबल सगाई नागिणे । ना सबलांनूं सीर ॥ खुर्रम अठारा मारिया । कीका, काका, बीर ॥ १ ॥

( २ ) यह मिलना शाहज़ादगीके तौरपर ही हुआ था.

गाज़ी" खुतबों व फ़र्मानोंमें जारी किया, इसी जुलूसमें राजा भीमसिंह अमरसिंहोतके बेटे रायसिंहको दो हज़ारी ज़ात और एक हज़ार सवारका मन्सब दिया. उस वक्त रायसिंह बहुत बालक था, लेकिन् भीमसिंहकी बहादुरी व उम्दा ख़िद्मतोंपर ख़याल रक्खा, और टोडेका परगना जो भीमसिंहको जहांगीरसे मिला था, (और अब जयपुरके राज्यमें है) रायसिंहको कितने ही नये परगनों समेत इनायत किया.

इस बादशाहने सिज्देका रिवाज, जो अक्बरके अह्दसे जारी था, बदलकर ख़ाली ज़मीनसे हाथ लगाकर सलाम करनेका तरीक़ा बांधा, और आलिम व सय्यद लोगोंके लिये सलामके एवज़ ख़ाली हाथ उठाकर दुआ पढ़देना क़रार पाया. आसिफ़ख़ांको आठ हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, और महाबतख़ांको ख़ान्ख़ानांका ख़िताब, सिपहसालारीका उह्दा व सात हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, इसके सिवाय और भी कई आदमियोंको मन्सब दियेगये, जिनकी फ़िहरिस्त आख़िरमें लिखी जायगी.

इसी सन्की ता० १ रजब [ फाल्गुन् शुक्ल ३ = ता० १० मार्च ] को दाराशिकोह लाहोरमें हाज़िर हुआ, और इरादतख़ांको विज़ारतका उहदा मिला. ता० १८ रजब [ चैत्र कृष्ण ४ = ता० २७ मार्च ] को क़ासिमख़ां व राजा जयसिंहको महाबनका फ़साद मिटानेके लिये भेजा. फिर ता० २३ शअ्बान [ वि० १६८५ वैशाख कृष्ण ९ = ता० २९ एप्रिल ] को सात वर्षकी उम्रमें सुरय्याबानू का देहान्त हुआ, जो इस बादशाहकी बेटी थी. इसके बाद ता० ४ रमज़ान [ वैशाख शुक्ल ११ = ता० ८ मई ] को शाहज़ादा दौलतअफ्ज़ा पैदा हुआ, और क़ासिमख़ां व राजा जयसिंह महाबनका बन्दोबस्त करके लौटआये. बल्ख़ व बदख़्शांके बादशाह नज़मुहम्मदने काबुलपर चढ़ाई की, लेकिन् वह शिकस्त खाकर पीछा चलागया. महाबतख़ां ख़ान्ख़ानांको काबुलका बन्दोबस्त करनेके लिये भेजा, जिसके साथ नीचे लिखे हुए सर्दार थे-

राव रत्न सरबलन्दराय हाड़ा, राजा रायसिंह कछवाहा, सर्दारख़ां, बीकानेरका राव सूर व मोतमद्ख़ां वगैरह. इनके वहां पहुंचनेपर तुर्क लोग काबुलसे भागगये.

हिज्री ता० १५ ज़िल्हिज [ वि० भाद्रपद कृष्ण १ = ई० ता० १७ ऑगस्ट ] को क़ासिमख़ांको बंगालेकी सूबेदारी मिली, और महाबतख़ांके बेटे ख़ानेजहांको दाक्षिण, बरार और ख़ान्देशकी सूबेदारी दीगई. बीजापुर और गोलकुंडेके बादशाहोंने कुछ तुहफ़े और अर्ज़ियां बादशाहके पास भेजीं.

हिजी १०३८ [ वि० १६८५ = ई० १६२९ ] में महाबतखां काबुलसे लौट आया, और तूरानके बादशाह इमामकुलीखांके पास शाहजहांने एल्ची भेजा; अब्दुल्लाखांने जुझारसिंह बुंदेलेके कई क़िले लेलिये, आख़िरमें महाबतखांकी मारिफ़त सुलह होगई. इसके बाद बालाघाटका इलाक़ा, जो ख़ानेजहां लोदी पहिले सूबेदारने कई किरोड़ रुपये लेकर दक्षिणियोंको देदिया था, बादशाह शाहजहांकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ निज़ामुल्मुल्कने वापस दे दिया. इसी सालकी ता० ८ रमज़ान [ वि० १६८६ वैशाख शुक्ल ६ = ई० १६२९ ता० २९ एप्रिल ] को शाहज़ादा दौलतअफ़्ज़ा मरगया, और ईरानके शाह अब्बासने बहरी बेगको एल्ची बनाकर शाहजहांके पास भेजा. ख़ानेजहां लोदी बादशाहसे बाग़ी होकर भागा, जिसके पीछे नीचे लिखे हुए सर्दारोंको भेजा-

ख्वाजह अबुल्हसन, ख़ानेज़मां, सय्यद मुज़फ़्फ़रखां, राजा जयसिंह कछवाहा, नसीरीखां, फ़िदाईखां, बीकानेरका राव सूर, राजा बिट्ठलदास गौड़, राजा भारथ बुंदेला, सर्दारखां, मोतमदखां, ख़िदमतपरस्तखां, माधवसिंह हाड़ा, राय हरचन्द परिहार वग़ैरह. इनमेंसे मुज़फ़्फ़रखां और राजा बिट्ठलदास धौलपुरके पास जल्द जापहुंचे, सामना होनेपर ख़ानेजहां भाग गया, दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये, फिर ख़ानेजहां भागकर निज़ामुल् मुल्कके पास चलागया.

हिजी १०३९ ता० ८ जमादियुल्अव्वल् [ वि० १६८६ पौष शुक्ल ६ = ई० १६२९ ता० २१ डिसेम्बर ] को बादशाह शाहजहां दक्षिणकी तरफ़ रवाना हुआ. ता० २० रजब [ चैत्र कृष्ण ६ = ई० १६३० ता० ५ मार्च ] को फ़ौजके तीन हिस्से किये. एक इरादतखांके साथ, जिसमें जुझारसिंह बुंदेला, रिज़्वांखां मश्हदी, इक्रामखां फ़तहपुरी, नूरुद्दीन कुली, राव दूदा चन्द्रावत रामपुरेका, राजा भगवानदास कछवाहेका पोता और माधवसिंहका बेटा शत्रुशाल कछवाहा, कर्मसी राठौड़, अहमदखां नियाज़ी, राजा द्वारिकादास कछवाहा, बलभद्र शैख़ावत, मीरअब्दुल्ला, मुग़लखां, श्यामसिंह सीसोदिया जगमालोत, राजा गिर्धर, मुल्तफ़ितखां, इहतिमामखां, राव मनोहरका पोता मुलूकचन्द, रामचन्द्र हाड़ा, जगन्नाथ राठौड़, मुकुन्ददास जादव, उदयसिंह राठौड़, याक़ूतखां हबशी, मालू घोसलाके भाई खेलू और मन्ना, पर्सू भूंसला वग़ैरह, कुल् बीस हज़ार सवार मुक़र्रर हुए.

दूसरी फ़ौजका अफ़्सर राजा गजसिंह था, जिसके साथ नुस्रतखां, बहादुरखां रुहेला, राजा बिट्ठलदास गौड़, अनीराय बड़गूजर, राजा मनरूप कछवाहा, जांनिसारखां, रावल पूंजा डूंगरपुर वाला, शरीफ़खां, भीम राठौड़, राजा वीरनरायण बड़गूजर, ख़ानेजहां काकड़, ख़न्जरखां, उस्मान् रुहेला,

हबीब सूर, मीर फ़ैज़ुल्ला, गोकुलदास सीसोदिया, नूरमुहम्मद अरब, करीम दादबेग क़ाक़्शाल, नरहरदास झाला, राव हरिचन्द परिहार और ऊदाराम वग़ैरह, कुल्ल पन्द्रह हज़ार सवार कियेगये.

तीसरी फ़ौजमें शायस्ताख़ांके मातहत, सिपहदारख़ां, राजा जयसिंह कछवाहा, फ़िदाईख़ां, बीकानेरका राव सूर, पहाड़सिंह बुंदेला, अल्लाह वर्दीख़ां, माधवसिंह हाड़ा, राजा रोज़अफ़्ज़ूं, मरहमतख़ां, चन्द्रमन बुंदेला, राजा कृष्णसिंह भदौरिया, भगवानदास बुंदेला, इमाम कुली, रावत् राव, आतिशख़ां हबशी, आसिफ़्ख़ांकी जागीरके तीन हज़ार सवार, महाराणा जगत्सिंहके काका अर्जुनसिंहके साथवाले पांच सौ सवार, और दूसरे मन्सबदार वग़ैरह, सब पन्द्रह हज़ार सवार थे; कुल्ल फ़ौजकी तादाद ५०००० थी.

ता० २६ रजब [ चैत्रकृष्ण १२ = ता० ११ मार्च ] को बादशाह बुर्हानपुर पहुंचे, और फ़ौजोंको आगे बढ़ाया. हिज्री ज़ीक़ाद [ वि० १६८७ प्रथम आषाढ़ = ई० जून ] में ख़ांनेजहां और उसके मददगार दक्षिणियोंसे मुक़ाबला करके शाहजहां के नीचे लिखे हुए सर्दार मारे गये-

इमाम कुली, रहमानुल्ला, शत्रुशाल कछवाहा अपने दो बेटों भीमसिंह व अनन्दसिंह सहित, राव चन्द्रसेन राठौड़का पोता कर्मसी, बलभद्र शैख़ावत, जयमल्ल मेड़तियेका पोता और केशवदासका बेटा राजा गिरधर राठौड़ वग़ैरा कई दूसरे लोग बहादुरीसे लड़कर मारे गये. राजा द्वारिकादास शैख़ावत ज़ख़्मी होकर गिरगया, और मुल्तफ़तख़ां व राव दूदा चन्द्रावतने भागकर जान बचाई.

हिज्री १०४० रबीउस्सानी [ वि० १६८७ कार्तिक = ई० १६३० नोवेम्बर ] को आज़मख़ांकी मातहतीमें ख़ांनेजहां लोदी पर राजा जयसिंह व अर्जुनसिंह महाराणा अमरसिंहके बेटे वग़ैरहने हम्ला किया, जिससे दक्षिणी भाग गये, और परगना जामखेड़ा फ़ौजने अपने क़ब्ज़ेमें करलिया. इसी सन्के जमादियुस्सानी [ वि० पौष = ई० १६३१ जैन्यूअरी ] को दर्याख़ां दक्षिणी मारागया, और क़िला धारोड़ शाहजहांकी फ़ौजने दक्षिणियोंसे छीन लिया.

हिज्री ता० २८ जमादियुस्सानी [ वि० माघ कृष्ण १४ = ई० ता० १ फ़ेब्रुअरी ] को ख़ानेजहां बाग़ीपर सख़्त हम्ला हुआ, और उसके बेटे व साथी मारेगये. ख़ाने-जहां भागकर कालिन्जरके इलाक़ेमें सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ां और माधवसिंहसे मुक़ाबला करके मारागया, और १०० आदमी व उसके बेटे क़त्ल हुए; बादशाही तरफ़के २८ आदमी मारेगये, और कुछ ज़ख़्मी हुए. इसी साल दक्षिण व गुजरात वग़ैरहमें बारिशकी कमीसे बड़ा भारी अकाल पड़ा; राजा विठ्ठलदास गौड़को उसकी कारगुज़ारीके एवज़ रणथम्भोरका क़िला दियागया.

इसी सालकी तारीख़ १७ ज़िल्क़ाद [ वि० १६८८ आषाढ़ कृष्ण ३ = ई० ता० १७ जून ] को बादशाहकी बेगम मुम्ताज़महल मरगई, जिससे शाहजहां को बड़ा रन्ज हुआ.

हिज्री १०४१ ता० ५ रबीउल्अव्वल् [ वि० १६८८ आश्विन शुक्ल ३ = ई० १६३१ ता० २९ सेप्टेम्बर ] को बीकानेरके राव सूरसिंहका देहान्त हुआ, उस के बेटे कर्णसिंहको दो हज़ारी ज़ात व डेढ़ हज़ार सवारका मन्सव और रावका ख़िताब देकर बीकानेरकी जागीर बहाल रक्खी; दूसरे बेटे शत्रुशालको पांच सौ ज़ात व दो सौ सवारका मन्सब मिला. इसी वर्षके जमादियुल्अव्वल् [ वि० मार्ग-शीर्ष = ई० नोवेम्बर ] में बूंदीका राव रत्नसिंह हाड़ा मरगया, तब शाह-जहां बादशाहने उसके पोते राव शत्रुशालको तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवार का मन्सब और रावका ख़िताब देकर बूंदी व कटखड़ वग़ैरह परगने जागीर में बहाल रक्खे. राव रत्नसिंहके दूसरे बेटे माधवसिंह (१) को ढाई हज़ारी ज़ात व डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब देकर परगना कोटा व फलायता जागीरमें इनायत किया, जिससे आगेको अलहदा रियासत क़ायम होगई. इन्हीं दिनोंमें बादशाहने फ़तहख़ां हबशीको मिलाकर अहमदनगरके निज़ामको दौलताबादमें मरवा-डाला, और उसके दस वर्षके बेटे हुसैनको निज़ाम बनादिया.

आसिफ़ख़ां को गजराज समेत बीजापुरकी तरफ़ भेजा, लेकिन् शोलापुरके पाससे ये पीछे लौट आये. जशवन्तसिंह (२) राठौड़के बेटे कृष्णसिंहने नूरुद्दीन कुलीको मारडाला, जो कि दर्बारसे अपने घरको जाता था, क्योंकि पहिले नूरुद्दीन के आदमियोंने जशवन्तसिंहको मारडाला था. इसकेबाद राजा भीमसिंह के बेटे राजा रायसिंहको एक हज़ारकी तरक़्क़ी से तीन हज़ारी ज़ात व बारह सौ सवार का मन्सब मिला. बादशाह शाहजहां नीचे लिखीहुई ज़ुरूरतोंसे ता० २४ रमज़ान [ वि० १६८९ वैशाख कृष्ण १० = ई० १६३२ ता० १६ एप्रिल ] को आगरे वापस चला- अव्वल् ख़ानेजहां लोदी, जो बाग़ी होगया था, अपने रिश्तेदारों सहित मारागया; निज़ामुल्मुल्क उसका मददगार बन्नेसे तबाह हुआ. बीजापुरका मुल्क, जो पहिले वक़्तमें ख़राबीसे बचरहा था, इस बार उजाड़ दियागया. बादशाहकी बहुत पसन्दीदा बेगम मुम्ताज़महल मरगई. सफ़रमें दक्षिणकी सूबेदारी आज़मख़ांसे उतारकर महाबतख़ांको दीगई, और दूसरी फ़ौजें

(१) इसकी औलादके लोग अबतक कोटेमें राज करते हैं, और ये माधाणी हाड़ा कहलाते हैं.
(२) यह जशवन्तसिंह जोधपुरका राजा नहीं है, कोई दूसरा राठौड़ सर्दार मालूम होताहै.

दक्षिणसे लौटालीगई. हिज्री ता० १८ ज़िल्काद [वि० आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० ता० ७ जून] को बादशाह आगरे पहुंचा, और वहांसे ता० १ ज़िल्हिज [वि० आषाढ़ शुक्ल ३ = ई० ता० २१ जून] को दिल्लीमें दाख़िल हुआ. उड़ीसेकी सूबेदारी बाक़रख़ांसे उतारकर मोतक़िदख़ांको दीगई.

हिज्री १०४२ ता० १८ मुहर्रम [वि० १६८९ भाद्रपद कृष्ण ४ = ई० १६३२ ता० ५ ऑगस्ट] को कश्मीरकी सूबेदारी एतिक़ादख़ांसे उतारकर ख़्वाजह अबुल्हसनको दी. बंगालेकी तरफ़ हुगलीमें फ़रंगियोंने क़िला बना लिया था, जिसपर क़ासिमख़ां बंगालेके सूबेदारका बेटा अल्लाहयारख़ां फ़ौजके साथ भेजा गया; उसने हज़ारों यूरोपियोंको क़त्ल व क़ैद करके वहांका बन्दर बर्बाद करदिया. दक्षिणमें साहू घोसलेने एक नया निज़ाम बनाया, और फ़त्हख़ां हबशीसे साहूकी तक्रार होगई थी, इस सबब मौक़ापाकर शाहजहांकी फ़ौजने क़िला कालना दबालिया.

इन्हीं दिनोंमें मालवेकी तरफ़ खाताखेड़ीका भागीरथ भील, नसीरख़ांकी कोशिशसे बादशाही ताबेदार हुआ. इसी वर्षमें बादशाहने यह हुक्म जारी किया, कि हमारे इलाक़ेमें कोई नया मन्दिर न बनवाने पावे. इसके बाद दाराशिकोहकी शादी पर्वेज़की बेटीके साथ हुई. तारीख़ १४ रमज़ान [वि० १६९० चैत्र शुक्ल १५ = ई० १६३३ ता० २५ मार्च] को राजा जयसिंह कछवाहा आंबेरसे बादशाहके पास हाज़िर हुआ, और आठ दिनके बाद राजा गजसिंहने भी हाज़िरी दी.

हिज्री शव्वाल [वि० वैशाख = ई० एप्रिल] में शाहज़ादे औरंगज़ेब पर सिद्धकर हाथीने हम्ला किया. शाहज़ादेने, जो घोड़ेसे गिरगया था, उठकर हाथीके सिरपर भाला मारा, और पीछेसे शाहज़ादे शुजाअ व आंबेरके राजा जयसिंह कछवाहेने भी बर्छा लगाया; आख़िरकार दूसरे सुन्दर नामी हाथीने, जो सिद्धकरसे लड़नेको मौजूद था, हम्ला करके भगादिया, और शाहज़ादा बचगया. इन्हीं दिनोंमें क़िला दौलताबाद दक्षिणकेसूबेदार ख़ानेजहांने फ़त्ह करलिया. दक्षिणियोंमें साहू और रणदौला आदिलख़ां बीजापुरी की तरफ़से मुक़ाबले पर थे; ख़ानेजहांकी बादशाही फ़ौजमेंसे राव शत्रुशाल हाड़ा बूंदीका, राव कर्णसिंह राठौड़ बीकानेरका, राव दूदा चन्द्रावत रामपुरेका, महाराणा जगत्सिंहका काका अर्जुनसिंह मेवाड़की फ़ौज समेत और पृथ्वीराज राठौड़ वग़ैरहने हम्ला किया. इन्हीं लड़ाइयोंमें राव दूदा चन्द्रावत मारागया, और निज़ामुल्मुल्क बादशाही फ़ौजमें पकड़ा गया.

हिज्री १०४३ [वि० १६९० = ई० १६३३] में शाहज़ादा शुजाअ मए राजा जयसिंह, सय्यद ख़ानेजहां, अल्लाह वर्दीख़ां व माधवसिंह हाड़ा वग़ैरहके दक्षिणमें भेजागया. इसी वर्षमें बादशाह कश्मीरकी सैरको गया.

हिज्री १०४४ [वि० १६९१ = ई० १६३४] में शाहज़ादे शुजाअने अपनी फ़ौजका हरावल राजा जयसिंह व मुबारिज़खांको बनाकर बीजापुरकी फ़ौजपर कई बार धावा किया, लेकिन् कामयाबी न हुई, और बर्सातके आजाने से पीछा बुर्हानपुरमें लौटआनापड़ा. इसी वर्षमें दक्षिणका मुल्क एक सूबेदारसे न संभलता देखकर दो सूबे बनाये- एक तो बालाघाट, जिसमें सब दक्षिण, दौलताबाद, पट्टन संगमनेर व कुल तिलंगाना वग़ैरह थे, और जिसकी आमदनी ३०५००००० रुपये थी, ख़ानेज़मांको सौंपागया; और दूसरा हिस्सा पायांघाट, जिसमें तमाम ख़ान्देश और बरारका इलाक़ा था, और आमदनी २३२५०००० रुपये थी, ख़ानेदौरांकी सूबेदारीमें दियागया; और हुक्म हुआ, कि बालाघाट वाले ख़ानेज़मां के पास राजा जयसिंह, मुबारिज़ख़ां, राव शत्रुशाल हाड़ा व जगराज वग़ैरह दौलताबादमें रहें, और पायांघाटके सूबेदार ख़ानेदौरांके पास राजा भारसिंह बुंदेला, माधवसिंह व नज़र बहादुर वग़ैरह बुर्हानपुरमें रहें, और छोटे मन्सबदार बराबर बांटलियेजावें. इन्हीं दिनोंमें ज़मानाबेग महाबतख़ां ख़ानूख़ानां दक्षिणमें सख़्त बीमारीसे मरगया. इसी वर्ष बादशाह शाहजहांने एक किरोड़ रुपयेकी लागतसे तख़्त ताऊस (१) बनवाया; यह तख़्त सवातीन गज़ लम्बा, दो गज़ चौड़ा और पांच गज़ ऊंचा था, जिसके दोनों कोनोंपर दो मोर और बीचमें एक दरख़्त जवाहिरातसे बनवाया था. तीन सीढ़ियें जवाहिरकी जड़ीहुई थीं- यह तख़्त सात वर्षमें बना. इसी वर्षमें राजा जयसिंह कछवाहेको एक

(१) लोग कहते हैं, कि इस तख़्तमें वह बड़ा हीरा (कोहेनूर) भी जड़वाया था, जिसका पुराना वृत्तान्त कई तरहपर है - बाज़े लोगोंका कहना है, कि कई हज़ार वर्ष पहिले यह हीरा राजा कर्णको मिला था; बाज़े कहते हैं, कि महाभारतमें भीम पांडवने जब भूरीश्रवाका हाथ काटा उस वक्त यह उसके भुजपर ज़ेवरमें जड़ा था; कोई कहता है, कि उज्जैनके राजा विक्रमादित्य पंवार को यह हीरा मिला था.

बाबर बादशाह अपनी किताबके दो सौ दो वरक़में लिखता है, कि यह हीरा अलाउद्दीन ख़िल्जीके पास था, फिर ग्वालियरके राजा विक्रमादित्यके पास रहा, और उसकी औलादने शाहज़ादे हुमायूंको दिया, जो वज़नमें आठ मिस्क़ाल (साढ़े चार माशेकी एक मिस्क़ाल गिनीजाती है) का था.

इस हीरेको बाक़ी तवारीख़ एडविन् डब्ल्यू स्ट्रीटरने "दि ग्रेट डायमन्ड्स् ऑफ़ दि वर्ल्ड" के पृष्ठ ११६ से १३५ तक में इस तरह लिखी है, कि इसको नादिरशाह इस तख़्तके साथ ईरान में लेगया, और उसके मरनेपर अहमदशाह दुर्रानीको मिला, जिसकी औलादमें से शुजाउल्मुल्क से, जो कन्धार छोड़कर लाहौरमें आरहा था, पंजाबके राजा रणजीतसिंहने लेलिया, और लाहौर ज़ब्त  होनेके बाद वह हीरा सर्कार अंग्रेज़ीने लेकर क्वीन विक्टोरियाके ताजमें लगाया.

हज़ारकी तरक़्क़ीसे पांच हज़ारी ज़ात व चार हज़ार सवारका मन्सब मिला.

हिजी १०४५ [ वि० १६९२ = ई० १६३५ ] में ओछैंका राजा जुझारसिंह बुंदेला बाग़ी होगया, जिसपर बादशाह अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़जंगको भेजकर पीछेसे आप भी रवाना हुए. जुझारसिंह अपने बेटे विक्रमादित्य समेत पहाड़ोंमें भागगया, और उन दोनोंको गोंड लोगोंने मारडाला. उसकी रानी अपने दोनों बेटों दुर्गभान और दुर्जनशाल समेत बादशाही क़ैदमें आई; पचास लाख सालयाना आमदनीका मुल्क ख़ालिसे हुआ, एक किरोड़ रुपया उसके ख़ज़ानेसे बादशाही तह्तमें आया. फिर वहांसे बादशाह दौलताबाद पहुंचा, माधवसिंह हाड़ा, राव शत्रुशाल हाड़ा, राव हरिसिंह चन्द्रावत और अर्जुनसिंहने मए मेवाड़की जमइयतके क़िला रामसेन दूसरे छः क़िलों सहित दक्षिणियोंसे छीनलिया, और राजा जयसिंह कछवाहा व ख़ाने दौरांने गुलबर्गा मक़ाम तक बीजापुरका मुल्क लूट मारकर तबाह करदिया, जिससे डरकर आदिल्शाहने शाहजहांके पास तुहफ़े भेज कर मुआफ़ी चाही. साहू घोसला भी आदिलशाहके पास चलागया, और क़िला जुनेर बादशाही क़ब्ज़ेमें आया. नया और पुराना दक्षिणका सूबा, जिसकी आमदनी पांच किरोड़ सालयाना थी, शाहज़ादे मुहम्मद औरंगज़ेबके हवाले हुआ.

हिजी १०४६ ता० ७ रबीउस्सानी [ वि० १६९३ भाद्रपद शुक्ल ९ = ई० १६३६ ता० १० सेप्टेम्बर ] में बादशाह दक्षिणसे लौटकर मांडूके क़िलेमें पहुंचे, महाराणा जगत्सिंहने कल्याण झालाको कुछ तुहफ़े देकर दक्षिणी फ़त्हकी मुबारकबादी देनेको बादशाहके पास भेजा. हिजी ता० २४ जमादियुस्सानी [ वि० मार्गशीर्ष कृष्ण १४ = ई० ता० २८ नोवेम्बर ] को उसके साथ महाराणाके लिये जड़ाऊ सरपेच और जड़ाऊ तलवार भेजी. बादशाह वहांसे रवाना होकर खजूरी, फलायता, और मुंडावरकी तरफ़ निकले; रामपुरेके राव हरिसिंह, कोटेके राव माधवसिंहके बेटे मोहनसिंह व जुझारसिंह और बूंदीके राव शत्रुशाल के बेटे भावसिंह तीनोंने ऊपर लिखे तीनों मक़ामोंपर नज़्रें दीं, और बादशाहने उनको ख़िल्अ़त इनायत किये. ता० १२ रजब [ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ = ता० १३ डिसेम्बर ] को अजमेरमें पहुंचे; वहां महाराणा जगत्सिंहके कुंवर राजसिंहने आकर नौ घोड़े पेश किये, और बादशाहने जड़ाऊ सरपेच वग़ैरह ख़िल्अ़त दिया. इन्हीं दिनोंमें साहू घोसलाने निज़ामुल्मुल्कके जमाईको, जिसे उसका वारिस बनाया था, बादशाही नौकरोंके हवाले किया, और वह क़ैद होकर ग्वालियर भेजागया. बादशाह अजमेरसे आगरे चला, तब महाराणाके कुंवरको हाथी घोड़े ख़िल्अ़त और उनके सर्दार बल्लू चहुवान और रावत मानसिंह चूंडावत वग़ैरहको भी घोड़े ख़िल्अ़त

देकर उदयपुरकी रुख़सत दी. जब बादशाह आगरे पहुंचे, तो ख़ानेदौरांको छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और राजा जयसिंहको एक हज़ार सवारकी तरक़्क़ीसे पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और चाटसूका परगना जागीरमें दिया. महाराजा गजसिंहके बेटे कुंवर अमरसिंहको तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब और माधवसिंह हाड़ाको तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब दिया. ख़ानेज़मां दौलताबादमें मरगया. इसी वर्षके ज़िल्हिज महीनेमें शाहज़ादे औरंगज़ेबकी शादी शाहनवाज़ख़ां सफ़वी ईरानीकी बेटीके साथ की गई.

हिज्री १०४७ [ वि० १६९४ = ई० १६३७ ] में कश्मीरके सूबेदार ज़फ़रख़ांने कुछ तिब्बतका इलाक़ा लेलिया. महाराजा गजसिंह जोधपुरसे अपने छोटे बेटे जशवन्तसिंह समेत और कल्याण झाला महाराणा जगत्सिंहकी तरफ़से बादशाही हुज़ूरमें आये. इसी वर्ष बादशाही फ़ौजने तुर्किस्तानमें बुस्तका क़िला फ़त्ह किया.

हिज्री १०४८ ता० २ मुहर्रम [ वि० १६९५ ज्येष्ठ शुक्ल ४ = ई० १६३८ ता० १८ मई ] को आगरा मक़ामपर महाराजा गजसिंहका देहान्त हुआ, महाराजाने मरते समय बादशाहसे कहा था, कि मेरे राज्यका मालिक जशवन्तसिंहको करना चाहिये. बादशाहने भी महाराजाकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ वैसाही किया, जिसका ब्योरेवार हाल जोधपुरकी तवारीख़में लिखा जायगा. महाराजा जशवन्तसिंहकी कम उम्र होनेके कारण उसके राज्यकी निगरानी राठौड़ राजसिंहको सौंपीगई, जो पहिले महाराजा गजसिंहका नौकर और फिर बादशाही मन्सबदार एक हज़ारी ज़ात व सवारका होगया था. महाराजा जशवन्तसिंहको चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब व राजाका ख़िताब वग़ैरह मिला, और रायसिंह झालाको आठ सौ ज़ात व चार सौ सवारका मन्सब इनायत कियागया; सूबे पटनाकी सूबेदारी अब्दुल्लाख़ांके एवज़ शायस्ताख़ांको दीगई.

हिज्री १०४९ [ वि० १६९६ = ई० १६३९ ] में बादशाह काबुलको चले, और आंबेरके राजा जयसिंह कछवाहेको पहिले रवाना किया; काबुलकी सैर करके थोड़ेही दिनोंमें लाहौरको लौट आये. फिर इन्हीं दिनोंमें नूरपुरके पास अली मर्दानख़ां रावी नदीको काटकर एक नहर बादशाही हुक्मके मुताबिक़ लाहौरमें लाया; इसके बाद कश्मीरकी सैरको बादशाह गये, जहां राव चन्द्रसेन राठौड़का पोता कर्मसेनका बेटा और महाराणा जगत्सिंहका भानजा रामसिंह राठौड़ हाज़िर हुआ, उसको एक हज़ारी ज़ात और छःसौ सवारका मन्सब व ख़िलअ़त दियागया. इन्हीं दिनोंमें मेवाड़ इलाक़े के सर्दार सादड़ीके जागीरदार हरिदास झालाके बेटे रायसिंहको एक हज़ारी ज़ात और चार सौ सवारका मन्सब मिला.

हिज्री १०५० [ वि० १६९७ = ई० १६४० ] में बादशाह लाहौर आये, और शाहज़ादा मुरादबख़्श, माधवसिंह हाड़ा वग़ैरह समेत हाज़िर हुआ. इन्हीं दिनोंमें इस जगहपर मुल्ला सादुल्ला लाहौरी बादशाही नौकर बना, जो पीछे सादुल्लाख़ां वज़ीरके नामसे मश्हूर हुआ; राजसिंह राठौड़के मरजाने से राजा जशवन्तसिंहके प्रधानेका काम महेशदास राठौड़को दियागया, जो बादशाही मन्सबदार था.

हिज्री १०५१ ता० ११ मुहर्रम [ वि० १६९८ वैशाख शुक्ल १३ = ई० १६४१ ता० २३ एप्रिल ] में रायसिंह झालाको एक सौ सवारकी तरक़ीसे हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका मन्सब मिला. इसी वर्षमें नूरपुरका राजा जगत्सिंह बाग़ी होगया, जिसपर शाहज़ादे मुरादबख़्शको मए राजा जयसिंह कछवाहा, नागौरके राव अमरसिंह राठौड़, कोटेके राव माधवसिंह हाड़ा, कृष्णगढ़के राजा हरिसिंह राठौड़, सावरके गोकुलदास सीसोदिया और सादड़ीके रायसिंह झाला वग़ैरहको भेजा; इन्होंने मऊका क़िला फ़त्ह करके जगत्सिंहको बादशाही दर्बारमें हाज़िर किया.

हिज्री १०५२ [ वि० १६९९ = ई० १६४२ ] में शाहज़ादा दाराशिकोह कन्धारकी तरफ़ रवाना कियागया, क्योंकि ईरानका बादशाह उस मक़ामको दबाना चाहता था; शाहज़ादेके साथ जोधपुरका महाराजा जशवन्तसिंह, राजा जयसिंह कछवाहा, टोडेका राजा रायसिंह सीसोदिया, नागौरका राव अमरसिंह राठौड़, और बूंदीका राव शत्रुशाल वग़ैरह बहुतसे मन्सबदार थे; लेकिन् ईरानका बादशाह लड़नेको न आया; इसलिये शाहज़ादा वापस लौटा. इसी वर्षमें मुरादबख़्शकी शादी शाहनवाज़ख़ां सफ़वीकी बेटीके साथ हुई, और मुम्ताज़महल बेगमका मक़्बरा आगरेमें तय्यार हुआ, जिसपर पचास लाख रुपया बादशाही ख़र्च हुआ, लेकिन् बहुतसा काम बेगारसे लियागया, और पत्थर मुफ़्त हाथ लगे थे; दो लाख रुपये सालानाकी आमदनीके गांव इसके ख़र्चके लिये मुक़र्रर किये गये.

हिज्री १०५३ [ वि० १७०० = ई० १६४३ ] में बादशाह अजमेरमें ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारतके लिये आये; जोगी तालाबपर ( जो कृष्णगढ़ के पास है ) महाराणा जगत्सिंहके कुंवर राजसिंह गये. ता० १५ रमज़ान [ पौष कृष्ण १ = ता० २७ नोवेम्बर ] को बादशाह आगरेकी तरफ़ लौटे, और जोधपुरके राजा जशवन्तसिंह और आंबेरके महाराजा जयसिंहको वतनकी रुख़्सत दी.

हिज्री १०५४ सफ़र [ वि० १७०१ चैत्र शुक्ल पक्ष = ई० १६४४ मार्च ] में कृष्णगढ़का राजा हरीसिंह बे औलाद मरगया. बादशाहने उसके भतीजे रूपसिंहको उसकी जगह क़ायम किया. इसी वर्षमें शाहज़ादे औरंगज़ेबसे बादशाह नाराज़ होगये, और उसकी जागीर, जो दक्षिणमें थी, और मन्सब वग़ैरह ज़ब्त करके ख़ानेदौरां नुस्रतजंगको दक्षिणका सूबेदार बनादिया. हिज्री जमादियुस्सानी [ वि० श्रावण = ई० जुलाई ] में राव अमरसिंह राठौड़, सलाबतख़ां मीर बख़्शीको मारकर ख़लीलुल्लाख़ां और अर्जुन गौड़के हाथसे शाहज़ादे दाराशिकोहके मकानपर बादशाहके सामने मारागया, जिसका ज़ियादा हाल मारवाड़के इतिहासमें लिखा जायगा. कल्याण झालाको, जो बहुत दिनोंसे आयाहुआ था, उदयपुर जानेकी रुख़्सत मिली; अब्दुल्लाख़ां बहादुर फ़ीरोज़जंग सत्तर वर्षकी उम्रमें मरगया. दक्षिणमें ख़ानेदौरांके पहुंचने तक महाराजा जयसिंह कछवाहेको क़ायम मक़ाम सूबेदार रहनेका हुक्म हुआ. हिज्री ज़ीक़ाद [ वि० पौष = ई० डिसेम्बर ] में राव अमरसिंहका बेटा रायसिंह अपने वतनसे हाज़िर हुआ, जिसको बादशाहने एक हज़ारी ज़ात व सात सौ सवारका मन्सब देकर नागौरकी जागीरपर बहाल रक्खा.

हिज्री १०५५ [ वि० १७०२ = ई० १६४५ ] में बादशाह लाहौर होकर कश्मीर गये, अलीमर्दानख़ांको काबुलमें भेजा, और उसकी मददके लिये टोडेके राजा रायसिंह, राजा भारतसिंह बुंदेला व कोटेके राव माधवसिंहको रवाना किया. इन्हीं दिनोंमें हमीरसिंह ( १ ) सीसोदिया ईश्वरदासका बेटा और दूदाका पोता अपनी खुशीसे बादशाही नौकर हुआ; उसे पांच सौ ज़ात व तीन सौ सवारका मन्सब मिला. इसी वर्षमें रायसिंह झाला इलाके मेवाड़के मातह्त सर्दार सादड़ीके जागीरदारको एक हज़ारी ज़ात व छः सौ सवारका मन्सब मिला; नूरजहां बेगम, जो दो लाख रुपया सालाना तनूख़्वाह पाती थी, मरगई, और उसके बापके मक़्बरेमें दफ़्न कीगई. अली मर्दानख़ांकी मातह्तीमें दो हिस्से फ़ौजके बनाकर बल्ख़ और बदख़्शांकी तरफ़ भेजेगये- अव्वल हिस्सेमें सर्दार निजाबतख़ां, मिर्ज़ाख़ां, शैख़ फ़रीद, किश्वरख़ां, मुल्तफ़ितख़ां, बहादुरख़ां, राजा विठ्ठलदास गौड़ अजमेरका, राव शत्रुशाल हाड़ा बूंदीका, राव माधवसिंह हाड़ा कोटेका, नज़र बहादुर, महेशदास राठौड़ राजा उदयसिंहका पोता और रतलाम वालोंका बुज़ुर्ग, सय्यद आलम, शिवराम गौड़, राजा रूपसिंह कृष्णगढ़का, रामसिंह राठौड़, हयातख़ां, जमालख़ां, मुहकमसिंह, गोपालसिंह, गोकुलदास सीसोदिया, गिर्धरदास गौड़, राजा अमर-

( १ ) यह हमीरसिंह मेवाड़के मातह्त सर्दार देवगढ़ वालोंके बड़ोंमेंसे था.

सिंह नर्वरका, सय्यद शिहाब, रायसिंह झाला सादड़ीका, अर्जुन गौड़, सय्यद नूरुल्अयां, सय्यद मुहम्मद, दूसरा महेशदास राठौड़, मुहम्मद क़ासिम, सुजानसिंह सीसोदिया शाहपुरेका, कृष्णसिंह तँवर, राव रूपसिंह चन्द्रावत, कृपाराम गौड़, उग्रसेन, इन्द्रशाल, चन्द्रभानु महूका, संग्राम कछवाहा, सय्यद शाहअली, सय्यद मक्बूल, हमीरसिंह सीसोदिया (देवगढ़ वालोंका बड़ा), पेमचन्द्र कछवाहा राव मनोहरका पोता, दानीदास मेड़तिया, सय्यद अजमेरी, बल्लू चहुवान, रावत नारायणदास सीसोदिया (बानसीवालोंका बड़ा); दूसरे हिस्सेमें क़िलीचख़ां, शाहबेगख़ां, राजा देवीसिंह बुंदेला, तुर्कताज़ख़ां, ख़न्जरख़ां, इहतिमामख़ां, रुस्तमख़ां, नूरुल् हसन, टोडेका राजा रायसिंह सीसोदिया, राजा राजरूप, सय्यद असदुल्ला, राजा बिहरोज़, शत्रुशालका बेटा अजबसिंह, सय्यद चावन, चतुरभुज चहुवान, कृष्णसिंह कछवाहा, नज़ीरबेग, चन्द्रमन बुंदेला, वग़ैरह, काबुलसे आगे बढ़े, और हिज्री १०५६ [वि० १७०३ = ई० १६४६] में बल्ख़ बदख़्शांको दबालिया. वहांका बादशाह नज़्रमुहम्मद भागकर ईरान पहुंचा. महाराणा जगत्सिंहके कुंवर राजसिंहने बादशाहके पास दिल्ली जाकर फ़त्हकी मुबारकबाद दी, और कुछ दिनों बाद रुख़्सत पाई.

थोड़े दिनों बाद शाहज़ादा मुरादबख़्श, जो इस फ़ौज और मुल्ककी संभालके लिये भेजागया था, बेरुख़्सत चला आया, जिससे वहांका इन्तिज़ाम बिगड़ गया; इसलिये हिज्री १०५७ [वि० १७०४ = ई० १६४७] में शाहज़ादा मुहम्मद औरंगज़ेब वहांका बन्दोबस्त करनेको भेजागया.

हिज्री १०५८ [वि० १७०५ = ई० १६४८] में बुख़ाराका बादशाह अब्दुल्अज़ीज़ख़ां मुल्क दबाने लगा, तब मुनासिब समझकर नज़्रमुहम्मदख़ांको ईरानसे बुलाकर उसका मुल्क उसको सौंप दिया.

हिज्री १०५९ [वि० १७०६ = ई० १६४९] में ईरानके बादशाह दूसरे अब्बासने क़िले कन्धारको लेलिया; वहां क़िला वापस लेनेके लिये बादशाही फ़ौज भेजी गई, परन्तु कुछ कामयाबी न हुई, और बर्फ़ व सर्दीके डरसे लौट आना पड़ा. इन्हीं दिनोंमें बादशाह काबुल गये, और शाहज़ादे दाराशिकोहको छोड़कर आप हिन्दुस्तानमें वापस आये. इसके बाद ठठे, भक्कर और मुल्तानकी सूबेदारी शाहज़ादे औरंगज़ेबको दी.

हिज्री १०६० [वि० १७०७ = ई० १६५०] में बादशाहने शाहज़ादे मुरादबख़्शको काबुल भेजकर दाराशिकोहको अपने पास बुलालिया. बादशाहने मेवातका इलाक़ा

महाराजा जयसिंह कछवाहेके दूसरे बेटे कीर्तिसिंहको जागीरमें दिया, उसने फ़सादी मेवोंको मारपीटकर सीधा किया.

हिज्री १०६१ [ वि० १७०८ = ई० १६५१ ] में बादशाह कश्मीरकी सैर को गया, पीछे लौटने पर लाहौरमें शाहज़ादा दाराशिकोह हाज़िर हुआ. इसी वर्षमें रूमके सुल्तान मुहम्मदका एल्ची मुहयुद्दीन आया, जिसकी यहां बहुत ख़ातिरदारी कीगई, फिर सुना गया, कि राजा विठ्ठलदास गौड़ मरगया, इससे रंज हुआ, और अनिरुद्धसिंहको उसके बापकी जागीर और मन्सब पर क़ायम किया. इसी वर्षमें सर्दारखां बहादुर ज़फ़रजंग मरगया, और उसके बेटे लुहरास्पको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और महाबतखांका ख़िताब देकर काबुलकी सूबेदारी इनायत की. और हाजी अहमद सईद एल्ची बनाकर रूमकी तरफ़ भेजागया. इसी वर्षके माह रमज़ान [ वि० भाद्रपद = ई० सेप्टेम्बर ] में बादशाह काबुल जाकर पीछे लौट आये.

हिज्री १०६२ मुहर्रम [ वि० १७०८ पौष = ई० १६५१ डिसेम्बर ] में जहांगीर बादशाहकी बहिन शुक्रुन्निसा मरगई, और शाहज़ादे दाराशिकोहको बड़े लश्करके साथ कन्धार भेजा, लेकिन् फिर भी कामयाबी न हुई.

हिज्री १०६३ ता० १ जमादियुस्सानी [ वि० १७१० वैशाख शुक्ल ३ = ई० १६५३ ता० ३० एप्रिल ] को उदयपुरके महाराणा जगतसिंहके देहान्त पीछे मेवाड़के वकील बादशाही दर्बारमें पहुंचे. बादशाहने टीकेका सामान जड़ाऊ जम्धर, तल्वार, हाथी, घोड़ा वगैरह बादशाही मन्सबदारके साथ भेजा, और महाराणा जगतसिंहके छोटे भाई गरीबदासको डेढ़ हज़ारी ज़ात व सात सौ सवार का मन्सब देकर नौकर रक्खा. इसी वर्षमें शाहज़ादे औरंगज़ेबके शाहजादा आज़म पैदा हुआ, और आगरेके क़िलेमें सफ़ेद पत्थरकी मस्जिद तय्यार करवाई, जिस में नौ लाख रुपये ख़र्च पड़े.

हिज्री १०६४ [ वि० १७१० = ई० १६५३ ] में शाहज़ादे मुराद बख़्शको शायस्ताख़ांके एवज़ गुजरातकी सूबेदारी और जोधपुरके राजा जशवन्तसिंहको महाराजाका ख़िताब दिया. इसी सन्के रबीउल्अव्वल् [ वि० माघ = ई० १६५४ जैन्यूअरी ] में जसरूप मेड़तिया राठौड़, जो बादशाही नौकर था, किसी रंजके सबब तलवार खेंचकर बादशाहकी तरफ़ दौड़ा, पहिलेही ज़ीनेपर पहुंचा था, कि नौबतख़ां कोतवाल और ख़्वाजा रहमतुल्लाके हाथसे मारागया. नागौरके राव अमरसिंह राठौड़की बेटी, जो महाराजा जयसिंह आंबेरवालेकी

भानूजी थी, शाहज़ादे सुलैमानशिकोहको व्याहीगई. इन्हीं दिनोंमें तवारीख़ बादशाहनामहका लिखनेवाला मौलवी अब्दुलहमीद लाहौरी मरगया. हिज्री ता० २ ज़िल्हिज [ वि० १७११ आश्विन शुक्ल ४ = ई० १६५४ ता० १६ ऑक्टोबर ] को बादशाह अजमेर आया, जिसका हाल महाराणा राजसिंहके बयानमें लिखाजायगा.

हिज्री १०६५ [ वि० १७१२ = ई० १६५५ ] में शाहज़ादे दाराशिकोह को "शाहे बुलन्द इक्बाल" का ख़िताब और तरूतके सामने सोनेकी कुर्सीपर बैठक मिली; सिरोहीके राव अक्षयराजको घोड़ा, सरपेच और कुछ ज़ेवर इनायत कियागया, और शायस्ताख़ांको मालवेकी सूबेदारी दीगई.

हिज्री १०६६ [ वि० १७१३ = ई० १६५६ ] में मीर जुम्ला, जो दक्षिणी कुतबुल्-मुल्कका वज़ीर था, किसी नाराज़गीसे निकलकर शाहज़ादे औरंगज़ेबकी सुफ़ारिशसे बादशाही नौकर हुआ, जिसको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब मिला, और इसी शाहज़ादेकी सुफ़ारिशसे राव कर्ण बीकानेरीको जसोल बन्दर, जो गुजरातमें है, श्रीपत ज़मींदारसे छीनकर बख़्शागया. इसी वर्षमें ता० २२ जमादियुस्सानी [ वि० वैशाख कृष्ण ८ = ई० ता० १५ एप्रिल ] को सादुल्लाख़ां वज़ीर, जो बड़ा आलिम और होश्यार था, मरगया, जिसका बादशाह शाहजहांको बहुत रंज हुआ; यह वज़ीर बड़ा ख़ैर ख़्वाह और नेक चलन आदमी था. जब मीर जुम्ला भागकर बादशाही नौकर हुआ, तब कुतुबुलमुल्क ने उसके बेटे मुहम्मद अमीनको क़ैद किया. बादशाहने औरंगज़ेबको लिखभेजा, कि हैदराबादपर चढ़ाई करे, कुतुबुलमुल्कने मुहम्मद अमीनको शाहज़ादेके पास भेजदिया, परन्तु उसका अस्बाब ज़ेवर वग़ैरह दाब रक्खा, जिसपर औरंग-ज़ेबने अपने बेटे मुहम्मद सुल्तानको हैदराबादपर भेजा, और लड़ाई होनेपर आप भी वहां गया. कुतुबुल्मुल्कने ज़ेवर अस्बाबके सिवाय अपनी बेटी मुहम्मद सुल्तानको व्याहकर एक किरोड़ रुपया दहेज़में देनेपर पीछा छुड़ाया. इस फ़त्हके एवज़ मुहम्मद सुल्तानको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, और शायस्ताख़ांको ख़ाने-जहांका ख़िताब मिला.

हिज्री १०६७ [ वि० १७१४ = ई० १६५७ ] में आदिल्शाह बीजापुरी मरगया, और अली आदिल्शाह उसकी जगहपर बैठा. बादशाहने औरंगज़ेब को लिखभेजा, कि ख़ानेजहांको दौलताबादमें छोड़कर आप बीजापुरपर चढ़ाई करे. शाहज़ादे दाराशिकोहकी तनख़्वाह डेढ़ किरोड़ रुपये सालाना कीगई. इन्हीं दिनोंमें ऐसी वबा फैली, कि कांखबिलाईकी बीमारीसे हज़ारों आदमी मरे. इस वर्ष दिल्लीके चारों तरफ़ शहरपनाहकी मज्बूत दीवार बनवाई, जिसमें २७ बुर्ज

और छोटे बड़े ११ दर्वाज़े रक्खेगये, जो अबतक मौजूद हैं. ज़ाहिदखां अपने शाहजहांनामहमें इसकी लागत चार लाख रुपये लिखता है; इससे मालूम होता है, कि बेगारसे मुफ्तमें बहुतसा काम लिया होगा. अली मर्दानखां अमीरुल्उमरा कश्मीरकी सूबेदारीपर जाताहुआ ता० १२ रजब [ वि० वैशाख शुक्ल १३ = ई० ता० २६ एप्रिल ]को रास्तेमें मरगया. इसके बाद मुअज़्ज़मखां मीर जुम्ला, औरंगज़ेबके पास दक्षिणमें भेजागया, जिसकी मददसे क़िला बीडर शाहज़ादेने फ़तह करलिया. फिर गुलबर्गापर दक्षिणियोंसे बादशाही फ़ौजका बड़ा मुक़ाबला हुआ, जिसमें महाराणा राजसिंहकी जमइयतका सर्दार शिवराम मारागया, और राजा रायसिंह सीसोदिया व सुजानसिंह वगैरह ज़ख्मी हुए. परन्तु गुलबर्गा और कल्यानीके क़िले फ़तह हुए, और दक्षिणी भागगये, परिन्देका क़िला मए ज़िले कोकनके व एक किरोड़ रुपया लेनेपर सुलह ठहरी. इसी अर्सेमें बादशाह शाहजहांको कई बीमारियोंने घेरलिया, जिससे दिन दिन ताक़त कम होतीजाती थी. दाराशिकोह बादशाहत पानेकी उम्मेदमें अपना इख्तियार बढ़ाता था.

हिज्री १०६८ [ वि० १७१५ = ई० १६५८ ] में बीमारीके वक्त शाहजहां दाराशिकोहपर मिहर्बान था, लेकिन् इस हालतमें उसकी तरफ़से शक भी पैदा होगया, तो भी बिल्कुल शाहज़ादेके इख्तियारमें रहा; शाहज़ादे शुजाअने बंगालेमें फ़ौज तय्यार करके आगरेकी तरफ़ आनेका विचार किया; और औरंगज़ेबने मुरादबख़्शको बादशाह बनानेका लालच देकर मिलाया. दाराशिकोहने फ़ौजें बढ़ाकर अपना ज़ाबिता किया, अपने बेटे सुलैमानशिकोहको मए महाराजा जयसिंह कछवाहेके, जिसको छः हज़ारी मन्सब मिलगया था, शुजाअको रोकनेके लिये बंगालेकी तरफ़ रवाना किया. सुलैमानशिकोहने बनारसके पास बहादुरपुर ग्राममें शाहज़ादे शुजाअकी फ़ौज पर हम्ला करदिया, जब कि वह सोरहा था; शाहज़ादा शुजाअ भागकर मूंगेर पहुंचा, लेकिन् सुलैमानशिकोहके डरसे वहां न ठहरा, और बंगाले चलागया. शाहज़ादे औरंगज़ेब और मुरादबख़्शको रोकनेके लिये दाराशिकोहने बीस हज़ार फ़ौज देकर जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह और क़ासिमखांको दूसरे कई राजा और सर्दारोंके साथ मालवेकी तरफ़ रवाना किया. शाहज़ादे औरंगज़ेबने मीरजुम्लाको मिलाना चाहा, जो बड़ी फ़ौजके साथ दक्षिणमें कल्यानीका क़िला घेरेहुए था, और बादशाहके बड़े सर्दारोंमें गिनाजाता था; उसको बुलाकर दौलताबादके क़िलेमें क़ैद किया, लेकिन् यह क़ैद मीरजुम्लाके कहनेसे की गई थी, क्योंकि उसके बालबच्चे आगरेमें दाराशिकोहके इख्तियारमें थे; मीर जुम्लाकी फ़ौजको साथ लेकर औरंगज़ेब आगरेकी तरफ़ रवाना हुआ, नर्मदाके पास मुराद-

बख़्श भी आ मिला; औरंगज़ेबने धोखा देनेके लिये मुरादबख़्शको बहकाया, कि मुझे बादशाहतकी ज़रूरत नहीं है, दारा जो काफ़िर होगया है, वह मज़्हब ख़राब करदेगा, और शुजाअ़ भी राफ़िज़ी (१) है, इस लिये तुमको बादशाहीके लायक़ जानकर तख़्तपर बिठानेके बाद मैं ख़ुदाकी इबादतमें रहूंगा. इस फ़रेबसे वह कम अ़क्ल (मुराद) बिल्कुल अपनेको बादशाह समझने लगा, औरंगज़ेब भी उसको हज़रत कहकर अदबके साथ पुकारने लगा; आख़िरकार हिज्री १०६८ ता० २१ रजब [वि० १७१५ वैशाख कृष्ण ७ = ई० १६५८ ता० २४ एप्रिल] को उज्जैनसे सात कोस पर धर्मातपुर के पास दोनों शाहज़ादोंका मक़ाम हुआ.

४ महाराजा जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ां मालवेमें पहुंचकर उज्जैनमें ठहरे हुए थे, और इनको हुक्म भी यही था, कि पहले शाहज़ादे मुरादकी ख़बर लें. ये दोनों सर्दार मुरादसे मुक़ाबला करनेकी फ़िक्रमें खाचरोद पहुंचे, लेकिन् औरंगज़ेबने नर्मदाके किनारे पर पूरा पूरा बन्दोबस्त करदिया था, कि इधरकी ख़बर बादशाही लश्करमें न पहुंचे, इससे महाराजा जशवन्तसिंहको उधरका कुछ हाल न मालूम हुआ. जब ये लोग पीछे उज्जैनकी तरफ़ लौटे, उस वक्त दोनों शाहज़ादोंके नर्मदा उतरनेकी ख़बर मांडूके क़िलेदार राजा शिवरामने महाराजा जशवन्तसिंहके पास भेजी. तब ये पलटकर धरमातपुरके पास शाहज़ादोंकी फ़ौजसे एक कोसकी दूरीपर ठहरे, औरंगज़ेबने कविराय (२) ब्राह्मणको महाराजा जशवन्तसिंहके पास भेजकर कहलाया, कि हम लड़ाईके विचारसे नहीं जाते हैं, आला हज़रत (शाहजहां) की क़दम्बोसी और उनकी तन्दुरुस्तीका हाल दर्याफ़्त करना ज़रूर है, तुम्हें चाहिये, कि या तो हमारे शरीक होजाओ, या रास्ता छोड़कर अपने घर चलेजाओ. जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ांने यह बात न मानी, और जवाब दिया, कि हमको बादशाही हुक्म है, कि आपको आगे न बढ़ने दें. इसपर ता० २२ रजब [वैशाख कृष्ण ८ = ता० २५ एप्रिल] को पांच छः घड़ी दिन चढ़े लड़ाई शुरू हुई. शाहज़ादे औरंगज़ेबका हरावल उसका बेटा मुहम्मद सुल्तान था, जिसके साथ निजाबतख़ां और उसका बेटा शुजाअ़तख़ां और सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ां बारह, लोदीख़ां, पुरदिल्ख़ां, कमाल लोदी, सय्यद नसीरुद्दीन दक्षिणी, जमाल बीजापुरी, इलहामुल्ला, अब्दुल्बारी अन्सारी, मीर अबुल्फ़ज़्ल मामूरी और क़ादिरदाद अन्सारी वग़ैरह; मददगार फ़ौजमें ज़ुल्फ़िक़ारख़ां उर्फ़ मुहम्मदबेग, कुछ तोपख़ाना और

(१) सुन्नी लोग शिया फ़िर्क़ेको राफ़िज़ी कहते हैं, जिसके मअ़्नी फिरेहुए के हैं.
(२) इस कविरायका अस्ली नाम कहीं नहीं लिखा.

बहादुरखां, हादीदादखां, सय्यद दिलावरखां, ज़बरदस्तखां, सआदतखां, और हमीद काकड़ वगैरह; खास तोपख़ानेका अफ़्सर मुर्शिदकुलीखां था, जिसके मातहत कई फ़रांसीस भी काम करते थे; दाहिनी तरफ़ शाहज़ादा मुरादबख़्श अपनी फ़ौज व सर्दारों समेत तय्यार था. औरंगज़ेबके बाईं तरफ़की फ़ौजका अफ़्सर शाहज़ादा मुहम्मद आज़म, जिसके साथ मुल्तफ़तखां, हिम्मतखां, कारतलबखां, सिपहदारखां, राजा इन्द्रमणि धन्धेरा. होशदारखां, मुस्तारखां, मीर बहादुरदिल्, मुनइमखां, शैख़ अब्दुल् अज़ीज़, सय्यद यूसुफ़, इस्माईल नियाज़ी, याकूब, दिलावर, उज़्बकखां, नेमतुल्ला, सय्यद हसन, कर्णसिंह (१) कच्छी, राजा सारंगधर, गैरतबेग, मुर्तज़ाखां, हमीदुद्दीन एतिमादुद्दौलाका पोता; औरंगज़ेबके पास दाहिनी तरफ़ शैख़ मीर, सय्यदमीर, अब्दुर्रहमान, ग़ाज़ी बीजापुरी, फ़तहखां रुहेला, इस्माईल खेशगी, केसरीसिंह बीकानेरके राव कर्णसिंहका बेटा अपने छोटे भाई पद्मसिंह सहित, रघुनाथसिंह राठौड़, मसऊद मंगली, सय्यद मन्सूर, बादल बख़्तियार, सैफ़ बीजापुरी वगैरह. औरंगज़ेबके बाईं तरफ़ सफ़् शिकनखां कितने एक तोपख़ाने वालों समेत, ख़वासखां, सिकन्दर रुहेला, और कई एक दक्षिणी सर्दार जादवराय, रुस्तमराय, दौलतमन्दखां, दामाजी, बाबाजी घोसला, बीतूजी और जशवन्तराव थे. फ़ौजकी गिर्दावरी पर ख़्वाजह उबैदुल्ला, फ़ज़्लबाशखां, अब्दुल्लाखां, मुहम्मद शरीफ़ तोलकची और राद-अन्दाज़बेग, वगैरह थे. इस तमाम फ़ौजके बीचमें औरंगज़ेब खुद रहा; खास अर्दलीमें असालतखां, मुख़्लिसखां, तहव्वुरखां, क़िलीचखां, जौहरखां. हिज़ब्रखां, मीर इब्राहीम कोरबेगी, बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाका बेटा भगवन्तसिंह, शुभकर्ण बुंदेला, अल्लाहयारबेग मीरतुज़क वगैरह थे.

महाराजा जशवन्तसिंहकी शाहीफ़ौजका जमाव इस तरह पर था, हरावल फ़ौजका सर्दार क़ासिमखां, जिसके साथ मुकुन्दसिंह हाड़ा, राजा सुजानसिंह बुंदेला, अमरसिंह चन्द्रावत रामपुरेका, राजा रत्नसिंह राठौड़ रतलामका, अर्जुन गौड़, दयालदास झाला, मोहनसिंह हाड़ा, खुशहाल बेग काशग़री, सुल्तान हुसैन वगैरह थे; इनके आगे बहादुरबेग फ़ौजबख़्शी और दारोग़ा तोपख़ानहको रक्खा, जिसके साथ जानीबेग वगैरह लोग थे; और गिर्दावरी पर मुख़्लिसखां, मुहम्मदबेग, यादगारबेग तूरानी; और मददगार फ़ौजमें महेशदास गौड़, गोवर्धन राठौड़ आदि थे; आप महाराजा जशवन्तसिंह चुनेहुए दो हज़ार राजपूतों समेत

(१) कर्णसिंह कच्छी कच्छ भुजके चन्द्र वंशी जाड़ेचा हैं.

बीचमें रहे, जिनमें भीमसिंह गौड़ राजा बिठ्ठलदासका बेटा वगैरह था; दहिनी तरफ़की फ़ौजमें टोडेका राजा रायसिंह सीसोदिया व शाहपुरेका सुजानसिंह सीसोदिया अपने भाइयों और बहादुर राजपूतों समेत मुक़र्रर हुआ; बाई तरफ़की फ़ौजमें इफ़्तिख़ारख़ां, जिसके साथ सय्यद शेरख़ां बारह, सय्यद सालार, यादगार मसऊद, मुहम्मद मुक़ीम वगैरह थे. कारख़ाने और डेरोंकी संभाल मालूजी, पर्सूजी और राजा देवीसिंह बुंदेलाके सुपुर्द थी.

औरंगज़ेब व मुराद बख़्शसे जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ांका मुक़ाबला.

इस तरह दोनों फ़ौजें तय्यार हुईं, तब औरंगज़ेबने अपना तोपख़ाना नदी (नरायनाचोर नाला) के किनारे बुलन्दीपर रक्खा, और यह हुक्म दिया, कि दूसरी फ़ौज तोपख़ानहकी मददसे नदी उतरनेको बढ़ाई जावे; ऐसा ही कियागया, लेकिन् बादशाही फ़ौजके तोपख़ानह ने शाहज़ादोंकी हरावलको रोका, और बान, बन्दूक़ और तोपोंसे सामना हुआ. उस वक़्त क़ासिमख़ांकी हरावलसे बड़े बड़े बहादुर राजपूतों मुकुन्दसिंह हाड़ा, राजा रत्नसिंह राठोड़, दयालदास झाला, अर्जुन गौड़ वगैरहने आगे निकलकर औरंगज़ेबके तोपख़ानह पर हम्ला किया. तोपख़ानहके अफ़्सर मुर्शिदकुलीख़ां व ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने अपने साथियों समेत उन बहादुर हम्ला करनेवाले राजपूतोंके साथ अच्छा मुक़ाबला किया; मुर्शिदकुलीख़ां मारागया, और ज़ुल्फ़िक़ारख़ां अपने साथियों समेत सवारियां छोड़कर लड़नेमें ज़ख़्मी हुआ. जशवन्तसिंहकी शाही फ़ौजके राजपूत तोपख़ानहसे आगे बढ़कर औरंगज़ेब के ख़ास हरावलपर गिरे, और पिछले राजपूत भी उनकी मददको पहुंच गये. यह लड़ाई बहुत भारी और नामी हुई. औरंगज़ेबके शाहज़ादे मुहम्मद-सुल्तान व मददगार निजाबतख़ांने भी बहुत अच्छी बहादुरी दिखलाई; इसी मौक़ेपर शेख़ मीरने एक फ़ौजकी टुकड़ी लेकर दहिनी तरफ़से राजपूतोंकी फ़ौजपर हम्ला किया. और उसकी मददके लिये औरंगज़ेबका सर्दार सुर्तज़ाख़ां भी पहुंच गया. इसी तरह बाईं तरफ़से सफ़्शिकनख़ां राजपूतोंपर टूट पड़ा, और राजपूतोंके ज़बर-दस्त धावे रोकनेके लिये औरंगज़ेबने अपने सर्दारोंकी मदद करनेको अपनी अर्दलीके लोग भेजकर आप हम्ला करना शुरू किया. यह लड़ाई ऐसी हुई, कि हरावल व दहिनी व बाईं तरफ़की फ़ौजोंका इन्तिज़ाम बिगड़गया, और आगे पीछे होगईं; बर्छा, तलवार, कटार चलनेकी नौबत पहुंची; उस समय महाराजा जशवन्तसिंहकी फ़ौजके सर्दार मुकुन्दसिंह हाड़ा, सुजानसिह सीसोदिया, राजसिंह राठोड़, अर्जुन गौड़ राजा बिट्ठलदासका बेटा, दयालदास झाला, मोहनसिंह हाड़ा, अपने हज़ारों राजपूतोंके साथ औरंगज़ेबकी फ़ौजके बहुतसे आदमियोंको मारकर मारेगये.

जब शाहज़ादोंकी फ़ौजकी ताक़त बढ़ती हुई देखी, तब टोडेका राजा रायसिंह व राजा सुजानसिंह बुंदेला और अमरसिंह चन्द्रावत रामपुरेका अपने साथियों सहित भाग निकले. उस समय शाहज़ादा मुराद, जो बड़ी बहादुरीसे लड़रहा था, इतना बढ़गया, कि महाराजा जशवन्तसिंहके पीछे डेरोंपर जापहुंचा; डेरोंके मुहाफ़िज़ मालू व पर्सू और देवीसिंह वग़ैरहने शाहज़ादेसे कुछ देर तक मुक़ाबला किया, बहुतसे आदमी काम आये, आख़िरकार मालू, पर्सू वग़ैरह भागनिकले, और देवीसिंहने शाहज़ादेकी ताबेदारी इख़्तियार की. जब मुराद दहिनी तरफ़से आगे बढ़ा, और महाराजा जशवन्तसिंहके पास होकर लड़ताहुआ निकला, तो इससे महाराजा जशवन्तसिंहकी फ़ौजमेंसे इफ़्तिख़ारख़ां बहुतसे आदमियों समेत मारागया. सामनेकी फ़ौजसे भी लड़ाई होरही थी, इस कारण जशवन्तसिंहकी फ़ौज शाहज़ादे मुरादको न रोक सकी, औरंगज़ेब व मुरादकी फ़ौजोंने चारों तरफ़से हम्ला किया; बहुतसे उम्दा सर्दार तो पहिले ही मारे जाचुके थे, अब अक्सर भागगये. इससे जशवन्तसिंहके राजपूतों ही पर ज़ोर आपड़ा; इस विषयमें बर्नियर फ़रांसीसी लिखता है, कि- क़ासिमख़ां जशवन्तसिंहको तक्लीफ़में छोड़कर पहिले ही भाग निकला, और आलमगीरनामह व मुन्तख़बुल्लुबाबमें जशवन्तसिंहके भागजाने बाद क़ासिमख़ांका भागना लिखा है. बर्नियर फ़रांसीसी कहता है, कि मैं इस लड़ाईके वक्त मौजूद नहीं था, परन्तु औरंगज़ेबके तोपख़ानहपर जो फ़रांसीसी अफ़्सर उस लड़ाईमें मौजूद थे, उनके बयानसे लिखताहूं; हम भी फ़ार्सी तवारीख़ोंसे उसको मोतबर मानते हैं. जशवन्तसिंह अपने बहादुर राजपूतों समेत अच्छी तरह लड़ा, यहांतक कि आठ हज़ार राजपूतोंमें से सिर्फ़ छः सौ बाक़ी रहे. राजपूताना के कवि इसका बयान इस तरहपर करते हैं, कि जशवन्तसिंहके राजपूतोंने उसको इस लड़ाईसे ज़बरदस्ती निकाला, जैसा किसी मारवाड़ी कविने कहा है--

बैत.

ओछीवाढ़ो जशवन्त काढ़ो ॥ राजा राख्यां वाजी रहसी ॥
कमधां कोई बुरा न कहसी ॥ भारतरा भार रत्नागरने भळिया ॥
बागां झाल जशवन्त वळिया ॥

बर्नियर फ़रांसीसीका लिखना भी इसके क़रीब ही है. ख़ैर जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ांके निकलनेसे (१) लड़ाई ख़त्म हुई. तोपख़ाना, ख़ज़ाना वग़ैरह कुल

(१) मारवाड़की तवारीख़में लिखा है कि क़ासिमख़ां वग़ैरह बादशाही मुसल्मान सर्दार औरंगज़ेबसे मिलगये इसकी तस्दीक़ बर्नियर फ़रांसीसीके बयानसे होती है.

सामान इनका दोनों शाहज़ादोंके हाथ लगा. जंगलोंमें लाशोंके ढेर लगगये.

शाहज़ादोंकी फ़त्ह.

औरंगज़ेबने इसी दिनसे कस्बे धर्मातपुरका नाम फ़त्हाबाद रक्खा, जो अब तक मौजूद है. बर्नियरने तो आठ हज़ार राजपूतोंमेंसे छःसौ बाक़ी बचना लिखा है. और आलमगीरनामह व मुन्तख़बुल्लुबाबमें जशवन्तसिंहकी फ़ौजके छः हज़ार आदमी मारेजाने लिखे हैं. परन्तु दोनोंकी लिखावटमें कुछ ज़ियादह फ़र्क़ नहीं है, इस सबबसे, कि इस लड़ाई के खेतसे जो ज़ख़्मी निकल गये, उनकी गिन्ती आलमगीरनामहसे भी सिवाय है. औरंगज़ेब और मुरादबख़्शकी फ़ौजके नामी सर्दारोंमेंसे मुर्शिदकुलीख़ांके सिवाय कोई जानसे नहीं मारागया. लेकिन् नामी सर्दार इख़्लासख़ां. सिकन्दर रुहेला. शैख़ अब्दुल् अज़ीज़. राठोड़ रघुनाथसिंह ज़ख़्मी हुए. और दूसरे लोग तो हज़ारों मारेगये होंगे. जिनकी तादाद किसी किताबमें नहीं मिलती.

इस फ़त्हके बाद दोनों शाहज़ादोंने उज्जैनमें आकर बहुतसे सर्दारोंको ख़िल्अत. ख़िताब और मन्सब दिये. फिर ता० २७ रजब [ वैशाख कृष्ण १३ = ता० ३० एप्रिल ] को वहांसे रवाना होकर ता० २८ शअ्बान [ ज्येष्ठ कृष्ण १४ = ता० ३१ मई ] में दोनों शाहज़ादे ग्वालियर पहुंचे. वहां रायसेनके क़िलेदार ख़ानेदौरांका बेटा मुख़्तारख़ां औरंगज़ेबसे आमिला, उसे ख़िल्अत, हाथी. घोड़ा, और ख़ानेदौरांका ख़िताब दिया. दाराशिकोहने जब फ़त्हाबाद पर अपने लोगोंकी शिकस्त का हाल सुना तो बहुत उदास हुआ. और अपने बेटे सुलैमानशिकोहको बंगालेसे जल्दी लौटआनेके लिये लिखा. और आप फ़ौजकी तय्यारी करने लगा: जितने मुसल्मान और राजपूत सर्दार बादशाहतके ताबे थे. सब बुलायेगये. शाहजहांके नामसे हुकूमत थी. लेकिन उसके इख़्तियारकी बाग बिल्कुल दारा हीके हाथ थी. दाराकी इख़्तियारी हुकूमतसे बहुत सर्दार नाराज़ थे. क्योंकि शाहजहांने पहिले ही से उसका इख़्तियार बढादिया. वह दूसरे की सलाह कम पसन्द करता था. लेकिन् उस समय उसने बहुतसी फ़ौज एकट्ठी करली. बर्नियर फरांसीसी लिखता है, कि एक लाख सवार, बीस हज़ार पैदल और अस्सी तोपें औरंगज़ेब और मुरादके मुक़ाबले को तय्यार की थीं. औरंगज़ेबके पास सब चालीस हज़ारसे ज़ियादा फ़ौज न होगी. आलमगीरनामहमें दाराकी साठ हज़ार फ़ौज और शाहजहांनामहमें औरंगज़ेबकी तीस हज़ार फ़ौज लिखी है: परन्तु ख़याल होता है, कि कुछ दाराके बेटे सुलैमानशिकोहके साथ भेजीगई. बाक़ी फ़ौज दिल्ली, आगरेकी हिफ़ाज़तको रही. यह सब मिलाकर बर्नियरकी लिखी हुई तादाद सहीह होगी.

जब दारा, औरंगज़ेब व मुरादसे लड़ाईके लिये जानेको तय्यार हुआ, तब शाह-

जहांने उसे रोका, और अपना पेशखैमा खड़ा करनेका हुक्म दिया, कि मैं औरंगज़ेब व मुरादसे मुक़ाबला करूंगा; लेकिन् दाराको शक था, कि बादशाह शाहज़ादोंमें मिलजावे, या वे अपनी ताक़तसे बादशाहको क़ाबूमें करलें, तो बड़ा नुक़्सान हो; इस लिये शाहजहां को हर सूरतसे रोका. दाराने ता० १६ शअ्बान [ ज्येष्ठ कृष्ण २ = ता० १९ मई ] को बादशाही सर्दारोंमेंसे ख़लीलुल्लाख़ांको अफ़्सर और उसके मातहत कुबादख़ां, रायसिंह राठौड़, इमाम कुली, नूरीबेग आग़र वगैरह और अपने मुलाज़िमोंमें से दाऊदख़ां, अस्करीख़ां, वगैरहको कुछ फ़ौज देकर धौलपुरकी तरफ़ रवाना किया, कि चम्बल नदीको रोककर मोर्चे जमावें. फिर शाहजहांके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ आप अपने छोटे बेटे सिपहरशिकोह सहित लड़ाईपर जानेकी रुख़्सत लेनेको बादशाहकी ख़िदमतमें हाज़िर हुआ, उस वक़्त शाहजहांकी आंखें भरआईं, और आंसू बह निकले; उसको इस बातका बहुत रंज हुआ, कि मेरे घरकी बर्बादी का समय आगया, और वही बर्ताव होरहा है. बादशाहने कई बार औरंगज़ेब और मुरादको फ़र्मानों व एतिबारी आदमियों की मारिफ़त बहुत समझाया, और दाराशिकोहको भी अच्छी तरह नसीहतें कीं. वह यह चाहता था, कि मेरी आंखोंके सामने मेरे घरकी बर्बादी न हो; परन्तु ईश्वरको ऐसाही करना था, किसी फ़िक्रसे फ़ायदा न हुआ. जब दाराको उसके इरादेसे रुकता न देखा, तब शाहजहांने कहा, कि ऐ मेरे बेटे मैंने तुझे ईश्वरके हवाले किया, जाओ ईश्वर तुम्हारी उम्मेदको पूरा करे; आख़िरकार ता० २५ शअ्बान [ ज्येष्ठ कृष्ण ११ = ता० २८ मई ] को दारा अपने छोटे बेटे सिपहरशिकोह समेत बहुतसी फ़ौजके साथ आगरेसे रवाना होकर पांच मन्ज़िलमें धौलपुर पहुंचा, और वहां क़ियाम करके अपने बड़े बेटे सुलैमानशिकोहके आनेकी राह देखता था; शाहजहांने भी दाराशिकोहको लिखभेजा, कि जबतक सुलैमानशिकोह न आवे, लड़ाई न करना. दिलमें तो दाराके भी यही था, परन्तु अपनी ज़ियादह फ़ौजके घमंडसे शाहजहांको जवाब लिखा, कि तीन दिनके भीतर औरंगज़ेब और मुरादको बांधकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर करूंगा, पीछे आप अपने दोनों बाग़ी शाहज़ादोंके हक़में, जो मुनासिब जानें, वह करें.

### दाराशिकोहसे औरंगज़ेब व मुराद बख़्शकी लड़ाई.

दाराशिकोहने अपनी फ़ौजोंसे चम्बलके जितने घाट उतरनेके लायक़ समझे, सब मज़्बूतीके साथ रुकवा दिये. औरंगज़ेब व मुरादने देखा, कि दाराने बिल्कुल नदीके रास्ते बन्द करदिये हैं, तब उन्होंने हरएक आदमीसे पूछकर नदीसे उतरनेकी कोशिश की. दाराने जो रास्ते रोकरक्खे थे, वह छोड़कर ता० १ रमज़ान [ ज्येष्ठ

शुक्ल २ = ता० ३ जून] को ग्राम भदौरी (भदावर) की तरफ़ राजा चंपत बुंदेले की मददसे औरंगज़ेबने अपने लश्करको नदीके पार किया. दाराको ख़बर मिली. कि दोनों शाहज़ादे नदी और कठिन पहाड़ोंसे निकलकर आगरेकी तरफ़ जारहे हैं. तब उसने उनको रोकना चाहा, और आगरेसे १५ या १६ मीलके फ़ासिले पर समूनगर व राजपुरेके पास जा डेरे किये. शाहजहांने फिर भी बहुत मना किया. कि एक दम लड़ाई न कीजावे, लेकिन् वह नातज्रिबेकार शाहज़ादा इस घमंडमें भूलाहुआ था, कि एक हम्लेमें दोनोंपर फ़त्ह पालूंगा. औरंगज़ेब और मुरादने भी ता० ६ रमज़ान [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० ता० ८ जून] को दाराके लश्करसे डेढ़ कोसपर आकर मक़ाम किया, दूसरे दिन ता० ७ रमज़ान [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ८ = ई० ता० ९ जून] को दाराशिकोहने अपनी फ़ौज इस तरहपर तय्यार की- ख़ास अपने तोपख़ानेको बर्क़न्दाज़ख़ांकी मातहतीमें अपनी फ़ौजके आगे दहिनी तरफ़ जमाया. बादशाही तोपख़ानेको हुसैनबेगख़ांके इख्तियार से फ़ौजके आगे बाईं तरफ़ रक्खा, और बूंदीके राव शत्रुशाल हाडाको हरावल फ़ौजका अफ्सर बनाकर उसके साथ नीचे लिखे हुए लोगोंको तईनात किया-

राजा रूपसिंह राठौड़ रूपनगर या कृष्णगढ़का. वीरमदेव सीसोदिया शाहपुरेके राजा सुजानसिंहका भाई (महाराणा अमरसिंहका पोता), गिर्धर गौड़ राजा विट्ठलदास का भाई. भीम राजा विट्ठलदास गौड़का बेटा. राजा शिवराम गौड़ जो उज्जैनकी लड़ाईसे भागकर आया था. और दूसरे भी कई नामी राजपूत उनके साथ तईनात हुए, और अपने ख़ास मुलाज़िमोंमेंसे दाऊदख़ां कुरेशीको चार हज़ार आदमी और अपने मीर बख़्शी अस्करख़ांको तीन हज़ार आदमी देकर हरावलका मददगार किया; ख़लीलुल्लाख़ां बादशाही फ़ौजके मीरबख़्शीको दहिनी फ़ौजका अफ्सर बनाकर उसके साथ इतने सर्दार किये- इब्राहीमख़ां अलीमर्दानख़ांका बेटा, इस्माईलबेग, इस्हाक़बेग, ताहिरख़ां, कुबादख़ां और तूरानी लोग, रामसिंह राठौड़ कर्मसेनका बेटा और जोधपुरके राव चन्द्रसेनका पोता, सुल्तानहुसैन, मीरख़ां, राजा विष्णुसिंह गौड़. पृथ्वीराज भाटी, वगैरा दूसरे अमीर व मन्सबदारोंको उस फ़ौजमें मुक़र्रर किया; बाईं फ़ौजकी अफ्सरीपर अपने छोटे बेटे सिपहरशिकोहको मए रुस्तमख़ां बहादुरके मुक़र्रर किया- और उसके साथ नीचे लिखेहुए सर्दार थे- क़ासिमख़ां, सरबुलन्दख़ां, सय्यद शेरख़ां बारह, मालूजी, पर्सूजी दक्षिणी, सय्यद बहादुर भक्करी, महासिंह भदौरिया. अब्दुन्नबीख़ां, सय्यद निजाबत, सय्यद मुनव्वर बारह, सय्यद मक्बूलेआलम, और तमाम सय्यद व अर्दलीके लोग व बादशाही गुर्ज़बर्दार; आप तीन हज़ार अच्छे ख़ास बहादुर व

फ़ैज़ुल्ला और खुशहालबेग काशग़री बादशाही नौकरों समेत बीचमें ठहरा. आंबेरके राजा जयसिंहके बड़े कुंवर रामसिंहको फ़ौजका गिर्दावर बनाकर उसके साथमें उसका छोटा भाई कीर्तिसिंह, शैख़ मुअ़ज़्ज़म फ़त्हपुरी और दूसरे राजपूत कुल दस हज़ार सवार मुक़र्रर हुए; इसके सिवाय दो फ़ौजें दहिनी और बाईं तरफ़ मुक़र्रर कीं, जिनमेंसे दहिनी तरफ़वाली फ़ौजकी अफ़्सरी ज़फ़रख़ां फ़ीरोज़ मेवातीको, और बाईं तरफ़की फ़ौजकी निगहबानी फ़ाख़िरख़ां नज्मे-सानीको दी.

औरंगज़ेबने भी अपनी फ़ौजको नीचे लिखे मुताबिक़ तय्यार किया- सबसे आगे तोपख़ाना, और मस्त जंगी हाथियोंको सब सामान और लड़ाईके हथियारोंसे सजाकर तोपख़ानहके पीछे जगह जगह खड़ा किया; बड़े शाहज़ादे मुहम्मद सुल्तान को नजाबतख़ां ख़ान्ख़ानां बहादुर सिपहसालार समेत हरावल बनाकर सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ां बारह, शजाअ़तख़ां, लोदीख़ां, पुरदिल्ख़ां, इख़्लासख़ां, तहव्वुरख़ां, रशीदख़ां, ख़वासख़ां, ज़बरदस्तख़ां, अहमदबेगख़ां, मामूरख़ां, सय्यद नसीरुद्दीन दक्षिणी, जमाल बीजापुरी, क़ादिरदादख़ां, अब्दुलबारी अन्सारी, और इनायत पठानको मुक़र्रर किया. ज़ुल्फ़िक़ारख़ां और बहादुरख़ांको किसी क़द्र तोपख़ानह देकर हरावलसे आगे रहनेका हुक्म हुआ. कुल तोपख़ानहकी अफ़्सरी पर मुर्शिद कुलीख़ां रक्खागया;-

दहिनी फ़ौजकी अफ़्सरी मुरादबख़्शके नाम कीगई, और उस फ़ौजमें इस्लामख़ां, आज़मख़ां, ख़ानेज़मां, मुख़्तारख़ां, कार तलबख़ां, सैफ़ख़ां, होशदारख़ां, हिम्मतख़ां, राजा इन्द्रमणि धन्धीरा, राजा सारंगधर, चंपत बुंदेला, भगवन्तसिंह हाड़ा, सय्यद हसन, मुहम्मद इस्माईलख़ां नियाज़ी, ग़ैरतबेग, और कच्छवाले कर्ण वग़ैरह शामिल कियेगये. शाहज़ादह मुहम्मद आज़मके नाम बाईं फ़ौज की अफ़्सरी रक्खीगई; मददगार फ़ौजकी सर्दारी शैख़ मीरको सौंपीगई, उसके साथ सय्यद मीर उसका भाई, शिरज़ाख़ां, फ़त्हजंगख़ां, जांबाज़ख़ां, सय्यद मन्सूरख़ां, रघुनाथसिंह राठौड़, केसरीसिंह भूरटिया, मंगलीख़ां, इनायत बीजापुरी, वग़ैरह दूसरे लोग तईनात कियेगये. बहादुरख़ांको औरंगज़ेबके दहिनी तरफ़ रक्खागया, और उसके साथ दिलावरख़ां, हिज़ब्रख़ां, हादीदादख़ां, शुभकर्ण बुंदेला और काले पठान थे. ख़ानेदौरांको फ़ौजके बाएं हाथकी तरफ़ रक्खा. ख़्वाजह उबैदुल्ला क़रावलबेगीको मए अब्दुल्लाख़ां, दोस्तबेग, और मुहम्मद शरीफ़ वग़ैरह के गिर्दावरी पर मुक़र्रर किया; आप औरंगज़ेब फ़ौजके अन्दर एक बड़े हाथीपर सवार हुआ, और शाहज़ादे आज़मको भी हाथीपर अपने पास रक्खा. सुर्तज़ाख़ां, असालतख़ां, दीन्दारख़ां, सज़ावारख़ां, सआ़दतख़ां, ग़ैरतख़ां,

जुल्फ़क़ारखां, औरंगखां, दौलतमन्दखां दक्षिणी, मीर इब्राहीम क़ोरबेगी, अल्लाहयार मीर तोज़क, ख़ानहज़ादखां, शैख़ अब्दुल्क़वी वग़ैरह ख़ास लोगों को अर्दलीमें रक्खा.

वर्नियर अपनी किताबमें इस तरह लिखता है- आगेही आगे तोपख़ानह ज़ंजीरोंसे बंधा हुआ, फिर शुतरनाल याने ऊंटोंके ज़ुर्वे और पीछेको बन्दूक़ वाले पैदल सिपाही. और रिसालेके लोगोंके पास तलवार, तीर कमान और बर्छेदारोंकी फ़ौजकी सजावट लिखी है; और इसी तरह औरंगज़ेब व मुरादबख़्शकी. लेकिन् इतना सिवाय था, कि बड़े बड़े सर्दारोंके गिरोहमें मीर जुम्ला की तज्वीज़से बड़ी बड़ी तोपें छिपा रक्खी थीं, जिनसे अच्छी कामयाबी हुई; पहिले पहिल बान चलाये गये, जो बारूदके हथियार होते हैं.

खास लड़ाई.

जब दोनों फ़ौजोंकी दुरुस्ती अच्छी तरह होचुकी, तब तारीख़ ७ रमज़ान [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ८ = ई० ता० ९ जून] को दो पहर दिन चढ़े दाराशिकोहकी फ़ौजसे पहिले तोप, बन्दूक़, बान वग़ैरह चलने शुरू हुए, और औरंगज़ेब व मुरादकी फ़ौजसे भी उसके जवाब दिये गये. बाईं तरफ़के गिरोहसे सिपहरशिकोह और रुस्तमखां बहादुर फ़ीरोज़जंग दक्षिणीने अपनी दस बारह हज़ार फ़ौजसे औरंगज़ेबके तोपख़ानह पर हम्ला किया. तोपख़ानह वालोंने भी उनको बड़ी मज्बूतीके साथ रोका, लेकिन् वे न रुक सके, और तोपख़ानहकी लैनको चीरकर शाहज़ादे मुहम्मद-सुल्तानकी हरावल फ़ौजपर गिरे, जिससे औरंगज़ेबकी फ़ौजमें बड़ी हल चल होगई. रुस्तमखांके साथियोंमें हाथीपर एक सर्दारके गोला लगा और वह मरगया, जिससे ज़रा सिपहरशिकोह और रुस्तमखांका गिरोह रुका, और फिर औरंगज़ेबकी दहिनी फ़ौजपर झुका, जिसका कि अफ्सर औरंगज़ेबका धाभाई बहादुरखां था. उसने इस हम्लेको बड़ी बहादुरीके साथ रोका और बहुत ज़ख़्मी हुआ, बहुतसे आदमी दोनों तरफ़के मारे गये. रुस्तमखांकी मददके लिये बराबर फ़ौज आती जाती थी, जिससे औरंगज़ेबकी फ़ौजके पैर उखड़नेको थे, लेकिन् इसी मौक़े पर इस्लामखां, सय्यद दिलावरखां, पठान दिलावरखां, बहादुरखांकी मददको पहुंचगये. इसी वक्त शैख़ मीर, सय्यद हुसैन, सैफ़खां, अरबबेग, मुहम्मदसादिक़ वग़ैरा मददगार फ़ौज लेकर पहुंचे, जिससे दोनों तरफ़ बराबरका मुक़ाबला हुआ. उस वक्त सय्यद दिलावरखां औरंगज़ेबका मातहत सर्दार बहुतसे ज़ख़्म खाकर मारागया, और हादीदादखां, सय्यद हुसैन, सैफ़खां, अरबबेग मुहम्मद सादिक़ वग़ैरह ज़ख़्मी हुए, लेकिन् सख़्त मुक़ाबला होनेके बाद सिपहरशिकोह और

रुस्तमखांकी फ़ौजके पैर उखड़े. यह ख़बर सुनकर दाराशिकोह बीस हज़ार सवार लेकर सिपहरशिकोह और रुस्तमख़ांकी मददको पहुंचा, लेकिन् औरंगज़ेबके तोपखानहकी मारसे दूसरी तरफ़ हटकर मुरादबख़्शसे मुक़ाबला करने लगा; उस वक्त हवा तेज़ और बारिश शुरू थी, थोड़ी देरके बाद बारिश बन्द हुई, और तोपें चलने लगीं. यह ऐसी सख़्त लड़ाई हुई, कि दाराशिकोहकी सवारीका सिंघली हाथी मुर्दोंकी लाशोंसे घिरगया.

औरंगज़ेबके तोपख़ानहसे दाराकी फ़ौजका बहुत नुक्सान हुआ, असबाबोंके ऊंट और घोड़े तित्तर बित्तर होगये; तोपोंके बाद तीर कमानोंसे मुक़ाबला हुआ, परन्तु उनसे हवाकी तेज़ीके सबब कम नुक्सान पहुंचा; पीछे दोनों फ़ौजोंके बहादुरोंने बर्छे, तलवार, कटार, और ख़न्जरोंसे अच्छे सवाल जवाब किये. उस वक्त शाहज़ादा दाराशिकोह अपने बहादुरोंका दिल बलन्द आवाज़से बढ़ाता था. औरंगज़ेबकी फ़ौजका रिसाला पीछे हटा; पर वह बड़ी दिलेरीके साथ अपने मरे हुए बहादुरोंका बदला लेना चाहता था, लेकिन् कामयाब न हुआ. उसने अपनी अर्दलीके सवारों समेत बड़ी बहादुरीके साथ धावा किया, परन्तु दाराके बहादुरोंने हटा दिया. उस वक्त औरंगज़ेबके पास एक हज़ार सवार रहगये थे, तो भी वह बहादुर शाहज़ादा बिल्कुल् न घबराया, बल्कि अपने बहादुरोंको पुकार पुकारकर कहता रहा कि- "ऐ मेरे बहादुरो ख़ुदा तुम्हारे साथ है, हिम्मत न हारो, भागने वालोंके लिये दक्षिण बहुत दूर है, जहां सहारा मिले". दारा औरंगज़ेब पर हम्ला करना चाहता था, परन्तु ऊंची नीची ख़राब ज़मीन और औरंगज़ेबके बहादुर सवारोंके सबब आगे नहीं बढ़ सका.

फिर दारा और मुराद बख़्शका सामना हुआ. मुरादका हाथी भागने लगा, तो मुरादने उसके पैरोंमें ज़ंजीरें डलवादीं. दाराशिकोहका औरंगज़ेबपर हम्ला न करनेका सबब बर्नियरने इस तरह लिखा है, कि जब दाराके बाईं तरफ़की फ़ौज तित्तर बित्तर होगई, उस वक्त उसे ख़बर मिली, कि रुस्तमख़ां और बूंदीका हाड़ा राव शत्रुशाल मारेगये, और राजा रामसिंह राठौड़ मुरादके मुक़ाबले पर ख़तरेकी हालत में है, तब औरंगज़ेबका मुक़ाबला छोड़कर दारा अपने बाईं तरफ़की फ़ौजकी मदद को पहुंचा, उस वक्त मुरादकी फ़ौजी हालत ख़ौफ़नाक थी. औरंगज़ेब अपने छोटे भाईकी मदद करनेको तय्यार हुआ. आलमगीर नामहमें तो मददगार होकर हम्ला करना लिखा है. लेकिन् ख़फ़ीख़ां मुन्तख़बुल्लुबाबमें लिखता है, कि शाहज़ादे मुरादके साथ मेरा बाप था, और वह लड़ाईमें ज़ख़्मी होकर आख़िर तक

वहां मौजूद रहा, उसके बयान से लिखा है, कि औरंगज़ेब मुरादकी मददको तय्यार हुआ. तो शेख़ मीरने उसे रोका, और कहा, कि एक तीरमें दो चिड़ियां मारी जावें, तो क्या ख़ूब हो: यानी दोनों शाहज़ादे आपसमें ही लड़मरें, तो आपको फ़ायदा है. औरंगज़ेब यह सुनकर रुकगया, लेकिन् मुराद बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबला करता रहा. राठोड़ रामसिंह रोटला (१) अपने राजपूतों समेत मुरादके हाथी को घेरकर ललकारा कि तू दाराशिकोहके मुक़ाबलेमें क्या बादशाह होना चाहता है? और हाथीके महावतसे कहा, कि हाथी को बिठादे; एक बर्छी मुरादबख़्श पर मारा. उसने ढालके सहारेसे रोका, फिर रामसिंह हाथीका रस्सा काटनेलगा, इसी अर्सेमें शाहज़ादे मुरादने एक तीर रामसिंह के सिरमें बड़े ज़ोरसे मारा, जिसके सबब वह घोड़ेसे गिरकर वहीं मरगया. यह रामसिंह केसरके रंगकी पोशाकके सिवाय सिरपर मोतियोंका सिहरा बांधे हुए था, जो राजपूतोंका लड़ाईमें मरनेके इरादेका लिबास है, रामसिंहके बहुतसे राजपूत हम्ला करके मुरादके हाथीके इर्द गिर्द मारेगये. उसी वक्त राजपूतोंका एक गिरोह औरंगज़ेब और उसकी फ़ौजपर टूटपड़ा, जिसमें कृष्णगढ़ का राजा रूपसिंह, जो घोड़ा छोड़कर पैदल था, अपने राजपूतों सहित नंगी तलवारोंसे औरंगज़ेबकी फ़ौजको चीरकर अपने साथियोंके मारेजाने बाद अकेला शाहज़ादेके हाथी तक पहुंचा, और औरंगज़ेबके हाथी का रस्सा काटने लगा; शाहज़ादे ने बहुत सा कहा, कि इस बहादुर राजपूतको जीता ही पकड़ो, लेकिन् उस वक्त कौन सुनता था, अर्दलीके लोगों के मुक़ाबले में टुकड़े टुकड़े होकर मारा-गया. राजा विठ्ठलदास गौड़का बेटा रामसिंह और भीमसिंह व राजा शिवराम गौड़ सख़्त ज़ख़्मी हुए.

बर्नियर लिखता है, कि दहिनी फ़ौजके अफ़्सर ख़लीलुल्लाख़ांको, जिसकी बे इज़्ज़ती चन्द साल पेश्तर दाराशिकोहने की थी, हुक्म दिया, कि अपनी फ़ौजको आगे बढ़ाओ, तब उसने जवाब दिया, कि हमारी फ़ौज ज़रूरतके वास्ते रक्खी गई है, आपके कहनेसे हम एक क़दम भी नहीं बढ़ सक्ते, और न एक तीर छोड़ेंगे; यह उसने अपनी पहिलेकी हतक इज़्ज़तका बदला लिया, तब दाराशिकोहने अपने दहिनी तरफ़की फ़ौजसे मुरादको पीछे हटाया, और ख़लीलुल्लाख़ांके हम्ला न करनेसे उसका कुछ भी नुक्सान न हुआ.

---

(१) यह रामसिंह राव मालदेवके बेटे चन्द्रसेन और उसके बेटे कर्मसेनका बेटा था, इसने किसी अकालमें ग़रीब लोगोंको रोटियें बांटी थीं, और हमेशासे दातार था, इस सबबसे शाइरोंने उसको रोटला मश्हूर कर दिया.

ख़लीलुल्लाख़ां अपनी फ़ौजका थोड़ासा हिस्सा लेकर दाराशिकोहके पास पहुंचा, जिस वक्त कि वह मुरादको हटारहा था; ख़लीलुल्लाने चिल्लाकर कहा, कि मुबारक हो मुबारक हो !! फ़त्ह आपकी है, लेकिन् मैं ख़ैरख्वाहीसे अर्ज़ करता हूं, कि बहुतसे तीर, बन्दूक़ और गोले चलरहे हैं, कहीं आपके लगजावे, तो मुबारक वक्तमें बड़ा नुक्सान हो. दग़ाबाज़ ख़लीलुल्लाकी सलाहका दाराशिकोहपर यह असर हुआ, कि वह हाथीसे उतरकर घोड़ेपर चढ़ा; उसका हाथीसे उतरना मानो हिन्दुस्तानके तख़्तसे उतरना था. बर्नियरके बयानसे आलमगीरनामह व मुन्तख़बुल्लुबाब के बयानमें यह फ़र्क़ है, कि ख़लीलुल्लाकी दग़ाबाज़ीका बिल्कुल ज़िक्र नहीं, जो उसने लड़ाईके वक्त की, बल्कि ख़फ़ीख़ां और मुहम्मद क़ाज़िमने लिखा है, कि मुरादबख़्श पर ख़लीलुल्लाख़ांने बड़ा सख़्त हम्ला किया; ख़लीलुल्लाख़ांका औरंगज़ेबके पास चलाजाना फ़ार्सी तवारीख़ोंमें भी लिखा है, लेकिन् बर्नियरने तो दाराके भागते ही ख़लीलुल्लाका औरंगज़ेबसे मिलजाना और फ़ौज वग़ैरह सुपुर्द करदेना ऊपर लिखे मुताबिक़ ही बयान किया है, और फ़ार्सी तवारीख़ोंमें जैसे दूसरे लोगोंका औरंगज़ेबसे लड़ाईके बाद आमिलना लिखा है, उसी तरह इसका हाल ज़ाहिर किया है; अब नहीं मालूम कौनसी बात कहांतक सच है, हमने दोनों बयानोंमें जो फ़र्क़ था वह बतला दिया.

दाराशिकोहकी शिकस्त-

ज्योंहीं कि दाराशिकोह हाथीसे उतर कर घोड़ेपर चढ़ा, फ़ौजने जाना, कि वह मारागया या भागगया. इस ख़यालसे फ़ौज भी भाग निकली, और लाचार दाराशिकोहको भी भागना पड़ा. औरंगज़ेबने दाराके भागनेसे मुरादको हिन्दुस्तानका बादशाह कहा, और ख़लीलुल्लाख़ांको भी मुरादबख़्शके पास लेजाकर कहा, कि यही हिन्दुस्तानका ताज पहरनेके लायक़ है, और इसीकी होश्यारी व दिलेरीसे फ़त्ह हुई.

इस लड़ाईमें दाराकी तरफ़के नीचे लिखे हुए बहादुर सर्दार मारेगये :-

रुस्तमख़ां बहादुर, बूंदीका राव शत्रुशाल हाड़ा, रामसिंह राठौड़, भीम गौड़, राजा शिवराम गौड़, कृष्णगढ़का रूपसिंह राठौड़, मुहम्मद सालिह दीवान, सय्यद नाहरख़ां बारह, यूसुफ़ख़ां रुहेला, इस्माईलबेग, इस्हाक़बेग, शैख़ मुअ़ज़्ज़म फ़त्हपुरी, ख्वाजहख़ां, हाजीबेग, इस्फ़न्दयारबेग, आसिफ़बेग गुर्ज़ बर्दार, सय्यद बायज़ीद, गुमानसिंह हाड़ा, शैख़ ख़ान मुहम्मद, केसरीसिंह राठौड़, महदीबेग तुर्कमान, सय्यद इस्माईल बारह, सय्यद कमालुद्दीन बुख़ारी, इब्राहीमबेग नज्मे सानी, सुजानसिंह राठौड़, सय्यद फ़ाज़िल बारह वग़ैरह. और बहुतसे लोग ज़ख़्मी हुए.

औरंगज़ेब की तरफ़के सर्दारोंमेंसे-- आज़मख़ां फ़त्हके बाद हवाकी तेज़ी

और ज़िरहबक्तरकी गर्मीसे मरगया. सज़ावारखां, हादीदादखां और सय्यद दिलावरखां मारेगये; बहादुरखां कूका, जुल्फ़िक़ारखां, मुर्तज़ाखां, दीनूदारखां, गैरत-बेग, मुहम्मद सादिक़, मम्रेज़ महमन्द वगैरह ज़ख्मी हुए–

मुरादबख़्शकी फ़ौजमेंसे ग़रीबदास सीसोदिया महाराणा राजसिंहका काका, जिसने तीन बार दाराशिकोहकी फ़ौजमें घोड़ा डाला और वह दाराके हाथी तक पहुंचगया था, परन्तु हाथी ऊंचा होनेके कारण कुछ नुक्सान न पहुंचा सका, बड़ी बहादुरीके साथ मारागया. सुल्तानयार और सय्यद शैखन् बारह वगैरह बीस सर्दार मारेगये. मुरादबख़्श अपने सर्दारोंके सिवाय खुद भी घायल हुआ, उसके बदन व चिहरेपर तीरोंके ज़ख्मोंसे लोहू टपकता था, और उसके बैठनेका होदा तीर व बर्छोंके लगनेसे टांटियों ( बर्रों ) के छत्तेकी तरह होगया था, जो कि फ़र्रुख़सियरके अह्द तक अजायबातके तौरपर रक्खा रहा. औरंगज़ेबने मुरादको अपने घुटनेपर लिटाकर उसके ज़ख्मोंका खून पोंछा, और आंखोंमें आंसू भरलाया, व उसकी बहादुरीकी तारीफ़ करके उसको बादशाह होनेकी मुबारकबाद देता था.

बर्नियरके क़ौलके बमूजिब तीन या चार सौ आदमी और ख़फ़ीख़ांके लिखनेके मुताबिक़ दो हज़ार सवार दाराके पास बचे थे. वह शामके वक्त अंधेरेमें अपनी आगरेकी हवेलीमें दाख़िल हुआ. शाहजहांने उसको अपने पास बुलाना चाहा, परन्तु वह शर्मिन्दगीके मारे न गया. उसी रातके पिछले पहरको सिपह्रशिकोह वगैरह लड़के और औरतोंको सवारियोंपर बिठाकर रुपये, अशर्फ़ी और जवाहिरात वगैरह दौलत जितनी चल सकी हाथी, ऊंट व खच्चरों पर लादी, और दिल्लीकी तरफ़ रवाना हुआ. जब वहांसे तीन मन्ज़िल पहुंचा, तब कितने ही उसके भागे हुए व शाहजहांके भेजेहुए कुल पांच हज़ार आदमीके क़रीब एकट्ठे होगये. जिस वक्त कि वह आगरेसे निकल गया, तो शाहजहांने पीछेसे लिखभेजा, कि तुम दिल्ली जाओ, वहां तुमको एक हज़ार घोड़े और वहांके हाकिमसे बहुत कुछ मदद मिलेगी; मैं भी तुमको तहरीरके ज़रीएसे ख़बर देता रहूंगा, और क़ाबू पाया तो औरंगज़ेबको भी सज़ा दूंगा. इसी मुवाफ़िक़ दारा दिल्ली गया, और ता० १४ रमज़ान [ ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ता० १६ जून ] को वहां पहुंचकर बाबरके क़िलेमें उसने क़ियाम किया.

अब औरंगज़ेबका कुछ हाल क़लम बन्द किया जाता है––

इस बड़ी फ़त्हके बाद औरंगज़ेब और मुरादने समूनगरके महलोंमें मक़ाम किया, जो कि जमुनाके किनारे पर हैं. वहां अपने बहादुर ज़ख्मियों व मुराद-बख़्शके ज़ख्मोंका इलाज करवाया. औरंगज़ेब ज़ाहिरमें बे अक्ल़ मुरादको

हज़रत और बादशाह कहता था, लेकिन् पोशीदा अपनी ही बादशाहतकी बन्दिशें बांधरहा था; उसने कुल सर्दारोंको मिलानेके लिये खत जारी किये, और मामूं शायस्ताखांको मिला लिया, कि जिसके सबब शाहजहांके पास भी वसीला हो; क्योंकि बादशाहकी बेटी जहांआरा दाराकी मददगार हर वक्त बादशाहके पास मौजूद रहती थी. शाहजहांने दाराके इशारेसे या अपने शकसे शायस्ताखांको कैद किया, लेकिन् दो दिनके बाद उसे छोड़दिया. औरंगज़ेब ने एक अर्ज़ी इस मज़्मूनकी अपने बापको लिखी, कि- मेरा इरादा तो आपकी सिहतपुर्सीको आनेका था, क्योंकि आपकी बीमारीकी कई तरहसे ख़राब ख़बरें सुनीगई, मैं हर्गिज़ लड़ाई करना नहीं चाहता था, लेकिन् राजा जशवन्तसिंह ने बे अक्ली और गुस्ताखीसे मुझे उज्जैनके पास रोका, मैं लाचार उसे सज़ा देकर आगरेकी तरफ़ रवाना हुआ, तो बेवकूफ़ दाराने फ़सादके इरादेसे फ़ौज लेकर मुझे रोका, जिसका फल जैसा चाहिये था, वैसा उसे भी मिला, और मैं लाचार हूं, जो तक्दीरमें था, हुआ.

ता० १० रमज़ान [ ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ता० १२ जून ] को समूनगरसे रवाना होकर नूरमन्ज़िल बाग़में पहुंचा, जो आगरेसे तीन मील है. वहां शायस्ताखां व मीर जुम्लाका बेटा मुहम्मद अमीनखां औरंगज़ेबसे आमिले. दूसरे दिन उसकी बहिन जहांआरा बेगम, जो शाहजहांके दिलकी मुख्तार थी, शाहज़ादोंके पास नसीहत करनेको आई, लेकिन् उसकी नसीहतोंका असर, जैसा कि चाहिये था, न हुआ; वह पीछे अपने बापके पास गई- शाहजहांने दुबारा एक ख़त नसीहतों के साथ और एक तलवार शाही सिलहख़ानेसे उम्दा क़िस्मकी, जिसका नाम आलमगीर था, औरंगज़ेबके पास भेजी. औरंगज़ेबने उसे अच्छा शकुन समझकर रखलिया, और दिलमें इरादा किया, कि अगर मैं बादशाह हुआ, तो इसीके नामसे अपना आलमगीर ख़िताब इख्तियार करूंगा; इसके बाद आगरेके क़िले पर क़ब्ज़ा किया, और मथुरामें मुरादको कैद करलिया, दाराशिकोहको मारा, शुजाअ्को शिकस्त दी, और आप "आलमगीर" नामसे बादशाह बना. यह बयान मौक़ेपर आगे लिखा जायगा.

इस समयसे औरंगज़ेब ( आलमगीर ) को बादशाह कहना चाहिये, शाहजहां आगरेके क़िलेमें नज़र क़ैद रहा, लेकिन् बाज़े आदमी जो आलमगीरकी बदनामी करनेके लिये शाहजहांको सख्त क़ैद रखना लिखते हैं, वह नादुरुस्त है, उसको सिर्फ़ ग़ैर आदमियोंसे मिलने और आगरेके क़िलेसे बाहर जानेकी मनाई थी. वह क़िलेमें आरामके साथ रहता, और जो चीज़ चाहता, वही हाज़िर कीजाती थी.

शाहजहां हिजी १०७६ ता० २६ रजब [वि० १७२२ माघ कृष्ण १२ = ई० १६६६ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को पेचिश और पेशाब बंद होनेकी बीमारीसे मरगया, और आगरा मक़ामपर मुम्ताज़ महलके रौज़ेमें दफ़्न हुआ.

इस बादशाहका क़द मंझोला, रंग गेहुआं कुछ पीलापन लिये हुए, मंझली पेशानी, डाढ़ीमें दहिनी तरफ़ एक तिल, भौं अलग अलग, आंखें मंझली व सफ़ेद, पुतली सियाह, दहिनी आंखकी पलकपर तिल था, सीधी और बड़ी नाक, बाई आंख और नाकके बीचमें एक मस्सा, कान मंझले. मुंहफाड़ भी मंझली, गमेहीं होंठ, छोटे छोटे मिले हुए दांत, मीठी आवाज़, और तुर्की, फ़ार्सी, हिन्दीमें अच्छी तरह बात चीत करता था. डाढ़ी एक मुठ्ठीसे ज़ियादह लंबी कभी नहीं रक्खी. गर्दन मंझली, सीना कुछ चौड़ा, हाथ मंझले. अंगुलियां न कड़ी न नर्म और दहिने हाथकी अंगुलीमें दो तीन तिल थे.

यह बादशाह पहिले शाहज़ादगीके दिनोंमें बहादुर और लड़ाईका शौक़ीन था. लेकिन् तरूतपर बैठनेके बाद अय्याश होगया, यह नर्म दिल और सख़ी तबीअत था. परन्तु कभी कभी सख़्ती भी करता, जैसा कि हैरिसके सफ़र-नामोंकी किताबकी पहिली जिल्दके ७६३ पृष्ठमें जॉन ऐल्बर्ट डी मेन्डेल्स्लो अपने हालमें लिखता है, कि "जब मैं हिन्दुस्तानका सफ़र करने आया, तो वहां शाह खुर्रमकी हुकूमत थी, जो हर रोज़ शेर हाथी चीते वगैरह वहशी जानवरोंकी लड़ाई और अक्सर उन जानवरोंके साथ आदमियोंकी लड़ाई भी देखता था. अपने बेटेके जन्मदिन पर एक शेर बबर और एक बाघकी लड़ाई देखनेके लिये बैठा था; वह दोनों आपसमें लड़कर बहुत घायल हुए, तब बादशाहके हुक्मसे यह इश्तिहार दियागया, कि जिस किसीकी इतनी हिम्मत हो, कि सिर्फ़ तलवार और ढाल लेकर इनमेंसे एक जानवरके साथ लड़े, तो उसको इस जानवरके हरादेनेपर ख़ां का ख़िताब मिलेगा. तीन हिन्दुस्तानी तय्यार हुए, और उनमेंसे एक आदमी एक ज़बरदस्त शेरसे लड़ने लगा; थोड़ी देर तक ख़ूब लड़ा, और जब वह जानवर उसके बाएं हाथकी तरफ़ ज़ोरसे झपटा, जिसमें उसकी ढाल थी, तो उसके बोझसे ढाल गिरी; आदमीने अपनी जान ख़तरेमें देखकर कमरसे कटार निकाला, और शेरके जबड़ेमें घुसा दिया; इससे शेर उसे छोड़कर जाने लगा, लेकिन् उस आदमीने उसका पीछा किया, और मारकर ज़मीनपर गिरादिया. बादशाह उससे ख़ुश न हुआ, बल्कि उसपर ज़ियादह गुस्सा किया, क्योंकि तलवार और ढालके अलावा उसने कटारका इस्तेमाल किया. बादशाहने हुक्म दिया, कि उस आदमीका पेट चाक किया जावे, और उसकी लाश

सारे शहरके लोगोंको दिखलाई जावे. फिर दूसरा आदमी भी एक बाघसे लड़ने को तय्यार हुआ, लेकिन् जानवरने उसकी गर्दन पकड़कर मारडाला. तीसरा आदमी अपने साथियोंकी बद क़िस्मतीसे बिल्कुल न डरा, और बड़ी दिलेरीके साथ उसने शेरको मारलिया; पहिले एक वारमें उसके दोनों पंजे काटडाले थे; उसकी बहादुरीसे बादशाह बहुत खुश हुआ, और ख़ांका ख़िताब व एक कलाबत्तूनी पोशाक उसे अपने हाथसे बख़्शी–"

इसी तरह बादशाहके ज़ियादह आराम तलब और बेख़बर होजानेके सबब उसके नौकर भी अक्सर जुल्म किया करते थे– जैसे कि वही मुसाफ़िर इसी किताबके ७५९ पृष्ठमें गुजरातका हाल लिखता है– कि

"हिज्री १०४८ ता० ७ जमादियुस्सानी [ वि० १६९५ आश्विन शुक्ल ९ = ई० १६३८ ता० १८ ऑक्टोबर ] को अहमदाबादके हाकिम अरबख़ां की मुलाक़ातको मैं एक अंग्रेज़ सौदागरके साथ गया, वह ख़ां एक बाग़में ठहराहुआ था. एक घंटे बातचीत करने बाद हम लोगोंकी दावत की. ता० ९ जमादियुस्सानी आश्विन शुक्ल ११ = ता० २० ऑक्टोबर ] को दूसरी दफ़ा मुलाक़ात करनेके लिये गया, वह उसी जगहमें था, उसकी बात चीत शाह सफ़ीके बाबत होती रही, और उसके बारेमें यह पूछा, कि उसकी संगदिली अभीतक क़ायम है? मैंने जवाब दिया, कि ज़ियादा उम्र होनेके सबब उसके मिज़ाजकी तेज़ी तो कुछ कम हुई है; तब उसने कहा, कि ख़ान्दानी जुल्म और संगदिली उसके दादाके वक़्तसे चलीआती है.

खाना खानेके बाद हम लोग ख़ांसे रुख़्सत हुए; एक दिन अंग्रेज़ी और डच कारख़ानेके दो ख़ास दारोग़ोंको दावतके लिये बुलवाया, और उनको नाच दिखलानेके लिये तवाइफ़ोंका एक गिरोह तलब किया, उनका तमाशा होजानेके बाद दूसरा गिरोह बुलानेका हुक्म दिया, लेकिन् वह दूसरी जगह मश्गूल होनेके सबब न आसका, और बीमारीका बहाना किया, लेकिन् ख़ां उस उज़्रसे चुप न हुआ, दूसरी बार बुलावा भेजा; उसके नौकर फिर भी वही जवाब लेकर ख़ाली वापस आये, तो नौकरोंको सज़ा देनेका हुक्म दिया, वे अपने तई ख़तरेमें देखकर ख़ांके पैरों पड़े, और साफ़ बयान किया, कि बीमारीका सबब नहीं था, लेकिन् रुपयेके लालचसे उन औरतोंने हुक्मको नहीं माना. इसपर ख़ां हंसा, और फ़ौरन एक गारद भेजा, कि जाकर उन्हें गिरिफ़्तार कर लावे; जब वे गिरिफ़्तार होकर आईं, तब उनका सिर काटनेका हुक्म दिया, जिसकी फ़ौरन् तामील हुई."

शाहजहां बादशाहकी औलाद १६ थी, जिनमेंसे पुरहुनर बानू लड़की मुज़फ़्फ़र-

हुसैन मिर्ज़ा सफ़वीकी बेटीसे हिज्री १०२० ता० १२ जमादियुस्सानी [ वि० १६६८ श्रावण शुक्ल १३ = ई० १६११ ता० २३ ऑगस्ट ] को और शाहज़ादा जहां-अफ़रोज़ नाम मिर्ज़ा अब्दुर्रहीम ख़ानूख़ानांकी बेटीसे हिज्री १०२८ ता० १२ रजब [ वि० १६७६ आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० १६१९ ता० २६ जून ] में पैदा हुआ था, जो डेढ़ वर्षका होकर मर गया.

बाक़ी ८ बेटे और ६ बेटियें हमीदाबानू मुम्ताज़ महलसे पैदा हुई थीं, जिसका बयान इस तरहपर है-

( १ )- बादशाहज़ादी हूरनिसा बेगम हि० १०२२ ता० ८ सफ़र [ वि० १६७० चैत्र शुक्ल १० = ई० १६१३ ता० ३१ मार्च ] शनैश्चरके दिन पैदा हुई, जो तीन वर्षके बाद मरगई.

( २ )- जहां आरा शाहज़ादी, मश्हूर बेगम साहिब हि० १०२३ ता० २१ सफ़र [ वि० १६७१ वैशाख कृष्ण ७ = ई० १६१४ ता० १ एप्रिल ] शनैश्चर को पैदा हुई.

( ३ )- बड़ा शाहज़ादा मुहम्मद दारा शिकोह, हि० १०२४ ता० २९ सफ़र [ वि० १६७२ चैत्र शुक्ल १ = ई० १६१५ ता० ३० मार्च ] रवि वारको पैदा हुआ.

( ४ )- बादशाहज़ादा मुहम्मद शुजाअ़ बहादुर, हि० १०२५ ता० १८ जमादियुस्सानी [ वि० १६७३ श्रावण कृष्ण ४ = ई० १६१६ ता० ४ जुलाई ] शनैश्चरकी रातको पैदा हुआ.

( ५ )- बादशाहज़ादी रौशनराय बेगम, हि० १०२६ ता० २ रमज़ान [ वि० १६७४ भाद्रपद शुक्ल ४ = ई० १६१७ ता० ४ सेप्टेम्बर ] को पैदा हुई.

( ६ )- बादशाहज़ादा मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, हि० १०२७ ता० १५ ज़िल्क़ाद [ वि० १६७५ मार्गशीर्ष कृष्ण १ = ई० १६१८ ता० ४ नोवेम्बर ] रवि वारकी रातको पैदा हुआ.

( ७ )- बादशाहज़ादा उम्मेदबख़्श, हिज्री १०२९ ता० ११ मुहर्रम [ वि० १६७६ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० १६१९ ता० २१ डिसेम्बर ] बुध वारके दिन पैदा हुआ, और दो वर्ष बाद मरगया.

( ८ )- बादशाहज़ादी सुरय्याबानू बेगम, हिज्री १०३० ता० २० रजब [ वि० १६७८ आषाढ़ कृष्ण ६ = ई० १६२१ ता० ११ जून ] को पैदा हुई, और सात वर्ष बाद मरगई.

(९)- एक लड़का हिज्री १०३२ [ वि० १६८० = ई० १६२३ ] में पैदा होकर नाम रखनेसे पहिले थोड़े दिनोंमें मरगया.

(१०)- शाहज़ादा मुराद बख़्श, हिज्री १०३३ ता० २५ ज़िल्हिज [ वि० १६८१ कार्तिक कृष्ण ११ = ई० १६२४ ता० ९ ऑक्टोबर ] बुधकी रातको पैदा हुआ.

(११)- बादशाहज़ादा लुत्फ़ुल्लाह, हि० १०३६ ता० १४ सफ़र [ वि० १६८३ कार्तिक शुक्ल १५ = ई० १६२६ ता० ४ नोवेम्बर ] बुधकी रातको पैदा हुआ, और डेढ़ वर्ष बाद मरगया.

(१२)- बादशाहज़ादा दौलतअफ़ज़ा, हि० १०३७ ता० ४ रमज़ान [ वि० १६८५ वैशाख शुक्ल ६ = ई० १६२८ ता० १० मई ] बुध वारकी रात को पैदा हुआ, और एक वर्ष बाद मरगया.

(१३)- शाहज़ादी कुदसिया बेगम, हिज्री १०३९ ता० १० रमज़ान [ वि० १६८७ वैशाख शुक्ल १२ = ई० १६३० ता० २४ एप्रिल ] को पैदा हुई, और जल्दी ही मरगई.

(१४)- शाहज़ादी गौहर आरा बेगम, हिज्री १०४० ता० १७ ज़िल्क़ाद [ वि० १६८८ आषाढ़ कृष्ण ३ = ई० १६३१ ता० १७ जून ] बुध वारकी रातको पैदा हुई.

इनमेंसे शाहजहांकी बीमारीके वक्त हिज्री १०६८ [ वि० १७१५ = ई० १६५८ ] में चार शाहज़ादे दाराशिकोह, शुजाअ् बहादुर, औरंगज़ेब बहादुर और मुरादबख़्श ज़िन्दा थे.

औरंगज़ेबने तख़्तपर बैठकर दाराशिकोह और मुरादबख़्शको क़ैद होने बाद क़त्ल करादिया, और शुजाअ् भागकर अराकानमें मारागया.

---

शाहजहां बादशाहके मन्सब्दार सर्दारोंकी फ़िहरिस्त नीचे लिखीजाती है-

मन्सब्दारोंकी फ़िहरिस्त- सन् १०६८ हिज्री [ वि० १७१५ = ई० १६५८ ] तक.

बादशाहज़ादे.

(१) बड़ा शाहज़ादा मुहम्मद दाराशिकोह- साठ हज़ारी ज़ात, चालीस हज़ार सवार.

(२) बादशाहज़ादा शुजाअ् बहादुर- बीस हज़ारी ज़ात, पन्द्रह हज़ार सवार.

(३) बादशाहज़ादा मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर- बीस हज़ारी ज़ात, पन्द्रह हज़ार सवार.

( ४ )- शाहज़ादह मुराद बख़्श- पन्द्रह हज़ारी ज़ात, बारह हज़ार सवार.
( ५ )- शाहज़ादह दाराशिकोहका बेटा सुलैमानशिकोह- पन्द्रह हज़ारी ज़ात, आठ हज़ार सवार.
( ६ )- दाराका दूसरा बेटा फ़लक्शिकोह ( सिपह्रशिकोह )- आठ हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
( ७ )- शाहज़ादह शुजाअ़का बेटा ज़ैनुद्दीन- सात हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
( ८ )- शाहज़ादह औरंगज़ेबका बेटा मुहम्मद सुल्तान- सात हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

मन्सब्दार सर्दार

नौ हज़ारी.

( ९ )- यमीनुद्दौला आसिफ़्ख़ां ख़ानूख़ानां सिपहसालार- नौ हज़ारी ज़ात व सवार.

सात हज़ारी.

( १० )- ख़ानेदौरां बहादुर नुस्रतजंग- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
( ११ )- अ़ली मर्दानख़ां अमीरुल उमरा- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
( १२ )- इस्लामख़ां- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
( १३ )- सईदख़ां बहादुर ज़फ़रजंग- सात हज़ारी ज़ात, व सवार.
( १४ )- मुल्ला सादुल्लाख़ां- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
( १५ )- महाबतख़ां ख़ानूख़ानां- सात हज़ारी ज़ात, सात हज़ार सवार.
( १६ )- अ़ब्दुल्लाख़ां बहादुर ज़फ़रजंग- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( १७ )- ख़ानेजहां लोदी- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( १८ )- सय्यद ख़ानेजहां बारह- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( १९ )- अफ़्ज़लख़ां- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( २० )- जोधपुरका महाराजा जशवन्तसिंह राठौड़- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( २१ )- रुस्तमख़ां बहादुर- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.

छः हज़ारी.

( २२ )- सय्यद जलाल बुख़ारी- छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( २३ )- ख़्वाजह अबुलहसन- छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( २४ )- शायस्ताख़ां ख़ानेजहां- छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
( २५ )- मिर्ज़ा राजा जयसिंह कछवाहा आंबेरका- छः हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.

(२६) - ख़ानेज़मां बहादुर- छः हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(२७) - क़िलीचख़ां बहादुर- छः हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.

पांच हज़ारी.

(२८) - वज़ीरख़ां- पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(२९) - शाह नवाज़ख़ां- पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३०) - उदयपुरका महाराणा जगत्सिंह - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३१) - जोधपुरका राजा गजसिंह राठौड़ - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३२) - राजा विट्ठलदास गौड़ अजमेरका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३३) - सफ़्दरख़ां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३४) - सिपहदारख़ां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३५) - राणा राजसिंह (१) उदयपुरका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३६) - ख़वासख़ां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३७) - राव रत्नसिंह हाड़ा बूंदीका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३८) - राजा जुझारसिंह बुंदेला ओर्छेका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३९) - जाफ़रख़ां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४०) - मालूजी (मरहटा) दक्षिणी - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४१) - ऊदाजी राम (मरहटा) दक्षिणी - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४२) - ख़लीलुल्लाख़ां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४३) - असालतख़ां - पांच हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४४) - मिर्ज़ा अलीतरख़ां - पांच हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४५) - राजा रायसिंह सीसोदिया टोंडेका - पांच हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(४६) - मुअ़ज़्ज़मख़ां मीरजुम्ला - पांच हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

चार हज़ारी.

(४७) - सय्यद शजाअ़तख़ां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४८) - मक्रमतख़ां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४९) - नजाबतख़ां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५०) - मोतक़िदख़ां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.

---

(१) इनको बादशाह तो अपनी तरफ़से मन्सब्दारोंमें शुमार करते थे और यह अपनेको आज़ाद जानते थे. हक़ीक़तमें यह न नौकरीमें जाते न घोड़ोंकी गिनती करवाते, लेकिन् मुसल्मान मुवर्रिख़ोंने बड़प्पन दिखलानेको फ़िहरिस्तमें दर्ज करदिया, इस लिये हमने भी लिखा है.

( ५१ ) – सैफ़ख़ां – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
( ५२ ) – सादिक़ख़ां – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
( ५३ ) – दर्याख़ां रुहेला – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
( ५४ ) – क़ासिमख़ां – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
( ५५ ) – राव शत्रुशाल हाड़ा बूंदीका– चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
( ५६ ) – नज़र बहादुर– चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
( ५७ ) – रशीदख़ां– चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
( ५८ ) – सर्दारख़ां– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ५९ ) – राजा भारसिंह बुंदेला– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ६० ) – जांसुपारख़ां– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ६१ ) – शाहबेगख़ां– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ६२ ) – राव अमरसिंह राठौड़ नागौरका– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ६३ ) – राव सूरसिंह बीकानेरका– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ६४ ) – रूपसिंह राठौड़ कृष्णगढ़का– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ६५ ) – सफ़्दरख़ां– चार हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
( ६६ ) – सलाबतख़ां बख़्शी– चार हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
( ६७ ) – मोतमदख़ां– चार हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
( ६८ ) – हमीरराय– चार हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
( ६९ ) – एतिक़ादख़ां– चार हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
( ७० ) – अब्दुर्रहमान– चार हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.

तीन हज़ारी.

( ७१ ) – ज़ुल्फ़िक़ारख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ७२ ) – कारतलबख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ७३ ) – सज़ावारख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
( ७४ ) – माधवसिंह हाड़ा कोटेका– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ७५ ) – पुर्दिलख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ७६ ) – जोहरख़ां– तीन हज़ारी ज़ात तीन हज़ार, सवार.
( ७७ ) – राजा बांधू अनूपसिंह बघेला रीवांका–तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
( ७८ ) – राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ अजमेरका– तीन हज़ारी ज़ात. तीन हज़ार सवार.
( ७९ ) – सआदतख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
( ८० ) – जहांगीर क़ुलीख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.

(८१) – अज़ीज़ुल्लाखां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८२) – महेशदास राठौड़ रतलामके राजाओंका बुज़ुर्ग और जोधपुरके राजा उदयसिंहका पोता– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८३) – शाह बाज़खां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८४) – मीर नूरुल्ला – तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८५) – वकलानेका भरजी – तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८६) – ज़ुल्क़द्रखां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८७) – मिर्ज़ा हसन– तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(८८) – महाबतखांका बेटा लुहरास्पखां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(८९) – अब्दुर्रहीमका पोता मिर्ज़ाखां– तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९०) – अब्दुल्लाखांका भतीजा ग़ैरतखां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९१) – अमीरखां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९२) – शैख़ फ़रीद – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९३) – आंबेरके राजा जयसिंहका बेटा रामसिंह – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९४) – राव मुकुन्दसिंह हाड़ा कोटेका – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९५) – राव करण बीकानेरी – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९६) – शाह कुलीखां – तीन हजारी जात, दो हजार सवार.
(९७) – मुर्तज़ाखां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९८) – ज़फ़रखां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९९) – मऊका राजा जगत्सिंह– तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१००) – फ़ीरोज़खां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०१) – ऊदाजीराम (मरहटा) दक्षिणी– तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०२) – पर्सूजी मरहटा सितारे वाला घोसला – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०३) – हमीदखां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०४) – ज़ार्दवराय (मरहटा) दक्षिणी– तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०५) – हवशखां– तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०६) – मनकूजी वनालकर (मरहटा)– तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०७) – रावत राय (मरहटा) दक्षिणी– तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०८) – सय्यद हिज़ब्रखां– तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०९) – ताहिरखां – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(११०) – कर्मसी राठौड़का बेटा सर्दारसिंह – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१११) – असदख़ां मामूरी – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(११२) – राजा अनूपसिंह – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(११३) – आक़िलख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११४) – मुहम्मद अमीनख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११५) – राजा मनरूप कछवाहा – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११६) – वीरमदेव सीसोदिया ( शाहपुरेके सुजानसिंहका छोटा भाई और महाराणा पहिले अमरसिंहका पोता ) – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११७) – फ़ाज़िलख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(११८) – हकीम मसीहुज़्ज़मां – तीन हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(११९) – तक़र्रुबख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.

ढाई हज़ारी.

(१२०) – मुर्शिदकुलीख़ां तुर्कमान – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२१) – अहमदख़ां नियाज़ी – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२२) – शम्शेरख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२३) – ख़ादीदादख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२४) – जांनिसारख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२५) – सफ़्शिकनख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२६) – एवज़ख़ां क़ाक़शाल – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२७) – राजा देवीसिंह बुंदेला – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२८) – नाम्दारख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२९) – लश्करख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१३०) – ख़िद्मतपरस्तख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१३१) – दिलावरख़ां दक्षिणी – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१३२) – शम्सख़ां दक्षिणी – ढाई हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१३३) – तर्बियतख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१३४) – हयातख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३५) – फ़ाख़िरख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३६) – सबलसिंह सीसोदिया ( शक्तावत भींडर इलाके मेवाड़का ) – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३७) – अब्दुर्रहीम उज़्बक – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३८) – नवाज़िशख़ां – ढाई हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.

(१३९)– जीवनखां – ढाई हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(१४०)– सय्यद हिदायतुल्ला – ढाई हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.

दो हज़ारी.

(१४१)– अरबखां– दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४२)– उज़्बकखां – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४३)– कज़्ज़ाकखां – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४४)– बाक़ीखां – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४५)– मुबारकखां – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४६)– मुहम्मदज़मां – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४७)– एथ्वीराज राठौड़ – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४८)– राजा राजरूप पंजाबी नूरपुर कांगड़ाका – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१४९)– राजा सुजानसिंह बुंदेला – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१५०)– इरादतखां – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१५१)– ख्वाजह बर्खुर्दार – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१५२)– गिर्धरदास गौड़ अजमेरका – दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१५३)– महेशदासका बेटा रत्न राठौड़ रतलामका राजा– दो हज़ारी ज़ात, सोलह सौ सवार.
(१५४)– इख़्लासखां – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१५५)– जाहिद्खां कोका – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१५६)– एहतिमामख़ां – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१५७)– इनायतुल्ला – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१५८)– रहमतखां – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१५९)– अहमदबेगखां – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१६०)– राजा सूरजसिंहका बेटा सबलसिंह राठौड़ – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१६१)– ज़बरदस्तखां – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१६२)– मुख़्तारखां – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१६३)– रामपुरेका राव दूदा चन्द्रावत – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१६४)– अर्जुन गौड़ शिवपुरका – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१६५)– राजा शिवराम – दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६६)- अबुल्मआली - दो हज़ारी ज़ात, चौदह सौ सवार.
(१६७)- दीनदारख़ां - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१६८)- बिहारीसिंह कछवाहा - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१६९)- राव रूपसिंह चन्द्रावत रामपुरेका - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७०)- राजा रोज़ अफ़्ज़ूं - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७१)- अब्दुल्हादी - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७२)- आतिशख़ां हबशी - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७३)- हाजी मन्सूर - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७४)- बख़्तावरख़ां - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७५)- अब्दुर्रहीमबेग - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७६)- राजा रामदास नर्वरी - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७७)- शेरख़ां - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७८)- पीथूजी (मरहटा) दक्षिणी - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७९)- सुजानसिंह सीसोदिया शाहपुरेका - दो हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(१८०)- ख़ुश्हालबेग - दो हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(१८१)- दयानतख़ां - दो हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(१८२)- महदीकुलीख़ां - दो हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(१८३)- हक़ीक़तख़ां - दो हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.

डेढ़ हज़ारी.

(१८४)- मुहम्मद हुसेन - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८५)- सय्यद अब्दुल्वह्हाब - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८६)- राय टोडरमल्ल - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८७)- यक्का ताज़ख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८८)- अमानबेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८९)- बहादुरख़ां रुहेला - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९०)- इसफ़िन्दयारबेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९१)- अब्दुर्रहमान - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९२)- डूंगरपुरका रावल पूंजा - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९३)- कुतुबुद्दीनख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, चौदह सौ सवार.
(१९४)- राजा बदनसिंह भदौरिया - डेढ़ हज़ारी ज़ात, चौदह सौ सवार.

(१९५)- ख़ानह्ज़ादख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१९६)- शरीफ़ख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१९७)- सरन्दाज़ख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१९८)- राजा गजसिंहका पोता नागौरका राव रायसिंह - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१९९)- मिर्ज़ा मुरादकाम् - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२००)- जांबाज़ख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०१)- लुत्फुल्लाह - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०२)- भीम राठौड़ - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०३)- दौलतख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०४)- राजा सूरजसिंहका भाई हरिसिंह राठौड़ - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०५)- राजा द्वारिकादास कछवाहा - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०६)- उज्जैनका राजा प्रताप - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०७)- राजा अमरसिंह नर्वरी - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०८)- अल्लाहकुली - डेढ़ हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२०९)- चन्द्रमन बुंदेला - डेढ़ हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२१०)- अब्दुल्लाबेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२११)- शम्सुद्दीन - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१२)- महलदारख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात सात सौ सवार.
(२१३)- मुहसिनख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१४)- हिसामुद्दीनख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१५)- राणा कर्णसिंहका बेटा ग़रीबदास सीसोदिया (कैरियावालोंका बुज़ुर्ग) - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१६)- यादगार हुसैनख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१७)- कृष्णसिंह राठौड़का बेटा जगमाल - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१८)- आक़ा अफ़ज़ल - डेढ़ हज़ारी ज़ात छः सौ सवार.
(२१९)- कर्मसी राठौड़का बेटा श्यामसिंह - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२०)- कंवर मक़ामका ज़मीदार संग्राम - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२१)- ख़िद्मतख़ां ख्वाजासरा - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२२)- ज़ुल्फ़िक़ार बेग तुर्कमान - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.

(२२३)- रायत्रा दक्षिणी - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२४)- मिर्ज़ा सुल्तान् - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२५)- जमालखां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२६)- खुश्हालवेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२७)- नवाज़िशखां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२८)- रहमतखां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२२९)- हकीम गीलानी - डेढ़ हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.
(२३०)- मीर अब्दुल्करीम - डेढ़ हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(२३१)- हकीम मोमिन् - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.

एक हज़ारी.

(२३२)- आगाहखां - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३३)- खानेदौरांका वेटा सय्यद मुहम्मद - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३४)- करमुल्लाह - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३५)- सुल्तान् यार - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३६)- हिम्मतखां कोका - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३७)- लश्करखांका वेटा लुत्फुल्लाह - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३८)- सय्यद असदुल्लाह - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३९)- गोपालसिंह कछवाहा - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४०)- नजफ़अली - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४१)- बांसवाड़ेका रावल समर्सी - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४२)- पलामूका प्रताप चर्वा - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४३)- वहरामखां - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२४४)- राजा जयसिंहका वेटा कीर्तिसिंह - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार..
(२४५)- शादमां - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२४६)- सय्यद शेखन् वारह - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२४७)- खलीलवेग - एक हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२४८)- उस्मानखां रुहेला - एक हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२४९)- दिल्दोस्तखां - एक हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२५०)- रहमान्यार - एक हज़ारी ज़ात, साढ़े सात सौ सवार.
(२५१)- अबू मुहम्मद कम्बो - एक हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२५२)- रावल सवलसिंह जैसलमेरी - एक हज़ारी ज़ात, सात्त सौ सवार.

(२५३)- सादड़ी इलाके मेवाड़का रायसिंह झाला - एक हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२५४)- नसीबख़ां - एक हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२५५)- मीर जाफ़र - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५६)- राजसिंह राठौड़ - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५७)- भगवानदास बुंदेला - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५८)- ज़ियाउद्दीन - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५९)- नज़ीरबेग - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६०)- अब्दुल्क़ादिर - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६१)- बलभद्र शैखावत - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६२)- राजा हरनारायण बड़गूजर - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६३)- रूपचन्द्र ग्वालियरी - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६४)- पर्वरिशख़ां - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६५)- भोजराज दक्षिणी - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६६)- कृष्णसिंह राठौड़का बेटा भारमल्ल कृष्णगढ़ वाला - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६७)- जयमल्ल मेड़तियाका पोता राजा गिर्धर - एक हज़ारी ज़ात, छःसौ सवार.
(२६८)- चैतसिंह राठौड़ - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६९)- मित्रसेन गौड़ - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७०)- मुहम्मद अली - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७१)- दर्वेश बेग - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७२)- सुजानसिंह - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७३)- नाज़िरख़ां - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७४)- मुहम्मद हाशिम - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७५)- हिम्मतख़ां काबुली - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७६)- ताहिरख़ां - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७७)- हुसैनबेग - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७८)- मीर ख़लील - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७९)- सय्यद ख़ादिम बारह - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२८०)- राय तिलोकचन्द कछवाहा - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२८१)- राजा कृष्णसिंह तंवर - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.

(२८२)- गोरधनदास राठौड़ - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२८३)- सिकन्दरख़ां - एक हज़ारी ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(२८४)- सुल्तान्नज़र - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८५)- लतीफ़ख़ां नक़्शबन्दी - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८६)- तुर्कताज़ख़ां - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८७)- सय्यद मक्बूले आलम - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८८)- शफ़ीउल्लाह बरलास - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८९)- मुहम्मद सफ़ी - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९०)- असालतख़ां - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९१)- मुहम्मद मुराद सल्दोज़ - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९२)- किश्तवारका राजा कुंवर सेन - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९३)- चंपाका राजा पृथ्वीचन्द्र - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९४)- यह्याख़ां - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९५)- इस्हाक़बेग - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९६)- दानादिल - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९७)- सय्यद मुनव्वर - एक हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.
(२९८)- फ़िरासतख़ां - एक हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.
(२९९)- तश्रीफ़ख़ां - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३००)- राय काशीदास - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३०१)- सय्यद अली - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३०२)- मीर महमूद - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३०३)- राय माईदास - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०४)- अमानतख़ां - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०५)- फ़िदाईख़ां - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०६)- यकदिलख़ां - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०७)- हिदायतुल्ला - एक हज़ारी ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३०८)- क़ाज़ी मुहम्मद अस्लम - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.
(३०९)- हकीम मोमिना - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.
(३१०)- बीकानेरके राजाकी ख़वासका बेटा राय बनमालीदास - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.
(३११)- हकीम फ़त्हुल्ला मुइज़्ज़ुलमुल्क - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.

(३१२)- मुहम्मद मुराद - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.

नौ सौ.

(३१३)- राजा मानसिंह तंवर ग्वालियरी - नौ सौ ज़ात, नौ सौ सवार.
(३१४)- सूफ़ी बहादुर - नौ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३१५)- जाफ़र क़दीमी - नौ सौ ज़ात, साढ़े सात सौ सवार.
(३१६)- जगराम कछवाहा - नौ सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३१७)- शिज़ाख़ां - नौ सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३१८)- अब्दुल्हादी - नौ सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३१९)- राय दयालदास झाला गंगराड़का, ( झालावाड़के इलाक़े कूंडला वालोंका बुज़ुर्ग ) - नौ सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३२०)- इनायतुल्ला - नौ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३२१)- अली कुली - नौ सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(३२२)- आदिल्ख़ां - नौ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३२३)- मुहम्मद तक़ी - नौ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३२४)- राव हरचन्द कछवाहा - नौ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३२५)- राजा जयसिंहका बेटा माहरू - नौ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३२६)- अब्दुल्ख़ालिक़ - नौ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३२७)- अब्दुल्करीम थानेसरी - नौ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३२८)- मुहम्मद शरीफ़ - नौ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३२९)- रशीदा खुश नवीस - नौ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३३०)- नाम्दारख़ां - नौ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३३१)- मीर जाफ़र बल्ख़ी - नौ सौ ज़ात, पचास सवार.

आठ सौ.

(३३२)- सय्यद लुत्फ़ अली - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३३)- सय्यद हसन - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३४)- जालौरका मुजाहिदख़ां ( पालनपुर वालोंका बुज़ुर्ग ) - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३५)- नरसिंहदास - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३६)- हमीरसिंह - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३७)- क़ियामख़ां - आठ सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३३८)- कृपाराम गौड़ - आठ सौ ज़ात, सात सौ सवार.

(३३९) - अबुल्बक़ा - आठ सौ ज़ात, छ : सौ सवार.
(३४०) - निज़ामख़ां - आठ सौ ज़ात, छ : सौ सवार.
(३४१) - उग्रसेन कछवाहा - आठ सौ ज़ात, छ : सौ सवार.
(३४२) - सैफ़ुल्ला - आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४३) - बहादुरख़ां बाबी - आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४४) - लक्ष्मीसेन चहुवान - आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४५) - राजा उदयभान - आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४६) - अब्दुल्अज़ीज़ आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३४७) - रनबाज़ख़ां कम्बो - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३४८) - सय्यद अब्दुल् माजिद अमरोहा - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३४९) - इन्द्रगढ़का राजा इन्द्रशाल हाड़ा - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५०) - सय्यद लुत्फ़अली - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५१) - राय जगन्नाथ राठौड़ - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५२) - राजा उदयसिह तंवर - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५३) - सय्यद अमजद - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५४) - सय्यद हामिद - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५५) - अलीअक्बर - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५६) - मनोहरदास गौड़ - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५७) - कोटाके राव माधवसिंहका दूसरा बेटा मोहनसिंह हाड़ा - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५८) - अजबसिंह कछवाहा - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५९) - अमरकोटका राना जोधा - आठ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३६०) - नाहर सोलंखी - आठ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३६१) - यादगार मसऊद - आठ सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३६२) - फ़तहसिंह सीसोदिया (बान्सी इलाके मेवाड़के रावत केसरीसिंहका बेटा) - आठ सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३६३) - क़ाज़ी निज़ामा - आठ सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(३६४) - बेबदलख़ां - आठ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३६५) - अक़ीदतख़ां - आठ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३६६) - अब्दुर्रज़ाक़ - आठ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३६७) - मीर ग़यास - आठ सौ ज़ात, पचास सवार.

(३६८)- रिज़्कुल्ला - आठ सौ ज़ात, चालीस सवार.

सात सौ.

(३६९)- सय्यद सालार बारह - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७०)- सय्यद अब्दुर्रहमान - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७१)- मुज़फ़्फ़र सर्वानी - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७२)- राजा बिहरोज़ - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७३)- नरूका चन्द्रभान - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७४)- सद्रख़ां - सात सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३७५)- नस्रुल्ला अरब - सात सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३७६)- संग्राम कछवाहा - सात सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३७७)- जलालुद्दीन - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३७८)- नसीरुद्दीन - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३७९)- बल्लू चहुवान - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३८०)- सुन्दरदास शक्तावत सीसोदिया (सावर ज़िले अजमेरका ठाकुर) - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३८१)- नेकनामख़ां - सात सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३८२)- फ़त्हसिंह कछवाहा - सात सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३८३)- रावत नारायणदास शक्तावत सीसोदिया (बान्सी इलाके मेवाड़के रावत अचलदासका बेटा) - सात सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३८४)- शाहअली - सात सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(३८५)- इब्राहीम - सात सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(३८६)- इस्लामख़ां - सात सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३८७)- आरिफ़बेग - सात सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३८८)- राय सभाचन्द - सात सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३८९)- मुऱ्कीबेग - सात सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(३९०)- रशीदा - सात सौ ज़ात, साठ सवार.
(३९१)- सय्यद अब्दुस्समद - सात सौ ज़ात, पचास सवार.
(३९२)- मुहम्मद अमीन - सात सौ ज़ात, तीस सवार.

छः सौ.

(३९३)- मुहम्मद शाह - छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९४)- सय्यद अब्दुल्ला - छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.

(३९५) - डूंगरपुरका रावल गिर्धरदास - छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९६) - चतुरभुज सोनगरा - छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९७) - राव मनोहरका पोता पेमचन्द शेख़ावत - छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९८) - जाफ़रख़ां तुर्किस्तानी - छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९९) - सय्यद अब्दुल्मुनइम - छः सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४००) - रुहुल्ला ताश्कन्दी - छः सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(४०१) - सय्यद सुलैमान बारह - छः सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४०२) - सरमस्त बड़गूजर - छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०३) - इलाहयारका बेटा माहयार - छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०४) - प्रद्युम्न - छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०५) - अहमद क़ासिम् - छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०६) - पाइन्दाबेग - छः सौ ज़ात, दो सौ अस्सी सवार.
(४०७) - सय्यद कुतुब - छः सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४०८) - खुदादोस्त - छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४०९) - अमीरबेग - छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४१०) - अमरसिंहका बेटा अक्बरसिंह - छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४११) - कोटावाले माधवसिंह हाड़ाका बेटा किशोरसिंह - छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४१२) - जलालुद्दीन महमूद - छः सौ ज़ात, दो सौ सवार
(४१३) - पृथ्वीराज राठोड़का बेटा केसरीसिंह - छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४१४) - मस्ऊद बेग - छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१५) - जुल्फ़ीबेग - छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१६) - होशदारख़ां - छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१७) - राठोड़ मुकुन्ददास चांपावत पालीका - छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१८) - हिदायतुल्ला - छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१९) - मीर बाक़िर - छः सौ ज़ात, सवा सौ सवार.
(४२०) - ख़्वाजह मुहम्मद - छः सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(४२१) - मीर मुअज़्ज़म - छः सौ ज़ात, साठ सवार.
(४२२) - ख़्वाजह बख़्शी शामलू - छः सौ ज़ात, पचास सवार.
(४२३) - मीर नूरुद्दीन - छः सौ ज़ात, चालीस सवार.
(४२४) - क़ाज़ी खुशहाल - छः सौ ज़ात, तीस सवार.

(४२५)- ख्वाजह मीना - छः सौ ज़ात, तीस सवार.
(४२६)- मीर स्वालिह - छः सौ ज़ात, बीस सवार.
(४२७)- शैख़ फ़ज़्लुल्लाह - छः सौ ज़ात, बीस सवार.

पांच सौ.

(४२८)- असदुल्ला - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४२९)- हुसैनकुली आग़र - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३०)- शरफ़जानबेग तुर्कमान - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३१)- क़ासिमअली - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३२)- राजा कृष्णसिंह तंवर - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३३)- चतुरभुज सोनगरा - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३४)- सय्यद अब्दुस्समद - पांच सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(४३५)- पृथ्वीराज भाटी - पांच सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(४३६)- क़रामान - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४३७)- मुहम्मद ज़मां अलीत - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४३८)- बहादुर कम्बो - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४३९)- राजा जगमन जादव - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४४०)- सय्यद इख़्तियारुद्दीन - पांच सौ ज़ात, तीन सौ चालीस सवार.
(४४१)- मीर अहमद - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४२)- लुत्फ़ुल्लाह शीराज़ी - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४३)- अली अक्बर सौदागर - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४४)- हमीरसिंह सीसोदिया ( जिसकी औलाद अब देवगढ़ इलाके मेवाड़की जागीरदार है ) - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४५)- अल्लाह दोस्त काशग़री - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४६)- हसनअली - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४७)- अबालैल् अरब - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४८)- हाजीबेग बरलास - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४९)- शिताबख़ां - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५०)- शैख़ अबुल् फ़ज़्लका पोता पिशोतन - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५१)- गोविन्ददास राठौड़ - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५२)- महेशदास राठौड़का भाई जगन्नाथ - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५३)- राजा मानसिंहका पोता पृथ्वीसिंह - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.

(४५४)- राजा मानसिंहका पोता कृष्णसिंह - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५५)- शक्तिसिंह चहुवान - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५६)- नईमबेग - पांच सौ ज़ात, दो सौ बीस सवार.
(४५७)- नजफ़ अली - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४५८)- याकूबबेग - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६९)- राजा नरसिंहदेव बुंदेलेका बेटा बेनीदास - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६०)- मीर फ़त्ताह - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६१)- दर्या पठान - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६२)- फ़र्हाद बिलोच - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६३)- अबुल्बका - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६४)- फ़तहुल्ला बर्लास - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६५)- जवाहिरखां - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६६)- तुग़रिल अर्सलां - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६७)- इब्राहीम हुसेन तुर्कमान - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६८)- इनायतखां रुहेला - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७९)- राजा मानसिंहका पोता उग्रसेन कछवाहा - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७०)- राजा विक्रमादित्यका बेटा मानसिंह - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७१)- राजा विठ्ठलदासका भाई मनोहरदास - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७२)- बलभद्र शेखावतका बेटा कन्हई - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७३)- अलीबेग ज़ीक - पांच सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४७४)- जमालुद्दीन - पांच सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४७५)- मुत्तलिबखां - पांच सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४७६)- सईदखां बहादुरका बेटा फ़तहुल्ला - पांच सौ ज़ात, एक सौ पच्चीस सवार.
(४७७)- शेख़ मुअज़्ज़म - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४७८)- अताउल्ला ख़ाफ़ी - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४७९)- मुहम्मद हुसेन तैराही - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८०)- सलाबतखांका बेटा मुहम्मद मुराद - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८१)- ग़ाज़ी बेग - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८२)- मीरक् हुसेन ख़ाफ़ी - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.

(४८३) – इस्माईल बेग ज़ीक – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८४) – सय्यद शिहाब बारह – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८५) – केसरीसिंह राठौड़ – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८६) – मुहसिन सफ़ाहानी – पांच सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(४८७) – मुईनुद्दीन राजगढ़ी – पांच सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(४८८) – मुहम्मद स्वालिह खुश्नवीस – पांच सौ ज़ात, साठ सवार.
(४८९) – अहदियोंका बख़्शी अस्करी – पांच सौ ज़ात, साठ सवार.
(४९०) – ख्वाजह नूरुल्लाह – पांच सौ ज़ात, पचास सवार.
(४९१) – सनाईबेग शामलू – पांच सौ ज़ात, पचास सवार.

## शेष संग्रह नम्बर–१.

श्रीरामोजेयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री ऐकलिंग प्रसादातु.

१ भाई पीमराज
धधवाड़ा हे दीधोजी १

॥ महाराजा धिराज महाराणा श्री जगत्सिंघजी आदेशातु गढ़वी पीमराज जात धधवाड्या कस्य १ गांम ठीकरच्यो वड़ो उदक आघाट करे मयाकीधो, दुवे श्रीमुख प्रतदुवे साह अखेराज लीषतं पंचोली केसोदास स्वदतं परदतं जे हरंत वीसंधरा षस्ट वरस से हसराणां वीस्टा अंजाईते क्रम संवत १६८५ व्रषे असाढ़ वदी ३ सुक्रे.

(४८३) – इस्माईल वेग ज़ीक – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८४) – सय्यद शिहाव वारह – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८५) – केसरीसिंह राठौड़ – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८६) – मुहसिन सफ़ाहानी – पांच सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(४८७) – मुईनुद्दीन राजगढ़ी – पांच सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(४८८) – मुहम्मद स्वालिह खुश्नवीस – पांच सौ ज़ात, साठ सवार.
(४८९) – अहदियोंका वख़्शी अस्करी – पांच सौ ज़ात, साठ सवार.
(४९०) – ख़्वाजह नूरुल्लाह – पांच सौ ज़ात, पचास सवार.
(४९१) – सनाईवेग शामलू – पांच सौ ज़ात, पचास सवार.

शेष संग्रह नम्बर–१.

श्रीरामोजेयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री ऐकलिंग प्रसादातु.

१ भाई पीमराज
धधवाड़ाहे दीधोजी १

॥ महाराजा धिराज महारांणा श्री जगत्सिंघजी आदेशातु गढ़वी पीमराज जात धधवाड्या कस्य १ गांम ठीकरयो वड़ो उदक आघाट करे मयाकीधो, दुवे श्रीमुख प्रतदुवे साह अखेराज लीपतं पंचोली केसोदास स्वदतं परदतं जे हरंत वीसंधरा षस्ट वरस से हसराणां वीस्टा अंजाईते क्रम संवत १६८५ व्रषे असाढ़ वदी ३ सुके.

यह प्रशस्ति वेड़वासकी सरायके पासवाली बावड़ी में
सीढ़ी उतरते वक्त दहिनी तरफ़के आलेमें है.

श्री रामजी ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री श्री श्री पेमजमाताजी प्रसादात् ॥ श्री सिद्धश्री गणेशगोत्र देव्या प्रसादात्॥ श्री कृष्णायनमः॥ सर्व देवेभ्योनमः ॥ ब्रह्मको उपास कायस्थो नाम धरकः तस्यवंश मध्ये कायस्थ भटनागरः कुलदेव्या पेमज. काश्यपगोत्रे. तस्यवश मध्ये उत्कृष्टोनामः अथ कुलवर्णनः तिणकुल मध्ये प्रथम पंचोली वड़वोजी तस्य सुत श्री चेलोजी. तत् सुत कन्हजी तत् सुत मोल्होजी तिणे गाम मोलेला आपरे नामे वसायो प्रासाद उद्धरचा. तत् सुत पंचोली श्री मोकलजी तत् सुत श्री गोपीजी तत् सुत श्री लखमीदासजी तत् सुत श्री सदारंगजी. तत् सुत श्री भागचन्दजी वंशरा भागीरथ हुआ राणेजी श्री जगत्सिंहजी प्रधान पदवी दीधी तणी समे गाम दश दीधा ग्रामरा नाम ऊंटालो, दड़वो, देलावास, दांतों, महूड़ी, कलड़वास, वड़ोली, सेटवाणो, थोहरचो, भीलेड़ो, ए गाम १०, हाथी गजराज घोड़ा ५१ एकावन तिणा मध्ये १ रूपारी सागतसू वस्त्र आभूपण सहित राजमान घणो हुवो; जातरा २ कीधी १ श्री द्वारकाजीरी मांधाताजीरी, राणाजी श्री जगत्सिहजीरा हुकम थी वांसवाला ऊपरे विदा हुआ, वड़ा वड़ा उमराव लोग साथे दिया. जाय वांसवालो भांज्यो मास छः सुधी उठे रह्या, तदी रावल समर्सीजी आवे मिल्या इतरो दंड माथे करे अणे राणाजी श्रीजगत्सिहजीरे पावें लगाया, वांसवालारा देशरो दाण तथा गांम दश. पंचौलीजी श्री भागचंदजी श्रीएकलिंगजी श्रीपीमज-माताजी रो देवल उधरचो देवल ईंडो चढाव्यो तदी तुला १ रूपारी कीधी रुपिया हजार ७२०० सात हजार दोयसे तुला सूर्ज्यां रुपरी पोथी छोड़ावी रुपिया हजार च्यार रो दान कीधो राणेजी श्री जगत्सिंहजी वार तीन पंचोली श्री भागचंदजीरे घरे पधारचा इतरा हाथी पाया. चंचलो १ सार धार १ जगत्सोभा १ हथणी सहेली १ उदेपुरमांहे राणेजी श्री जगत्सिंहजी नवा महेल मंडावे दीधा जीव्या पर जंत प्रधान पदवी रही पंचोलीजी श्री भागचंदजी सुत पंचौली श्री फतहचंदजी चिरंजीवी राणेजी श्री राजसिंहजी पंचोली श्री फतहसिंहजी हे प्रधान पदवी दी धी जिकां ई पंचोली श्रीभागचंदजी पाव्यो थो जितरो सघलो श्री फतहचंदजीने मयाकीधो इतरा हाथी पाया १ रामपसाव १ नादरगज १ गजनिधान घोड़ा पहलां पाया जितरा तिणा मध्ये घोड़ो १ तेजरूप रूपासोनारी सागत सहित राणेजी श्री राजसिंहजी पंचोली श्रीफतहचंदजीने वांसवाला ऊपरे बिदा कीधा, इतरा उमराव साथे दीधा–१

प्रदः ॥ चिंतना वधि दाताहि कथं चिंता मणिः समः॥ ११ ॥ नित्य नैक करेषुच भूपेंद्र भुवन प्रदः ॥ एक वार बलिप्राणो वामने भुवनं ददौ ॥ १२ ॥
श्रीएकलिंग प्रसादात् ॥ जयति जगति विख्यातः सकल महिलोक पावनः सुमतः श्रीएकलिंग दैवतं गोत्रं श्री वैज बापाङ्कः ॥ १ ॥ तस्य कुलालं करणो गुहदत्तो न्वर्थ नामधेयो भूत् ॥ अद्यापि यस्य नाम्ना वंशोयं ख्याति मान् जगति ॥ २ ॥ श्रीमाननूप नृपति र्गुहिला भिधानो धर्माच्छशासवसुधां मधु जित्प्रभावः ॥ यस्मादथो गुहिल वर्णन या प्रसिद्धो गौहल्य वंश भवराज गणोत्र जातः ॥ ३ ॥ मात्रा प्रसूतः किल जांबवत्या श्रीकर्ण भूपात्मज एष राणा ॥ श्रीमज्जगत्सिंह इवास्ति सिंहः सिंहासने पुत्रवति प्रतापी ॥ ४ ॥ धर्मात्मा धन्य शीलो धवलित ककुभं कीर्ति सोमं प्रशास्ता शास्ता वार्ध्य बराया श्चतुरधिकतमा शीति कोदाधिनाथं ॥

जातो वंशोदवस्या खिल धरणि भृतां भूभृतां क्षत्रियाणां ॥ मौलिर्मौलींदु भक्त स्तत मातर चल श्री जगत्सिंह राणा ॥ ८ ॥ एकदादान वर्षाय समुद्दिश्य हरालयं ॥ दिदृक्षुः समगा त्तत्र मांधातार मुपा सितुम्॥ ९ ॥ तत्र दृष्ट्वा नदी रम्यां रेवां चामर कंटकां ॥ तत्रोंकारेश्वरंराणाप्रसन्नमनसाजगौ ॥ १० ॥ श्रीमत् कस्यपरे परार्द्ध समये वैवस्वते चांतरे चाष्टाविंशतिमे कलौ युग वरे श्री विक्रमार्के दिने ॥ वेद व्योम १७०४ हयेंदु वत्सर वरे मांधातृके पत्तने वैज्बापा यन गोत्र वंश तिलकः श्रीराण वंशोद्भवः ॥ ११ ॥ मुक्ता रत्न सुवर्ण मिश्रित महा पूजां तुलां चा करोत् । कर्ण स्यात्मज एषवर्षशतशोजीयान्निर्गता दशा ॥ यत् श्लाघात्र गृणंति ब्रह्म मुनयः प्रज्ञा प्रसादोद्भवा । कीर्तिं वंदिज ना रणक्षिति भवां दानोद्भवां चेतरे ॥ १२ ॥ मास्या षाढे सिते पक्षे कुव्हां मंगल वासरे ॥ रवि पर्वणि रात्र्योघैः सुवर्णैश्चा करो तुलां ॥ १३ ॥ प्रशस्ति क्रियतां चेयं तोरणे चतुलोद्भवे ॥ भान्वाख्य सूत्र धारस्य मुकुंदेनच सूनुना ॥ १४ ॥ पंचोली कल्ला सुतपंचोली सुजरण जात गुधावत्

सूत्रधार मुकुंद भूधर गजधर श्रीरस्तु

श्री नर्मदा प्रसन्नोस्तु

---
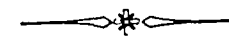
शेष संग्रह नम्बर ४

जगन्नाथरायजीके मंदिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीमहागणपतयेनमः श्रीएकलिंगजी प्रसादात् श्रीजगन्नाथरायजी प्रसादात्

श्रीभवान्यैनमः श्रीविश्वकर्म्मणेनमः ॥ गुणगुरुगौरीसिंहाद्यस्माद्गीता दिशांकरिणः ॥ तमपि व्यथयत् सरवैः कोपिकरींद्राननः पायात् ॥ १ ॥ भवानी भय भृद्भूभृद्भुजंगभजनाभृतः ॥ भवतो भवतो भूयाद्भव्यं २ भवे भवे ॥ २ ॥ अतीवतेजोद्युपर्ताद्र पूज्यं व्रतीश्वरैः सप्त शतीभिरर्च्यं ॥ रतीश जीवातु गतिं दधानं प्रतीत दुर्गा ग्रिमतीववंदे ॥ ३ ॥ राणा श्री मज्जगत्सिंह प्रशस्ति कृष्ण सूनुना ॥ कठौड़ीग्रामतैलंग लक्ष्मीनाथेन तन्यते ॥ ४ ॥ सजयति रघुकुलतिलकः श्रीरामः कीर्तिमुक्ताक्तः ॥ काश्यांमुक्त्यै मंत्रं यस्य मुदा शंकरो दत्ते ॥ ५ ॥ तद्वंशे नृपमुकुटस्थायिपदो विजयभूपपृथ्वीन्द्रः ॥ पद्मा दित्य स्तन्नूरुस्त्यक्त्वा योध्यां वभूव दक्षिणगः ॥ ६ ॥ वापाभिधोथोजनि मेदपाटे तस्या न्ववाये शिवदत्त राज्यः ॥ संग्राम भूमौ पटुसिंह रावं लातीन्यतो रावल इत्यभाणि ॥ ७ ॥ वातीति यस्मात्त्रिजगत् सुनित्यं वाशब्द वाच्यः किलतेन वायुः ॥ तंप्राण वायुंजगतीतलेस्मिन् यत्पाति वापा इतितेन जातः ॥ ८ ॥ आगच्छ शब्दे किल दक्षिणस्यां राशब्द एव क्रियते जनेन ॥ वलेति संबुध्य महावलिष्ठं वापा नृपंतं किल दाक्षिणात्यम् ॥ ९ ॥ राज्यं प्रदातुं पटु मेदपाटे यद्रावले त्याह्वय देकलिंगः ॥ ततः प्रभृत्यस्य नृपस्य वंश्या दधुस्त दास्यां भुवि रावलेति ॥ १० ॥ राहप्प राणो जनितस्य वंशे राणेति शब्दं प्रथ यन् प्रथिव्यां ॥ रणोहि धातुः खलु शब्द वाची तंकारयत्येप रिपून्द्रुतार्त्तान् ॥ ११ ॥ वन्हेर्वाची यत्प्रसिद्धोरशब्दो धातुश्चास्तेजीवनार्थेह्यणस्तु ॥ यज्ञे रग्ने र्जीवनादप्यजस्त्रं राणः शब्दस्तेपु भूपेपु वित्तः ॥ १२ ॥ राणा भवन्नरपतिः पटुनामधेयो भूभार दूर करणाय नरा वतारः ॥ यस्याभि मन्यु रहतोपिहतः कथंचिच्चंचत्कृपादिगुरुणाथसुयोधनेन ॥ १३ ॥ राणादिनकरो पूर्वः सत्संज्ञस्तेजसैवयः ॥ छायया संगतस्यापी नमंदः कोप्य भूत्सुतः ॥ १४ ॥ अभूतपूर्वः कर्णोभूज्जसकर्णा भिधःप्रभुः ॥ परेपां कवच च्छेत्ता नराधेयोपि योभवत् ॥ १५ ॥ नागपालो भवत्पृथ्वी विधृत्य भुजयैकया ॥ दिग्नागशेपनागानां पालनात् सार्थकाव्हयः ॥ १६ ॥ अन्ये क्षीणस्य पातारः पूर्णपाल स्त्वभूत्प्रभुः ॥ धनाध्यक्षादिपूर्णानां पालनात्सार्थका व्हयः ॥ १७ ॥ यंवीक्ष्यस्तंभ सक्तं सकल मपिजगद्यत्पदाधारपीठीं नत्त्योन्नत्यापि विभृत् पृथुलमणि शिलां संगतं वैगदातैः ॥ पृथ्वीत्थंमल्लरूपा भवति नरपतौ यत्र यस्मान्नृपालः ॥ पृथ्वीमल्लेत्यभिख्यो नरपतिमुकुटालंकृति स्तेन जातः ॥ १८ ॥ यत्रैवस्थीयते तत्तुसिंहेनान्येन रक्ष्यते ॥ अयं भुवनसिंहो भूत्रक्षितुं भुवन त्रयम् ॥ १९ ॥ भीमसिंहो हरिस्पर्द्धी शिवोभूत् करजश्रिया ॥ वलि

प्रल्हाद भिल्लोके हिरण्य कशिपुक्षमः ॥ २० ॥ एकलिंग प्रभावेन जयसिंह क्षमा-धरः॥ कृत्स्न गोरक्षक स्तस्या रजः संमार्जनं दधौ ॥ २१ ॥ अस्माभिर्गहने-गतं बहुविधः क्लेशोपि सोढः परं ॥ शत्रुश्चेन्निहतः प्लवंगनिवहैः कैश्चि दिने रावण : देवेनाशुनखेनासिंहवपुषा तत्रैव शत्रुर्हतस्तस्माल्लक्ष्मणसिंह एष किमभू द्विज्ञः सरामानुजः ॥ २२ ॥ अकारवाच्यो भवतीहविश्नु स्तस्यार्चने यत्सुचिरं प्रवृत्तः॥ गुणाम्बुधिर्भूमि पतीश्वरो महान् राणाततो भूदरसीति वित्तः ॥ २३ ॥ हकार वाच्ये किलकोप वन्हौ साम्लेच्छजातिःखलुमीर वाच्या ॥ प्रवेश्य दग्धेतिहमीरनामा बभूव राणा जगती शिरो मणिः ॥ २४ ॥ पर-क्षेत्रग्रहीतापिस्वक्षेत्रनिरतः शुचिः ॥ क्षेत्रेषु क्षेत्र दाताय:क्षेत्रसिंह स्ततो भवत् ॥ २५ ॥ म्लेच्छा म्लेच्छ पतिं तृणस्य पुरुषं कृत्वान्य भूभृन्मृगान् विद्राव्यक्षितिमंडलेद्विजगणान्क्षेत्राण्यभोकुंदढु : ज्ञात्वातान्यवनान्नि गृह्य कृपिकान् सक्षेत्र भूपः क्रुधा क्षेत्राणिस्ववशानि तानि दयया किंनद्विजे भ्यो ददौ ॥ २६ ॥ प्रत्यहं हसति सिंहवाहिनीमांविलोक्य वृषवाहनं हरं॥ माधरिष्यति सदैव मूर्द्धन्यंयं लक्षसिंह मितिकिं वृषं व्यधात् ॥ २७ ॥ पुत्रवत्सु महासेनां दुर्गां दत्वै व प्रष्टतः॥ लक्षसिंहो द्विपच्चंण्ड मुण्ड च्छेताद्भुतं स्वयं॥ २८ ॥ युग्मम् मकार वाच्यो विधिरेष विष्णुस्त्वकार वाच्योथ शिवोह्यु कारः ॥ कलास्त्रयाणा मिहसंति यस्मात् तस्मादभून्मोकलनाम भूपः॥ २९ ॥ श्री कुंभोद्भवमेव भूमि वलये श्रीकुम्भ कर्णं नृपं गत्यां धीर गजेन्द्र मन्द गमहो सद्वाड़ वाग्निं मृधे॥ भीमंच स्मृति मानयन् रिपुगणो भुक्तिं निनायक्षयं नोचित्रं तदि हास्ति यत् स्वयमपि प्राप्तः क्षणाद्भस्मतां ॥ ३० ॥ कांतंकुंभंजगन् मूर्न्धियत्सुवर्णोत्तरंविधिः ॥ न्यधात्तस्यांतराभूपात्किं म्लेच्छमुख दर्शनं ॥ ३१ ॥ दिनेदिनेदृढीभूतंशीतलाचलचेतसि ॥ स्नेहं पाकोद्भवः कुम्भो जडंत्यक्तानकिंदधे ॥ ३२ ॥ मेरौदेवानरक्ष्याः सुररिपुभयतः कुम्भमेरुंसुदुर्गं कृत्वायः कुंभराजो हरिरिवविवभावप्सरः सत्कुलेन ॥ सत् सन्तानं सकल्पोगम दलित मही पारिजातोत्सवाख्यं ॥ नोद्यानंनन्दनंकिंस्वय मिहकृतवान्सोभिषिक्तंचकुम्भः ॥ ३३ ॥ क्षुद्रम्लेच्छांधकूपान्तर विल विल सज्जीवन ग्राहि वेगाद् भूलोके कुम्भ राजत् कुलमतुलरसं संवृषं सद्गु-णौघं ॥ काले स्मिन्नेक काष्ठे प्रतिपल चपलेःकुम्भ यन्त्रे निधाय क्षेत्राणि क्षेम वृक्षान् द्विजकुलमतुलंजीवयामासवेधाः ॥ ३४ ॥ नेत्रे मीनंच कूर्मपदकमलयुगेपांडुको लंक्षमायां सिंहंमध्ये प्रकोष्टे गुरुजननमने वामनंसंगरेन्यं ॥ स्नेहेन्यं मूर्न्धि कृष्णं भुविनर दयने बुद्धमन्यं शकांते

पद्मानाथावतारं जगति जयतिको राजमल्लं न्नमल: ॥ ३५ ॥ सर्वेपिसंत: सुखिनो भवंति नवारिराशीन् क्षपयन् क्षमात: ॥ शिष्टाननंतान् स्वयशोंवुधीन् परानकुंभोद्भवोप्यद्भुतमाननतान ॥ ३६ ॥ भूत्वानंग: कृष्णपुत्रोपि सांगो राज्यं नापत्तेन भूपोत्र भूत्वा ॥ कृत्वावश्यंशंवरंराज्यमाप द्धर्मे मोक्षे चार्थे कामे रतिच ॥ ३७ ॥ सोयमांगमहीपति: स्मरतनु: श्रीमांडवाख्यालसद्दुर्गेशंयवने श्वर मुदफ्फरं वध्वात्यजत्सत्कृप: ॥ वध्वाथो महमूदखानमतुलं म्लेच्छाधिपं शंवरं जित्वा दुर्जयगुर्जरेश्वरमत: कीर्त्याभिषिक्तो भवत् ॥ ३८ ॥ सशूर: पश्चिमादुद्यन् नामन्नकवर: क्षितिं ॥ नकिर्हीनकरो भूयात् प्राप्योदयमहीभृतं ॥ ३९ ॥ सदो दयोद्भ वोभास्वान् प्रतापो वारुणी जहो ॥ भवत्य कवरध्वांते नसंध्याक्तो नचास्तभा: ॥ ४० ॥ कृत्वा करे खड्गलतां स्ववल्लभां प्रतापसिंहे समुपागते प्रगे ॥ साखंडिता मानवती द्विपच्चमू: संकोचयंती चरणं पराङ्मुखी ॥ ४१ ॥ वार्द्धिं मथित्वा प्ययत्नेन विष्णुना समाहृता श्री रिति लज्जित: किमु ॥ भूमौ समेत्ये त्यमरेंद्र भूभृता म्लेच्छाब्धिमामथ्य रमा करेकृता ॥ ४२ ॥ सदाक्षमापा: करिणो पियस्य करेण सिंचति पदं मुदेव ॥ यंभूपसिंहं नरपाल गव्योप्यहो भजंते दयया वशीकृत ॥ ४३ ॥ जातो भूपामरेंद्रान्महितगुरुकृपश्चाप विद्यासमेता कृष्णोद्वाही सदासो द्विजकुल सुगवी: पालयन् स्तीर्थसेवी ॥ जात: श्री मत्सुभद्रांगजइति वनदो वाडवा यक्षमेंद्रान् जित्वास्यामर्जुना दप्यधिक इति पुन: किनु कर्णावतीर्ण: ॥ ४४ ॥ राणा श्री कर्णसिंह: क्षिति कुल तिलक: क्षोभयन् क्षोणिचक्रं सर्वत्र व्याप्तसैन्यं तृणमिव कलयन् म्लेच्छ नाथं मदोग्रं ॥ जित्वा दग्ध्वा सिरोंजाभिधनगरवरं चित्र वह्निल्लि भर्तु श्चक्रे काष्ठा समस्ता: प्रतिरव विलसद् दुंदुभिध्वान पूर्णा: ॥ ४५ ॥ उग्र प्रभावाद्भुवि यत्पदांते भूभृन् मृगा मुक्त मदा लुठंति ॥ कुलीन भूभृच्चमरी मृगाश्च यंभूपसिंहं चमरै रवीजयन् ॥ ४६ ॥ जातस्तस्मान् महाराणा जगत्सिंहाभिध: प्रभु: ॥ सौम्योपि सोम भक्तो भूत् युधिष्ठिर इवापर: ॥ ४७ ॥ भास्वान्भीमो वलिध्वंसी जगन्माता विनायक: पूज्य: श्री मज्जगत्सिंह: पंचदेवमय: प्रभु: ॥ ४ ॥ वर्षे वेदाष्टशास्त्रक्षितिगण नयुते माधवे शुक्लपक्षे पंचम्यां राज्यपीठं कलयति शुभदं श्री जगतसिंह भूप ॥ देवा संतुष्ट चित्ता दधति सुकवयो ग्राम रत्नाश्व नागा न्यास्तान् संस्यातु मीष्टे दशशतरसनो नैव शेष: कुतोन्य: ॥ ४९ ॥ सद्वंशां चित्रकूटे शिरसि विकसित श्रीजगत्सिंह राजा मुद्वेल्लन्म्लेच्छ वार्द्धौ सुजनमणिभृतां मंद पाठास्य नौकां ॥ वार्तेद्धे पिण्यधर्मे स्थिर यितुमनिशं कर्णधारैकलिङ्गो नीचै रेवा क्षिपत्कि दृढ कमठ शिलां शृंखलां शेष नागं ॥ ५० ॥ आलाने चित्रकूटे सुकृत पटुगुणै

वंधनी कुंभमेरुदुर्गं कुंभस्थलं किं कलयति भुवियः शैलकायोति दानी ॥ भास्वद्वंशोपरिस्थद्वजपटामिहिरो नेकपो मेदपाटः श्रीमानुग्र प्रभावात्तमवाति न किमु श्रीजगत्सिंहभूपः ॥ ५१ ॥ भास्वद्वंश धरेन्द्रैपैः परिधृतं सत्कुंभमग्रे जगत्सिंहेनप्रतिभूपितं बहुयशो मुक्ताफलैर्मण्डितं ॥ सच्छायं पुरुपार्थ सत्पदमहो धैर्यादिभृत्यैर्वृतं मेवाडं सुखपालमाप्यसशिवः शक्रादि वाहास्पृहः ॥ ५२ ॥ सूर्यं स्वर्णवितानमेतदुपारि श्वेतं वितानं विधुं सद्वंशो परि सद्गुणै र्नियमयन् कीलाद्रिपूष्णे कलौ ॥ मेवाडे पट्टदान शालिनि जगत्सिंहंनृपं स्थापयंस्त्यत्काम्लेच्छसदोल्कटोल्कटभयं रंता भवान्या भवः ॥ ५३ ॥ देशे वागड़ नामके नरपतिः श्रीपुंजराजोजनि श्रीमडुंगरपूर्व कस्य नगरस्याधीश्वरो दुर्जयः केनाप्यत्रन निर्जितो बहुमतिः सत्कोश वांस्तं पुनर्यन्मंत्री कृतवान् पराङ्मुखमहोदग्धंपुरं चाकरोत् ॥ ५४ ॥ युधिष्ठिरोयं तेनैव विजयेन महात्मना ॥ दुर्निरीक्ष्यो भवद्दिक्षु कुतो म्लेच्छ पाति ःसम ः॥ ५५ ॥ शत्रुस्त्रीभिः स्ववेण्यां ग्रहणसुसमये दृग्जलैस्तेप्रदत्तः कीर्तिग्रामोमहीयान् सुलिखितपठितोम्लेच्छवक्रेप्वापिद्राक् ॥ कल्पस्थाप्यस्य सीमां कलयितु मखिलांवं भ्रमं स्वत्प्रतापः काष्टास्वद्यापिनित्यं दशसु तवगुणै र्मापयन्नान्तमेति ॥ ५६ ॥ त्वदनंत गुणान्वदिप्याति तदनंतः कथितः स्वयंभुवा ॥ विफलं तदवेक्ष्य शेप वक्तुरभिधां शेषइति ध्रुवंदधे ॥ ५७ ॥ भूपेंद्र त्वत्प्रतापैः पृथुभिरनुदिनं च्छादिता यांत्रिलोक्या मत्यूष्मोद्भेदतो भून्नव शिरसि हर श्चांघ्रि देशे स्त्रवंती ॥ शेपस्याहो शिरस्सुस्फुटमणिमिपतः स्फोटकाःप्रादुरासन् भूमौत्वन्मौलिलोल च्चमरजपवनैस्तापशांत्याहिशांतिः ॥ ५८ ॥ स्वामिन्स्वमर्गिदंभा स्तवगुण निकरानासुवेलं सुमेरोः मंतान्य स्वर्णसूत्राव्रतरविवलयंभ्रामयित्वायनाभ्यां ॥ वेधाःकृत्वांचलेद्वे हिमकरकिरणै रौप्यसूत्रैश्चमध्ये प्रत्यब्दं कीर्तिवस्त्रं वयति नवनवं वेष्टनं वारिराशेः ॥ ५९ ॥ दिक्पालान् दशवीक्ष्यनेत्रदशकं जातं कृतार्थं मुहुः शेपं नेत्र युगं निरर्थकमहो विज्ञेन धात्राकृतं ॥ इत्थंचिंतयताचिरं नृपजगत्सिंहंपुनः पश्यता दृग्द्वंद्वंतुतदैव जन्मफलभाक् क्रौंचच्छिदा ज्ञायते ॥ ६० ॥ चक्रप्रेमार्ककृष्णा विववुधभिपजौ सुश्रुताविस्मृतिस्त्वं लक्षोन्मर्दीपुसाधूइवसदसिकवीकोशपुर्ण प्रतिष्टः ॥ संध्याभ्राजीरसेन द्विजपतिसचिवौ सद्विधिश्चैवयद्वार्तासक्तः सुधीष्टा विवजगति जगत्सिंहजीयाः शतायुः ॥ ६१ ॥ हुंकारेण कुरंगराजनिकरा वश्या दृशाद्वीपिनो भूदाराःसुरवेण तेपिकरिणो हस्तेनतेखड्गिनः॥ सेव्योष्टापदसंचयै रपिजगत्सिंहस्य तस्याधुना वृद्धस्यैक वृपस्यवश्य करणे कावास्तुतिस्तन्यतां ॥ ६२ ॥ मंगोरीजातिराजा तनुजविमलधीः सूत्रधारोहि भाणा तत्पुत्रःश्रीमुकुंदो

वंशसकल कला भूधराख्यो द्वीतीयः॥याभ्यां ग्रामःप्रदत्तो हतरिपुनिकरः श्री जगत्सिंह भूपेर्दत्तो सौवर्ण रोप्योऽमल इह कृपाख्यापयन्मापदंडौ ॥ १॥ राणा श्रीमज्जगत्सिंह कारितं मंदिरं शुभं॥ताभ्यामेवकृतं श्रीमज्जगन्नाथाभिधप्रभो ः॥ २॥ ताभ्यांश्री मज्जगत्सिंह ०द्ग्रामो-----॥ चित्रकूटांतिकंप्राप्तः प्रतिष्ठायां रमापतिः॥३॥श्री सरस्वत्यैनमः १ ॥ श्री गणेशायनमः श्री एकलिंगजी प्रसादात् श्री जगन्नाथरायजी प्रसादात् श्री सरस्वत्यैनमः श्री विश्वकर्मणेनमः अथ राणा श्री जगत्सिंहस्य मांधातृतीर्थ यात्रा प्रसंगः॥ अथैकदातीर्थ वरंसुराढ्यं रेवोपकंठे सकलार्थ दायकं॥ ओंकार नामप्रभुशंभुपीठं मांधातृनामव्रजितुं मनो व्यधात् ॥ ६३ ॥ श्री रामराजेन पुरोहितेन विचार्य सद्दान समूहतो द्विजान् ॥ धनाधिपान् कर्तु मना पुरा द्रगात् करेणु मारुह्य जगत्पतिर्मुदा ॥ ६४ ॥ ततो चलन् देव गजोपमागजाः पुरः पताका समलं कृताःपुरः ॥ सच्चामरालंकृतवक्र मंडला यांती — वर्ष्यानु वसंत सक्ताः॥ ६५॥ उच्चैरादित्य हेलास्त्यजदुप मिनयो नैव कृष्ण स्वतोन्यं मन्वाना मुक्तिहीनाः सततमवमतः स्थापनास्थाः श्रुतीनां ॥ प्रत्यक्षस्थापयंतः परमिहनपरं किंपुनर्मत्तताया नात्मज्ञा बौद्ध बुद्धि धरणि धरपते धारयतिद्विपेंद्राः ॥ ६६ ॥ येमी कर्दम शायिनस्तृणगृहे स्त्रीणां स्वैर्निग्रहे धिक्कारंगमिताश्चकूप सलिले मंक्तुंकृतोपक्रमाः ॥ तेमीकांचन मंचिकोपरिगताःसौधे बुधा स्त्रीसखा राज्ञादत्त करींद्र बृंहितरवै रानंदिता स्तेप्यय. ॥ ६७॥ ततोचलन् देवहयोपमाहया येषांन वेगे समतां दधुर्मृगाः॥ नवायवोनैव मनांसि भास्वतःकुतो हयास्तेपि भवंतितादृशाः ॥ ६८ ॥ भास्वंतःसततं मृगांक गतयः सन्मंगलाःसंततं सौम्याः स्वामिमतात्सुजीव कविकाः पत्याजयामंदगाः॥ सिंहीजाः सितकेसरैः क्षणमपि स्थैर्यायुताः केतवः पृथ्वीनाथ नवग्रहा इवहयाः संपीड्यंति द्विपः॥ ६९॥ धारयंतः श्रुतेरुच्चैः शिष्य प्राया महामृगाः॥ सद्वेगस्ति मितस्वांता हरयो मुनि वद्ययु.॥ ७०॥ एतादृशान् पुरस्कृत्य तुरगान् भूपतिर्व्रजन्॥ नवासवं हृदानीतं कुरुतेन्यंनरं कथं ॥ ७१ ॥ कंपंते शत्रुनाथास्तदनुतदवलाः सागरांता स्ततोब्धिः शेषः कूर्मो वराह स्तदनुच गिरयो दिग्गजेन्द्राः सनाथाः॥ किंकिं जातं किमेतद्भवति जगतिहा न्योन्य पृष्टास्तदोचु मांधातु स्तीर्थराजं जिगमिषु रजनि श्री जगत्सिंह भूपः॥ ७२ ॥ संगत्योदग्र सागरस्य सविधेसौधेस्वकीयेद्भुते कैलाशाधिककांतिपूर कलिते भूपो वसन्नन्तदिनं ॥ यत्रस्थं नृपतिं पयोनिधि शयं पद्मापते स्तंजना जानंतिस्म समान मेवसततं श्री सेवितांघ्रि द्वयं॥ ७३ ॥ असमानानि समानानि विमानानी वरेजिरे ॥ शिविराणिततस्तेषु नृपादेवा इवावसन्॥ ७४॥ स्थित्वा परेद्युः सु-

दिने व्रजन्नृप स्तीर्थे महाकालनिकेतनं गतः ॥ अवंतिकां मुक्तिंददर्शनन्तां सेव्यां सुरेंद्रादि गिरीशवंद्यां ॥ ७५ ॥ क्षिप्रांसमासाद्य सुपापहंत्रीं स्नात्वाथ दत्वा वहुशो द्विजेभ्यः॥ दृष्ट्वाप्यवंती मवमत्य तत्पतिं मार्गादगाल्लोक भयंवितन्वन् ॥ ७६॥ गतोथमांधातृ समीपनर्मदातटं कियद्भिः सुदिनै र्महींद्रः ॥ कोवा पृथिव्याम् भवतीदृशः परो मात्रुद्भवो यः पथिरोधमाचरेत् ॥ ७७॥ गंगांसमानीयसुपाप सागरं कुलं पुनातिस्म भगीरथो नृपः ॥ सेनां तथै वैप जगत्प्रभुर्नयन् पवित्र यामास सुपापसागरं॥७८॥ नर्मदोतर रोधस्सु शिविराणि क्षमापतेः ॥ ओंकारे श्वर पर्यंतं कावेरी संगतो भवन्॥ ७९ ॥ महाराणा जगत्सिंहो राजपुत्राश्च सर्वशः ॥ रेवाकावेरिका रंगे स्नाताः सौख्यं समागताः॥ ८०॥ इत्थं सर्वेपि संतुष्टा स्नात्वा दत्वा प्यनेकशः ॥ अथ राजान्नृपालैः स्वै र्भोजनंकर्तुमागतः॥ ८१ ॥ अन्यासक्कै र्मृदुभिर्हरिभक्तै रिव तदाभक्तैः ॥ जलतापयोगपाकात्तै रपिमोददान परैः॥ ८२॥ सभाजनैः सुभोजनै रनेकवस्तुभिस्तुतैः॥ सभाजनैः सुभोजिता द्विवारमित्यहर्निशं ॥ ८३ ॥ अथान्येद्युस्तृतीयेस्मिन्यामे सूर्यग्रहोदये ॥ महाराणा जगत्सिंहः कांचनस्य तुलांव्यधात्॥ ८४॥ वेदव्योममुनींद्विन्दुशुचौ सूर्यग्रहे तुलां ॥ महाराणा जगत्सिंहः कांचनस्यतुलां व्यधात् ॥ ८५ ॥ ओंकारेशसमीपनर्म्मदतटे श्रीराण कर्णात्मभू रारूढं स्वतुलांहिर्ण्यकशिपुव्यूहं विभज्य स्वयं ॥ नैवंपूर्वमकारितेन सुभगो भूत्वान्नृसिंहः पुनः प्रीत्याभूरितयापलान्यगणयन् क्षुद्रद्विजेभ्योप्पदात्॥८६॥ वेगान् मारणतो भवे दिदमहो दुःखं कुलीनस्यत द्ध्वा वाल मथो हिरण्य कशिपुं कृत्वा -रे- स्थितं ॥ त्रैलोक्यांच गृहे गृह इतः संप्रापयन् श्रीपते र्वाहुस्तंभ समुद्भवो विजयते श्रीमन्नृसिंहः प्रभुः ॥ ८७ ॥ भास्वान् श्रीमज्जगत्-सिंह स्तुला मारुह्ययद्व्यधात् ॥ स्वाति वृष्टिं ततो मुक्तान् नस्युर्जन्मे च्छवः कथं॥ ८८॥ जगत्सिंह महाराज चिंतनादधिकप्रदः ॥ चिंतना वाधि दाताहि क्वते चिन्ता मणिः समः ॥ ८९ ॥ राजन्नभूतपूर्वेयं धनुर्विद्या विराजते ॥ स्वयं लक्षाणि गच्छंति ग्रहस्थानपि मार्गणान् ॥ ९० ॥ नहि चापलता सक्तो न पराङ्मुख मार्गणः॥ कदापि न गुणच्छेदी कीदृशस्त्वं धनुर्धरः॥ ९१॥ कन्या संपदमास्थाय तुलारोहि प्रभाकरः ॥ शुचेरमां समासाद्य जगत्सिंहमहीपतिः ॥ ९२ ॥ जगत्सिंह महाराज तुला स्वर्ण मिपात्तव ॥ सिंहीजभयतोभानु-र्मन्येत्वां शरणंगतः ॥ ९३ ॥ तपनग्रहणे जाते तपनीय तुलांनाकिं ॥ अकरो त्तेजसादिक्षु जगत्सिंहः क्षमापतिः॥ ९४ ॥ अथदृष्ट्वा तुलांवेदीं शिलास्तंभ द्वयोदितां ॥ देवा नागा मनुष्येंद्रा श्चक्रुस्तत्प्रेक्षणं मिथः॥ ९५ ॥ दृष्ट्वाला मनु-रागीणीव वहुधा रामादि कीर्तिःसिता भूपलक्कत पांडुरा तुल तुला स्तंभ द्वय

व्याजतः ॥ नीलोच्चै र्वसुधातलात्करयुगं संमेलयंतीमियस्त्वामालिंगितुमुत् सुका प्रतिपलं स्त्रीभावतोजृंभते ॥ ९६ ॥ रेवा मथ प्राप्यसु पुण्यदात्रीं स्नात्वा च दत्वा वहुशो द्विजेभ्यः ॥ इत्थंस्तुतिं भूमिपतिर्व्यतानीच्छुलायदे- तत्सकलो विपाप्मा ॥ ९७ ॥ ये दिव्यांवरधारिणः समदृशः सौम्यांगनो पासिता यंगंगामपहायसेवनपराः श्रीनर्मदायास्तव ॥ तान्दृष्टैवदिगंवरां स्त्रिनयनां श्चंडीश्वरान्सांप्रतं रूढ़ा मूर्द्धनि नृत्यति त्रिपथगा केनाद्यसा वार्यतां ॥ ९८ ॥ उद्धृत्या सगर स्तुरंगममनो यत्प्रापयन् मन्यवे तद्देवा दमरे श्वरेण कपिलाभिख्यांतिकेप्रापितं तस्यानुश्रितपापसागरकुलं तत्रोग्रदृष्ट्याहतं मातर्दक्षिणजान्हविलमधुना तस्यान्वयं मोचयेः ॥ ९९ ॥ स्मृत्या पातक माहरामि जगतां दृष्ट्वा सुरत्वं ददे स्पर्शा देव ददामिविश्नुतनुतां स्नानार्थि नेकिंददे ॥ इत्यालोच्य महेश्वरस्य तनया रत्नाकरस्यांगना यन्निम्नं व्रजति त्रपा भरवशात्तन्निम्नगा नर्मदा ॥ १०० ॥ ततः सुरेन्द्रादिसमर्चनीय मोंकार नामेश्वर माशुगत्वा ॥ सर्वोपचारै रचयन्महीपती रत्नैः सुवर्णैं स्तुति मप्य गादीत् ॥ १०१ ॥ रेवाद्यावनमध्यतः परिपतन्भिलाघसंघंगजं कीलालस्यकणान् मुहः परिवमन् पाथोजसत्केसरी ॥ यावद्वंधवहोह्यनंतजठरे नप्रापयेन्मां प्रभो सोमस्त्वं कृपयाकुरंगमपिमांतावन्नयस्वांतरे ॥ १०२ ॥ दिनांतरेप्ये वमसुंप्रपूज्य स्नात्वापुरावत्सुमनोमहींद्रः ॥ दत्वा सुवर्णानि पुरोहिताय गावर्णनीया श्चसुराधिपाद्यैः ॥ १०३ ॥ देश देशोद्भवंभव्यं गजाश्ववसनादिकं ॥ विश्नुप्रीत्या- ददौभूप स्तत्संख्यातासहस्त्रदृक् ॥ १०४ ॥ इत्थं वितीर्य मनसेप्सितमर्थ जातं भूपोचलत्स्वदिशमेवभयात्तशत्रुः ॥ मार्गेपि दृष्टिरतुलांतपनीयसंघै स्तन्वन् सुपात्रततिपुञ्जमदेनसक्तः ॥ १०५ ॥ गामथो भयमुखीं पथिमध्ये यांददौ द्विजवराय सुवर्णैः ॥ वर्णनां कथमहो रसनैका संतनोति मनुजोहि कवींद्रः ॥ १०६ ॥ इत्थंकियद्भिः सुदिनैः क्षितींद्रं सन्मालवक्षोणिपतेर्विमत्य ॥ दत्वापदं मूर्द्धि रिपोः समागाद्देशंपुरं हर्म्यवरं धनाढ्यं ॥ १०७ ॥ माताप्राणमिवप्रियादृश मिव क्षोणीश्वरानाथव द्वेष्टारो यमवत्प्रजा जनकव दृष्ट्वान्नृपंचागतं ॥ देश ग्राम पुरेपु यःप्रतिग्रहं जातोमहा नुत्सवः कस्तं वर्णयितुं क्षमः सुरपते राचार्य तोन्यः पुमान् ॥ १०८ ॥ अथद्विजाग्र्यान् वहुकाशिवासिनः स्वर्णस्य वृष्ट्येव कृतार्थ तांनयन् ॥ सुखात् सुराज्यं परिपाल यन्सभादसकचित्तोरघुनाथवत्प्रभुः ॥ १०९ ॥ स्फाटिक्यां वेदिकायां कलयति भुवियो मूलदेशेसुनीलं वैडूर्यं मस्तके द्राक् तदनुगुरुगुणान्हीरकान्स्कंधकेपु ॥ मौलिस्तेशाखिकाग्रेमरकतमनुलं

वैद्रुमानूपल्लवौगान् मुक्तागुच्छान्नरस्त्रगिजहयमणिगोमत्फलः पंचशाखः ॥ ११० ॥ ब्रह्मा रुद्रोपि विश्नु स्तदनुरतिपतिः स्थापितायस्यनीचैः सोयं सत्कल्पवृक्षोपरतरुसहितः श्री जगत्सिंहहस्तात् ॥ बाणव्योमर्षि चन्द्रैः समुदित शरादिश्वेतभाद्रे तृतीयां प्राप्यप्राप्तोद्विजानां गृहगृहमनिशं रम्यहर्म्याणि कुर्वन् ॥ १११ ॥ स्वदेहव्ययतोपुष्णात् द्विजान्कल्पद्रुमोह्यसौ ॥ जगत्सिंहकरस्पर्शात् किंचिदनुगुणांदधौ ॥ ११२ ॥ भास्करभट्टजमाधव पुत्रश्रीरामचन्द्रोद्भूः ॥ सर्वेश्वरस्तदंगाल्लक्ष्मीनाथः कठोडीति ॥ ११३ ॥ श्रीराणोदयसिंहैस्तस्मै ग्रामोहि भूर वाडाख्यः॥ दत्तो मुष्मै ग्रामो होलीनामाप्य मरसिंह नृपैः॥ ११४ ॥ लक्ष्मीनाथ सुतो रामचन्द्र कृष्णस्तुतत्सुतः ॥ अदात्तस्मै जगत्सिंहो मृगराज द्वयं हयं ॥ ११५ ॥ चतुःसहस्त्रीं यन्मूल्यं दत्वादहदणार्णवं ॥ महाराणा जगत्सिंहैः समोनास्तिकुतोधिकः ॥ ११६ ॥ वर्षे शास्त्रवियन् मुनींदु गणिते भाद्रे तृतीयातिथौ शुक्ले जन्मदिने निजे नृप जगत्सिंहः कृपाया निधिः ॥ दत्वाकांचनमेदिनींसजलधिं श्री चित्रकूटांतिके ग्रामं कृष्ण बुधायसद्गुणनिधिः श्रीभेसडाख्यंददौ ॥ ११७ ॥ राणा श्री मज्जगत्सिंहोमधुसूदनशर्मणेप्रददावाहड़ग्रामेहलद्वयमितांभुवं ॥ ११८ ॥ एकांलक्ष्मींमगृह्लांतदपिसुरपतिः क्रुद्धहस्तेनभूमौभूत्वाम्लेच्छाब्धिमाथी सुगज सुरतरून्गाद्विजेभ्यः प्रदाय ॥ कीर्तीदुंकृष्णभट्टे हयमणिममलं भैसडाग्राम चिंता रत्नंदत्वाप्सरोभि र्जगतिविजयते श्रीजगत्सिंहः विश्नुः॥ ११९ ॥ ऋषिव्योम मुनींद्वब्देजगत्सिंह महीपतिः ॥ भाद्र शुक्ल तृतीयायांसप्तादत्सप्तसागरान् ॥ १२० ॥ गजव्योममुनींद्वब्दे जगत्सिंहः क्षमापतिः ॥ भाद्रशुक्लतृतीयायां विश्वचक्रं द्ददौप्रभुः ॥ १२१ ॥

श्री महागणपतयेनमः॥ श्रीजगन्नाथरायजी प्रसादात्॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादात्॥ श्री भवान्यैनमः श्री विश्वकर्मणेनमः॥ श्री सरस्वत्यैनमः॥ अथ श्रीराणा जगत्सिंह कारित श्री जगन्नाथरायमंदिरादिवर्णनं ॥ श्रीकृष्णभक्त्याथजगत्सुवर्ण्यंदेवालयं श्रीकमितुर्विधाय॥यंवारवारं सुरनाग मानवा विलोक्यचित्रोल्लिखिताइवाभवन्॥१॥ यस्यापिदेवा भुवि वर्णनां मुहुः कर्तुंनशक्ता कुतएवमानवाः॥ तस्यस्वशक्त्या वितनोतिवर्णनां श्रीकृष्णभट्टात्मजएषबाबुः ॥ २ ॥ गंगाकेतुयुतः कपर्दघटभाक् भालाक्षिरत्नाकरः कांत्यावेष्टितकंथकः सुरवह व्याजेनवैराग्यभाक् ॥ ह्याधायहरिं तपस्यतिहरस्तत्किंत्वपस्तैर्गुणैर्बध्वाभक्तमहाद्विषद्धृत यशोमंडे ननापोषयत् ॥ ३ ॥ पुण्यंप्राप्यतदेकलिंगविषये श्रीमेदपाटस्थलं ब्रह्मा भूपमणे श्चतुर्मुखलसद्देवालयव्याजतः ॥ वेदाध्यायिजनस्वनैः किमपठद्वेदान्यदेकाग्रह

तद्रूपं कमलोपभोग हृदयाकिंराजहंसा : श्रिता : ॥ ४ ॥ मत्कार्यं क्रियते नृपस्य यशसेत्युत्पन्नवैराग्यतः कृत्वाद्वंद्वसहंशिलामयवपुर्देवालयव्याजत : ॥ धृत्वांत : सहरिंपठद्विजरवै मूर्ध्न्यंबुकुंभं दधात् पूर्णाभ्यासवशंस्थिरे पठतिकिं वेदान् द्विजेंद्रो विधु : ॥ ५ ॥ क्षारान्नाति गभीर नीरधि जलादत्यस्वचित्तंचिरा द्विश्नौनैवविमुंचतिक्षितिपतिं कृत्वामहामन्दिरं ॥ लोकानामवलोकनायकृपया तत्रोन्नते निर्मले स्निग्धेपौरपदाचकिं प्रतिकृतिं श्रीभर्तुरास्थापयत् ॥ ६ ॥ श्रीमद्दानिशिरोमणिर्नृप जगत्सिंहो महीमंडले व्याप्तंयद्यशसाबभौत्रिजगती वृंदं सुधांशुप्रभं ॥ प्रासादं जगदीश्वरस्य रचितं मत्वामुना स्वर्गता : दृष्ट्वा चेतसि विस्मिता इवनिजं त्यक्त्वानिमेपंस्थिताः ॥ ७ ॥ कर्णसिंहाब्धि संभूतो जगत्-सिंह सुधाकरः ॥ यस्य मृदुकर स्पर्शैनप्रजातापवत्यभूत् ॥ ८ ॥ भूपस्योन्नतविश्नु सद्म कलश व्याजाद्विवस्वानसौ ज्ञातुं मार्गमहो रथस्य तरसा रूढस्त दुच्चंपदं ॥ स्थिलै वात्र जगत् प्रकाश मधुना कुर्यां मुदेति स्थित स्तेनवा मरुणो हिसा रथिरयं कोपो भवत् संश्रितः ॥ ९ ॥ स्वनामाढ्यं जगन्नाथ राय इत्य-भिधांहरे. ॥ कल्पयन् श्रीजगत्सिंहः ख्यातकीर्तिरभूद्भुवि ॥ १० ॥ पांडूच्चं हरिमंदिरं नृपजगत्सिंहेनयत्कारितं राजद्रत्नघटंममेति किमहोभारो हिरा चिंतयन् ॥ भूलेंके विधृते भुजेननृपते रीषच्चलत्कंचुकं वाताल्केतु मिपात् सरत्न मतयद्रूमेर्बहि स्वंशिरः ॥ ११ ॥ स्ववैंनोभोगभूमिर्जलधिरपि गुरुर्नागराजोतिभीम : कुत्राहंसौख्ययुक्तो हरिगणपशिवार्कान्वितः संवसेयं ॥ चित्तेस्यागत्य दत्वान्नृपमुकुटमणिंकर्णसुनुंनिजाज्ञां प्रासादार्थंविधायाकृत वसति महो श्रीजगन्नाथराय : ॥ १२ ॥ जगत्सिंहो राणः कथमिहसमागं तुममराःसमर्थो भूयाद्वै सकलजनसा रक्षणपरः ॥ जगन्नाथ श्चेत्थं नृपहृदयभावं विदितवानवासी दत्रैवस्वजनकरुणा नन्दजलधिः ॥ १३ ॥ धर्मोद्भूत युधिष्ठिरं तदनुजं कीर्तिध्वजं ह्यर्जुनं वीक्ष्यैकंजितधार्तराष्ट्र प्रतनं स्तद्भ्योहरि विस्मयै : ॥ सज्जेद्वारिरथेस्वसद्ममिषत : स्थित्वाचिरंतद्गुणान्नाज्ञासीत् पुरुपार्थ सार्थ तुरगान् देशे खिले चारिणः ॥ १४ ॥ सन्मुहूर्तेसुता रार्क्षेसानुकुलेनवग्रहे ॥ निधिव्योममुनींद्वन्दे पवित्रे मासि माधवे ॥ १५ ॥ शुक्लपक्षेशुभेयोगेपूर्णिमायांतथातिथौ ॥ गुरुवारेप्रतिष्ठाप्य विश्नुंग्रामान् ददौ प्रभुः ॥ १६ ॥ हिरिण्याश्वं कल्पलता गोसहस्रंच दत्तवान् ॥ तत्र प्रतिष्ठां परमेश्वरस्य यथाविधानं विरचय्य भूपतिः ॥ स्तुतिंव्यजानी जगदीश्वरस्य पुनः पुनः सत्पुलका कुलःसन् ॥ १७ ॥ प्रादुर्भूतचतुर्भुजंकमलदृक्पी-तांबरंचक्रभृत्पूर्णब्रह्मविकाशिकौस्तुभमणि श्रीवत्ससंदीपितम् ॥ यन्नीलंजग-

तांत्रयस्यजनकौविस्माप्यसन्प्रीतिदं तद्रूपं गिरिधारिणः कलयतु प्रायेण लोक प्रियं ॥ १५ ॥ पूतनाशकटकार्ज्जुनै स्तृणावर्त्तकाघ वृषभादिके शिहन् ॥ द्वेषिकालियसमल्ल नागराट् कंससूदनहृदित्वमिहस्याः ॥ १६ ॥ इत्यादि स्तुतिमाधाय माधवस्य महामनाः ॥ दानं दत्वा गृहंप्राप्तः पश्यन् मंगल मुत्तमं ॥ १७ ॥ वर्षे निध्यं बरर्षिक्षिति गणनयुते माधवे पूर्णिमायां राणा श्री कर्ण पुत्रः सकल गुण जगत्सिंह भूपः प्रमोदात् ॥ विष्णुं संपूज्य चिन्हैः प्रकट तररूपं श्रीजगन्नाथ नाम्ना दानं श्री कल्प कल्पाः कनक हय मथो गो सहस्रंच दत्वा ॥ १८ ॥ ग्रामान्दत्वासद्गुणान्पंचभूपो वस्त्रैर्धान्यैरत्नमिश्रैर्द्विजा ग्र्यान् ॥ संतोष्यायं श्रीजगन्नाथरायं ध्यात्वा ध्यात्वा तोपमाधत्त भूपः ॥ १९ ॥ अथप्रतिष्ठांप्रविलोक्यकौतुकाद्रमापते स्तन्निकटे महीपतेः ॥ प्रसाद मालोक्य सुरासुरानरा नागाश्चकुर्वन्महतिंसुवर्णनां ॥ २० ॥ भूपलल्कृत विश्नुसद्मामिपतोवैकुंठलोकोह्ययंवीक्ष्यत्वल्कृतमेरुमंदिरगुणान् पूर्व श्रुतानेवहि ॥ तद्वार्येवविमूर्च्छित : स्थिरइति प्रायेणमन्दाकिनीलोलल्केतुमिषा द्व्यथाक्षितिकृते तंस्रोतसासिंचति ॥ २१ ॥ अथालोक्य तदासन्नांसभांमणिमयींशुभां ॥ इत्थमुत्प्रेक्षणंचक्रुः सुराविस्मयिनो मुहुः ॥ २२ ॥ लोकोभूपयशःसुधांशुरनिशं प्राकाशयत्तद्रथं त्यक्त्वाकेतुघटाक्तविश्नुभवनव्याजंप्रतापोंशुमान् क्ष्मांवेगादटातिद्विप द्विपमहत्सप्तीन्विमुच्यांतिकेतान्बद्धंकृतवान्गुणाकुलतुला स्तंभाननेकान्नपः ॥ २३ ॥ श्रीराणाग्मरसिंह कारितमिदंसौधंगुणौघैर्महद्रूपस्यास्ययशोजितोविधुरहो मूर्च्छामवाप्यापतत् ॥ तंद्रष्ट्वा नृपकर्णसिंहरचितं शुद्धांतहर्म्यं व्रज व्याजात् सेवितु मागताः किमुडवः सप्ताधिका विंशतिः ॥ २४ ॥ सौधं मध्येतडागंहृदय मिवसदारामहच्छंमहद्वैविष्णोर्वासायदूरे जलधि रितिधिया यज्जगत्सिंह कृतं ॥ कालेधर्मादिसेवीन्नृपतिरयमहं नित्य निद्रः स्त्रियाक्तः कर्मत्यागीति लज्जोत्रवसतिनहरिः किंतु चित्तस्यलीनः ॥ २५ ॥ कृत्वा मोहन मंदिरंमुनिमनोमुत्कर्णसत्सागरे कैलाशाधिकमद्भुतंत्रिजगति ख्यातंसकर्णात्मजः ॥ रुद्रंनंदपितानमामितिहरिर्वाद्धौरुजा मूर्च्छितः शेतेद्याप्यपटेपिशेषशयने शीतोष्ण वर्षाहतः ॥ २६ ॥ अथैकलिंगाख्यमहाप्रभोर्मुदाश्री मोकलेन्द्रेण कृतंच मंदिरं दृष्ट्वानकैलाश गिरिंनचेतरन्जानंति देवाः स्वमहाद्भुतस्थलं ॥ २७ ॥ तत्रागत्यसुराः सर्वे देवदेव महेशितुः ॥ यथाशक्तिस्तुतिंचक्रुरेकलिंगमहा-प्रभोः ॥ २८ ॥ गिरिशगिरिप्रभुतनयांसनयांबिभ्रत्वमेकलिंगजय ॥ गिरि तनयास मुदीक्ष दक्षण हतः प्रजेश दक्षस्य ॥ २९ ॥ सदैकलिंगस्यपदारविंदं भाजामनोयाम कदाचिदेव इत्थंविधायस्तुतिमस्य देवताः स्वर्गस्य रक्षा कृतये

त्तरा कुलाः ॥ ३० ॥ अथ श्री मज्जगत्सिंह कारितं केलि मंदिरं ॥ तदतीवाद्भुतं मत्वा वैजयतंनमेनिरे ॥ ३१ ॥ अथदृष्ट्वा महादेवी मत्युच्च शिखरिस्थितां ॥ राठासेनाभिधांवंद्यां जानतिस्मेतिदेवताः ॥ ३२ ॥ आगत्योदयसागरेक्षयजले मिष्टांभसि प्रायशो गभीरे सततं वसत्वमधुनापक्षस्य रक्षाकृते ॥ राठासेन गिरींद्रजेति सततं मैनाकनामानुज प्रीत्याद्ध्यानरतानचावजगती पाया त्रिकूट स्थला ॥ ३३ ॥ अथश्रीमज्जगत्सिंहकारितं रूपसागरं ॥ विहारस्थल मालोक्य निनिदुर्मानसंसरः ॥ ३४ ॥ अथदृष्टोदय सागर मध्ये विस्मापकं नृणां ॥ श्रीराणोदयसिंहकारितं --------- ॥ ३५ ॥ अमृताकरेष्पुदयसिंहकारिते कमलाकरेष्पुदय सागराभिधे ॥ कमलापतिः शयितुमुत्सुकोपिसस्तटएवविस्मितइवावतास्थिवान् ॥ ३६ ॥ रुद्रेणोदयसागरद्युतिमलं वीक्ष्यानिशंविस्मय स्तब्धेनस्थितमत्रनो गिरिभुवः सोस्त्यंगिरींद्रं विना ॥ तद्गौरीप्रियकाम्ययानरपतिस्तस्यैवतीरेतनोत् कैलाशाधिक निर्मला --मुदा रम्यंसुहर्म्यंनाकिं ॥ ३७ ॥ अथजावराभिधाने ग्रामे देवीमहाद्भुतादेवाः ॥ दृष्ट्वांबिकाभिधानांनेमुर्यस्याः प्रभावतः सततं ॥ ३८ ॥ मेदपाठमहींद्राणां राज्येरूप्य मयीशुभा ॥ अनिशंखन्यमानापि पूर्णैवभुविदृश्यते ॥ ३९ ॥ वर्षेनिध्यंबरर्षिक्षितिगणनयुते भाद्रशुक्ल द्वितीया तिथ्यां श्रीकर्ण सूनुस्त्रिजगति सुयशाः श्रीजगत्सिंह भूपः ॥ दत्वा श्रीरत्नधेनुं मणिकनक मयीं कृष्णभट्टायद्रु· खादुद्धर्ता पापरूपादृणवरनरकान् सैपभूयाच्चिरायुः ॥ ४० ॥ भ्रात्रागरीवदासेन शत्रुसिंहेन चप्रभोः ॥ रामसिंहारिसिंहेति ------ रामत· ॥ ४१ ॥ वर्षवर्षांतरेणाथ जगत्सिंहो थयान्तनोत् ॥ महादानानि सर्वाणि कल्पद्रुमइवप्रभुः ॥ ४२॥ जगत्सिंहो महाराज श्चिंतामणि रिवापरः ॥ पुत्रैः पौत्रैः परिवृतोजीयादाचंद्रतारकं ॥ ४३ ॥ श्रीमत्कर्णमहीभृदात्मज जगत्सिंहः प्रभो राज्ञया प्रासादं किलमेरुजातक मिमं श्रीरत्नशीर्षाव्हयं ॥ भंगोरा प्रथितान्वयो· गुणनिधी भानोस्तनूजोत्तमो शील्पीशोसमुकुंदभूधर इतिख्यातो चिरं चक्रतुः ॥ ४४ ॥ श्रीमद्भास्करपुत्रमाधवसुत श्रीरामचंद्रोद्भव· श्री सर्वेश्वरभट्टसूनुरभवत् पूर्वस्थलक्ष्मीपदः ॥ नाथस्तत्सुतरामचंद्रतनुज श्रीकृष्ण भट्टांगभूलक्ष्मीनाथकृता प्रशस्तिरतुला दद्यात्सतां मंगलं ॥ ४५ ॥ इति श्रीमन्महाराजा धिराज महारणा श्रीजगत्सिंहजीकारिता कंठोडी ग्रामाधिप कृष्ण भट्ट ---- लक्ष्मी नाथा परनाम बाबू भट्ट कृता प्रशस्ति संपूर्णा अचल इव अचल शक्तिः कीर्त्या बुद्ध्या श्रिया ह्रिया शक्त्या ॥ युक्तानि जयति भक्त्या कायस्थे शोचलाख्यातः ॥ १ ॥ तत्कुल कमल दिवाकर तुल्यो पूर्वार्थ वृद्धि मव मुक्तिः ॥

कल्याण कृतप्रजानां कलाभिधानः प्रमाण वचाः ॥ २ ॥ सद्विजा दिव वृक्षो कला भिरतिवर्द्धमानबहुशाखः ॥ सत्रार्चना भिधानो --- व्योर्जुन पाड्यो.

श्री महागणपतयेनमः॥ श्री जगन्नाथरायजी प्रसादात् ॥ श्री एकलिंगजी प्रसादात्॥ श्री भवान्यैनमः॥ श्री विश्वकर्मणेनमः॥ वंशोरवेरपूर्वोयं यद्भूता भूरिभूभृतः ॥ अंतक्षिप्ता रसांभोधिं ररक्षु स्तद्वि पक्षत ः॥ १ ॥ तत्रान्ववाये शिवदत्त राज्यो बापा भिधानो जनिमेदपाटे ॥ संग्राम भूमौ पटुसिंह रावं लातीत्यतो रावल इत्यभाणि ॥ २ ॥ राहप्य राणा भुवितस्य वंशे राणेति शब्दं प्रथयन् पृथिव्यां ॥ रणोहि धातुः खलुशव्द वाची तंकार यत्येष रिपूनूद्रु तार्तान् ॥ ३ ॥ तस्मान्नरपति राणा दिनकर राणा बभूवाथ ॥ अजनिजसकर्ण राणा बभूव तस्माच्च नागपालाख्यः ॥ ४ ॥ श्री पूर्णपाल नामा पृथ्वीमल्ल स्ततो जात ॥ उदितोथ भुवनसिंह स्तत्पुत्रो भीमसिंहो भूत् ॥ ५ ॥ अजनि जयसिंह राणा जातस्तस्मा च्चलखमसी राणा ॥ अरसी ततो हमीरः संजातः क्षेत्रसिंहोस्मात् ॥ ६ ॥ तस्मालाखाभिज्ञो राणा श्री मोकलस्तस्मात् ॥ श्री कुंभकर्ण उदभूद्राणा श्री रायमल्लो स्मात् ॥ ७ ॥ संग्रामसिंह राणा जातो भूपाल मौलिमणिः ॥ श्री राणोदयसिंहः प्रतापसिंह स्ततो जातः ॥ ८ ॥ अमरसमो ऽ मरसिंह स्ततो नृपः कर्णसिंहो भूत् ॥ गुणगण निधि स्ततो भूद्राणा श्री मज्जगत्सिंहः ॥ ९ ॥ जगत्सिंह महीभर्तुः कथं चिंतामणिः समः ॥ चिंतना वधिदाताय श्चिंतनाधिक दोनृपः ॥ १० ॥ राणा श्री राजसिंहो स्मात् प्रद्युम्न इवकृष्णतः ॥ यस्यदृष्ट्या कृतार्था भूत् समस्त द्विज संततिः ॥ ११ ॥ श्री मान् रामप्रजायां यशसि नलनृपः सत्य संधासु पार्थो दाने कर्णप्रतापे प्रकट दिनमणि धर्मसूनुर्दयायां ॥ राणा श्री राजसिंह क्षितिकुल तिलकः श्री जगत्सिंह पुत्रो जीयादा चंद्रतारा गण रवि धरणी क्षीर पाथोधि शैलं ॥ १२ ॥ वर्षेनिध्यंवरर्षि क्षिति गणनयुते फाल्गुणस्य द्वितीया तिथ्यां कृष्णाख्य पक्षे सकलनृप मणिः श्री जगत्सिंह पुत्रः ॥ राज्य श्री चिन्ह भूतं त्रिजगति सुखदं हेमसिंहा सनंसत् सल्लग्ने धिष्ठितोभूत् सकल रिपुकुल त्रासदो राजसिंहः ॥ १३ ॥ वर्षेनिध्यं वरर्षि क्षितिगणन युते मार्गशीर्षेपि शुक्ले पंचम्या मेकलिंगे कनकमणि मयीं सत्तुलां राजताख्यां ॥ राणा श्री राजसिंह क्षितिपति मुकुटः श्री जगत्सिंह पुत्रः कृत्वातत्र द्विजाग्र्यया न्सपदि विहितवान् राजराजेन्द्र तुल्यान् ॥ १४ ॥ स्वच्छलंनोभयत्रप्रभवति मुकुरे रोचना निंद्यजन्मा रक्षिलं श्रोत्रियेनो तुरग वृपभगो हस्तिनो ज्ञानहीनाः ॥ वन्हिर्ज्वाला करालो जलमय मखिलं तीर्थजातंततोमुं राणा श्री राजसिंहं भजतभजतरे मंगलंमंगलार्थे ॥ १५ ॥ लक्ष्मी चित्तस्थितंयद्विजपतिसुखदं कंटका संगशोभं फुल्लान्मित्रं समंता दसुर

मधुपे नैव सेव्यं कदापि ॥ शूरोत्ताम प्रदानं जडकुल रहितं श्री जगत्सिंह पुत्र श्रीराणा राजसिंहाद्भुत पदकमलं राजहंसा भजध्वं ॥ १६ ॥ यौनित्यंदापयंतौ त्रिदशतरुफला न्युच्चकैः प्रापयित्वा वैरिभ्योऽ प्रीयमाणौ समरभुवि गलान्कृंत यित्वा विविक्षून् ॥ तिष्ठद्भ्योत्रैवदत्तः स्वयमिह सुफलंयौसुहृद्भ्यस्तयोः किंराणा श्रीराजसिंह त्वदतुलकरयोः कल्पवृक्षेणसाम्यं ॥ १७ ॥ नंतायोहलिनं द्विजेंद्र रुचिरंनो रुक्मिणंद्वेपिणं जिश्नौदत्तसुभद्रकोवलरतः सत्यात्मनि प्रायशः॥ शूरोद्भूत सुतः सदानरपतिः श्रीमागधः प्रस्तुतः श्रीकृष्णस्तव मस्तके विजयतां श्रीराज सिंह प्रभो ॥ १८ ॥ राणाश्री राजसिंह त्वदतुलविमला दृष्टिरेपैवगंगा नोचेल्लेशाद् वात्ता कथमिहमनुजंपापमुक्तं विधत्ते ॥ मूर्द्ध्नी वात्तामदेशं सपदि करतले पद्मगेहंकरोति प्राप्ताचेदंघ्रिदेशे कलयतिसततं तंनरेशं रमेशं ॥ १९ ॥ मंथ न्माकिल मंदरागइहयल्लक्ष्मींददौमत्सुतां तस्मै श्यामजनार्दनाय तनुजं चंद्रं कपर्दश्रीये ॥ भूत्वाभूपकरः समुद्रइतिरुद्भूमृन्मथस्तद्भव : पद्मा : स्वात्मजभृत्य वाड़वकरंतजंयशोधोनयत् ॥ २० ॥ राणाश्रीराजसिंहस्य प्रतापोवाड़वानलः देहंगेहंतृणप्रायंजहज्जीवनमात्रहृत् ॥ २१ ॥ राणा श्रीराजसिंहोयं राजतेभूमि मंडले ॥यत्प्रतापासहः सूर्यो गमनेभूत्सहस्त्रपात् ॥ २२ ॥ राणाश्रीराजसिंहेन्द्र गुणैर्वृद्धोभवान्ध्रुवं ॥ सद्राननीरदोनित्यं वलिभ्राजीनतानतः ॥ २३ ॥ श्रीमत् जगत्सिंह नवीनभानोः श्रीराजसिंह प्रतिबिंब रूपः॥ चित्रं जगत्प्राणवृतोर्थलोल प्रकाश कृत्तापकरो जड़ांतः ॥ २४ ॥ अष्टापदतिरस्कारि सदयं हृदयं प्रभोः॥राणा श्री राजसिंहस्य हरिर्वसति तत् सदा ॥ २५॥ चित्तोन्मेप वृपः सदासुमिथुनः कीर्त्या प्रतापेनसत् कर्कोनाम्नितु सिंह एपहितभूभृत्कन्यकः सत्तुलः ॥ सत्यालिःसुधनुर्मुखेहिमकरः सत्कुंभि मीनेक्षणो नित्यं द्वादश राशिसंगतइतो भास्वान्नवीनो भवान् ॥ २६ ॥ वर्पे बाणां वरर्पिक्षिति गणनयुते माधवे शुक्लपक्षे पूर्णायां पूर्णकामः कनक मणिमयीं सत्तुलां शूकरास्ये ॥ क्षेत्रे गंगा तटांते द्विजगण महिते श्री जगत्सिंह पुत्रः कौमारे संविधाय स्वजन परजना न्नाकरोत् किंधनाढ्यान् ॥ २७ ॥ अवतार मुनींद्वब्दे मार्गस्या सितपक्षके॥ त्रयोदश्यामया शितीददौकन्या महाप्रभुः॥ २८॥ राणा श्री राजसिंह त्वमिह भुविभवन् कल्पवृक्षावतारो दत्वासंख्या श्वनागै कनकमणियुता शीति संख्या : सुकन्या :॥ व्यासेनोक्तं नृकन्या गजहयमणिद : कल्पवृक्षस्तदेतत् मिथ्येत्युक्तिं नराणां दलपितुमभवस्त्वां मुनिस्तत्सपायात् ॥ २९ ॥ मुनिव्योम मुनीव्द्वे तड़ागांते स्व मंदिरं॥राणा श्री राजसिंहोयं कौमारे कृतवान् प्रभुः॥ ३० ॥ शक्रः स्वानुज विश्नुमेत्ययदिवे याचेत पक्षच्छिदां नूनंचक्रधरादिहापिजलधौ

पञ्जस्यरआननत् ॥ मैनाकः किमुसेवतेवहुतरः स्नेहायकौमारतो राणाश्रीयुतराजसिंहभवतः प्रासादवर्यच्छलान् ॥ ३१ ॥ ब्रह्मा वत्सहतो हरेरिव गुणान् ज्ञातुं तव प्रायशः संप्राप्तश्चतुराननोपिनगुण प्रान्तं यदाज्ञातवान् ॥ व्रीडाजाड्ययुतस्तदास्थित इह प्रायोगवाक्षा ननो राणाश्रीयुतराजसिंहभवतः कौमारसौधच्छलात् ॥ ३२ ॥ मूढायत्र वदन्तिचित्र माखिलं यच्चित्र कुचित्रितं तन्मन्येनकुमारमंदिरमिदं किलदद्भुतं प्रेक्षितुं ॥ आयातै स्त्रिदिवाधिपादिकसुरैर्दृष्ट्वा मुहुर्विस्मितै श्चित्री भूय सदास्थितं स्थितमहो पाताल देवैरपि ॥ ३३ ॥ राणा श्री राजसिंहोयं वाटिका मद्भुतां व्यधात् ॥ वैजयंत मिव प्राप्तं तत्र प्रासाद मातनोत् ॥ ३४ ॥ विश्नो श्चक्र मिवप्रताप दहनः श्रीमेदपाटप्रभो सोडुंडुः सह एपमानकलितैर्नम्रानुकं पीपरं ॥ इत्थं चंद्र मसा विचिंत्य सुचिरं श्री राजसिंहप्रभो रुद्याने स्वकृता च्चसौध मिपतो नूनं निवासः कृत. ॥ ३५ ॥ राणा श्रीजगदाद्यसिंह रचितं यन्मन्दिरं श्रीपतेः राणा श्रीधर राजसिंह विहितं तस्यैव पार्श्वेप्वितः ॥ शंभू श्री गणपार्यमा चलतनूजानां सुधांशुच्छविप्रासादाच्छचतुष्टयं कविरिहोत्प्रेक्षामकार्षी दिमां ॥ ३६ ॥ राणा श्रीपतिराजसिंहनृपते कीर्तिर्नटीस्वैरिणी स्पृष्ट्वा मोह महो विधास्यतितत: सार्द्धमहाविष्णुना ॥ वत्स्याम: किलपंचभिर्भवति यद्युक्तं हितत्सन्मुखं इंद्वस्त्रैर्भवनैर्वसत्यपि शिवे भास्येनशैलात्मजा ॥ ३७ ॥ हष्टं देहजमर्बुदं हिमवतः श्रीविष्नुसद्मच्छलात् प्राप्तस्यात्र सुपुण्यके स्थितवतः श्रीमेदपाटे चिरं ॥ राणा श्रीधर राजसिंह कृतस देवालयानामिपाह्लोकेभिन्न रुचे हदेव दधतस्तंतंसुरं तनूसुताः ॥ ३८ ॥ राणा श्रीयुत राजसिंह यशसा व्याप्त त्रिलोकीतले मायेशोहरिरेवनीलरुचितांधत्तेनचान्येभुवि ॥ नाध्यक्षावयमे तदंगकसुराः स्यामोनुमेया अपि प्रायः शंभुगणेशसूर्यगिरजा ऐशानतस्तत् स्थितः ॥ ३९ ॥ देवामवे सद्गुणैर्वंध माता गेहान् कृत्वा श्रीपतेः पार्श्वतः कि ॥ कृत्वा शैलीमूर्तिमिवात्रतस्थुः श्रीमान् शंभुः सद्गजास्येन चंद्र्यः ॥ ४० ॥ राणा श्रीराजसिंहत्वदतुलनृपतः मत्कृपेक्ष्येन रुद्रः पृथ्व्यां दत्ताद्गजौघात् मजल घन रवाहंति वक्रो गणेशः ॥ सूर्यस्तत्ते प्रतापात्तव भुज बलत श्चंडिका शम्बदेवी कृत्वा गेहान् सलज्जा अभिहरिनिलयं पार्श्वतः किंनिलीनाः ॥ ४१ ॥ सिंचेन्मांस्क शीकरैः करिमुखो मांद्राष्टि कर्त्तारविर्मैचे रित्यमुभौ गणेश नयनौ किंत्वत्प्रतापाकुलौ ॥ सिंचेन्मां विधुमौलिरेपमुधया मांचंद्र वक्राशिवा सिंचेदेव मुभौ हरोहिमगरेः पुत्रीव संपन्नमुखौ ॥ ४२ ॥ लोकेयास्तिप्रतिष्ठाप्रतिदिन नुदयन् लोक यात्रा कदेप त्रातुंनाकिंनिमन्त्र्य प्रतिरजनिजलेवारिधे साश्व-

सूतः ॥ भूयो लज्जालु रुघन्ननुदिनमवशः प्रायशो यातिवेगाद्राणाश्रीराजसिंह क्षितिपकुलमणेः किंप्रतापोपतप्तः ॥ ४३ ॥ एकं पुत्रं समुद्रः कलयति हृदये वाडवं जीवनैः स्वैरन्यंनेत्रेमहेशस्ताड़ितइहसुतावारिदेभ्यः प्रदत्ता ॥ तंत्रि स्विन्नोदिग्गंतान् व्रजतिचजवतः प्राप्यदिग्भ्योंघ्रिसेवी राणाश्रीराजसिंह क्षितिप-कुलमणेः सत्प्रतापोपिरुद्धः ॥ ४४ ॥ राणा श्रीराजसिंहत्वदतुल सुयश सत्प्रतापाख्य भूमौ कर्तुंचंद्रान् सुवन्हीन् हर इह विधयेस्वर्णवारायदत्ता ॥ अन्यैर्द्रव्यैर्नकुर्यादितिमनसि भियातत्परीक्षार्थमिंदोः खंडंवन्हिंचतत्तत्सदृशमिह-दधत्पातुवश्चंद्रचूडः ॥ ४५ ॥ राणाश्रीराजसिंहोयं पुत्रत्रयविराजितः ॥ शंभुर्नेत्रत्रयेणैवजीयादाचंद्रतारकं ॥ ४६ ॥ श्रीमद्भास्करपुत्रमाधवसुतः श्रीरामचंद्रोद्भवः श्रीसर्वेश्वरभट्टसूनुरभवत्पूर्वस्थलक्ष्मीपदः ॥ नाथस्तत्सुतराम-चंद्र तनुज श्रीकृष्णभट्टांगभूर्लक्ष्मीनाथकृतिः सतांमधिमुदे भूयादियन्निर्मला ॥ ४७ ॥ इति श्री मन्निखिलभूपालमौलिमाला मणिमरीचिनीराजितचरणारविंद-महाराजाधिराजमहाराणा श्री जगत्सिंहपुत्रस्यराणा श्री राजसिंहस्य प्रशस्ति. राणा श्री मज्जगत्सिंहैः कृपयादय याहितः ॥ प्रासादे स्मिन् महाकार्येप्यधिकारी कृत मुर्धीः ॥ १ ॥ गुवावत कुलोत्पन्नः पंचोली कमलासुतः ॥ अर्जुनो नाम पुण्यात्मा भूयात्कार्य करो हरेः ॥ २ ॥ भंगोराज्ञाति राजा तनुसु विमलधी सूत्रधारोहि भाणो तत्पुत्रः श्री मुकुंदो वशसकल कलो भूधराख्यो द्वितीयः ॥ याभ्यां ग्राम प्रदत्तो हतरिपुनिकरः श्री जगत्सिंहभूपैः दत्तौसौवर्णरौप्यौ क्रमइह कृपया ख्यापकौ मापदंडो ॥ १ ॥ राणा श्री मज्जगत्सिंह कारितं मंदिरं शुभं ॥ ताभ्यामेवकृतं श्री मज्जगन्नाथाभिध प्रभोः ॥ २ ॥ ताभ्यां श्री मज्जगत्सिंह ग्रामोदेवदहा भिधः ॥ चित्रकूटांतिकं प्राप्तः प्रतिष्ठायां रमापतिः ॥ ३ ॥ सूत्रमुकुन्दो द्रववाघा अस्मरी लीपि अगमत् संवत् १७०८ वर्षे द्वितीय वैशाख शुदि पौर्णमासि १५ गुरुवासरे श्री जगन्नाथरायजी पाट पधराया कृष्णभट्टपुत्र वावूकृता.

जगदीशके चौकमे जहां अब पुलिसकी कचहरी होती है कहते हैं कि वह पहिले धायका मंदिर था.

---

शेष संग्रह नम्बर- ५.

धायके मन्दिरकी प्रशस्ति.

श्रीरामजी श्रीनवलश्यामजी श्रीगणेशगोत्रदेव्यो प्रसादात् स्वस्तिमहाराजाधि-महाराणा श्री जगत्सिंहजी विजयराज्ये संवत् १७०४ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे - यायां तिथौ शुभदिने पट्ट प्रतिष्ठा ॥ श्री उदयपुर नगरे राणा श्री जगत्सिंहजीने

श्री माजी भाईपुराजी हेमाजी पुत्र लाधूजी धाय नोजूबाई प्रासाद कराव्यो नवलश्यामजीने मूहुर्त प्रतिष्ठा कीधी एकोतरशत कुल उधारणार्थाय ॥ शुभं भवतु श्री लाधुजी भार्या बाई जगीसबाई राधां श्रीरस्तु शुभं भवतु.

छन्द दुर्मिला.

शिवलोक समध्धिय भोगन्न बध्धिय सोखिल सध्धिय कर्णसमें
जगतेश बिचच्छन लेनृप लच्छन ब्यूह बिपच्छन जच्छनमें
कुल चारण बट्टसु क्षेम अघट्टसु तद्विष कट्टसु खग्गततें
दिव दुग्गथ रावत पच्छ महावत घेरन धावत मन्दमतें ॥ १ ॥
पुर पब्बय लुट्टन अब्बुव जुट्टन द्वैछक छुट्टन जोध जई
कलियान सु जोधहि बीर प्रबोधहि दिल्लिप मोदहि भेट भई
जननी नृप अङ्गन गङ्ग तरङ्गन द्वैदल सङ्गन ध्यान धरें
फिर दिल्लिय पत्तन ईश प्रमत्तन कैछ्ल कथ्थन होश हरें ॥ २ ॥
अजमेरसु आनहि पाय प्रयानहि सो सुन रानहि भेद भयो
मुगली दल हल्लिय तोपन टल्लिय पीलु प्रपिल्लिय नीति नयो
तब साम उपायन भूपति भायन पुत्त हिपायन साह पठै
कुल चंप दहानल बल्लु महाबल खाम किये खल मोत मठै ॥ ३ ॥
जगतेश उजागर संश्रुति सागर त्याग प्रजागर देश परचो
तिंह दान कथा सु महानजथा तत लेख तथा कछु शोध करचो
सुत पुत्र अकब्बर जोजग जब्बर बानक बब्बर शाहजहां
इतिहास प्रकथ्थहि आदतसथ्थहि पुत्तन पथ्थहि गथ्थतहां ॥ ॥ ४ ॥
भल सज्जन भावन पूर प्रभावन पैत्रिक पावन जान गिरा
फतमल्ल सुशासन पाय प्रकाशन संशय नाशन थान थिरा
कविराज विरच्चिय श्यामल सच्चिय जोमति जच्चिय जासगरें
इतिहास विचारक मोमति तारक धीसम धारक शोधकरें ॥ ५ ॥

महाराणा जगत्सिंह-अव्वल.

सप्तम प्रकरण समाप्त.

रावत रुपमांगद १ राठौड़ दुरजणसिंहजी १ रावत रुगनाथसिंहजी १ सगतावत मौहकमसिंहजी १ रावत राजसिंहजी १ सीसोदिया माधवसिंहजी १ रावत मानसिंह सारंगदेवोत १ राठौड़ माधोसिंह १ सोलंखी दलपत १ चहुवाण उदेकरण १ सगतावत गिरधरजी १ सगतावत सूरसिंहजी १ ईडरयो जोधजी १ झालो महासिंहजी १ रावल रिणछोड़दास तथा और ही वड़ा वड़ा उमराव तथा वड़ालोक कामदार वितगरा सरव साथे विदा कीधा असवार हजार पांच हाथी रणजगंसाथे विदा हुया रावल समर्सी सामो आवे मिल्यो इतरो कवूल कीधो रुपीया एक लाख गाम दस हाथी १ हथणी १ इतरी वसत कवूल करावे राणाजी श्री राजसिंहजीरे पावें रावल समर्सीजी आणे लगाया तठा पाछे देवल्ये विदा हुआ तदी रावत हरीसिंहजी भागेने श्री पातसाहजी हजूर गया देवल्यो भंज्यो कुंवर प्रतापसिंहजी आवे मिल्यो इतरो दंड कवूल कीधो रुपिया हजार पांच हथणी १ उतरो उणातीराथी दंडलेने राणाजी श्री राजसिंहजीरे पावें आया राणे श्री राजसिंहजी मालपुरो मारवा पधारया तदी पंचोली श्रीफतेचंदजी हे गढ तोड़ा (टोडा) ऊपरे विदा कीधा आगे विषो हुयोथो तदी तोडारे धणी मेवाड़रा लोगाथी वेअदवी कीधीथी तिणी खूनरे वास्ते असवार हजार तीन ३००० पंचोली श्री फतेचंदजीरी साथे देने विदा कीधा तदी श्री दीवाणजीरा प्रतापथी राजा रायसिंहजी तोड़ामाहें थी टालो लीधो रुपीया हजार पेंतीस ऊभे दंडलेने राणाजी श्री राजसिंहजीरे पावें पाछा दिन दो माहें मालपुरे आवे पगेलागा— राणोजी श्री राजसिंहजी वार तीन पंचोली श्री फ़तहचंदजीरे घरे पधारया जात्रा ३ कीधी १ श्री द्वारकानाथजीरी १ श्री रेवाजीरी १ श्री अर्वुदाचलजीरी तठापछे चित्तमें इसी आवी एक वकत ठिकाणो इसो कीजे तिणथी नाम रहे गांम नेड़वास तीरे वावडी नाम नंदा पंथरे माथे करावी संवत १७२५ वर्षे शाके १५९० प्रवर्तमाने उत्तरायण गते श्री सूर्ये वसंत ऋतौ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे ६ षष्ठी तिथौ सोम वासरे पुष्य नक्षत्रे तद्दिने श्री वावड़ीरी प्रतिष्ठा हुई वावड़ी सामी सराय एक करावी सराय मध्ये महल कराव्या वावड़ी तीरे वाग १ वीघा १३ रो कराव्यो संवत् १७३० वर्षे चैत्र वदी ९ शुक्रेरे दिन महाराणाजी श्री राजसिंहजी उदेपुरथी तलाव राज समंद पधारतां वावड़ी आवे ऊभा रहे वावड़ीरो पाणी मंगावे अरोगे हुक्म कीधो पाणी निपट अवल हे श्री दुहा. भागचंदको सुत वली फतेचंद वहु जाण ॥ चिरजीवो श्रीचंद जुत करत दान सन्मान ॥ फतेचंद कीनी नवल गाम वहडवा मांहि ॥ थिर व्हे रहजो वावडी वाग सरस घन छांहि ॥ २ ॥ कमठाणो इहवो कियो चिहु जुग चावो चंद ॥ जुग विसराम लिये जठे दिनसी राम दुणिंद ॥ ३ ॥ जिहां असमान धरतीयां जिहां रामरहमान ॥ जिहां लग रहसी चन्दतन कीध फता कमठाण ॥ ४ ॥

श्लोक

आरोग्य मस्तु कमलाभि मुखी सदास्तु । वलमस्तु महज्यशेसास्तु ॥ धन धान्य पुत्रा गमसिद्धि रस्तु । वंशे सदैव भवतां हरि भक्ति रस्तु ॥ ५ ॥ दोहा ॥ एकलिंग दश सहस घर उदियापुर रजधान ॥ त्यों कमठाणा चन्दका ठामा ऊग विहाण ॥ ६ ॥ क्यारो लिखमीदास कुल सदा रंग अंकूर ॥ फूल भागचंद फल फतो दिन दिन चढ़तो नूर ॥ ७ ॥ देखन आये वावड़ी वाका खलक लिखाण ॥ पाट भगत ज्यानो फता नीर अरोग्यो राण ॥ ८ ॥ उदियापुर व्हैजे अचल चंद वाय दरसाय ॥ तिनकूं सिध नव निध मिले देस प्रदेसां जाय ॥ ९ ॥ जव लग अंवर मेदनी नेह मेह मघवान ॥ जव लग वेली चंदकी राजी रहसी राण ॥ १० ॥ इति श्री भापा प्रशस्ति संपूर्ण लिखतं सूत्रधार हम्मीरजी सुतसाइव भवानी-शकर संवत् १७२५ लिखतं गजधर कमलाशंकर सुत दोलो गजधर रूपो मंडोवरा वास उदयपुरा गजधर जात गौड़

शेषसंग्रह नम्बर ३

ॐकारनाथकी प्रशस्ति.

श्री महागणपतयेनमः ॥ श्री नर्मदादेव्यैनमः ॥ श्री ओंकारेश्वरायनमः ॥ जयति श्री रघुवंशः श्रीरामो यत्र मौक्तिक प्रस्त्य ॥ काश्यां मुक्तौ मंत्रं यस्य सदा शंकरो दत्ते ॥ १ ॥ तस्यान्ववाये शिवदत्तराज्यो वापाभिधानो जनि मेदपाटे ॥ संग्राम भूमौ पटुसिंह रावं लातिल्यतो रावल इत्य भाणि ॥ २ ॥ राहप्यराणा भुवि तस्य वंशे राणेति शब्दं प्रथयन् पृथिव्यां ॥ रणो हि धातुः खलु शब्दवाची तं कारयत्येपयतः पराङ्मुखान् ॥ ३ ॥ तस्मान्नर पति राणा दिनकर राणा वभूवाथ ॥ अजनिजसकर्ण राणा वभूव तस्मा न्नाग पालाख्यः ॥ ४ ॥ श्री पूर्णपाल नामा पृथ्वीमल्ल स्ततो राणा ॥ सवभूव भुवनसिंहस्तत्पुत्रो भीमसिंहो भूत् ॥ ५ ॥ अजनि जयसिंह राणा जातस्तस्माच्चलखमसी राणा ॥ अरसीत तो हमीरः सजातः क्षेत्र सिंहोस्मात् ॥ ६ ॥ श्रीलक्षसिंह भूपो राणा श्री मोकल स्तस्मात् ॥ श्रीकुंभकर्ण उद भूद्राणा श्रीराय मल्लोस्मात् ॥ ७ ॥ संग्रामसिंह राणा जातो भूपाल मौलिमणिः ॥ श्री राणोदयसिंहः प्रतापसिंह स्ततोजातः ॥ ८ ॥ अमर समो मरसिंह स्ततो नृपः कर्णसिंहो भूत् ॥ गुण गण निधिस्ततो भूद्राणा श्रीमजगत्सिंहः ॥ ९ ॥ जगत्सिंहो मही भूपः कल्प वृक्षः कथं समः ॥ सहि जीवन साकांक्ष स्त्वंतु जीवन भूभृतां ॥ १० ॥ जगत्सिंहोमहाराजः चिंतितादधिक